New Beginning

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, द्वारा निर्धारित नवीनतम् पाठ्यक्रमानुसार

# मास्टरमाइन्ड हिन्दी


लेखकगण :

रश्मि चौधरी

एम० ए० (हिन्दी), बी० एड०

पवन सक्सेना

एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत)


30+ Years of Educating Minds Distributing Success

कक्षा 10

## सहायक पुस्तिका

**विशेष आकर्षण :**

- गद्य तथा काव्य खण्ड के प्रत्येक अध्याय में लेखक/कवि का परिचय संक्षेप में दिया गया है।
- गद्य तथा काव्य खण्ड के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में पाठ का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है।
- खण्डकाव्य की विषय-सामग्री का समावेश किया गया है।
- शिक्षा बोर्ड के दिशा-निर्देशों के अनुसार कूट-आधारित प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है।
- पाठ्यक्रम के अनुसार व्याकरण का समावेश किया गया है।
- पुस्तक में सभी पाठों के प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं।

योग्यता आधारित प्रश्न सहित

Competency Based Education (CBE)

A New Beginning Programme for Students by MASTERMIND

# गद्य-खण्ड

**( क ) हिन्दी गद्य के विकास से सम्बन्धित प्रश्न**

**उत्तर–**

**1.** छन्द के बन्धन से मुक्त, भावाभिव्यक्ति में सफल और व्याकरण सम्मत रचना 'गद्य' कहलाती है; जैसे—कहानी, निबन्ध, उपन्यास आदि।

**2.** गद्य के माध्यम से अपने विचारों और भावों को सरल और स्वाभाविक रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है। यही कारण है कि विभिन्न सामाजिक, साहित्यिक एवं वैज्ञानिक विषयों की प्रस्तुति हेतु गद्य को ही प्रयुक्त किया जाता है।

**3.** गद्य और पद्य (काव्य) में यह अंतर है कि गद्य के विषय विचार प्रधान और पद्य के विषय भाव प्रधान होते हैं।

**4.** हिन्दी गद्य का प्राचीनतम रूप राजस्थानी ब्रजभाषा में मिलता है।

**5.** हिन्दी गद्य का प्रथम विकास सामान्य बोलचाल की भाषा के रूप में मिलता है।

**6.** ब्रजभाषा गद्य का सूत्रपात संवत् 1400 के के आस-पास हुआ था।

**7.** ब्रजभाषा गद्य के दो प्रसिद्ध लेखकों के नाम हैं—1. गोस्वामी विट्ठलनाथ, **2.** गोकुलनाथ जी।

**8.** प्राचीन राजस्थानी गद्य दसवीं शताब्दी के दान-पत्रों, पहले-परवानों, टीकाओं व अनुवाद-ग्रन्थों के रूप में मिलता है।

**9.** हिन्दी गद्य खड़ीबोली का आविर्भाव 19वीं शताब्दी में हुआ।

**10.** खड़ीबोली गद्य की प्रथम रचना 'चंद छंद बरनन की महिमा' है।

**11.** भाषा-योगवशिष्ठ के लेखक का रामप्रासद निरंजनी है।

**12.** कवि गंग अकबर के दरबारी कवि थे।

**13.** भारतेन्दु युग के दो प्रमुख लेखकों के नाम हैं—1. बालकृष्ण भट्ट, 2. प्रतापनारायण मिश्र।

**14.** द्विवेदी युग के उपरान्त हिन्दी गद्य को निम्नलिखित तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

(क) शुक्ल युग — 1919 ई० से 1938 ई० तक।

(ख) शुक्लोत्तर युग — 1938 ई० से 1947 ई० तक।

(ग) स्वातन्त्र्योत्तर युग — 1947 ई० से अब तक।

**15.** द्विवेदी युग के दो निबन्धकारों हैं—1. बालमुकुन्द गुप्त, 2. सरदार पूर्णसिंह।

**16.** द्विवेदी युग के दो कहानीकार हैं—1. मुन्शी प्रेमचन्द्र, 2. जयशंकर प्रसाद।

**17.** शुक्ल युग के दो प्रमुख गद्यकार हैं—1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, 2. प्रेमचन्द्र।

**18.** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दो प्रमुख कृतियाँ हैं—1. त्रिवेणी 2. हिन्दी साहित्य का इतिहास।

**19.** रामचन्द्र शुक्ल गद्य की दो विधाओं—'निबन्ध' व 'आलोचना' में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं।

**20.** शुक्ल युग के किन्हीं दो प्रमुख गद्य लेखकों और उनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

(क) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल—1. चिन्तामणि, 2. विचरवीथी, 3. रसमीमांसा, 4. त्रिवेणी, 5. सूरदास, 6. हिन्दी साहित्य का इतिहास।

(ख) जयशंकर प्रसाद—1. आंधी, 2. इन्द्रजाल, 3. छाया, 4. प्रतिध्वनि, 5. तितली, 6. कंकाल, 7. इरावती, 8. सज्जन, 9. चन्द्रगुप्त, 10. स्कन्दगुप्त, 11. अजातशत्रु, 12. ध्रुवस्वामिनी।

**21.** समालोचना और इतिहास-लेखन में विराट योगदान देने वाले लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हैं।

**22.** शुक्ल युग के दो प्रमुख हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों के नाम हैं—1. रामचन्द्र शुक्ल, 2. डॉ० रामकुमार वर्मा।

**23.** शुक्ल युग के दो प्रसिद्ध कहानी लेखक हैं—1. भगवतीचरण वर्मा, 2. आचार्य चतुरसेन शास्त्री।

**24.** बाबू गुलाब राय व आचार्य रामचन्द्र शुक्ल-युग के दो सशक्त आलोचक एवं निबन्धकार हैं।

**25.** शुक्लोत्तर युग की समय-सीमा सन् 1938 ई० से सन् 1947 ई० तक है।

**26.** शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख लेखकों (आलोचकों) हैं—1. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, 2. डॉ० नगेन्द्र।

**27.** शुक्लोत्तर युग की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं—1. हिन्दी गद्य में यथार्थ का चित्रण, 2. साहित्य पर मार्क्सवाद का प्रभाव।

**28.** आधुनिक हिन्दी साहित्य के दो प्रमुख आलोचकों के नाम हैं—1. डॉ० रामविलास शर्मा, 2. डॉ० नामवर सिंह।

**29.** आलोचना और इतिहास-लेखन के क्षेत्र में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद सराहनीय कार्य करने वाले साहित्यकार हैं—आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ० नगेन्द्र, डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, डॉ० रामकुमार वर्मा इत्यादि।

**30.** छायावादी युग के गद्य की दो विशेषता हैं—1. लाक्षणिकता, 2. प्रतीकात्मकता।

**31.** छायावादी युग के दो नाटककार हैं—1. जयशंकर प्रसाद, 2. हरिकृष्ण प्रेमी।

**32.** छायावादी युग के दो साहित्यकार हैं—1. जयशंकर प्रसाद, 2. महादेवी वर्मा।

**33.** महादेवी वर्मा की दो गद्य-रचनाएँ हैं—1. स्मृति की रेखाएँ, 2. पथ के साथी।

**34.** प्रगतिवादी युग की किन्हीं दो साहित्यिक रचनाओं के नाम हैं—1. रतिनाथ की चाची (लेखक : नागार्जुन), 2. मैला आँचल (लेखक : फणीश्वर नाथ 'रेणु')।

**35.** प्रगतिवादी युग के गद्य की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं—1. सहज और व्यावहारिक भाषा, 2. राष्ट्रीय चेतना पर आधारित गद्य-साहित्य।

**36.** प्रगतिवादी युग के दो प्रमुख लेखकों के नाम हैं—1. डॉ० रामविलास शर्मा, 2. श्री शिवदानसिंह चौहान।

**37.** हिन्दी के प्रसार में उल्लेखनीय योगदान देने वाली दो प्रमुख संस्थाओं के नाम हैं—1. फोर्ट विलियम कॉलेज, 2. नागरी प्रचारिणी सभा।

**38.** हिन्दी गद्य की दो विधाओं के नाम हैं—1. निबन्ध, 2. कहानी।

**39.** हिन्दी गद्य में अब तक विकसित विधाओं के नाम हैं—निबन्ध, नाटक, कहानी, उपन्यास, आलोचना, जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र, संस्करण, एकांकी, रेडियो-रूपक, रिपोर्ताज, यात्रावृत्त, भेंटवार्त्ता, गद्य-काव्य, इण्टरव्यू, पत्र-साहित्य तथाडायरी।

**40.** 'अर्द्धनारीश्वर' के रचयिता का नाम—रामधारीसिंह 'दिनकर' है।

**41.** 'कलम का सिपाही' के लेखक का नाम—अमृतराय तथा 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक का नाम—इंशा अल्ला खाँ है।

**( ख ) हिन्दी की विभिन्न विधाओं से सम्बन्धित प्रश्न**

## 1. निबन्ध

**1.** 'निबन्ध' उस गद्य-विधा को कहते हैं, जो कलात्मक नियमों के बनधन से मुक्त हो। इसमें लेखक स्वच्छन्दतापूर्वक अपने विचारों तथा भावों को प्रकट करता है।

**2.** विषय और शैली की दृष्टि से निबन्धों के प्रमुख भेद हैं—1. विचारात्मक निबन्ध, 2. भावात्मक निबन्ध, 3. वर्णनात्मक निबन्ध, 4. विवरणात्मक निबन्ध, 5. मनोवैज्ञानिक निबन्ध।

**3.** भावात्मक निबन्धों की दो विशेषता हैं—1. भावात्मक तत्व की प्रधानता, 2. सरल एवं सरस भाषा का प्रयोग।

**4.** विवरणात्मक निबन्ध और वर्णनात्मक निबन्ध में अंतर इस प्रकार हैं—

विवरणात्मक निबन्धों में प्राय: ऐतिहासिक तथा सामाजिक घटनाओं, स्थानों, दृश्यों, यात्राओं तथा जीवन के अन्य विविध कार्यकलापों का विवरण दिया जाता है।

वर्णनात्मक निबन्धों में किसी भी वर्णनीय वस्तु, स्थान, व्यक्ति, दृश्य आदि का निरीक्षण के आधार पर आकर्षक, सरस तथा रमणीय रूप में वर्णन होता है।

**5.** विचारात्मक निबन्ध में बुद्धि तत्त्व एवं तर्क की प्रधानता होती है, किन्तु भावात्मक निबन्ध में बुद्धि तत्त्व गौण तथा भाव तत्त्व प्रमुख होता है।

**6.** निबन्ध के विकास में सहायक किन्हीं दो निबन्धकार हैं—1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, 2. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

**7.** हिन्दी के दो प्रसिद्ध निबन्धकार हैं—1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, 2. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

**8.** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने विशेष रूप से मनोविकारों से सम्बन्धित तथा समीक्षात्मक निबन्ध लिखे।

**9.** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल निबन्ध और आलोचना के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इन विषयों में उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—1. चिन्तामणि (निबन्ध), 2. त्रिवेणी (आलोचना)।

**10.** छायावादी युग के दो प्रमुख लेखक हैं—1. जयशंकर प्रसाद, 2. महादेवी वर्मा।

11. महादेवी वर्मा का गद्य मुख्य रूप से संस्मरण और रेखाचित्र पर आधारित है। उनके गद्य के विषय नारी-समाज, निम्न वर्ग और पशु-पक्षियों से सम्बन्धित है।
12. विचारात्मक निबन्ध के एक लेखक का नाम—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
भावात्मक निबन्ध के एक लेखक का नाम—वियोगी हरि।
13. हिन्दी साहित्य के दो विचारात्मक निबन्धकारों के नाम हैं—1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, 2. बाबू गुलाव।
14. दो प्रमुख प्रगतिवादी निबन्धकारों लेखकों के नाम हैं—डॉ० धर्मवीर भारती, डॉ० रामविलास शर्मा।
15. 'गेहूँ और गुलाब' निबन्ध के लेखक का नाम रामवृक्ष बेनीपुरी है।
16. शुक्लोत्तर युग के दो निबन्धकार हैं—1. हजारीप्रसाद द्विवेदी, 2. जैनेन्द्र कुमार।
17. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की एक रचना का नाम है—'बापू के कदमों में'।
18. 'नर और नारायण' निबन्ध के लेखक का नाम बाबू गुलाब राय तथा 'अजन्ता' निबन्ध के लेखक का नाम भगवतशरण उपाध्याय है।
19. 'ईर्ष्या, तू न गयी मेरे मन से' निबन्ध रामधारीसिंह 'दिनकर' की 'अर्द्धनारीश्वर' रचना से संकलित है।
20. हिन्दी में मौलिक नाटकों का आरम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है।

## 2. कहानी

1. कहानी उस साहित्यिक गद्य-विधा को कहते हैं, जिसमें जीवन के किसी एक पक्ष का कल्पना-मिश्रित, मार्मिक एवं रोचक चित्रण होता है।
2. कहानी के तत्त्व निम्नलिखित हैं—1. कथावस्तु, 2. चरित्र-चित्रण, 3. कथोपकथन, 4. भाषा-शैली, 5. देश-काल एवं वातावरण, 6. उद्देश्य।
3. विषय के आधार पर हिन्दी कहानियों का विभाजन इस प्रकार है—1. ऐतिहासिक, 2. सामाजिक, 3. प्रतीकवादी 4. यथार्थवादी, 5. मनोवैज्ञानिक, 6. हास्य-व्यंग्यात्मक आदि।
4. हिन्दी की प्रथम कहानी का नाम 'इन्दुमती' है।
5. आधुनिक कहानी का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन के भोगे हुए सत्य की यथार्थ अभिव्यक्ति का चित्रण करना है।
6. प्रेमचन्द की एक प्रसिद्ध कहानी का नाम 'मंत्र' है।
7. 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक का नाम 'इंशा अल्ला खाँ' है।
8. 'झलमला' कहानी के लेखक का नाम पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी है।
9. 'पूस की रात', 'कफन' और 'मंत्र' कहानी के लेखक मुंशी प्रेमचन्द्र हैं।
10. हिन्दी के दो प्रसिद्ध कहानी-लेखकों के नाम हैं—1. जयशंकर प्रसाद, 2. मुंशी प्रेमचन्द्र।
11. शुक्ल युग के दो प्रसिद्ध कहानी-लेखकों के नाम हैं—1. भगवतीचरण वर्मा, 2. चतुरसेन शास्त्री।

12. शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख कहानीकार हैं—1. इलाचन्द्र जोशी, 2. राजेन्द्र यादव।
13. 'उसने कहा था' कहानी के लेखक का नाम हैं—चंद्रधर शर्मा गुलेरी।
14. प्रेमचंद के बाद के दो कहानीकार हैं—जैन्द्र कुमार, यशपाल।
15. प्रेमचंद के समकालीन दो कहानीकारों के नाम हैं—1. जयशंकर प्रसाद, 2. सुदर्शन।
16. दो नए कहानीकारों के नाम हैं—1. आशीष चौधरी 2. रवि बुले।
17. दो महिला कहानीकारों के नाम हैं—1. शिवानी 2. कृष्णा सोबती।
18. जयशंकर प्रसाद की दो कहानियों के नाम हैं—1. आकाशदीप, 2. इन्द्रजाल।

## 3. उपन्यास

1. मानव-जीवन, समाज या इतिहास के यथार्थ सत्य को संवाद एवं दृश्यात्मक घटनाओं पर आधारित चित्रण के माध्यम से पाठकों के सामने रखने वाली अथवा यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने वाली विधा को ही उपन्यास कहते हैं।
2. उपन्यास के छह तत्त्व हैं—1. कथावस्तु, 2. चरित्र-चित्रण, 3. कथोपकथन या संवाद, 4. भाषा-शैली, 5. देश-काल तथा वातावरण, 6. उद्देश्य।
3. विषय के आधार पर हिन्दी उपन्यासों के भेद किए जा सकते हैं—1. सामाजिक, 2. ऐतिहासिक, 3. आंचलिक, 4. मनोवैज्ञानिक, 5. पौराणिक, 6. राजनैतिक, 7. रहस्यात्मक आदि।
4. हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास का नाम 'परीक्षा गुरु' है।
5. शुक्ल युग के दो प्रमुख उपन्यासकार हैं—1. प्रेमचन्द, 2. आचार्य चतुरसेन शास्त्री।
6. शुक्ल युग के सबसे प्रसिद्ध उपन्यास लेखक प्रेमचन्द हैं। उनके एक प्रमुख उपन्यास का नाम 'गोदान' है।
7. प्रेमचन्द के दो उपन्यास हैं—1. प्रेमाश्रम, 2. निर्मला।
8. प्रेमचन्द के समकालीन दो प्रमुख उपन्यासकार निम्नलिखित हैं—1. आचार्य चतुरसेन शास्त्री, 2. भगवतीप्रसाद वाजपेयी।
9. प्रेमचन्द के उपन्यास ग्रामीण जीवन, नारी-उद्धार, समाज-सुधार, किसान एवं मजदूरों की दीन-हीन दशा और राष्ट्रीय चेतना आदि विषयों पर आधारित हैं।
10. 'सेवासदन', 'गबन' और 'गोदान' के लेखक का नाम मुंशी प्रेमचन्द है।
11. प्रेमचन्द के बाद के दो उपन्यासकार हैं—जैनेन्द्र कुमार, इलाचन्द्र जोशी।
12. 'मृगनयनी' के लेखक का नाम वृन्दावनलाल वर्मा है।
13. जयशंकर प्रसाद के दो उपन्यासों के नाम हैं—'तितली', 'कंकाल'।
14. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के दो उपन्यासों हैं—'चारुचन्द्र-लेख', 'अनामदास का पोथा'।
15. हिन्दी के प्रमुख दो सामाजिक उपन्यासकार हैं—उपेन्द्रनाथ 'अश्क', वृन्दावनलाल वर्मा।
16. शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख उपन्यासकार हैं—1. जैनेन्द्र, 2. यशपाल।
17. दो आंचलिक उपन्यासकार हैं—फणीश्वर 'रेणु', नागार्जुन।

**18.** दो मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के नाम हैं—जैनेन्द्र कुमार, सच्चिदानन्द हीरानान्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'।

**19.** 'शेखर : एक जीवनी' के लेखक का नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायान 'अज्ञेय' है।

**20.** 'तितली' उपन्यास के लेखक जयशंकर प्रसाद, 'गुनाहों के देवता' उपन्यास के लेखक धर्मवीर भारती और 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास के लेखक का नाम हजारी प्रसाद द्विवेदी है।

**21.** 'चंद्रकांता-संतति' के लेखक का नाम देवकीनन्दन खत्री है।

**22.** उपन्यास और कहानी में अंतर निम्नलिखित हैं—

1. उपन्यास का आकार बड़ा होता है, कहानी आकार में छोटी होती है।
2. उपन्यास की कथा लंबी और वैविध्यपूर्ण होती है जबकि कहानी की कथा संक्षिप्त तथा वैविध्यविहीन होती है।
3. उपन्यास में पात्रों की अधिकता रहती है जबकि कहानी में पात्रों की संख्या कम होती है।

## 4. नाटक

**1.** नाटक साहित्य की उस दृश्य विधा को कहते हैं, जिसमें अभिनय, नृत्य, संवाद, आकृति, वेशभूषा और संगीत के माध्यम से अलौकिक आनन्द की अनुभूति की जाती है।

**2.** हिन्दी-नाटक के विकास को निम्नलिखित पाँच भागों में विभक्त किया जा सकता है—

1. पूर्व-भारतेन्दु काल — 1643 ई० से 1866 ई०
2. भारतेन्दुकाल — 1867 ई० से 1904 ई०
3. उत्तर-भारतेन्दु काल — 1905 ई० से 1915 ई०
4. प्रसाद काल — 1915 ई० से 1920 ई०
5. आधुनिक काल — 1920 ई० से अब तक।

**3.** भारतीय आचार्यों ने नाटक के पाँच तत्त्व बताए हैं—1. कथावस्तु, 2. नायक, 3. रस, 4. अभिनय, 5. वृत्ति।

**4.** पाश्चात्य विद्वानों ने नाटक के प्रमुख छह तत्त्व बताए हैं—1. कथावस्तु, 2. चरित्र-चित्रण, 3. कथोपकथन, 4. देश-काल, 5. भाषा-शैली, 6. उद्देश्य।

**5.** शुक्ल युग के दो नाटकों के नाम हैं—1. ध्रुवस्वामिनी 2. शतरंज के खिलाड़ी।

**6.** शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख नाटककार के नाम इस प्रकार हैं—1. धर्मवीर भारती, 2. लक्ष्मीनारायण मिश्र।

**7.** जयशंकर प्रसाद हिन्दी नाटक के विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जयशंकर प्रसाद के दो ऐतिहासिक नाटक हैं—1. अजातशत्रु 2. चन्द्रगुप्त।

**8.** 'चंद्रगुप्त' नाटक के रचनाकार का नाम जयशंकर प्रसाद है।

**9.** प्रसादोत्तरकाल के दो नाटककारों के नाम हैं—1. विष्णु प्रभाकर, 2. मोहन राकेश।

**10.** प्रसाद के परवर्ती दो नाटककार सेठ गोविन्ददास, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' हैं।

**11.** 'अंधायुग' के रचनाकार का नाम धर्मवीर भारती है।

**12.** 'लहरों के राजहंस' के रचनाकार का नाम मोहन राकेश है।

**13.** हिन्दी रेडियो-नाटककारों के नाम इस प्रकार हैं—सुमित्रानन्दन पन्त, उदयशंकर भट्ट, विष्णु प्रभाकर, अमृतलाल नागर, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', चिरंजीत, सत्येन्द्र शरत् आदि।

**14.** छायावादी युग के दो नाटककारों के नाम हैं—1. जयशंकर प्रसाद, 2. हरिकृष्ण प्रेमी।

**15.** उदयशंकर भट्ट नाटक विधा के लेखक हैं।

**16.** लक्ष्मी नारायण लाल, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना वर्तमान युग के दो प्रमुख नाटककार हैं।

## 5. एकांकी

**1.** एक अंक में समाप्त हो जाने वाले नाटक को एकांकी कहते हैं।

**2.** विषय के आधार पर एकांकी के भेद हैं—1. पौराणिक, 2. राजनैतिक, 3. सांस्कृतिक, 4. ऐतिहासिक, 5. सामाजिक, 6. चारित्रिक, 7. तथ्यपरक।

**3.** एकांकी के तत्त्व इस प्रकार हैं—1. कथावस्तु, 2. पात्र एवं चरित्र-चित्रण, 3. सम्वाद, 4. भाषा-शैली, 5. देश-काल तथा वातावरण, 6. उद्देश्य।

**4.** एकांकी और नाटक में निम्नलिखित अंतर हैं—

1. एकांकी में एक ही अंक होता है। जबकि नाटक में अनेक अंक होत हैं।
2. एकांकी एक घटना पर ही आधारित होता है। जबकि नाटक में एक मुख्य कथा तथा अनेक अन्त:कथाएँ होती हैं।
3. एकांकी में कम पात्र और देश-काल सीमित होता है। जबकि नाटक में अधिक पात्र होते हैं और देश-काल विस्तृत होता है।
4. एकांकी संक्षिप्त होने के कारण कम समय में ही अभिनीत हो जाता है। जबकि नाटक बड़ा होने के कारण अधिक समय में अभिनीत होता है।

**5.** दो प्रमुख एकांकीकार और उनके द्वारा लिखित एक-एक एकांकी का नाम इस प्रकार है—1. डॉ० रामकुमा वर्मा—दीपदान 2. उदयशंकर भट्ट—नए मेहमान।

**6.** 'भुवनेश्वर' गद्य की एकांकी विधा केविषय के लिए प्रसिद्ध हैं।

**7.** शुक्ल युग के एक एकांकीकार का नाम सेठ गोविन्ददास है।

**8.** शुक्लोत्तर युग के एक एकांकीकार का नाम उपेन्द्रनाथ 'अश्क' है।

## 6. पत्र-पत्रिकाएँ

**1.** हिन्दी की दो प्रसिद्ध पत्रिकाओं के नाम हैं—1. सरस्वती 2. हंस।

**2.** शुक्ल युग में प्रकाशित 'हंस' पत्रिका का संपादन मुंशी प्रेमचन्द ने किया।

**3.** 'सरस्वती' पत्रिका द्विवेदी युग में प्रकाशित हुई।

**4.** 'साहित्य-सन्देश' और 'कर्मवीर' शुक्ल युग की दो प्रमुख पत्रिकाएँ हैं।

**5.** 'कादाम्बिनी' और 'सारिका' शुक्लोत्तरयुगीन दो प्रमुख पत्रिकाएँ हैं।

**6.** 'बालबोधिनी' पत्रिका के सम्पादक का नाम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र था।

**7.** गुलाबराय ने आगरा से प्रकाशित 'साहित्य-सन्देश' नामक पत्रिका का सम्पादन किया।

**8.** हिन्दी साहित्य के सर्वतोमुखी विकास में योगदान देने वाली दो प्रमुख पत्रिकाओं के नाम हैं—1. हिन्दी प्रदीप, 2. सरस्वती।

9. 'चाँद' पत्रिका के संपादकों के नाम हैं—रामरख सिंह सहगल, महादेवी वर्मा, नंद किशोर तिवारी।

'मतवाला' पत्रिका के संपादकों के नाम हैं—महादेव प्रसाद सेठ, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'।

10. वर्तमान समय में प्रचलित दो प्रमुख पत्रिकाओं के नाम हैं—पहल, नया पथ।

## 7. अन्य गद्य विधाएँ

1. हिन्दी गद्य की विभिन्न आधुनिक विधाओं में से दो के नाम हैं—1. आत्मकथा, 2. रेखाचित्र।
2. आत्मकथा की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—
   1. आत्मकथा में लेखक अपने जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन करता है।
   2. आत्मकथा में लेखक अपने जीवन की विभिन्न घटनाओं के फलस्वरूप स्वयं पर पड़े मानसिक एवं भावात्मक प्रभावों का उल्लेख करता है।
3. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' तथा राहुल सांकृत्यायन हिन्दी के दो प्रमुख आत्मकथा-लेख हैं।
4. जीवनी में किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति का जीवन-चरित्र प्रस्तुत किया जाता है तथा इसे किसी भी व्यक्ति द्वारा लिखा जा सकता है, किन्तु आत्मकथा लेखक के स्वयं के जीवन पर आधारित होती है तथा यह उस लेखक द्वारा स्वयं लिखी गई रचना होती है।
5. डॉ० नगेंद्र आलोचना विधा के लेखक हैं।
6. नामवर सिंह आलोचना विधा के प्रमुख लेखक हैं।
7. आधुनिक हिन्दी साहित्य के दो प्रमुख आलोचकों के नाम हैं—1. डॉ० रामकुमार वर्मा, 2. डॉ० नगेन्द्र।
8. शुक्लोत्तर युग के दो प्रमुख आलोचकों/समालोचकों/ साहित्यकारों के नाम हैं—1. डॉ० रामकुमार वर्मा, 2. डॉ० नगेन्द्र।
9. महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी हिन्दी के दो प्रमुख संस्मरण-लेखक हैं।
10. रेखाचित्र तथा संस्मरण के लिए प्रसिद्ध एक-एक रचनाकार का नाम क्रमश: रामवृक्ष बेनीपुरी एवं कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हैं।
11. रेखाचित्र की दो विशेषताएँ इस प्रकार हैं—1. वस्तु या व्यक्ति के प्रति लेखक का रागात्मक संबंध, 2. व्यक्ति-विशेष की चारित्रिक विशेषताओं का उभार।
12. रेखाचित्र में किसी के चरित्र का कलात्मक चित्र प्रस्तुत किया जाता है, जबकि संस्मरण में किसी के चरित्र का वास्तविक रूप प्रदर्शित किया जाता है।
13. बनारसीदास चतुर्वेदी व अमृतराय, हिन्दी के दो प्रमुख जीवनी-लेखक हैं।
14. एक अच्छी जीवनी की दो विशेषताएँ हैं—1. प्रामाणिक जानकारी, 2. आत्मीयता।
15. 'दक्षिण भारत की एक झलक' के रचनाकार का नाम विनयमोहन शर्मा है।
16. 'कलम का सिपाही' कथासम्राट प्रेमचन्द की जीवनी है।
17. 'आवारा मसीहा' जीवनी विधा की रचना है।
18. शुक्ल युग के दो प्रमुख जीवनी-लेखक एवं उनकी कृतियों निम्नलिखित हैं—1. अमृतराय—कमल का सिपाही। 2. डॉ० रामविलास शर्मा—निराला की साहित्य-साधना।

**19.** 'कलम का सिपाही' नामक कृति के लेखक का नाम अमृतराय है।

**20.** 1. यात्रा-साहित्य—राहुल सांकृत्यायन। 2. रिपोर्ताज—कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'।

**21.** डायरी की दो विशेषताएँ इसप्रकार हैं—1. प्रतिदिन की घटनाओं का कलात्मक प्रस्तुतीकरण, 2. स्पष्ट कथन।

**22.** हिन्दी के दो प्रमुख डायरी लेखकों और उनके द्वारा लिखित डायरी का नाम हैं—1. धीरेन्द्र वर्मा—मेरी कालेज डायरी, 2. प्रभाकर माचवे—पश्मिच में बैठकर पूर्व की डायरी।

**23.** रिपोर्ताज की प्रमुख विशेषताएँ हैं—1. घटना के प्रत्यक्ष निरीक्षण पर आधारित, 2. सम-सामयिक घटनाओं का यथार्थ चित्रण, 3. पत्रकारिता के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रयुक्त, 4. कुशल अभिव्यक्ति, 5. प्रभावोत्पादकता।

दो **रिपोर्ताज-लेखकों** के नाम हैं—1. प्रभाकर माचवे, 2. विष्णु प्रभाकर।

**24.** यात्रा-साहित्य के दो प्रमुख लेखकों के नाम हैं—1. मोहन राकेश, 2. विनय मोहन शर्मा।

**25.** गद्य-काव्य (गद्य-गीत) गद्य तथा काव्य के बीच की विधा है। इसमें गद्य के माध्यम से किसी भावपूर्ण विषय की काव्यात्मक अभिव्यक्ति होती है। इसमें लेखक अपने हृदय की संवेदना की अभिव्यक्ति इस प्रकार करता है कि पाठक उसे पढ़कर रसमय हो जाता है।

**26.** गद्य काव्य की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. इसका ध्येय प्राय: निश्चित होता है तथा इसमें केवल एक ही केन्द्रीय भाव की प्रधानता होती है।
2. इसकी शैली प्राय: चमत्कारपूर्ण एवं कवित्वपूर्ण होती है तथा विचारों का समावेश भी प्राय: भावों के ही रूप में होता है।

**27.** हिन्दी के दो गद्य-काव्य लेखकों के नाम हैं—वियोगी हरि, राय कृष्णदास।

**28.** 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' और 'नीड़ का निर्माण फिर' आत्मकथा विधा की रचना हैं।

**29.** 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' के रचनाकार का नाम डॉ० हरिवंशराय बच्चन है।

**30.** 'मेरी अपनी आत्मकथा' के लेखक का नाम पांडेय बेचन शर्मा है।

**31.** 'जंजीरें और दीवारें' संस्मरण विधा पर आधारित रचना है।

**32.** विभिन्न गद्य विधाओं के रचनाकारों के रचना सहित नाम

| विधा का नाम | लेखक | सम्बद्ध रचनाएँ |
|---|---|---|
| **निबन्ध** | 1. रामचन्द्र शुक्ल | चिन्तामणि |
| | 2. हजारीप्रसाद द्विवेदी | अशोक के फूल |
| **नाटक** | 1. जयशंकरप्रसाद | चन्द्रगुप्त |
| | 2. मोहन राकेश | लहरों के राजहंस |
| **उपन्यास** | 1. प्रेमचन्द्र | गबन |
| | 2. वृन्दावनलाल वर्मा | मृगनयनी |
| **कहानी** | 1. प्रेमचन्द्र | मंत्र |
| | 2. जयशंकर | ममता |

| | | |
|---|---|---|
| **एकांकी** | 1. रामकुमार वर्मा | दीपदान |
| | 2. उदयशंकर भट्ट | नए मेहमान |
| **रेडियो नाटक** | 1. विष्णु प्रभाकर | सीमा–रेखा |
| | 2. रामकुमार वर्मा | भारत का भाग्य |
| **डायरी** | 1. धीरेन्द्र वर्मा | मेरी कालेज डायरी |
| | 2. मोहन राकेश मोहन | राकेश की डायरी |
| **संस्मरण** | 1. महादेवी वर्मा | पथ के साथी |
| | 2. रामवृक्ष बेनीपुरी | जंजीरें और दीवारें |
| **रेखाचित्र** | 1. रामवृक्ष बेनीपुरी | माटी की मूरतें |
| | 2. महादेवी वर्मा | अतीत के चलचित्र |
| **रिपोर्ताज** | 1. रागेय राघव | एक रिपोर्ट |
| | 2. धर्मवीर भारती | अकाल की एक छाया |
| **गद्य–काव्य** | 1. राय कृष्णदास | साधना–संग्रह |
| **( गद्य–गीत )** | 2. वियोगी हरि | तरंगिणी–संग्रह |
| **आत्मकथा** | 1. गुलाब राय | मेरी असफलताएँ |
| | 2. यशपाल | सिंहावलोकन |
| **भेंटवार्त्ता** | 1. लक्ष्मीचन्द्र जैन | भगवान् महावीर : एक इण्टरव्यू |
| | 2. राजेन्द्र यादव | चेखव : एक इण्टरव्यू |
| **जीवनी** | 1. अमृतराय | कलम का सिपाही |
| | 2. विष्णु प्रभाकर | आवारा मसीहा |
| **यात्रा–साहित्य** | 1. राहुल सांकृत्यायन | घुमक्कड़शास्त्र |
| | 2. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' | अरे! यायावर रहेगा याद |

## बहुविकल्पीय प्रश्न

### उत्तरमाला

**1.** (ग) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (क) **6.** (ख) **7.** (ख) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (ख) **11.** (ग) **12.** (ग) **13.** (ग) **14.** (घ) **15.** (ग) **16.** (क) **17.** (घ) **18.** (ख)।

### हिन्दी गद्य का इतिहास

**1.** (क) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (क) **6.** (घ) **7.** (ग) **8.** (क) **9.** (ग) **10.** (ख) **11.** (घ) **12.** (क) **13.** (घ) **14.** (ख) **15.** (क) **16.** (ग) **17.** (घ) **18.** (ग) **19.** (क) **20.** (ग)।

# 1 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

**(जन्म : सन् 1884 ई० - मृत्यु : सन् 1941 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (ग) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (घ)

## अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–** (क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

## चित्र आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि इसमें किस का वर्णन किया गया है और यह हमारे जीवन में क्या महत्वपूर्ण है?**

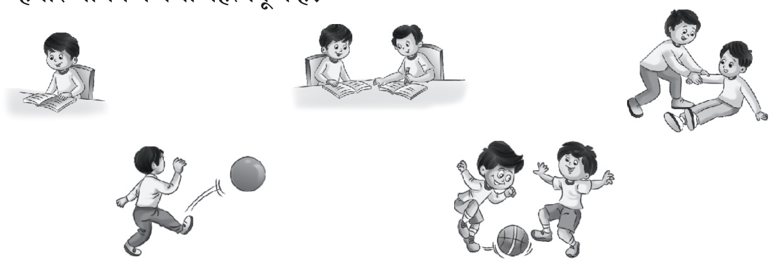

**उत्तर–** दिए गए चित्र में मित्रता का वर्णन किया गया है। मित्रता हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि सच्चा मित्र जीवन के अच्छे–बुरे समय में हमारा साथ देता है।

## कूट आधारित प्रश्न

**1. मनुष्य के पास खाने के लिए नहीं है**

**उत्तर–** (ग) (i) और (iv)

## रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

**1. मित्रता ______________ से उमड़ पड़ती है।**

**उत्तर–** (ख) हृदय

## सुमेलन आधारित प्रश्न

**1. सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

**उत्तर–** (ग) (iii) (i) (iv) (ii)

## सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न

**1. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है–**

**उत्तर–** (घ) केवल (iv)

**2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है–**

**उत्तर–** (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य (घ) सत्य

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. जिस प्रकार औषधि मरणासन्न व्यक्ति को भी संकट से उबार देती है उसी प्रकार एक विश्वासपात्र मित्र व्यक्ति को उसके जीवन-संकट से बाहर कर लेता है। विश्वासपात्र मित्र हमारा बड़ा हितैषी होता है। इसलिए वह हमारे जीवन में समय-समय पर पैदा होने वाली रुग्णताओं को दूर करने में, मार्ग की बाधाओं को हटाने में सहायता करता है। वह हमारी तब मदद करता है जब हम जीवन के किसी गहरे संकट से गुजर रहे होते हैं। वह तन-मन-धन से हमारे साथ जुड़ता है और जीवन के संकट से उबार लेता है। मित्र में हितैषी भाव होता है इसलिए वह हमारे जीवन के रोग को देखकर औषधि की तरह कटु सलाह भी देता है। वह हमारे दोस्तों को लेकर हमारा निंदक भी होता है ताकि हम निर्दोष बनें। इसलिए एक विश्वासपात्र मित्र हमारे लिए एक अच्छी औषधि की भूमिका अदा कर हमारे जीवन को स्वस्थ रखता है।

**2. कुसंगति पर दस वाक्य लिखिए।**

(i) कुसंगति मनुष्य को बुरे रास्ते पर ले जाती है।

(ii) कुसंगति वाले मनुष्य किसी की बात नहीं सुनते हैं और सभी को गलत समझते हैं।

(iii) कुसंगति का शिकार मनुष्य न तो अपने परिवार का कल्याण कर पाता है और न ही अपने समाज व देश के लिए अपने कर्तव्य निभा पाता है।

(iv) कुसंगति से मनुष्य के चरित्र का हनन होता है।

(v) कुसंगति में रहने वाले मनुष्य का कोई सम्मान नहीं करता।

(vi) कुसंगति से मनुष्य की अवनति होती है।

(vii) कुसंगति नीति, सद्वृत्ति व बुद्धि का क्षय करती है।

(viii) कुसंगति से व्यक्ति को भले-बुरे की पहचान नहीं रहती।

(ix) कुसंगति से व्यक्ति स्वार्थी व निर्लज्ज हो जाता है।

(x) कुसंगति से मनुष्य दुष्ट व दुराचारी बन जाता है।

**3. 'मित्र' और 'मित्रता' से सम्बन्धित कुछ सूक्तियाँ संकलित कीजिए।**

(i) सच्चे मित्र गलत रास्ते पर जाने से रोककर अच्छे रास्ते पर
चलते हैं और अवगुण छिपाकर केवल गुणों को प्रकट करते हैं।

(ii) मित्र लेन-देन में शंका न करे।
अपनी शक्ति अनुसर सदा मित्र की भलाई करे।

(iii) जिनके स्वभाव में बुद्धि न हो, वेमूर्ख केवल
हठ करके ही किसी से मित्रता करते हैं।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म सन् 1884 ई० में और उनकी मृत्यु सन् 1941 ई० में हुई।
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने साहित्यिक एवं मनोवैज्ञानिक सम्बन्धी निबन्ध लिखे हैं।
3. शुक्ल जी के एक प्रसिद्ध निबन्ध-संग्रह का नाम 'चिन्तामणि' हैं।
4. रामचन्द्र शुक्ल के दो आलोचना ग्रंथों के नाम हैं—1. रसमीमांस 2. त्रिवेणी।
5. शुक्ल जी ने 'आनन्द कादम्बिनी' व 'काशी नागरी प्रचारिणी' पत्रिकाओं का सम्पादन किया।
6. शुक्ल जी ने हिन्दी-साहित्य की सेवा आलोचक, निबन्धकार, नाटककार, कहानीकार, संपादक व कवि के रूप में की।
7. **जीवनी**—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म सन् 1884 ई० में बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० चन्द्रबली शुक्ल था। शुक्लजी की प्रारम्भिक शिक्षा मिर्जापुर जिले के मिशन स्कूल में हुई। हाईस्कूल की परीक्षा इन्होंने यहीं से उत्तीर्ण की तथा इण्टर की परीक्षा के लिए ये इलाहाबाद चले आए। किन्हीं कारणों से पढ़ाई बीच में छूट गई और इन्होंने मिर्जापुर न्यायालय में नौकरी कर ली। कुछ समय नौकरी करने के बाद स्वाभिमान के कारण नौकरी छोड़ बैठे तथा मिर्जापुर के मिशन स्कूल में चित्रकला के अध्यापक हो गए। स्वाध्याय से इन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बांग्ला, उर्दू, फारसी आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

   सन् 1908 ई० में ये नागरी प्रचारिणी सभा में 'हिन्दी शब्द सागर' के सह-सम्पादक नियुक्त किए गए तथा बहुत समय तक 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' के सम्पादक भी रहे। कुछ समय तक ये काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक रहे तथा बाबू श्यामसुन्दरदास के अवकाश ग्रहण करने के उपरान्त वहीं हिन्दी विभागाध्यक्ष बन गए।

   'आनन्द कादम्बिनी' नामक पत्रिका में इनकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगीं। उस समय इनकी गिनती हिन्दी के उच्चकोटि के विद्वानों में होने लगी थी।

   शुक्लजी ने अपना साहित्य सृजन पहले-पहल कविता में ही किया तथा अंग्रेजी व बांग्ला में कुछ अनुवाद भी किए। बाद में आलोचना इनका प्रिय विषय बन गया। इन्होंने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखकर हिन्दी में इतिहास लेखन की परम्परा का सूत्रपात किया। हिन्दी के इस युग प्रवर्तक आलोचक का निधन सन् 1941 ई० में हुआ।

   हिन्दी निबन्ध को नया आयाम देकर उसे ठोस धरातल पर प्रतिष्ठित करने वाले शुक्लजी हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य आलोचक, श्रेष्ठ निबन्धकार थे। इन्होंने सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक दोनों प्रकार की आलोचनाएँ लिखीं। हिन्दी साहित्य में इनके द्वारा लिखे हुए साहित्यिक एवं मनोविकार सम्बन्धी निबन्धों का अपना विशिष्ट स्थान है। शुक्लजी ने शैक्षिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विषयों पर अनेक निबन्धों का सृजन किया। समीक्षक, निबन्धकार तथा साहित्य के इतिहास के लेखक के रूप में शुक्लजी का योगदान अमूल्य है। शुक्लजी आजीवन साहित्य साधना में व्यस्त रहे। इनकी साहित्यिक सेवाओं के फलस्वरूप ही हिन्दी साहित्य विश्व में समादृत हो सका है।

   आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का सृजन क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। साहित्य की प्राय: सभी विधाओं में

इन्होंने लेखन कार्य किया है। कविता, निबन्ध, नाटक, आलोचना तथा कहानी में इनकी मौलिक प्रतिभा स्पष्ट परिलक्षित होती है। सम्पादन कला में तो शुक्लजी पूर्ण रूप से दक्ष थे।

शुक्ल जी हिन्दी के युग-प्रवर्तक आलोचक हैं। इन्होंने सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दो प्रकार की आलोचनाएँ लिखीं। 'रस मीमांसा' और 'चिन्तामणि' (भाग 1 एवं 2) के निबन्ध सैद्धान्तिक आलोचना के अन्तर्गत आते हैं। 'तुलसी और जायसी की ग्रंथावलियाँ' एवं 'भ्रमरगीत सार' की भूमिका में इन्होंने लम्बी व्यावहारिक समीक्षाएँ लिखी हैं।

नाटक लिखने की ओर भी इनकी रुचि रही, परन्तु इनकी प्रखर बुद्धि इन्हें निबन्ध-लेखन और आलोचना की ओर ले गयी। सत्यता यह है कि शुक्ल जी ने काव्य की अपेक्षा गद्य के क्षेत्र में विशेष कार्य किया।

**मुख्य रचनाएँ**—शुक्ल जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनकी विविध रचनाओं का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है—

1. **निबन्ध-संग्रह**—'चिन्तामणि' (दो भाग) और 'विचार वीथी'।
2. **आलोचना**—'रस मीमांसा', 'त्रिवेणी' (सूर, तुलसी और जायसी पर विस्तृत आलोचनाएँ) तथा 'सूरदास'।
3. **इतिहास**—'हिन्दी साहित्य का इतिहास'।
4. **कहानी**—'ग्यारह वर्ष का समय'।
5. **सम्पादन**—'जायसी ग्रंथावली' 'तुलसी ग्रंथावली, 'भ्रमरगीत सार', 'हिन्दी शब्द-सागर,' 'आनन्द कादम्बिनी' और 'काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका'।
6. **काव्य**—'अभिमन्यु वध'।

## मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**हँसमुख चेहरा, .......................................... मिल गया।'**

(i) लोग व्यक्ति का हँसमुख चेहरा, उसके बात करने का तरीका, उसकी चालाकी, उसकी निर्भीकता आदि गुणों को देखकर उससे मित्रता कर लेते हैं।

(ii) लेखक ने मित्रता का उद्देश्य एक-दूसरे का सहयोग करना, पथ-प्रदर्शन करना, एक-दूसरे पर विश्वास करना, एक-दूसरे को दोषों व त्रुटियों से बचाना, एक-दूसरे को कुमार्ग से बचाना बताया है।

(iii) विश्वासपात्र मित्र की तुलना खजाने से की गई है।

## केस/स्रोत आधारित प्रश्न

**इसी प्रकार .......................................... उत्साही का।**

(i) राम और लक्ष्मण तथा कर्ण और दुर्योधन में भिन्न-भिन्न प्रकृति के होने पर भी बराबर प्रीति और मित्रता रही। राम धीर और शान्त प्रकृति के थे, जबकि लक्ष्मण उग्र और उद्धत प्रकृति (स्वभाव) के थे। इसी प्रकार कर्ण उदार और उच्चाशय प्रकृति का था, जबकि दुर्योधन लोभी स्वभाव का था।

(ii) व्यक्ति अपने से भिन्न गुणवाले व्यक्ति का साथ इसलिए ढूँढ़ता है; क्योंकि वह चाहता है कि उसमें जिस गुण का अभाव है, वह उस गुण से युक्त व्यक्ति का साथ पाकर (मित्रता करके) अपने उस गुण की पूर्ति करना चाहता है। यही कारण है कि निर्बल व्यक्ति बली व्यक्ति का साथ चाहता है।

(iii) राम धैर्यशाली और शान्त स्वभाव के थे, जबकि लक्ष्मण उग्र और उत्तेजित स्वभाव वाले, लेकिन स्वभाव की भिन्नता होने पर भी उनमें प्रगाढ़ स्नेह था। इसी प्रकार कर्ण महान विचारों वाले व दानी थे जबकि दुर्योधन स्वार्थी तथा लोभी था, फिर भी उन दोनों की मित्रता अटूट ही रही। इनके इन अटूट स्नेहसिक्त संबंधों का एकमात्र कारण उनके मध्य उपजी सहानुभूति ही थी जिसने उनके विपरीत स्वभाव या प्रकृति की खाई को पाट दिया था।

## रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

**1. निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**उनके लिए न .......................................... करना चाहिए।**

(i) **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य खंड'** के **'मित्रता'** नामक पाठ से उदधृत है। इसके लेखक आचार्य **'रामचन्द्र शुक्ल'** है।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—आचरणहीन व्यक्तियों के लिए संसार के महान् व्यक्तियों, उच्च आदर्शों, पुरुषार्थ, सच्चे प्रेम, सात्त्विकता, ज्ञानानुभूति आदि का अस्तित्व ही नहीं होता। ये व्यक्ति सदैव अपने नीचा उद्देश्यों की पूर्ति में लगे रहते हैं। बुरे विचारों के कारण इनका हृदय कलुषित हो चुका है। लेखक के अनुसार ऐसे व्यक्ति विनाश की ओर अग्रसर हैं और दया के पात्र हैं। ऐसे लोगों की संगति, चाहे वह जान-पहचान के रूप में ही क्यों न हो, अच्छे चरित्र के व्यक्तियों को भी पतित कर सकती है। इसलिए ऐसे लोगों की संगति नहीं करनी चाहिए।

(iii) बड़े-बड़े ग्रन्थकार अपने ग्रन्थों में ऐसे विचार छोड़कर गए हैं, जिनसे मनुष्य जाति के हृदय में सात्त्विकता की उमंगें उठती हैं।

(iv) कुत्सित विचारों वाले तथा नीचाराम व्यक्तियों की आत्मा अपने इंद्रिय-विजयों में ही लिप्त रहती है इस प्रकार के प्राकृतिक सौंदर्य का आभास नहीं कर पाते।

**2. कुसंग का .......................................... उठाती जाएगी।**

(i) **संदर्भ**—पूर्ववत्।

(ii) **रेखांकित अंशों की व्याख्या**—जीवन में संगति के प्रभाव को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानते हुए आचार्य शुक्ल कहते हैं किबुरे और दृष्ट लोगों की संगति एक भयानक ज्वर के समान है। जिस प्रकार भयानक ज्वर शरीर की सम्पूर्ण शक्ति को क्षीण  कर देता है, उसी प्रकार दुष्टों की संगति में पड़ा व्यक्ति अपनी बुद्धि, विवेक, सदाचार आदि को भी खो बैठता है। बुरी संगति के प्रभाव में पड़कर व्यक्ति अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित का भी ज्ञान खो देता है। विशेष रूप से युवावस्था में जो लोग बुरी संगति में पड़ जाते हैं, वे कभी उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो पाते।

सुसंगति एक ऐसी बाँह के समान है, जो गिरे हुए को उठाती है तथा गिरते हुए को सहारा देती है, अर्थात् सत्संगति मिल जाने पर बुरी संगति में पड़ा हुआ व्यक्ति भी उन्नति की ओर बढ़ सकता है।

(iii) प्रस्तुत गद्यांश से कुसंग को त्यागने और सत्संगति करने का सन्देश दिया गया है।

(iii) किसी भी प्रकार का भयानक ज्वर व्यक्ति की शारीरिक शक्ति का नाश करके उसे दुर्बल बनाता है, जबकि कुसंग का ज्वर उसकी नीति, सद्‌वृत्ति और बुद्धि का नाशकर उसकी आत्मा को दुर्बल बनाता है, इसीलिए कुसंग के ज्वर को सबसे भयानक कहा गया है।

(iii) अच्छी संगति व्यक्ति को सहारा देने वाली भुजा के समान होती है, जो कि व्यक्ति को अवनति के गड्ढे में गिरने से बचाकर उसे उन्नति की ओर अग्रसर करती है।

**अथवा**

अच्छी संगति से हमें उसी प्रकार लाभ मिलता है जिस प्रकार सन्तों के संग रहने से एक तोता भी अच्छी वाणी बोलने लगता है।

(iii) बुरी संगति व्यक्ति को निरन्तर अवनति के गड्ढे में गिराती जाती है; क्योंकि वह उसकी नीति, सद्‌वृत्ति और बुद्धि का नाश करती है।

## भाषा एवं व्याकरण

**1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए–**

| शब्द | पर्यायवाची | शब्द | पर्यायवाची |
|---|---|---|---|
| अश्व | घोड़ा, वाजि | सूर्य | रवि, दिनकर |
| अग्नि | पावक, अनल | नदी | तटिनी, निर्झरणी |
| कमल | सरोज, अरविन्द | रात | रात्रि, निशा |
| चन्द्रमा | शशि, राकेश | पानी | जल, वारि |
| समुद्र | रत्नाकर, जलधि | | |

**2. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग और शब्दों को अलग करके लिखिए–**

| उपसर्ग | शब्द | उपसर्ग | शब्द |
|---|---|---|---|
| अनु | संधान | प्र | वृत्ति |
| सह | अनुभूति | कु | मार्ग |
| आ | चरण | कु | संग |
| सम् | कल्प | उत् | ज्वल |

**3. निम्नलिखित शब्दों से प्रकृति ( मूल-शब्द ) प्रत्यय को अलग करके लिखिए–**

| मूल शब्द | प्रत्यय | मूल शब्द | प्रत्यय |
|---|---|---|---|
| ग्रन्थ | कार | दुर्भाग्य | वश |
| निपुण | ता | चिन्ता | शील |
| आनन्द | मय | कलुष | इत |
| उपयुक्त | ता | लड़का | पन |

सत्व इक सत्य निष्ठ

बुद्धि मान

**4. निम्नलिखित उपसर्गों के मेल से एक-एक शब्द बनाइए–**

सु + यश = सुयश, अन् + उपस्थित = अनुपस्थित, अप + वाद = अपवाद, निर + बल = निर्बल, परि + आवरण = पर्यावरण, अभि + योग = अभियोग, अनु + इति = अन्विति, अधि + शेष = अधिशेष

# 2 जयशंकर प्रसाद

**(जन्म : सन् 1889 ई० - मृत्यु : सन् 1937 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ख) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ख) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (घ) **9.** (ग) **10.** (ख)।

## अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–**(ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

## चित्र आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि इस प्रथा-परम्परा का क्या नाम हैं?**
  - क्या यह प्रथा किसी प्रकार से उपयोगी है?
  - वर्तमान परिपेक्ष में यह प्रथा प्रतिबन्धित क्यों है?

**उत्तर–** दिए गए चित्र में बाल-विवाह को दिखाया गया है। यह प्रथा किसी भी प्रकार से उपयोगी नहीं है। वर्तमान में बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए इस प्रथा पर प्रतिबंध लगाया गया है।

## कूट आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से किसने हुमायूँ के प्राणों की रक्षा की थी?**

**उत्तर–** (घ) केवल (ii)

## रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

- इस पतनोन्मुख प्राचीन ________________ का अन्त समीप है।

**उत्तर–**(ख) सामन्त-वंश

## सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

**उत्तर–** (ग) (iii) (iv) (i) (ii)

## सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

**1. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है–**

**उत्तर–** (क) (a) केवल

**2. निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए**

**उत्तर–** (क) असत्य (ख) सत्य (ग) सत्य (घ) असत्य

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. हिन्दू विधवा को विशेषकर गाँव में दयनीय जीवन जीना पड़ता है। लोग उन्हें किसी समारोह में बुलाना पसंद नहीं करते तथा उसके ससुराल वाले व आस-पड़ोस के लोग उसे देय दृष्टि से देखते हैं।
2. यदि मुझसे इस कहानी का अंत करने को कहाजाए तो मैं इस कहानी का अंत इस प्रकार करूँगा—अश्वारोही ममता के पास आया और उसने ममता को बताया कि शहंशाह ने आपके झोंपड़े की जगह मकान बनाने का ओर जब तक मकान नहीं बन जाएगा तब तक आपको महल में रहने का हुक्म दिया है यह सुनकर ममता स्वास्थ्य ठीक होने लगा और कुछ महीनों बाद जब उसका मकान बन गया तब वह अपने मकान में प्रसन्नतापूर्वक रहने लगी।
3. 'ममता' कहानी के माध्यम से कहानीकार अतिथि का सत्कार करने तथा अपने देश व सभी मनुष्यों से प्रेम करने का सन्देश देना चाहता है क्योंकि अतिथि का सत्कार करना हमारे देश की प्रथा है तथा अपने देश व सभी मनुष्यों से प्रेम करने से व्यक्ति सभी का सम्मान प्राप्त करता है।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**उत्तर**—

1. जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी, सन् 1889 ई० में काशी में हुआ था।
2. प्रसाद जी की मृत्यु 15 नवम्बर, सन् 1937 ई० को हुई।
3. प्रसाद जी के दो कहानी संग्रहों के नाम हैं—प्रतिध्वनि, छाया।
4. प्रसाद जी की दो रचनाओं के नाम हैं—(i) ध्रुवस्वामिनी (ii) कामायनी।
5. प्रसाद जी युग प्रवर्त्तक कवि, भावुक कथाकार, उत्कृष्ट नाटककार एवं श्रेष्ठ निबंधकार के रूप में जाने जाते हैं। नाटक के क्षेत्र में इनके अभिनव योगदान के फलस्वरूप 'प्रसाद युग' का सूत्रपात हुआ तथा काव्य के क्षेत्र में नवीन काव्यधारा के सूत्रपात के कारण इस युग को 'छायावादी युग' कहा गया। प्रसाद जी युग-प्रवर्त्तक रचनाकार थे। उन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन कर हिन्दी साहित्य में अपना नाम किया। उनका साहित्यिक अवदान शाश्वत और चिरस्मरणीय है।
6. **जीवन चरित्र**—जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी, सन् 1889 ई० में काशी के 'सुँघनी साहू' नामक प्रसिद्ध वैश्य परिवार में हुआ। इनके पितामह का नाम शिवरत्न साहू और पिता का नाम देवी प्रसाद था। इनके पितामह शिव के परमभक्त और दयालु थे, जबकि पिता अत्यधिक उदार और साहित्य-प्रेमी थे। प्रसाद जी का बचपन बड़ा सुखमय व्यतीत हुआ। जब ये छोटे ही

थे, तभी इनके पिता का स्वर्गवास हो गया। पिता की मृत्यु के चार वर्ष पश्चात् इनकी माता भी स्वर्ग सिधार गयीं।

माता-पिता की मृत्यु के उपरान्त इनका पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध उनके बड़े भाई शम्भूरत्न जी ने किया। इनका नाम 'क्वींस कॉलेज' में लिखवाया गया, लेकिन स्कूल की पढ़ाई में इनका मन न लगा। अत: घर पर ही इनकी शिक्षा का प्रबन्ध किया गया। घर पर ही इन्होंने योग्य शिक्षकों की देख-रेख में अंग्रेजी और संस्कृत का अध्ययन किया। प्रारम्भ से ही प्रसाद जी को साहित्य के प्रति अनुराग था। ये प्राय: साहित्यिक पुस्तकें पढ़ा करते थे और अवसर मिलने पर कविता भी किया करते थे। आरम्भ में इनके भाई इनकी काव्य-रचना में बाधक रहे, परन्तु इनकी रुचि को देखकर बाद में उन्होंने इसकी पूरी स्वतन्त्रता इन्हें दे दी। प्रसाद जी स्वतन्त्र रूप से काव्य-रचना के मार्ग पर बढ़ने लगे। इन्हीं दिनों इनके बड़े भाई शम्भूरत्न जी का स्वर्गवास हो गया। इससे प्रसाद जी के हृदय को बहुत गहरा आघात लगा। इनकी आर्थिक स्थिति बिगड़ गयी तथा व्यापार भी समाप्त प्राय हो गया। पिताजी के समय से ही चले आ रहे ऋण से मुक्ति पाने के लिए इन्होंने अपनी सम्पूर्ण पैतृक सम्पत्ति बेच दी। इससे इन्हें ऋण से तो मुक्ति मिल गयी, परन्तु इनका जीवन अत्यन्त संघर्षमय हो गया।

इन्हीं संघर्षों और चिन्ताओं के कारण इनका स्वास्थ्य खराब हो गया। इन्हें क्षय रोग ने धर-दबोचा। इस रोग से मुक्ति पाने के लिए इन्होंने पूरी कोशिश की, किन्तु 15 नवम्बर, सन् 1937 ई० को 48 वर्ष की अल्पायु में ये निरन्तर दु:ख और चिन्ताओं से जूझते हुए सदैव के लिए इस संसार से विदा हो गए।

**साहित्यिक योगदान**—प्रसाद जी में शिशुकाल से ही 'होनहार वीरवान' के गुण दिखायी देने लगे थे। उनके पिता जी के यहाँ बहुत-से कवि और विद्वान आते रहते थे। साहित्य चर्चा का प्रभाव बालक प्रसाद पर भी पर्याप्त मात्रा में पड़ा। इस प्रकार उनमें बचपन से ही साहित्यिक प्रतिभा का संचार हो गया था। उनकी पहली कविता नौ वर्ष की अवस्था में ही प्रकाश में आ गयी थी। प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने एक कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार एवं निबन्धकार के रूप में हिन्दी-साहित्य की अपूर्व सेवा की। प्रसाद जी ने भारतीय इतिहास एवं दर्शन का अध्ययन किया। उसी का परिणाम है कि उन्होंने अपनी रचनाओं में भारत के गौरवमय अतीत का सुन्दर चित्रण किया है। नाटक के क्षेत्र में उनके अभिनव योगदान के फलस्वरूप नाटक विधा में 'प्रसाद युग' का सूत्रपात हुआ। काव्य के क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी मौलिक प्रतिभा से हिन्दी-काव्य को नए आयाम प्रदान किए। वे छायावादी काव्यधारा के प्रवर्त्तक कवि थे। उन्हें 'हिन्दुस्तान एकेडेमी' और 'काशी नागरी प्रचारिणी' सभा ने पुरस्कृत किया। उन्होंने अपनी अल्पायु में जो कुछ लिखा, वह हिन्दी-साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

प्रसाद जी युग प्रवर्त्तक कवि, भावुक कथाकार, उत्कृष्ट नाटककार एवं श्रेष्ठ निबंधकार के रूप में जाने जाते हैं। नाटक के क्षेत्र में इनके अभिनव योगदान के फलस्वरूप 'प्रसाद युग' का सूत्रपात हुआ तथा काव्य के क्षेत्र में नवीन काव्यधारा के सूत्रपात के कारण इस युग को 'छायावादी युग' कहा गया। प्रसाद जी युग-प्रवर्त्तक रचनाकार थे। उन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन कर हिन्दी साहित्य में अपना नाम किया। उनका साहित्यिक अवदान शाश्वत और चिरस्मरणीय है।

## मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  **रोहतास–दुर्ग ........................................ कहाँ अंत था?**
  (i) ममता रोहतास–दुर्ग के दुर्गपति के मन्त्री चूड़ामणि की इकलौती पुत्री थी। वह ममता सोन नदी के तेज गंभीर प्रवाह को देख रही थी।
  (ii) उपर्युक्त गद्यांश में हिंदू विधवा की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। उसे समाज का सबसे तुच्छ (दीन–हीन) और बेसहारा प्राणी माना गया है।
  (iii) रोहतास–दुर्ग सोन नदी के तट पर स्थित है।

## केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद (केस/स्रोत) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  **''गला सूख ........................................ हो गया।**
  (i) अश्व से गिरने वाला और थका हुआ इंसान हुमायूँ था।
  (ii) स्त्री का मन यह सोचकर घृणा से विरक्त हो गया कि एक मुगल को जल पिलाकर उसने उसके प्राणों की रक्षा की जबकि मुगलों ने ही उसके पिता को वध किया था।
  (iii) सोचने वाली स्त्री ममता है?

## रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

- **निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  **चौसा के ........................................ सहभागिनी रही।**
  (i) **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक के **'गद्य खंड'** के **'ममता'** नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **'जयशंकर प्रसाद'** है।
  (ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—ममता मृत्युशैया पर लेटी थी। उसकी सेवा–शुश्रुषा के लिए गाँव की दो–तीन स्त्रियाँ उसे चारों ओर से घेरा कर बैठी थीं। यद्यपि उसका कोई सगा–सम्बन्धी न था, किन्तु उसने जीवनभर लोगों के सुख–दु:ख में उनका साथ निभाया था, इसलिए अन्त समय में उसकी सेवा के लिए गाँव की स्त्रियाँ उसके पास उपस्थित थीं।
  (iii) इस गद्यांश में ममता की मिलनसार, परोपकारी और सहयोगिनी विशेषता उजागर हुई है।
  (iv) मुगल–पठान युद्ध से आशय मुगलों व अफगानों के युद्ध से है। यह हुमायूँ व शेरशाह सूरी के बीच हुआ था।

## भाषा एवं व्याकरण

**1. निम्नलिखित शब्दों के दो–दो पर्यायवाची लिखिए–**

| **शब्द** | **पर्यायवाची शब्द** | **शब्द** | **पर्यायवाची शब्द** |
|---|---|---|---|
| सरोवर | तालाब, तड़ाग | वायु | हवा, अनिल |
| गौ | गाय, धेनु | आकाश | अंबर, नभ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| चंद्र | चंद्रमा, मयंक | गणेश | गणपति, एकदंत |
| समुद्र | सागर, रत्नाकर | | |

**2. निम्नलिखित पदों में नियम-निर्देशपूर्वक संधि-विच्छेद कीजिए–**

| पद | सन्धि-विच्छेद | नियम |
|---|---|---|
| निराश्रय | नि: + आश्रय | विसर्ग + आ = रा |
| दुश्चिन्ता | दुस् + चिन्ता | स् + च = श्च |
| पतनोन्मुख | पतन + उन्मुख | अ + उ = ओ |
| भग्नावशेष | भग्न + अवशेष | अ + अ = आ |
| हताश | हत + आश | अ + आ = आ |
| अश्वारोही | अश्व + आरोही | अ + आ = आ |
| दीपालोक | दीप + आलोक | अ + आ = आ |

**3. निम्नलिखित पदों का नाम सहित समास-विग्रह कीजिए—**

| पद | समास-विग्रह | समास का नाम |
|---|---|---|
| कंटक-शयन | कंटकों पर शयन | सप्तमी (अधिकरण) तत्पुरुष |
| आजीवन | जीवन के रहने तक | अव्ययीभाव |
| नर-नारी | नर और नारी | द्वन्द्व |
| दशावतार | दस अवतारों का समूह | द्विगु |
| पीतांबर | पीत है अंबर जिसका अर्थात् कृष्ण | बहुव्रीहि |
| पीतवसन | पीला है जो वस्त्र | कर्मधारय |
| चक्रपाणि | चक्र है पाणि में जिसके अर्थात् विष्णु | बहुव्रीहि |

**4. निम्नलिखित में से उपसर्ग और प्रत्यय से बने शब्दों को अलग-अलग छाँटिए तथा उनसे उपसर्ग और प्रत्यय को अलग कीजिए—**

| सोपसर्ग शब्द | उपसर्ग | प्रत्यययुक्त शब्द | प्रत्यय |
|---|---|---|---|
| अतिथि | अ | पीलापन | पन |
| आजीवन | आ | मंत्रित्व | त्व |
| अनंत | अन् | पंचवर्गीय | ईय |
| दुश्चिन्ता | दुस | भारतीय | ईय |
| उपदेश | उप | | |

# 3 पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

**(जन्म : सन् 1894 ई० - मृत्यु : सन् 1971 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ग) **6.** (ख) **7.** (घ) **8.** (ख) **9.** (घ) **10.** (क)

## अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–**(ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

## चित्र आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि आप दृश्य का वर्णन करने के लिए किस प्रकार के शब्दों और वाक्यों का प्रयोग करेंगे। क्या इस पर कोई निबंध लिखा जा सकता है। इस पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए**

**उत्तर–**दिए गए चित्र में बारिश का दृश्य दिया गया है। इस दृश्य का सरल व सुंदर शब्दों में वर्णन किया जाना चाहिए। हाँ, इस विषय पर निबंध लिखा जा सकता है।

## कूट आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से कौन-सी निबंध की सबसे बड़ी विशेषता है?**

**उत्तर–**(ख) (i) और (iii)

## रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

- निबंध लिखने से पहले ________________ बना लेनी चाहिए।

**उत्तर–**(ख) रूपरेखा

## सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

**उत्तर–**(ख) (iii) (i) (iv) (ii)

## सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

**1. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?**

**उत्तर–**(घ) (i) और (iii)

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1. अच्छे निबन्ध की आठ विशेषताएँ हैं—**

(i) निबन्ध छोटा होना चाहिए, क्योंकि बड़े निबन्ध में रचना की सुन्दरता नहीं बनी रह सकती।

(ii) निबन्ध के दो अंग होते हैं—सामग्री, शैली।

(iii) एक अच्छा निबन्ध सुनिश्चित रूपरेखा पर आधारित होता है।

(iv) निबन्ध की भाषा प्रवाहमयी होनी चाहिए,ओर वाक्य एक-दूसरे से सम्बन्धित होने चाहिए।

(v) निबन्ध में अलंकारों, मुहावरों और लोकोक्तियों का समावो भी होना चाहिए।

(vi) निबन्ध लेखन के भावों की सच्ची अभिव्यक्ति होनी चाहिए।

(vii) निबन्ध की भाषा इस प्रकार की होनी चाहिए कि उससे पाठक के समक्ष निबन्ध के विषय का एक प्रकार का चित्र अंकित हो जाये।

(viii) निबन्ध का शीर्षक विषय के अनुरूप होना चाहिए जो उसे पूर्णरूप से परिभाषित करे।

**2.** **भारतीय इतिहास के प्रमुख सुधारक**—बुद्वदेव, महावीर स्वामी, नागार्जुन, शंकराचार्य, कबीर, नानक, राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी आदि है।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**उत्तर**—

**1.** पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी का जन्म सन् 1894 ई० में जबलपुर जिले के खैरागढ़ नामक स्थान पर हुआ।

**2.** बख्शी जी ने 'सरस्वती' और 'छाया' नामक दो पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

**3.** बख्शी जी द्विवेदी युग के प्रमुख साहित्यकार हैं।

**4.** बख्शी जी ने हिन्दी गद्य की 'निबन्ध', 'आलोचना', 'कहानी', 'काव्य' विधाओं पर अपनी लेखनी चलायी।

**5.** पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी की दो प्रसिद्ध रचनाओं का नाम हैं—1. कुछ बिखरे पन्ने, 2. झलमला।

**6.** बख्शी जी की शैली के दो प्रकार हैं—1. विचारात्मक शैली, 2. भावात्मक शैली।

**7.** **जीवनी**—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले के खैरागढ़ नामक स्थान पर सन् 1894 ई० में हुआ था। इनके पिता का नाम पुन्नालाल बख्शी था। इनके पिता तथा बाबा दोनों ही साहित्यानुरागी थे। माता-पिता के साहित्यिक परिवेश में इनका लालन-पालन हुआ। बी०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त ही 'सरस्वती' पत्रिका में इनकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगी थीं। बख्शी जी ने अपने जीवन का ध्येय प्रारम्भ में ही साहित्य को बना लिया था। प्रारम्भ में इनकी कविताएँ तथा कहानियाँ 'हितकारिणी' पत्रिका में प्रकाशित हुआ करती थीं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी इनकी रचनाओं से बहुत प्रभावित होते थे। जब ये द्विवेदीजी के सम्पर्क में आए तो इनकी कविता-कहानियाँ तथा लेख 'सरस्वती' में प्रकाशित होने लगे। द्विवेदीजी इन्हें अपना उत्तराधिकारी मानते थे और जब द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' के सम्पादन का कार्यभार छोड़ा तो सम्पादन का कार्यभार बख्शी जी ने सँभाल लिया।

इन्होंने सन् 1920 ई० से सन् 1927 ई० तक बड़ी कुशलतापूर्वक 'सरस्वती' का सम्पादन किया। इन्होंने कुछ समय तक 'छाया' नामक पत्रिका का भी सम्पादन किया। सम्पादन-कार्य छोड़ने के बाद बख्शी जी खैरागढ़ में शिक्षक के पद पर कार्य करने लगे। कई वर्षों तक शिक्षक का कार्य करने के पश्चात् उन्होंने अवकाश ग्रहण कर लिया और खैरागढ़ में ही निवास करने लगे।

इनकी कविताएँ स्वच्छन्दतावादी थीं, जिन पर अंग्रेजी कवि वड्र्सवर्थ का प्रभाव था। बख्शीजी

की प्रसिद्धि का मुख्य आधार निबन्ध लेखन था। बख्शीजी एक शिक्षक थे तथा शिक्षण कार्य करते रहने के बाद सन् 1971 ई० में इनका निधन हो गया।

बख्शी जी ने साहित्य सेवा को ही अपने जीवन का प्रमुख लक्ष्य बनाया।

द्विवेदी जी के संपर्क में आकर बख्शी जी को अपनी साहित्यिक प्रतिभा निखारने का पर्याप्त अवसर प्राप्त हुआ। बख्शी जी को संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। विश्व साहित्य में इनकी अच्छी पैठ थी। इन्होंने स्वच्छंदतावादी कविताओं के साथ-साथ उच्चकोटि के ललित निबंध और समीक्षात्मक कृतियों की रचना भी की। इन्होंने जीवन, समाज, धर्म, संस्कृति आदि विषयों पर श्रेष्ठ निबंध कहानी, आलोचना, अनुवाद आदि पर अपनी लेखनी चलाई। एक संपादक के रूप में हिंदी साहित्य को इनका विशेष योगदान प्राप्त हुआ।

**भाषा-शैली**—बख्शी जी ने विचारात्मक शैली का प्रयोग अपने निबन्धों में कम मात्रा में ही किया है। इस शैली के वाक्य छोटे-छोटे, शृंखलाबद्ध तथा भावपूर्ण हैं। बख्शी जी ने अपने कथात्मक निबन्धों में भावात्मक शैली का प्रयोग है। इस शैली के वाक्य छोटे-छोटे, सरस व प्रवाह युक्त हैं। इस शैली के माध्यम से भाषा में सजीवता, चित्रात्मकता व गतिशीलता उत्पन्न हो गई है। इससे अभिव्यंजना कौशल में भी वृद्धि हुई है। बख्शी जी ने अपने आलोचनात्मक निबन्धों में व्याख्यात्मक शैली को अपनाया है। गम्भीर विषयों के प्रतिपादन में बख्शी जी का रुझान व्याख्यात्मक हो गया है।

**मुख्य रचनाएँ**—बख्शी जी ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से हिन्दी साहित्य को विविध विधाओं पर अनेक मौलिक और विशिष्ट रचनाएँ प्रदान कीं। उनका संक्षेप में विवरण निम्नलिखित है—

1. **निबन्ध-संग्रह**—'तीर्थ रेणु; 'पंच-पात्र' 'प्रबन्ध-पारिजात' 'कुछ बिखरे पन्ने', 'पद्मवन', 'मकरन्द बिन्दु', 'कुछ यात्री' आदि।
2. **आलोचना**—'विश्व-साहित्य', 'हिन्दी-साहित्य-विमर्श', 'हिन्दी उपन्यास-साहित्य', 'हिन्दी कहानी-साहित्य', 'साहित्य-शिक्षा' आदि।
3. **कहानी-संग्रह**—'अंजलि' और 'झलमला'।
4. **काव्य-संग्रह**—'शतदल' और 'अश्रुदल'।
5. **सम्पादन**—'छाया' और 'सरस्वती'।
6. **अनूदित**—'तीर्थ सलिल', 'प्रायश्चित्त' 'उन्मुक्ति का बन्धन' आदि।

बख्शी जी की भाषा-शैली स्वाभाविक, गम्भीर, सरल, सरस, स्पष्ट और प्रभावोत्पादक है। उसमें 'गागर में सागर' भरने की अपार शक्ति है। बख्शी जी ने अपने साहित्य में मुख्य रूप से विचारात्मक, भावात्मक, व्याख्यात्मक शैलियों को प्रयुक्त किया है।

## मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**अंग्रेजी के प्रसिद्ध .......................................... देते हैं।**

(i) जब किसी लेखक को हृदय की स्फूर्ति और मस्तिष्क के आवेग के कारण लेख लिखना ही पड़ता है, उस समय लेखक को विषय की चिन्ता नहीं रहती।

(ii) गार्डिनर के अनुसार एक विशेष मानसिक स्थिति में जब मन में उमंग, हृदय में स्फूर्ति और मस्तिष्क में आवेग उत्पन्न होता है, जब लेखक को लिखना ही पड़ता है।

## केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद (केस/स्रोत) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**जो तरुण .......................................... रहता है।**

(i) वृद्ध अपने अतीत को और युवा अपने भविष्य को वर्तमान में साकार होते देखना चाहता हैं, जिस कारण दोनों की विचारधाराओं में टकराव उत्पन्न हो जाता है। इस टकराव को टालने के लिए बीच के मार्ग को निश्चित कर लिया जाता है, जिसमें अतीत और भविष्य दोनों का समन्वय होता है। इस प्रकार वर्तमान में सदैव सुधारों का समय बना रहता है।

(ii) युवा और वृद्ध व्यक्तियों के विचारों में यह अंतर है कि युवा पुरातन परम्पराओं से विद्रोह (क्रान्ति) करके उन्हें समूल उखाड़कर फेंक देना चाहते हैं और वृद्ध अपने अतीत को वर्तमान में फलीभूत होते देखकर उसको भविष्य के लिए बचाए रखना चाहते हैं।

(iii) तरुण भविष्य को वर्तमान में साकार करना चाहते हैं। वृद्ध अपने अतीत को वर्तमान में लाना चाहते हैं।

## रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

- **निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**मनुष्य जाति के .......................................... माना गया है।**

(i) **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य खंड'** के **'क्या लिखूँ'** नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **'पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी'**

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—आदिकाल से ही समाज में बुराइयाँ व्याप्त रही हैं। उनको दूर करने के लिए समय-समय पर समाज-सुधारक महापुरुषों ने अवतार लिए हैं। समाज की ये बुराइयाँ कभी दूर नहीं होती; क्योंकि एक बुराई को दूर किया जाता है तो चार नई बुराइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं, जिसे हम आज अच्छाई मानकर स्वीकार करते हैं परिस्थितियों के बदल जाने पर कल वही बुराई बन जाती है। इस प्रकार मनुष्य जाति के आज तक के इतिहास में कोई भी ऐसा काल नहीं हुआ, जब समाज बुराइयों से मुक्त रहा हो और समाज में किसी सुधार की आवश्यकता न अनुभव की गई हो।

(iii) आज जो सुधार होते हैं, कल परिस्थितियों के परिवर्तित हो जाने के कारण वही दोष बन जाते हैं, इसलिए दोषों का अन्त नहीं होता।

## भाषा एवं व्याकरण

**1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए—**

| शब्द | पर्यायवाची | शब्द | पर्यायवाची |
|---|---|---|---|
| अमृत | सुधा, अमिय | असुर | दानव, दैत्य |
| इंद्र | सुरेश, देवराज | उपवन | बगीचा, वाटिका |
| कृष्णा | कन्हैया, मुरलीधर | घर | आलय, निकेतन |

| | | | |
|---|---|---|---|
| सरस्वती | शारदा, वीणापाणि | सिंह | शेर, केसरी |

**2. निम्नलिखित शब्दों का इस प्रकार से वाक्यों में प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए—**

विश्वकोश

**वाक्य प्रयोग**—विश्वकोश वह ग्रंथ है जिसमें विश्व के समस्त नियमों का विवरण होता है।

कर्कशता

**वाक्य प्रयोग**—मुझे भी उनकी वाणी की कर्कशता का शिकार होना पड़ा।

विषाद

**वाक्य प्रयोग**—उस शांतिपूर्ण वातावरण में जाते ही मेरे मन का विषाद विलीन हो गया।

आवेग

**वाक्य प्रयोग**—आँसुओं का आवेग उसके काबू से बाहर हो गया।

दूरस्थ

**वाक्य प्रयोग**—हम संचार के साधनों की सहायता से दूरस्थ लोगों से सम्पर्क कर सकते हैं।

अभिव्यक्ति

**वाक्य प्रयोग**—भाषा मनुष्य के मन के विचारों की अभिव्यक्ति का मुख्य साधन है।

गांभीर्य

**वाक्य प्रयोग**—वाक्यों में कुछ अस्पष्टता गांभीर्य ला देती है।

**3. निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग करके लिखिए तथा उस प्रत्यय से निर्मित दो अन्य शब्द बताइए—**

| **शब्द** | **प्रत्यय** | **दो अन्य शब्द** |
|---|---|---|
| विद्वत्ता | ता | प्रभुता, विशालता |
| प्रतिभावान | वान | बलवान, गुणवान |
| सुखद | द | विपद दुखद |
| समीपस्थ | स्थ | दूरस्थ, अधीनस्थ |
| लज्जाशील | शील | प्रगतिशील, विचारशील |
| यथार्थता | ता | लघुता, महानता |
| कठिनाई | आई | चढ़ाई, पढ़ाई |

**4. निम्नलिखित पदों का नाम सहित समास-विग्रह कीजिए—**

| **पद** | **समास-विग्रह** | **समास का नाम** |
|---|---|---|
| ईशकृष्णा | ईश है जो कृष्ण | कर्मधारय समास |
| चारपाई | चार पाये हैं जिसके अर्थात् खाट | बहुव्रीहि समास |
| त्रिदेव | तीन देवताओं का समूह | द्विगु समास |
| नीलांबुज | नीला अंबुज है जो | कर्मधारय समास |
| महाजन | महान है जो जन | कर्मधारय समास |
| नीलकंठ | नीला कंठ है जिसका अर्थात् शिव | बहुव्रीहि समास |
| चतुरानन | चार मुखों का समूह | द्विगु समास |

# 4 डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद

(जन्म : सन् 1884 ई० - मृत्यु : सन् 1963 ई०)

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (क) 5. (ग) 6. (ख) 7. (घ) 8. (ख) 9. (घ) 10. (क)

## अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–**(क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

## चित्र आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए चित्र को देखकर प्रस्तुत कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।**
  **'पर्वों और त्योहारों को भारतीय संस्कृति में एक प्रमुख स्थान प्राप्त है।'**

**उत्तर–**निश्चित ही भारतीय संस्कृति में पर्वों और त्योहारों को प्रमुख स्थान प्राप्त है, मौसम परिवर्तन से लेकर फसल पकने तक, भारत में प्रत्येक परिवर्तन और धर्म से त्योहार का जुड़ाव रहा है। यह भारतीय समाज में एकता का सूत्रपात करते हैं।

## कूट आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से कौन-सा व्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता का अर्थ है?**

**उत्तर–**(घ) केवल (iv)

## रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

- **आज मनुष्य के हाथों में ______________ ने अलौकिक शक्तियाँ प्रदान की हैं।**

**उत्तर–**(ग) विज्ञान

## सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

**उत्तर–**(ख) (ii) (iv) (i) (iii)

## सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

**1. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है**

**उत्तर–**(ग) केवल (iii)

**2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है**

**उत्तर–**(क) सत्य (ख) सत्य (ग) सत्य (घ) असत्य

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. भारतीय संस्कृति में अहिंसा का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल से ही ऋषि मुनियों, राजाओं आदि ने अहिंसा का मार्ग अपनाया। भारत के लोगों ने अहिंसा का मार्ग अपनाकर विदेशी लोगों को भारत में फलने-फूलने का अवसर दिया। महात्मा बुद्ध, स्वामी महावीर जैन, विवेकानन्द आदि लोगों ने भी भारत के लोगों से सदैव अहिंसा का मार्ग अपनाकर जीवन जीने का संदेश दिया। महात्मा गांधी जी ने भी अहिंसा के बल पर लोगों का सही नेतृत्व करके भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराया।

2. **'नैतिकता' पर निबन्ध**—मानव एक सामाजिक प्राणी है और उसे समाज में रहने के लिए कुछ सामाजिक मानदण्डों का पालन करना पड़ता है। सामाजिक मानदण्डों में सत्य, नैतिकता, अहिंसा, परोपकार, नम्रता व सच्चाई जैसे गुण शामिल है। किसी भी व्यक्ति की व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता के लिए उसके जीवन में नैतिकता का गुण बहुत महत्वपूर्ण होता है। नैतिकता मानव के सद्‌गुणों की प्रदर्शित करती है।

   नैतिकता हमारे दैनिक जीवन में सकारात्मक प्रभाव पैदा करती है। नैतिकता की सहायता से हम ईमानदारी से जीवन जीकर हमारे सम्पर्क में आने वाले लोगों से विश्वास और मैत्री स्थापित करते हैं। नैतिकता सुख की कुंजी है। नैतिकता हमें समझदारी से और बिना किसी डर के निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है।

   नैतिकता कोई जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि अस्तित्व और प्रगति के लिए एक बुद्धिमान ओर सफल मार्गदर्शक है। व्यवसाय के साथ-साथ शैक्षणिक संस्थानों और सामाजिक संरचनाओं में नैतिकता आवश्यक है क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण आधारशिला है जिस पर प्रबुद्ध प्रणाली का निर्माण किया जाता है।

   बाल्यवस्था में पढ़े हुए नैतिकता के पाठ पर ही हम अपना सारा जीवन पूरा करते हैं और अपनी पीढ़ी को हस्तान्तरित करते हैं। नैतिकता समाज में बहुत ही अहम भूमिका निभाती हैं क्योंकि नैतिकता ही समाज-सुधार की प्रथम सीढ़ी है। नैतिकता का ही गुण मनुष्य को पशुओं से अलग बनाता है। नैतिकता निश्चित रूप से मानवता की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है।

3. भारतीय संस्कृति के विषय में कुछ विचारकों के विचार निम्न हैं—
   1. **भारतीय संस्कृति सदियों से कहती आ रही है कि मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु संपत्ति है। — रांगेय राघव**
   2. **भारतीय संस्कृति आध्यात्मिकता की अमर आधारशिला पर स्थित है। — स्वामी विवेकानन्द**

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**उत्तर**—

**1.** डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का जन्म सन् 1884 ई० में बिहार राज्य के छपरा जिले के जीरादेई नामक ग्राम में हुआ था।

**2.** राजेन्द्र प्रसाद जी ने राजनीतिक, शैक्षिक, सामाजिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक विषयों पर अपनी लेखनी चलाइयी है।

**3.** राजेन्द्र प्रसाद जी की दो प्रमुख शैलियों के नाम हैं—1. साहित्यिक शैली, 2. भाषण शैली।

**4.** डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने 'देश' नामक पत्रिका का सम्पादन किया।

**5.** डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की दो प्रसिद्ध रचनाओं के नाम हैं—1. संस्कृति का अध्ययन, 2. भारतीय शिक्षा।

**6.** **जीवनी**—भारतरत्न और प्रमुख विचारक राजेन्द्र प्रसाद जी का जन्म सन् 1884 ई० में बिहार राज्य के छपरा जिले के जीरादेई नामक ग्राम में हुआ था। ये बड़े परिश्रमी और मेधावी छात्र थे। इन्होंने 'कलकत्ता विश्वविद्यालय' से एम०ए० और एम०एल० (तत्कालीन 'लॉ' (कानून) की डिग्री) की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। ये अपनी कक्षाओं में सदैव प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते रहे। अध्ययन पूर्ण करने के पश्चात् इन्होंने आजीविका के लिए मुजफ्फरपुर के एक कॉलेज में अध्यापन-कार्य किया। सन् 1911 ई० में वकालत आरम्भ की और सन् 1920 ई० तक कलकत्ता और पटना उच्च न्यायालय में वकालत की।

गांधीजी के आदर्शों और सिद्धान्तों से ये बड़े प्रभावित थे अत: आजादी के आन्दोलन में भाग लेने के लिए सन् 1920 ई० में वकालत छोड़कर पूरी तरह देशसेवा में जुट गए। अपनी देश सेवाओं के कारण ये तीन बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सभापति चुने गए और सन् 1962 ई० तक भारत गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति रहे। सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, निर्भीकता, देशभक्ति, सज्जनता और सादगी उनके रोम-रोम में समायी थी। ये जीवनपर्यन्त हिन्दी और हिन्दुस्तान की सेवा में संलग्न रहे। सन् 1962 ई० में उन्हें भारत की सर्वोच्च उपाधि 'भारत-रत्न' से अलंकृत किया गया। राजेन्द्र बाबू की मृत्यु 28 फरवरी, सन् 1963 ई० को हुई।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद **महान् देशभक्त** होने के साथ-साथ कुशल **लेखक** भी थे। सामाजिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर उनके लेख निरन्तर प्रकाशित होते रहते थे। वे सदैव हिन्दी को राष्ट्रभाषा और राजभाषा बनाने के लिए प्रयत्न करते रहे। उन्हीं के प्रयासों के फलस्वरूप कलकत्ता (परिवर्तित नाम कोलकाता) में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की स्थापना हुई। उन्होंने 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के सभापति पद को भी सुशोभित किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'नागरी प्रचारिणी सभा' और 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' के माध्यम से हिन्दी को समृद्ध बनाने में विशेष योगदान दिया। राजेन्द्र प्रसाद जी ने **'देश'** नामक **पत्रिका** का सफलतापूर्वक **सम्पादन** किया। उनके अनेक लेख एवं व्याख्यान तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते थे, जिनमें विचारों की क्रमबद्धता और स्पष्टता, भाषा में सरलता और स्वाभाविकता तथा हृदय की संवेदनशीलता और देशभक्ति के एक साथ दर्शन होते हैं। वह **हिन्दी** के साथ **अंग्रेजी भाषा** में भी लिखते थे। इस प्रकार डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का हिन्दी को साहित्यिक अवदान महान् है।

**प्रमुख रचनाएँ**—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की मुख्य रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—
'भारतीय शिक्षा,' 'गांधीजी की देन', 'शिक्षा और संस्कृति', 'मेरी आत्मकथा', 'मेरी यूरोप-यात्रा,' 'खादी का अर्थशास्त्र,' 'संस्कृति का अध्ययन,' 'चम्पारन में महात्मा गांधी,' 'बापू के कदमों में,' 'साहित्य' तथा अन्य प्रकाशित भाषण आदि।

## मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**1. भिन्न-भिन्न .......................................... बात नहीं।**

(i) भिन्न धर्मों के मानने वाले सारी दुनिया के सभी देशों में बसे हुए है।

(ii) भारत की बोलियों एवं संप्रदायों के संबंध में यह बताया गया है कि इन दोनों की गिनती आसान नहीं है।

## केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद (केस/स्रोत) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**यह केवल .......................................... हो जाता है।**

(i) भारत की अनेकता में जो एकता की भावना है, उसी को भारतीय संस्कृति का नाम दिया जा सकता है?

(ii) भारत की अलग-अलग नदियों के उद्‌गम हो सकते हैं। इनकी धाराएँ भी अलग-अलग बहती हैं और प्रदेश के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के अन्न और फल-फूल पैदा करती हैं; पर सबमें एक ही शुद्ध, सुंदर, स्वस्थ और शीतल जल बहता रहा है, जो उद्‌गम और संगम में एक ही हो जाता है।

## रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

- **निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**1. यह एक .......................................... गया है।**

(i) **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'गद्य खंड' के 'भारतीय संस्कृति' नामक पाठ से उद्‌धृत है। इसके लेखक 'डॉ० राजेन्द्र प्रसाद' है।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद कहते हैं कि भारत की राट्रीय एकता की प्राण-शक्ति इसकी नीति और इसके अध्यात्म में निहित है। वास्तविकता यह है कि भारतीय संस्कृति में पवित्र चरित्र तथा आत्मा सम्बन्धी चिन्तन का झरना सदा से ही अबाध गति से बहता रहा है। यह झरना कभी स्पष्ट दिखता हुआ और कभी परोक्ष रूप में बहता रहा है। हमारे सामने समय-समय पर उच्च चरित्र वाले तथा धार्मिक एवं आत्मिक चेतना से सम्पन्न महापुरुष आते रहे हैं। यह हमारा सौभाग्य ही कहा जाएगा कि आधुनिक युग में इस चरित्र और अध्यात्मक की सजीव एवं साकार मूर्ति, महात्मा गांधी के रूप में हमारा नेतृत्व कर ही थी। नैतिक एवं आध्यात्मिक चेतना के इस मूर्त रूप को अर्थात् महात्मा गांधी को प्रत्यक्ष रूप से हमने चलते-फिरते तथा हँसते-रोते भी देखा है।

(iii) गद्यांश में राष्ट्रीय एकता की भावना नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत है।

(iv) मानव मात्र के लिए जीवन के लिए सत्य और अहिंसा आवश्यक हो गए हैं।

(v) लेखक ने अमर तत्त्व का स्रोत सत्य व अहिंसा को बताया है।

**2. आज विज्ञान ........................................... नियंत्रित भी।**

(i) **संदर्भ**—पूर्ववत।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—वर्तमान में विज्ञान के बढ़ते प्रचार-प्रसार और पाश्चात्य संस्कृति की बयार ने भारतीय संस्कृति के विभिन्न तत्वों को अलग-थलग कर दिया है। इसीलिए एक व्यक्ति अथवा उपभोग-समूह दूसरे व्यक्ति अाविा उपभोग-समूह को नीचा दिखाने के उपक्रम में लगा है। लेखक कहता है कि **आज हमें भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए उसके विभिन्न तत्वों में समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता आ पड़ी है। इस समन्वय के सन्दर्भ में लेखक एक उपाय की ओर संकेत करते हुए कहता है कि हमारी साहित्यिक कृतियाँ इस विषय में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। प्रत्येक प्रादेशिक भाषा में अनेकानेक आनन्द प्रदान करनेवाली व्यक्ति की विचारधारा में परिवर्तन करके उसमें नैतिकता और चरित्र का विकास करनेवाली साहित्यिक कृतियाँ मौजूद हैं, किन्तु यहाँ सबसे बड़ी समस्या यह है कि किसी प्रादेशिक भाषा में छपी किसी कृति का रसास्वादन अन्य भाषा-भाषी प्रदेश के लोगों को कैसे कराया जा सके। इन कृतियों के ज्ञान-विज्ञान को दूसरे प्रदेशों के लोगों तक पहुँचाने के लिए इन कृतियों का दूसरी प्रादेशिक भाषाओं में उत्तम अनुवाद किया जाना आवश्यक है।** यहाँ लेखक एक और सुझाव देता है कि सभी भाषाओं की कृतियों का दूसरे प्रदेशों की सभी भाषाओं में अनुवाद किया जाना सम्भव नहीं है; किन्तु उन सबका भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी की देवनागरी लिपि में अनुवाद करने में कोई समस्या नहीं है। देवनागरी लिपि में अनुवाद करने का सुझाव देने के पीछे लेखक का मन्तव्य सम्भवत: यही है कि भारत के प्रत्येक भाशा-भाषी को राष्ट्रभाषा हिन्दी का इतना ज्ञान अवश्य हो कि वह उसे पढ़ और समझ सके।

लेखक यह भी रेखांकित करता है कि यदि सम्पूर्ण भारत की कृतियों को न सही तो कम से कम उत्तर भारत की कृतियों को देवनागरी में प्रकाशित कराया जाना चाहिए क्योंकि उत्तर भारत की अधिकतर भाषाएँ जैसे; अवधी, भोजपुरी, हरियाणवी आदि हिन्दी से बहुत समानता रखती है। उत्तर भारत का एक व्यक्ति जो अपनी भाषा का ज्ञान रखता है, वह थोड़े ही प्रयास से अन्य उत्तर भारतीय भाषा की कृतियाँ पढ़ सकता है।

(iii) कृतियों को देवनागरी लिपि में छपवाने का सुझाव इसलिए दिया गया है, क्योंकि देवनागरी लिपि एक अत्यन्त सरल व वैज्ञानिक लिपि है। देवनागरी लिपि उत्तर भारत में व्यापक रूप से समझी व पढ़ी जाती है।

## भाषा एवं व्याकरण

**1. निम्नलिखित प्रत्ययों से दो-दो शब्दों की रचना कीजिए—**

| **प्रत्यय** | **प्रत्यययुक्त दो शब्द** | **प्रत्यय** | **प्रत्यययुक्त दो शब्द** |
|---|---|---|---|
| जन्य | प्रकृतिजन्य, भावजन्य | त्व | प्रभुत्व, स्त्रीत्व |
| ईय | भारतीय, पठनीय | पन | पीलापन, बचपन |

| | | | |
|---|---|---|---|
| हट | घबराहट, चिल्लाहट | वट | गिरावट, थकावट |
| ता | सभ्यता, स्वतन्त्रता | | |

**2. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग को मूल शब्दों से अलग कीजिए—**

| | **उपसर्ग** | **मूल शब्द** |
|---|---|---|
| विदेशी | **वि** | **देशी** |
| उपार्जन | **उप** | **अर्जन** |
| उपयोग | **उप** | **योग** |
| अत्याचार | **अति** | **आचार** |
| आदान | **आ** | **दान** |
| परिश्रम | **परि** | **श्रम** |
| प्रत्येक | **प्रति** | **एक** |

**3. निम्नलिखित में समास-विग्रह बताइए—**

| **समस्त-पद** | **समास-विग्रह** |
|---|---|
| धर्म-अर्थ | **धर्म और अर्थ** |
| राम-लक्ष्मण | **राम और लक्ष्मण** |
| चतुष्पाद | **चार पैरों वाला** |
| श्वेतकमल | **सफेद है जो कमल** |
| महात्मा | **महान है जो आत्मा** |
| चंद्रमुखी | **चन्द्र के समान मुख वाली** |

**4. शब्द निम्नलिखित शब्दों में शब्द एवं प्रत्यय बताइए—**

| **शब्द** | **मूल शब्द** | **प्रत्यय** |
|---|---|---|
| प्रतिनिधित्व | **प्रतिनिधि** | **त्व** |
| सुंदरता | **सुंदर** | **ता** |
| विभिन्नता | **विभिन्न** | **ता** |
| स्वतंत्रता | **स्वतन्त्र** | **ता** |
| महत्त्व | **महत्** | **त्व** |
| मधुरता | **मधुर** | **ता** |

## 5 रामधारी सिंह 'दिनकर'

**(जन्म : सन् 1908 ई० - मृत्यु : सन् 1974 ई०)**

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (घ) **6.** (क) **7.** (ग) **8.** (घ)

### अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–**(क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

### चित्र आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि आपके मन में कौन-से विचार उत्पन्न होते हैं? क्या आपको लगता है कि ये सांसारिक वस्तुएँ व्यक्तियों के मध्य ईर्ष्या और कटुता उत्पन्न कर सकती हैं। अपने उत्तर के लिए स्पष्ट कारण दीजिए**

**उत्तर–**चित्र देखकर लगता है कि दोनों व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति बिल्कुल विपरीत है। निश्चित ही सांसारिक वस्तुएँ व्यक्तियों के मध्य ईर्ष्या और कटुता उत्पन्न कर सकती हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने दु:ख से नहीं, अपितु दूसरे के सुख से परेशान रहता है।

### कूट आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से कौन-सा लेखक ने ईर्ष्या से बचने का उपाय बताया है, मानसिक**

**उत्तर–**(घ) केवल (iv)

### रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

- **प्रतिद्वन्द्विता से मनुष्य का ______________ होता है।**

**उत्तर–**(ग) विकास

### सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

**उत्तर–**(ग) (iii) (iv) (i) (ii)

### सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

**1. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है**

**उत्तर–**(क) (i)

**2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है**

**उत्तर–**(क) सत्य (ख) असत्य (ग) असत्य (घ) असत्य

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. ईर्ष्या से बचने के लिए दूसरों से अपनी तुलना नहीं करनी चाहिए क्योंकि दूसरों से तुलना करने पर उनके श्रेष्ठ होने पर हीन भावना आती है और उनसे ईर्ष्या होती है। अपने उपलब्ध साधनों व वस्तुओं से सन्तुष्ट रहना चाहिए। दूसरों पर ध्यान देने के बजाय स्वयं पर और अपने लक्ष्य पर ध्यान देना चाहिए। ईर्ष्या से होने वाले नुकसानों के विष में सोचना चाहिए। ईर्ष्या के कारणों को

पहचानना चाहिए। सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। अपने से सम्पन्न लोगों से तुलना करने के स्थान पर अपने से निकृष्ट लोगों से तुलना करनी चाहिए ताकि अपनेमन में हीन भावना न आए।

**2.** जो लोग दूसरों से ईर्ष्या करते हैं, उन्हें मन की शान्ति कभी प्राप्त नहीं होती। — **गौतम बुद्ध**

ईर्ष्या श्रेठता का भय या आशंका है। — **विलियम शेनस्टोन**

ईर्ष्या पर समय बर्बाद मत करो
कभी-कभी आप आगे बढ़ते हैं,
कभी-कभी आप पीछे रहते हैं। — **मैरी सिमिच**

करुणा जीवित रहने के लिए है,
ईर्ष्या मृतकों के लिए है। — **मार्क ट्विन**

**3.** स्वयं कीजिए।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**उत्तर–**

**1.** रामधारीसिंह 'दिनकर' का जन्म सन् 1908 ई० में बिहार राज्य के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक ग्राम में हुआ था।

**2.** दिनकर जी ने दार्शनिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, राजनैतिक विषयों पर अपनी लेखनी चलायी है।

**3.** रामधारीसिंह 'दिनकर' की दो गद्य रचनाओं के नाम हैं—1. अर्द्धनारीश्वर, 2. भारतीय संस्कृतिक की एकता।

**4.** दिनकर जी को 'ज्ञानपीठ पुरस्कार', साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा 'पद्मभूषण' सम्मान प्राप्त हुए।

**5.** दिनकर जी की दो प्रमुख शैलियों के नाम हैं—1. समीक्षात्मक शैली, 2. सूक्तिपरक शैली।

**6.** **जीवनी**—राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म सन् 1908 ई० में बिहार राज्य के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक ग्राम में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। दिनकरजी ने मोकामा घाट से मैट्रिक तथा पटना विश्वविद्यालय से बी०ए० ऑनर्स किया। प्रारम्भ में दिनकरजी मोकामा घाट के हाईस्कूल में प्रधानाध्यापक रहे। बाद में उपनिदेशक, प्रचार विभाग के पद पर कार्य करने लगे। यहाँ से ये मुजफ्फरपुर कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष नियुक्त होकर वहाँ चले गए।

सन् 1952 ई० में ये राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए। सन् 1963 ई० में ये भागलपुर विश्वविद्यालय में कुलपति नियुक्त हुए, उसके पश्चात् दिनकरजी भारत सरकार के गृह-विभाग में हिन्दी सलाहकार नियुक्त हुए तथा लम्बे समय तक हिन्दी का संवर्द्धन एवं प्रचार-प्रसार करते रहे। दिनकरजी को उनकी रचना 'उर्वशी' पर सन् 1972 ई० में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा 'संस्कृति के चार अध्याय' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

सन् 1959 ई० में दिनकरजी को भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि देकर सम्मानित किया। राष्ट्रकवि दिनकर का निधन सन् 1974 ई० में हुआ।

रामधारी सिंह 'दिनकर' बचपन से ही होनहार थे। उनका हिन्दी साहित्याकाश में कवि के रूप में

उदय हुआ। 'प्रणभंग' उनके विद्यार्थी जीवन की रचना है। काव्य के प्रति उनकी बाल्यकाल से ही विशेष रुचि थी। 'रेणुका' और 'हुंकार' जैसी रचनाओं के प्रकाशन के पश्चात् उनकी गणना राष्ट्रकवियों में की जाने लगी। दिनकरजी की विशेष ख्याति कवि के रूप में हुई, परन्तु गद्य-साहित्य में भी उनका विशेष स्थान है। सत्यता यह है कि वे एक कवि ही नहीं, अपितु इतिहास, दर्शन, धर्म, राजनीति आदि के महान् विचारक थे। उन्होंने गद्य के क्षेत्र में हिन्दी-साहित्य की अपूर्व सेवा की। गद्य के क्षेत्र में उन्होंने राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित प्रचुर साहित्य की रचना की। उन्हें अपने देश एवं संस्कृति से अपूर्व प्रेम था। 'संस्कृति के चार अध्याय' एवं 'भारतीय संस्कृति की एकता' दिनकर जी की राष्ट्रीय भावना और भारतीय संस्कृति के प्रति अपार श्रृद्धा के प्रबल प्रमाण हैं। उनके 'संस्कृति के चार अध्याय' उत्कृष्ट ग्रन्थ को 'साहित्य एकादमी' ने पुरस्कृत किया। आलोचना सम्बन्धी साहित्य में दिनकर जी ने अपनी अद्‌भुत प्रतिभा का परिचय दिया। उनके आलोचनात्मक ग्रन्थों में भारतीय एवं पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्तों का सुन्दर ढंग से विवेचन देखने को मिलता है। इस प्रकार उनकी प्रखर गद्य-लेखनी ने निबन्ध, आलोचना, यात्रा-साहित्य और बाल साहित्य की अनेक अनुपम रचनाओं की धरोहर हिन्दी साहित्य को प्रदान की। दिनकर जी का हिन्दी साहित्य के उत्थान और विकास में अद्वितीय योगदान है। उनके साहित्यिक अवदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

## प्रमुख रचनाएँ

रामधारी सिंह 'दिनकर' की ने प्रमुख रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—

1. **निबन्ध-संग्रह**—'अर्धनारीश्वर', 'रेती के फूल', 'बट पीपल', 'उजली आग' आदि।
2. **आलोचना**—'शुद्ध कविता की खोज' तथा 'मिट्‌टी की ओर'।
3. **दार्शनिक और सांस्कृतिक**—'धर्म', 'भारतीय संस्कृति की एकता' और 'संस्कृति के चार अध्याय'।
4. **बाल-साहित्य**—'चित्तौड़ का साका', 'भारत की सांस्कृतिक कहानी' (गद्य); 'धूप छाँह', 'मिर्च का मजा', 'सूरज का ब्याह' (पद्य)।
5. **यात्रावृत्त**—'देश-विदेश'।
6. **काव्य**—'रेणुका', 'हुंकार', 'सामधेनी', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'उर्वशी', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'रसवन्ती', 'धूप छाँह', 'इतिहास के आँसू', 'नीम के पत्ते', 'सीपी और शंख', 'बापू' आदि।

**दिनकर जी की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ**—दिनकर जी ने अपने गद्य-साहित्य में शुद्ध, परिष्कृत, परिमार्जित और **साहित्यिक भाषा** का प्रयोग किया है। रामधारी सिंह 'दिनकर' की **शैली** विषयानुरूप परिवर्तित होती रही है।

## मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

**1. ईर्ष्या का ........................................ पड़ती है।**

(i) ईर्ष्यालु मनुष्य अपनी तुलना ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों से करता है जो उससे किन्हीं बातों में श्रेष्ठ हैं। जब वह देखता है कि अमुक वस्तु दूसरे के पास तो है, लेकिन उसके पास नहीं है, तब वह स्वयं को हीन समझने लगता है। अपने अभाव उसे खटकने लगते हैं और

वह अपने पास मौजूद वस्तुओं या साधनों का भी आनन्द नहीं ले पाता।

(ii) ईर्ष्यालु व्यक्ति के हृदय को दूसरों की तुलना में उसके अपने पक्ष के अभाव दंश मारते रहते हैं।

(iii) ईर्ष्या का अनोखा वरदान यह है कि ईर्ष्या अपने पास की अपनी चीजों से आनन्द नहीं उठाता, बल्कि दूसरों के पास तो जो वस्तुएँ हैं, उनसे दु:ख उठाता है। इसीलिए ईर्ष्या को अनोखा वरदान कहा गया है।

(iv) ईर्ष्यालु व्यक्ति को ईर्ष्या के कारण उन वस्तुओं से आनन्द नहीं मिलता जो उसके पास हैं, बल्कि वह उन वस्तुओं से दु:ख उठाता है, जो दूसरों के पास हैं।

## केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद (केस/स्रोत) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**ईर्ष्या की .......................................... दिया जाऊँगा।**

(i) ईर्ष्यालु व्यक्ति दूसरों की निन्दा यह सोचकर करता है कि निन्दा करने से दूसरे व्यक्ति जनता अथवा अपने मित्रों की दृष्टि से गिर जाएँगे ओर उससे जो स्थान रिक्त होगा, वह उस स्थान को प्राप्त कर लेगा।

(ii) निन्दा को लेखक ने ईर्ष्या की बड़ी बेटी के रूप में प्रस्तुत किया है।

(iii) ईर्ष्यालु और निंदक का घनिष्ठ संबंध है; क्योंकि जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वही बुरे किस्म का निन्दक भी होता है।

## रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

- **निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**1. ईर्ष्या का .......................................... हटे हैं।**

(i) **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य खंड'** के **'ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से'** नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **'रामधारीसिंह 'दिनकर'** है।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—लेखक का कथन है कि जिसके मन में ईर्ष्या का भाव उत्पन्न हो जाता है, सबसे पहले ईर्ष्या के कारण उसी की हानि होती है। ऐसे लोग अपने दु:ख को दूसरों को सुनाने में ही रसमग्न रहते हैं। ईर्ष्यालु व्यक्ति सर्वव्यापक होते हैं। आप संसार के किसी भी कोने में चले जाइए, आपकी ऐसे लोगों से भेंट अवश्य हो जाएगी। ईर्ष्यालुओं की इसी सर्वव्यापकता के कारण लेखक कहता है कि आप भी ऐसे लोगों को अवश्य जानते होंगे, जो ईर्ष्या की साकार मूर्ति हैं। ऐसे लोग मौका मिलते ही किसी के प्रति अपने हृदय की ईर्ष्या के गुबार को निकालना शुरू कर देते हैं।

(iii) ईर्ष्या का मुख्य काम जलाना है।

(iv) ईर्ष्या सबसे पहले उसी व्यक्ति को जलाती है, जिसके हृदय में वह उत्पन्न होती है।

(v) उपर्युक्त गद्यांश में ईर्ष्यालु व्यक्ति की यह मनोदशा बताई गई है—श्रोता मिलते ही ईर्ष्यालु व्यक्ति का ग्रोमोफोन बजने लगता है और वह बड़ी होशियारी के साथ दूसरों की निन्दा का एक-एक काण्ड इस प्रकार सुनाता है, मानो उससे बड़ा विश्व-कल्याण का कोई काम ही न हो।

**2. ईर्ष्या मनुष्य ........................................ न हों।**

(i) **संदर्भ**—पूर्ववत।

(ii) **रेखांकित अंशों की व्याख्या**—ईर्ष्या मनुष्य के चरित्र का गम्भीर दोष है। यह भाव व्यक्ति का चरित्र हनन तो करता ही है, उसके आनन्द में भी व्यवधान उपस्थित करता है।
**द्वितीय रेखांकित अंश की व्याख्या**—ईर्ष्या के कारण उसकी विवेक शक्ति नष्ट हो जाती है। वह दूसरों के सुख को देखकर ही दु:खी होने लगता है। यहाँ तक कि वह प्राकृतिक सौन्दर्य से भी ईर्ष्या करने लगता है और वह उसके लिए व्यर्थ की वस्तु बन जाता है। पक्षियों के कलरव अथवा उनके मधुर स्वर में उसे कोई आकर्षण नजर नहीं आता। उसे सुन्दर, खिले हुए पुष्पों से भी ईर्ष्या होने लगती है और उसे उनमें भी किसी प्रकार के सौन्दर्य के दर्शन नहीं हो पाते।

(iii) ईर्ष्यालु व्यक्ति सुख के समस्त साधन होने पर भी सुख का अनुभव नहीं कर पाता। वह आत्मिक सुख से वंचित होनेके साथ-साथ प्राकृतिक सौन्दर्य का भी आनन्द नहीं उठा पाता।

(iv) जब व्यक्ति के हृदय में ईर्ष्या उत्पन्न हो जाती है तो उसकी संवेदनाएँ मर जाती हैं, इसलिए तब उसके लिए पक्षियों के गीत में जादू नहीं रह जाता।

## भाषा एवं व्याकरण

**1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—**

| शब्द | दो पर्यायवाची शब्द | शब्द | दो पर्यायवाची शब्द |
|---|---|---|---|
| खग | **पक्षी, विहग** | गणेश | **लंबोदर, विनायक** |
| राजा | **नृप, भूपति** | लक्ष्मी | **श्री, कमला** |
| पुत्र | **बेटा, तनय** | प्रकाश | **उजाला, रोशनी** |

**2. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट कीजिए—**

**वाक्य प्रयोग**

| | | |
|---|---|---|
| जिज्ञासा | — | मनुष्य की **जिज्ञासा** प्रवृत्ति के कारण अनेक आविष्कार हुए। |
| जिज्ञासु | — | **जिज्ञासु** व्यक्ति प्रकृति के रहस्यों का पता लगा लेते हैं। |
| चारित्रिक | — | कुसंगति से मनुष्य का **चारित्रिक** पतन हो जाता है। |
| चरित्र | — | महान लोग अपने **चरित्र** के कारण प्रसिद्ध होते हैं। |
| मूर्ति | — | हिन्दू भगवान की **मूर्ति** की पूजा करते हैं। |
| मूर्त | — | किताबों में हमेशा खोए रहने से वह स्वयं ही **मूर्त** रूप हो गई थी। |
| प्रतिद्वन्द्वी | — | कर्ण और अर्जुन एक-दूसरे के **प्रतिद्वन्द्वी** थे। |
| प्रतिद्वन्द्विता | — | हमें आगे बढ़ने के लिए एक-दूसरे से **प्रतिद्वन्द्विता** रखनी चाहिए शत्रुता नहीं। |

**3. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्गों को पृथक् कीजिए—**

| शब्द | उपसर्ग | शब्द | उपसर्ग |
|---|---|---|---|
| दरअसल | **दर** | अपव्यय | **अप** |

| | | | |
|---|---|---|---|
| निर्मल | **निर्** | अत्यन्त | **अति** |
| निमग्न | **नि** | उपवन | **उप** |
| दुर्भावना | **दुर्** | परिवार | **परि** |
| अनुशासन | **अनु** | सुकर्म | **सु** |

**4. निम्नलिखित शब्दों से प्रत्ययों को पृथक् करके लिखिए—**

| **शब्द** | **प्रत्यय** | **शब्द** | **प्रत्यय** |
|---|---|---|---|
| अहंकार | **कार** | सज्जनता | **ता** |
| रचनात्मक | **त्मक** | बन्धुत्व | **त्व** |
| ईर्ष्यालु | **लु** | बचपन | **पन** |
| मौलिक | **इक** | चतुराई | **आई** |
| समकालीन | **ईन** | पहनावा | **आवा** |
| लाभदायक | **दायक** | लिखाई | **आई** |

## 6 भगवतशरण उपाध्याय

**(जन्म : सन् 1910 ई० - मृत्यु : सन् 1982 ई०)**

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (क) **6.** (ख)।

### अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–**(ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

### चित्र आधारित प्रश्न

- **अजन्ता की गुफाओं में बनाए गए चित्र हमें किसके विषय में बताते हैं और इससे हमें तत्कालीन कला शैली के विषय में क्या ज्ञात होता है?**

**उत्तर–**अजंता की गुफाओं में बनाए गए चित्र हमें गौतम बुद्ध और बौद्ध धर्म के विषय में बताते हैं। इससे हमें पता चलता है कि तत्कालीन शैली धर्म से प्रभावित थी तथा चित्रकला में भारत ने काफी उन्नति कर ली थी।

### कूट आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से कौन-सा अजन्ता की गुफाओं का निर्माणकाल है?**

**उत्तर–**(ख) केवल (i)

## रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

- **आदमी ने चट्टानों पर पहले अपने ____________ खोदे।**

**उत्तर–**(क) सन्देश

## सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

**उत्तर–**(ख) (iii) (i) (iv) (ii)

## सत्य-असत्य कथन पर आधारित प्रश्न

**1. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है**

**उत्तर–**(ग) केवल (iii)

**निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए**

**उत्तर–**(क) सत्य (ख) सत्य (ग) असत्य (घ) सत्य

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. अजन्ता की गुफाओं में चित्रित कहानियाँ, बंदरों, हाथियों, हिरनों, राजा और कंगले, विलासी और भिक्षु, नर-नारी से सम्बन्धित हैं।
2. अजंता के शिल्प-कला के सौन्दर्य पर दस पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं—
   (i) चट्टानों को काटकर बौद्ध गुफा, मन्दिर व मठ बनाए गए हैं।
   (ii) अजन्ता की गुफाओं का मुख्य आकर्षण भित्ति चित्रकारी है।
   (iii) इन चित्रों में बौद्ध धार्मिक आख्यानों व देवताओं का जीवन्तता के साथ चित्रण किया गया है।
   (iv) ये गुफाएँ सजावटी रूप से तराशी गई हैं।
   (v) गुफाओं की दीवारों व छतों पर भगवान बुद्ध के जीवन की विभिन्न घटनाओं का वर्णन किया गया है।
   (vi) दीवारों पर खूबसूरत राजकुमारियों, अप्सराओं के विभिन्न मुद्राओं वाले सुन्दर चित्र भी उकेरे गए हैं।
   (vii) अजन्ता की मूर्तियाँ हथौड़े और छैनी की सहायता से तराशी गई हैं।
   (viii) अजन्ता की गुफाएँ घोड़े की नाल के आकार में बनाई गई हैं।
   (ix) चित्र बनाने से पहले दीवारों को भली-भाँति रगड़कर साफ किया गया है फिर उसके ऊपर लेप चढ़ाया गया है।
   (x) अजन्ता की मूर्तियाँ हथौड़े और छैनी की सहायता से तराशी गई हैं।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न–

**उत्तर—**

1. डॉ० भगवतशरण उपाध्याय का जन्म सन् 1910 ई० में बलिया जिले के उजियारपुर गाँव में हुआ था।

**2.** उपाध्याय जी की किन्हीं दो रचनाओं के नाम हैं—1. कालिदास का भारत, 2. इतिहास के पन्नों पर।

**3.** भारतीय संस्कृति एवं साहित्य पर लेखन करने वाले एक लेखक का नाम 'भगवतशरण उपाध्याय' है।

**4.** उपाध्याय जी ने आलोचना, यात्रा साहित्य, पुरातत्व, संस्मरण एवं रेखाचित्र आदि साहित्यिक विधाओं पर अपनी लेखनी चलायी है।

**5.** उपाध्याय जी की प्रमुख दो शैलियों के नाम हैं—1. विवेचनात्मक शैली, 2. भावात्मक शैली।

**6.** **जीवनी**—भारतीय इतिहास और संस्कृति के सुप्रसिद्ध विद्वान एवं प्रचारक तथा पुरातत्त्ववेत्ता डॉ० भगवतशरण उपाध्याय का जन्म सन् 1910 ई० में बलिया जिले के उजियारपुर गाँव में हुआ था। स्थानीय विद्यालयों में प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् उपाध्यायजी उच्च-शिक्षा के लिए काशी आए और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राचीन इतिहास में एम०ए० किया। इनकी साहित्य के अध्ययन में विशेष रुचि थी; अत: संस्कृत-साहित्य तथा पुरातत्त्व के ये प्रकांड पण्डित थे। इन्होंने इतिहास और संस्कृति पर लेखनी चलाकर हिन्दी-साहित्य की उन्नति में अपना विशेष योगदान दिया। पुरातत्त्व एवं प्राचीन भाषाओं के साथ-साथ इन्होंने आधुनिक यूरोपीय भाषाओं के क्षेत्र में भी कार्य किया।

शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् उपाध्यायजी ने क्रमश: 'पुरातत्त्व विभाग', 'प्रयाग संग्रहालय', 'लखनऊ संग्रहालय' के अध्यक्ष पदों तथा पिलानी में 'बिड़ला महाविद्यालय' के प्राध्यापक पद को सुशोभित किया। तत्पश्चात् 'विक्रम विश्वविद्यालय' के प्राचीन-इतिहास विभाग में प्रोफेसर एवं अन्त में अध्यक्ष पद पर कार्य करते हुए यहीं से सेवानिवृत्त हुए। उपाध्याय जी ने अनेक बार यूरोप, अमेरिका, चीन आदि देशों का भ्रमण किया और वहाँ पर भारतीय संस्कृति एवं साहित्य पर महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दिए। उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रमुख अध्येता एवं व्याख्याकार होते हुए भी, वे रूढ़िवादिता और परम्परावादिता से ऊपर थे। वस्तुत: उपाध्याय जी अपने मौलिक एवं स्वतन्त्र विचारों के लिए प्रसिद्ध थे। अगस्त, सन् 1982 ई० को इनका निधन हो गया।

डॉ० भगवतशरण उपाध्याय द्वारा भारतीय संस्कृति तथा साहित्य पर विदेशों में दिए गए व्याख्यान हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। आलोचना, यात्रा साहित्य, पुरातत्त्व, संस्मरण एवं रेखाचित्र आदि विषयों पर उपाध्यायजी ने प्रचुर साहित्य का सृजन किया है। विभिन्न उद्धरणों, उदाहरणों आदि पर आधारित इनकी रचनाएँ अत्यन्त रोचक हैं। उपाध्यायजी की रचनाओं में प्राचीन भारतीय संस्कृति, साहित्य तथा कला का सूक्ष्म विवेचन हुआ है।

भगवतशरण उपाध्याय जी ने हिन्दी-साहित्य को समृद्ध बनाने में विशेष योगदान दिया। वे दीर्घकाल तक अनवरत रूप से साहित्य साधना में संलग्न रहे। उन्होंने संस्कृति, साहित्य, कला आदि विभिन्न विषयों पर सौ से अधिक ग्रन्थों की रचना की। हिन्दी भाषा में उन्होंने आलोचना, यात्रा-साहित्य, संस्मरण, रेखाचित्र, पुरातत्त्व आदि विविध विषयों पर अपनी मौलिक लेखनी से अपार साहित्य का सृजन किया। उन्होंने अंग्रेजी में भी लिखा। उपाध्याय जी ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से भारतीय साहित्य, कला एवं संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं को सम्पूर्ण विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। इस प्रकार हिन्दी-साहित्य के विकास में उनका अविस्मरणीय योगदान है।

**मुख्य रचनाएँ**—उपाध्याय जी की मुख्य रचनाओं का संक्षेप में विवरण निम्न प्रकार है—

1. **आलोचना**—'विश्व साहित्य की रूपरेखा', 'साहित्य और कला', 'कालिदास' आदि।
2. **पुरातत्त्व**—'मन्दिर और भवन', 'भारतीय मूर्तिकला की कहानी', 'भारतीय चित्रकला की कहानी', 'कालिदास का भारत' आदि।
3. **इतिहास**—'इतिहास साक्षी है', 'खून के छींटे', 'इतिहास के पन्नों पर', 'प्राचीन भारत का इतिहास', 'साम्राज्यों के उत्थान-पतन' आदि।
4. **यात्रा-वृतान्त**—'सागर की लहरों पर', 'कलकत्ता से पीकिंग', 'लालचीन' आदि।
5. **संस्मरण और रेखाचित्र**—'मैंने देखा', 'ठूँठा आम' आदि।
6. **अंग्रेजी रचनाएँ**—'इण्डिया इन कालिदास', 'विमेन इन ऋग्वेद', 'एंशियेण्ट इण्डिया' आदि।

## मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  **और उधर वह ......................................... देख सकता है।**

  (i) बंदरों का चित्र सजीव है।

  (ii) खाने-खिलाने, बसने-बसाने, नाचने-गाने, कहने-सुनने, वन-नगर, ऊँच-नीच, धनी-गरीब के जितने नजारे हो सकते हें सब आदमी अजन्ता की गुफाओं की इन दीवारों पर देख सकता है।

## केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद (केस/स्रोत) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  **पहले पहाड़ ......................................... हो उठे।**

  (i) 'प्राण फूँक दिए' मुहावरे का अर्थ है—जीवित कर देना।

  (ii) पहाड़ों को काटकर भवन का रूप दिया गया। दीवारों, छतों और खम्भों को चिकना कर उन पर सजीव चित्र निर्मित किए गए। चित्रों में रंग भी भरे गए। इस प्रकार पहाड़ों को जीवन्त बना दिया गया।

## रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

- **निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  **इन पिछले ......................................... दी है।**

  (i) **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य खंड'** के **'अजन्ता'** नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **भगवतशरण उपाध्याय** है।

  (ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—लेखक कहता है कि जब बुद्ध का जन्म विविध जानवरों की योनियों में हुआ था, उस समय विद्यमान अन्य जानवरों ने भी ऐसा व्यवहार किया था, जो कि मनुष्यों के लिए उचित हो। उन सभी जानवरों ने किस प्रकार औचित्य अथवा उपयुक्तता का निर्वाह किया था यह सब कुछ अजन्ता के चित्रों में अत्यधिक खूबी के साथ चित्रित किया गया है। और उन चित्रों को दर्शाते समय चित्रकारों ने अपनी संपूर्ण जानकारी व्यक्त कर दी।

(iii) अपनी जानकारी की गाँठ खोलने का आशय यह है कि अपने ज्ञान को विस्तार से प्रकट कर देना।

## भाषा एवं व्याकरण

**1. निम्न शब्दों से उपसर्ग छाँटकर लिखिए—**

| **शब्द** | **उपसर्ग** | **शब्द** | **उपसर्ग** |
|---|---|---|---|
| अद्वितीय | अ | सनाथ | स |
| अभिराम | अभि | लापरवाह | ला |
| सन्देश | सम् | अनादि | अन |
| बेरहमी | बे | सुयोग्य | सु |

**2. निम्नलिखित शब्द-युग्म दिए जा रहे हैं, इनका अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि इनके अर्थ का अंतर स्पष्ट हो जाए—**

| | | **वाक्य-प्रयोग** |
|---|---|---|
| सुरक्षा | — | पेड़-पौधों की **सुरक्षा** करनी चाहिए। |
| सुरक्षित | — | हम अपने घर में **सुरक्षित** रहते हैं। |
| हैवान | — | आतंकवादी **हैवान** होते हैं। |
| हैवानी | — | क्रूर शिकारियों की **हैवानी** देखकर सभी जानवर भयभीत हो गए। |
| इंसान | — | मेहनत करने से कोई **इन्सान** छोटा नहीं हो जाता। |
| इंसानियत | — | विवेक ने वृद्ध व्यक्ति की सहायता कर **इन्सानियत** का परिचय दिया। |
| कल्याण | — | हमें गरीब लोगों के **कल्याण** के लिए कार्य करने चाहिए। |
| कल्याणकर | — | नेताओं को ऐसे कार्य करने चाहिए जो सभी के लिए **कल्याणकर** हों। |
| कला | — | अजन्ता की शिल्प-**कला** अद्वितीय है। |
| कलावंत | — | भारतीय **कलावन्त** सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध हैं। |

**3. निम्नलिखित प्रत्ययों का प्रयोग करके एक शब्द बनाइए—**

| **प्रत्यय** | **प्रत्यययुक्त शब्द** |
|---|---|
| त्व | गुरुत्व, पुरुषत्व |
| पन | बालपन, कालापन |
| वा | बढ़ावा, चढ़ावा |
| हट | गरमाहत, घबराहट |
| आई | बुराई, लड़ाई |

**4. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—**

| **तद्भव शब्द** | **तत्सम रूप** |
|---|---|
| आदमी | **मनुष्य** |
| हाथी | **हस्ति** |
| चरन | चरण |
| भाई | **भ्राता** |
| जनम | **जन्म** |

# 7 जयप्रकाश भारती

(जन्म : सन् 1936 ई० - मृत्यु : सन् 2005 ई०)

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

1. (क) 2. (ख) 3. (क) 4. (क) 5. (ख) 6. (क) 7. (ख) 8. (क)

## अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–**(क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

## चित्र आधारित प्रश्न

- **चाँद पर पहली बार कदम रखने वाले इस यात्री की पहचान कीजिए और बताइए कि यह मानवता के लिए अब तक की सबसे बड़ी छलाँग क्यों थी।**

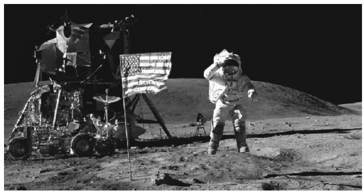

**उत्तर–**चाँद पर पहली बार कदम रखने वाले इस यात्री का नाम नील आर्मस्ट्रांग है। उनका चाँद पर पहुँचना मानवता के लिए अब तक की सबसे बड़ी छलाँग है, क्योंकि इससे पृथ्वी के बाहर भी मानव के लिए संभावनाओं के द्वार खुल गए तथा उसकी मेधा ने एक उच्च आयाम छू लिया।

## कूट आधारित प्रश्न

**1. जयप्रकाश भारती ने किस बाल पत्रिका का सम्पादन किया**

**उत्तर–**(घ) केवल (iv)

## रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

**1. पृथ्वी बहुत बड़ी ______________ और सुन्दर दिखायी दे रही है।**

**उत्तर–**(घ) चमकीली

**2. बीस मिनट बाद ही ______________ चंद्रयान से बाहर निकले।**

**उत्तर–**(क) एडविन एल्ड्रिन

## सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

**उत्तर–**(ग) (iii) (iv) (i) (ii)

## सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

**1. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है**

**उत्तर–**(क) केवल (ii)

**2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है**

**उत्तर–**(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य (घ) असत्य

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. चंद्रयान के तीन भाग बनाए जाते हैं जिन्हें मॉड्यूल कहते हैं। इनमें कमांडर मॉड्यूल का निर्माण इस दृष्टि से किया जाता है कि वापसी के समय पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते समय तीव्र ताप और दबावों को सहन कर सके। नियंत्रण कक्ष, शयनागर, भोजनकक्ष और प्रयोगशाला—इन सबका मिला-जुला रूप ही यह मॉड्यूल होता है। प्रक्षेपण के सयम यदि कोई दुर्घटना हो जाए तो यात्री अपने बचाव के लिए इसे शेषयान से अलग कर सकते हैं पुन: प्रवेश के लिए कमांड कैप्सूल बनाया जाता है जिसमें यात्री अपने सामान्य कार्य संपन्न कर सकें। यह औसत दर्जे की कार जितना बनाया जाता है। कैप्सूल जब तैयार होता है तो इसमें पाँच विद्युत बैटरियाँ होती हैं और 12 रॉकेट इंजन जुड़े होते हैं। इसमें पैराशूट भी रहते हैं। चंद्रयान का दूसरा भाग होता है—सर्विस मॉडयूल—यह औसत आकार के ट्रक जितना होता है इसमें कई लाख किलोमीटर की यात्रा करने के लिए पर्याप्त ईंधन होता है।
2. यात्रियों ने चंद्रतल का वर्णन इस प्रकार किया है—चंद्रतल की मिट्टी और चट्टानें सूर्य की रोशनी से चमक रही हैं। चंद्रतल से पृथ्वी बहुत बड़ी, चमकीली और सुंदर दिखाई दे रही है।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**उत्तर**—

1. जयप्रकाश भारती का जन्म 2 जनवरी, सन् 1936 ई० को उत्तर प्रदेश के मेरठ जनपद में हुआ था।
2. जयप्रकाश भारती की 'हिमालय की पुकार' तथा 'अनन्त आकाश : अथाह सागर' नामक दो रचनाओं को यूनेस्को द्वारा पुरस्कृत किया गया है।
3. भारती जी की दो प्रमुख वैज्ञानिक रचनाओं के नाम हैं—1. विज्ञान की विभूतियाँ 2. चलो चाँद पर चलें।
4. जयप्रकाश भारती के अनेक वर्षों तक दिल्ली से प्रकाशित 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' पत्रिका का तथा प्रसिद्ध बाल-पत्रिका 'नन्दन' का 31 वर्षों तक सम्पादन किया।
5. जयप्रकाश भारती के साहित्यिक जीवन का आरम्भ पत्रकारिता से हुआ।
6. **जीवनी**—अपनी विशेष साहित्यिक शैली में विविध वैज्ञानिक लेख प्रस्तुत करने वाले जयप्रकाश भारती का जन्म 2 जनवरी, सन् 1936 ई० को उत्तर प्रदेश के मेरठ जनपद में हुआ था। इनके पिता श्रीरघुनाथ सहाय मेरठ के प्रसिद्ध एडवोकेट थे। ये पुराने कांग्रेसी तथा अच्छे समाजसेवी थे। भारतीजी ने मेरठ में ही बी०एस०सी० तक शिक्षा प्राप्त की तथा पिता की तरह शीघ्र ही सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने लगे। मेरठ में साक्षरता प्रसार के कार्यों में इनका उल्लेखनीय

योगदान रहा तथा वर्षों तक इन्होंने नि:शुल्क रात्रि पाठशाला का संचालन किया। इन्होंने 'सम्पादन कला विशारद' करके 'दैनिक प्रभात' (मेरठ) तथा 'नवभारत टाइम्स' (दिल्ली) में कुछ समय तक कार्य किया।

ये अनेक वर्षों तक दिल्ली से प्रकाशित 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के सहसम्पादक भी रहे तथा प्रसिद्ध बाल-पत्रिका 'नन्दन' का 31 वर्षों तक सफलतापूर्वक सम्पादन किया। अवकाश ग्रहण करने के उपरान्त ये स्वतन्त्र लेखन करने लगे तथा बाल साहित्य से सम्बन्धित अनेक महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी रचनाओं का सृजन किया। हिन्दी के पत्रकारिता जगत् में तथा किशोरोपयोगी वैज्ञानिक साहित्य के क्षेत्र में इनका विशेष योगदान रहा। उनहत्तर वर्ष की अवस्था में 5 फरवरी, सन् 2005 को भारतीजी का देहावसान हो गया।

जयप्रकाश भारती की विद्यार्थी जीवन से ही लेखन कार्य में रुचि थी। उनके साहित्यिक जीवन का आरम्भ पत्रकारिता से हुआ। पत्रकारिता के क्षेत्र में भारती जी ने पर्याप्त प्रशिक्षण और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। उनकी पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य ज्ञानोपयोगी सामग्री को प्रकाशित करना रहा है। भारती जी ने एक सफल पत्रकार के साथ हिन्दी साहित्य में एक लेखक के रूप में भी पर्याप्त ख्याति प्राप्त की है। उन्होंने निरन्तर साहित्य-साधना करते हुए सौ से भी अधिक पुस्तकों का सम्पादन और सृजन किया। बाल-साहित्य के वे पर्याय हैं। इस लेखन से वे किसी भी नीरस एवं गम्भीर विषय को सरल एवं सरस भाषा में प्रस्तुत करने में समर्थ हैं। भारती जी को किशोरोपयोगी वैज्ञानिक साहित्य के प्रणेता के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसके अतिरिक्त उनके लेख, कहानियाँ और रिपोर्ताज आदि समय-समय पर हिन्दी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। उनकी 'हिमालय की पुकार' तथा 'अनन्त आकाश : अथाह सागर' जैसी पुस्तकें यूनेस्को से पुरस्कृत हैं। 'विज्ञान की विभूतियाँ', 'देश हमारा देश हमारा' और 'चलो चाँद पर चलें' नामक पुस्तकें भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत हैं। भारती जी भारतीय संस्कृति के अमर पुजारी हैं। उनकी रचनाओं में राष्ट्र-प्रेम, राष्ट्र प्रेमियों के प्रति श्रद्धा तथा भारत के अतीत गौरव का अंकन देखने को मिलता है। इस प्रकार भारती जी का साहित्यिक अवदान श्रेष्ठ बन पड़ा है।

**भाषा-शैली**—जयप्रकाश भारती की भाषा शैली सरल, रोचक और स्वाभाविक बन पड़ी है। उन्होंने अपने साहित्य में विविध शैलियों का प्रयोग किया है। उनमें वर्णनात्मक, चित्रात्मक, भावात्मक आदि शैलियाँ प्रमुख हैं।

विषय को समग्र रूप में स्पष्ट करने के लिए इन्होंने वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। यह शैली प्राय: इनकी समस्त रचनाओं में मिलती है। वर्णनों में सजीवता लाने के लिए भारतीजी ने चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। दृश्यों तथा घटनाओं के यथार्थ वर्णन के लिए यह शैली अत्यन्त सहायक रही है।

जहाँ कहीं वर्णनों में भावुकता आई है वहीं भावात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। मर्मस्पर्शी भावावेश इस शैली की विशेषता है।

**मुख्य रचनाएँ**—भारतीजी ने अनवरत साहित्य-साधना में संलग्न रहकर सौ से भी अधिक पुस्तकों का लेखन, सम्पादन किया है। इनकी अनेक पुस्तकें यूनेस्को तथा भारत सरकार द्वारा

पुरस्कृत की गई हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

**राष्ट्र तथा संस्कृति सम्बन्धी**—हिमालय की पुकार, अनन्त आकाश : अथाह सागर, देश हमारा-देश हमारा, दुनिया रंग-बिरंगी तथा हीरों का हार आदि।

**विज्ञान सम्बन्धी**—विज्ञान की विभूतियाँ, चलो चाँद पर चलें।

**इतिहास सम्बन्धी**—अस्त्र-शस्त्र आदिम युग से अणु युग तक।

**राजनीतिक सम्बन्धी**—भारत का संविधान, संयुक्त राष्ट्र संघ।

**जीवनीपरक बाल साहित्य**—सरदार भगतसिंह, हमारे गौरव के प्रतीक, उनका बचपन यूँ बीता, ऐसे थे हमारे बापू, लोकमान्य तिलक, बर्फ की गुड़िया आदि।

## मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  **मानव को ........................................ रुचिकर लगेगा।**

(i) मानव के चन्द्रमा पर उतरने से लाखों वर्षों से चन्द्रमा के बारे में चले आ रहे अन्धविश्वास और निरर्थक अनुमान असत्य सिद्ध हो गए।

(ii) चन्द्रतल पर मानव के पाँव के निशान उसके द्वारा वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र में की गई असाधारण तथा अलौकिक प्रगति के प्रतीक थे।

(iii) कवियों की कल्पना के सुन्दर चाँद को वैज्ञानिकों ने बदसूरत और जीवनहीन करार दे दिया है। इसलिए अब किसी सुन्दरी को चन्द्रमुखी कहलाता रुचिकर नहीं लगेगा।

## केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद (केस/स्रोत) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  **अभी चन्द्रमा के ........................................ कह सकता है।**

(i) मानव पृथ्वी की परिधि में बँधा नहीं नहीं रहना चाहता क्योंकि वह अंतरिक्ष में विस्तृत, अज्ञात स्थानों को खोजना चाहता है।

(ii) लेखक कहता है कि अभी और उड़ानें चन्द्रमा के लिए भेजी जाएँगी।

## रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

- **निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  **मानव मन ........................................ करती रहीं।**

(i) मानव का मन सदैव अज्ञात के रहस्यों को खोलने, उन्हें जानने-समझने के लिए उत्सुक रहा है।

(ii) अनगढ़ और अविश्वसनीय कथाओं का मानव-जीवन में अत्यन्त महत्त्व है; क्योंकि इनके द्वारा वह सत्य को जानकर उसका उद्‌घाटन करने के लिए प्रेरणा प्राप्त करता है। यही कारण है कि आज मनुष्य चन्द्रमा तक पहुँच गया है। यदि चन्द्रमा के विषय में असंख्य अनगढ़ और अविश्वसनीय कथाएँ लोक में प्रचलित न होतीं तो आज मनुष्य का चन्द्रमा तक पहुँचना सम्भव न होता।

## भाषा एवं व्याकरण

**1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए—**

| शब्द | दो पर्यायवाची | शब्द | दो पर्यायवाची |
|---|---|---|---|
| नदी | **तटिनी, आपगा** | चंद्रमा | **शशि, राकेश** |
| पृथ्वी | **धरा, भूमि** | मानव | **मनुष्य, मनुज** |
| रात्रि | **रजनी, निशा** | जल | **पानी, अंबु** |
| वायु | **हवा, समीर** | शत्रु | **बैरी, दुश्मन** |
| बिजली | **विद्युत, तड़ित** | | |

**2. निम्नलिखित में नियम-निर्देश पूर्व संधि-विच्छेद कीजिए—**

| शब्द | सन्धि-विच्छेद | नियम |
|---|---|---|
| दुस्साहस | **दुः + साहस** | **विसर्ग + स = स्स** |
| प्राणोदक | **प्राण + उदक** | **अ + उ = ओ** |
| शयनागार | **शयन + आगार** | **अ + आ = आ** |
| पूर्वाभिनय | **पूर्व + अभिनय** | **अ + अ = आ** |
| मरणोपरांत | **मरण + उपरान्त** | **अ + उ = ओ** |
| सर्वाधिक | **सर्व + अधिक** | **अ + अ = आ** |

**3. निम्नलिखित में समास-विग्रह कीजिए और बताइए कि इनमें कौन-सा समास है?**

| समस्त | पद समास-विग्रह | समास का भेद |
|---|---|---|
| रजनीपति | **रजनी ( रात्रि ) का पति** | **संबंध तत्पुरुष समास** |
| प्रयोगशाला | **प्रयोग के लिए शाला** | **संप्रदान तत्पुरुष समास** |
| चंद्रमुखी | **चंद्रमा के समान मुख वाली** | **कर्मधारय समास,** |
| चंद्रतल | **चंद्रमा का तल** | **संबंध तत्पुरुष समास** |
| मरणोपरांत | **मरण के उपरांत** | **संबंध तत्पुरुष समास** |
| रक्तवर्ण | **लाल रंग का** | **कर्मधारय समास** |

**4. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग पृथक् करके लिखिए—**

| शब्द | उपसर्ग | शब्द | उपसर्ग |
|---|---|---|---|
| विशेष | **वि** | अनुसंधान | **अनु** |
| बदसूरत | **बद** | प्रयोग | **प्र** |
| सपूत | **स** | प्रतिक्षण | **प्रति** |
| कुसंगति | **कु** | | |

# काव्य-खण्ड

## हिन्दी पद्य (काव्य) के विकास (इतिहास) से सम्बन्धित आदर्श प्रश्न

### अतिलघु एवं लघु उत्तरीय प्रश्न

**1.** काव्य के दो मुख्य भेद हैं—1. श्रव्य काव्य, 2. दृश्य काव्य।

श्रव्य काव्य वह काव्य है, जो कानों से सुना जाता है और दृश्य काव्य वह है जो अभिनय के माध्यम से देखा-सुना जाता है।

**2.** खण्डकाव्य में जीवन के व्यापक चित्रण के स्थान पर उसके किसी एक पक्ष अथवा रूप का चित्रण होता है, परन्तु यह महाकाव्य का संक्षिप्त रूप अथवा एक सर्ग नहीं है। इसमें अपनी कथावस्तु पूर्ण होती है। सम्पूर्ण रचना में एक ही छन्द प्रयुक्त होता है। 'तुमुल' श्यामनारायण पाण्डेय विरचित प्रसिद्ध खण्डकाव्य है।

**3.** हिन्दी पद्य के दो भेदों के नाम हैं—1. महाकव्य, 2. खण्डकाव्य।

**4.** भक्तिकाल की दो मुख्य धाराएँ और उनके एक-एक प्रतिनिधि कवि का नाम हैं—

**(i)** **निर्गुण भक्तिधारा**—प्रतिनिधि कवि—कबरीदास।

**(ii)** **सगुण भक्तिधारा**—प्रतिनिधि कवि—सूरदास एवं तुलसीदास।

**5.** **1. सूरदास**—सूरसागर, **2. तुलसीदास**—श्रीरामचरितमानस।

**6.** भक्तिकाल के दो प्रमुख विशेषताएँ (प्रवृत्तियाँ)—(क) रहस्य भावना, (ख) गुरु की महत्ता का वर्णन, (ग) भक्ति-भावना की प्रधानता, (घ) माया की निन्दा, (ङ) प्रेम की प्रधानता, (च) स्वान्त: सुखाय।

### रीतिकाल (उत्तर-मध्यकाल) सन् 1643 ई0 से 1868 ई0 तक

**1.** रीतिकाल का समय सन् 1643 ई० से 1868 ई० तक माना जाता है।

**2.** हिन्दी-साहित्य का उत्तर-मध्यकाल 'रीतिकाल' के नाम से जाना जाता है। रीतिकाल में मुख्य रूप से शृंगारिक काव्य और लक्षण ग्रन्थों की रचना हुई। इस काल में कवियों की प्रवृत्ति रीति सम्बन्धी ग्रन्थ रचने की थी, इसलिए इस काल को 'रीतिकाल' नाम दिया गया। इस काल का काव्य दरबारी संस्कृति का प्रतीक है।

**3.** रीतिकालीन काव्य की मुख्य धाराएँ हैं—1. रीतिबद्ध काव्यधारा, 2. रीतिमुक्त काव्यधारा।

**4.** रीति ग्रंथ तीन रूपों में मिलते हैं।

**5.** रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों (विशेषताओं) हैं—1. रीतिग्रन्थों का निर्माण, 2. शृंगार रस को प्रमुखता, 3. ब्रजभाषा की प्रतिष्ठा, 4. सवैया और दोहा छन्दों का अधिक प्रयोग, 5. शृंगार रस उद्दीपन रूप में चित्रण, 6. आश्रयदाताओं की प्रशंसा, 7. कलापक्ष की प्रधानता आदि।

**6.** 16वीं-17वीं शताब्दी तक इस देश में मुगल साम्राज्य पूर्णत: प्रतिष्ठित हो चुका था। वह वैभव के शिखर पर था। जन-जीवन भी सुख-शान्तिपूर्ण था। साहित्य पर इस परिस्थिति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। जो कृष्ण और राधा भक्ति के आलंबन थे, वही अब शृंगार के आलंबन बन गए। इसके अतिरिक्त एक और परिवर्तन आया। कवियों का ध्यान साहित्य-शास्त्र की ओर गया और

उन्होंने रस, अलंकार, छन्द, नायक-नायिका आदि के उदाहरण-रूप में कविताओं की रचना की। इस प्रकार की रचनाओं को रीति ग्रंथ या लक्षण ग्रंथ कहा जाता है। इस काल में ऐसी रचनाएँ अधिक हुईं और इसी कारण इसे रीतिकाल कहा जाता है।

**7.** रीतिकाल के दो प्रसिद्ध कवियों के नाम व उनकी एक-एक रचना का नाम हैं—

1. **कवि**—बिहारीलाल, रचना—बिहारी सतसई।
2. **कवि**—पद्यमाकर, रचना—गंगालहरी।

**8.** रीतिकाल में वीर रस की कविता महाकवि भूषण ने लिखी।

**9.** रीतिकाल की प्रमुख कृतियों और उनके रचयिताओं के नाम हैं—बिहारी-सतसई (बिहारीलाला), रामचन्द्रिका (केशवदास), शिवराजभूषण (भूषण), रसराज (मतिराम), गंगालहरी (पद्यमाकर)।

**10.** रीतिकाल के एक प्रमुख कवि और उसकी रचनाएँ हैं—

**केशवदास**—रामचन्द्रिका, विज्ञान-गीता, वीरसिंहदेव चरित, जहाँगीर-जस-चन्द्रिका, ना-शिख, रतन-बावनी, रसिकप्रिया और कवि प्रिया।

**11.** रीतिकाल के दो अलंकारवादी आचार्य कवियों तथा उनकी एक-एक रचना का नाम हैं—

1. **कवि**—केशवदास, **रचना**—कविप्रिया;
2. **कवि**—आचार्य चिन्तामणि, **रचना**—शृंगार मंजरी।

**12.** रसखान कवि का मूल नाम सैयद इब्राहीम था और उन्होंने ब्रजभाशा में रचना की।

**13.** रीतिकाल के दो रसवादी कवियों के नाम हैं—1. मतिराम, 2. देव।

**14.** रीतिबद्ध काव्य में वे रचनाएँ आती हैं जो रीति के बंधन में बँधी हुई हैं जबकि रीतिमुक्त काव्य में वे रचनाएँ आती हैं जो रीति परंपरा की साहित्यिक रूढ़ियों (लक्षण आदि) से मुक्त हैं।

**15.** 1. **ग्वाल कवि**—रसिकानन्द, 2. **भिखारीदास**—रससारांश।

**16.** रीतिकाल के दो लक्षण ग्रंथकारों के नाम हैं—1. आलम 2. घनानंद ठाकुर।

**17.** रीतिमुक्त काव्यधारा के दो कवियों तथा उनकी एक-एक रचना के नाम हैं—

1. **कवि**—घनानंद, **रचना**—सुजानसागर।
2. **कवि**—आलम, **रचना**—माधवानल-काम-कन्दला।

**18.** रीति-परम्परा पर आधारित रूढ़ियों एवं साहित्यिक बन्धनों से मुक्त काव्य को 'रीतिमुक्त' काव्य कहा जाता है। बिहारी की 'बिहारी सतसई' मुक्तक काव्य का श्रेष्ठ उदाहरण है।

**19.** रीतिकाल के दो अन्य नाम हैं—1. उत्तर मध्यकाल, 2. अलंकार काल।

**20.** घनानंद रीतिकाल की रीतिमुक्त तथा भिखारीदास रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि हैं।

**21.** बिहारी और देव मुक्तक काव्य के दो प्रमुख कवि हैं। इनमें बिहारी की मुक्तक-रचना का नाम 'बिहारी सतसई', देव की रचना का नाम 'देवशतक' है।

## आधुनिक काल (1868 ई0 से आज तक)

**1.** आधुनिक काल की समयावधि 1868 ई० से अब तक है।

**2.** आधुनिक हिन्दी कविता के विकास को पाँच कालों (युगों) में विभाजित किया जा सकता है—

1. भारतेन्दु युग — सन् 1868 ई० से 1900 ई० तक
2. द्विवेदी युग — सन् 1900 ई० से 1919 ई० तक
3. छायावादी युग — सन् 1919 ई० से 1938 ई० तक
4. प्रगतिवादी युग — सन् 1938 ई० से 1943 ई० तक
5. प्रयोगवादी अथवा नयी कविता का युग — सन् 1943 ई० से 1953 ई० तक

**3.** आधुनिक युग की कविता का प्रादुर्भाव संवत् 1900 से माना जाता है।

**4.** आधुनिक काल की प्रमुख विशेषताओं हैं—1. लघुता के प्रति सजगता, 2. स्वदेश-प्रेम, 3. नारी के प्रति सही दृष्टिकोण, 4. यथार्थता, 5. विभिन्न वादों की प्रधानता आदि।

**5.** आधुनिक कविता के विकास का प्रथम युग का नाम 'भारतेन्दु युग' है तथा उसके प्रमुख कवि का नाम 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' है।

**6.** आधुनिक कविता के प्रमुख वादों हैं—छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद।

**7.** 1. भारतेन्दु हरिशचन्द्र — प्रेम माधुरी
2. महावीरप्रसाद द्विवेदी — अद्‌भुत प्रलाप।

**8.** आधुनिक काल के दो प्रसिद्ध कवियों के नाम हैं—
1. मैथिलीशरण गुप्त,
2. रामधारीसिंह 'दिनकर'।

## भारतेंदु युग (सन् 1868 से 1900 ई0)

**1.** भारतेंदु युग की कालावधि सन् 1868 से 1990 ई० है।

**2.** 'भारतेंदु युग' आधुनिक काल के अंतर्गत आता है। इस युग के दो कवियों के नाम हैं—1. प्रतापनारायण मित्र, 2. बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'।

**3.** भारतेंदु युग के काव्य-साहित्य की दो विशेषताएँ (प्रवृत्तियाँ) निम्नलिखित हैं—
1. इस युग के काव्य-साहित्य में ब्रजभाषा की प्रधानता रही।
2. इस युग के काव्य-साहित्य में स्वदेश-प्रेम, समाज-सुधार, प्रकृति-चित्रण आदि विषयों का समावेश हुआ।

**4.** आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय भावना के दर्शन सर्वप्रथम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनाओं में होते हैं।

**5.** भारतेन्दु हरिश्चन्द्र। रचना—प्रेम माधुरी।

**6.** हिंदी काव्य के भारतेन्दु युग की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं—
1. काव्य के क्षेत्र में ब्रजभाषा की प्रधानता,
2. काव्य में स्वदेश-प्रेम, समाज-सुधार, प्रकृति चित्रण आदि विषयों का समावेश।

भारतेन्दु युग के दो प्रमुख कवियों के नाम हैं—1. राधाचरण गोस्वामी, 2. लाला सीताराम।

## द्विवेदी युग (सन् 1900 से 1919 ई0 तक)

**1.** द्विवेदी युग की समयावधि सन् 1900 से 1919 ई० तक है।

2. द्विवेदी युग के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं—1. देशभक्ति एवं राष्ट्रीय जागरण, 2. मानवतावादी विचारधारा, 3. नारी-स्वातन्त्र्य, 4. इतिवृत्तात्मकता, 5. खड़ीबोली का प्रयोग, 6. बौद्धिकता आदि।
3. द्विवेदी युग के प्रमुख कवि हैं—1. मैथिलीशरण गुप्त, 2. अयोध्यासिंह उपाध्याय, 3. श्रीधर पाठक, 4. रामनरेश त्रिपाठी।
4. 1. मैथिलीशरण गुप्त — साकेत।
   2. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' — प्रियप्रवास।
5. 1. श्रीधर पाठक — भारत गीत।
   2. रामनरेश त्रिपाठी — स्वदेश प्रेम।
6. रामनरेश त्रिपाठी की किसी एक प्रसिद्ध काव्यकृति है—पथिक।
7. मैथिलीशरण गुप्त और अयोध्यासिंह उपाध्याय की एक-एक प्रमुख रचना का नाम हैं—
   1. मैथिलीशरण गुप्त — यशोधरा।
   2. अयोध्यासिंह उपाध्याय — वैदेही-वनवास।

   **अथवा** 'साकेत' और 'प्रियप्रवास' महाकाव्यों की रचना द्विवेदी युग में हुई। 'साकेत' के रचनाकार मैथिलीशरण गुप्त हैं तथा 'प्रियप्रवास' के रचनाकार अयोध्यासिंह उपाध्याय हैं।

### छायावादी युग (सन् 1919 से 1938 ई0)

1. छायावादी युग की कालावधि सन् 1919 से 1938 ई० है।
2. छायावादी युग के प्रमुख कवियों के नाम हैं—जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा, डॉ० रामकुमार वर्मा, नरेन्द्र शर्मा, हरिवंशराय बच्चन, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आदि।
3. छायावादी युग के दो कवि और उनकी एक-एक रचना निम्नांकित है—
   1. जयशंकर प्रसाद—कामायनी। 2. सुमित्रानन्दन पन्त—रश्मिबन्ध।
4. छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (विशेषताएँ) हैं—
   1. वैयक्तिकता की प्रधानता, 2. सौन्दर्य-भावना, 3. प्रकृति का मानवीकरण, 4. नैराश्य की भावना, 5. रहस्य-भावना, 6. चिन्तन की प्रधानता आदि।
5. छायावाद की किन्हीं दो रचनाओं व उनके रचनाकारों के नाम हैं—
   1. रश्मिबन्ध — सुमित्रानन्दन पन्त,
   2. कामायनी — जयशंकर प्रसाद।
6. छायावाद के दो महाकाव्य हैं—कामायनी (जयशंकर प्रसाद) तथा उर्मिला (बालकृष्ण शर्मा 'नवीन')।
7. 'हिमकिरीटिनी' तथा 'वेणु लो गूँजे धरा' माखनलाला चतुर्वेदी की प्रमुख रचनाएँ हैं।
8. जयशंकर प्रसाद के प्रमुख काव्य-ग्रंथों के नाम हैं—कामायनी, लहर, प्रेम-पथिक, कानन-कुसुम।
9. 'एकलव्य', 'उत्तराचरण' तथा 'तुलसीदास' भक्तिभावना युक्त काव्य-ग्रंथ हैं। 'एकलव्य',

उत्तरायण के रचयिता 'डॉ० रामकुमार वर्मा' तथा 'तुलसीदास' के रचयिता 'सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं।

**10.** जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', 'सुमित्रानन्दन पन्त' तथा 'महादेवी वर्मा' को छायावाद के चार स्तम्भ कहा जाता है।

**11.** छायावाद के एक कवि का नाम हरिवंशराय बच्चन है।

## प्रगतिवादी युग (सन् 1938 से 1943 ई0)

**1.** प्रगतिवादी युग की कालावधि सन् 1938 से 1943 ई० है।

**2.** प्रगतिवादी युग की चार प्रमुख विशेषताएँ (प्रवृत्तियाँ) हैं—1. मानव की महत्ता का प्रतिपादन, 2. शोषित वर्ग की पीड़ा का चित्रण, 3. सामाजिक यथार्थवाद, 4. क्रान्ति की भावना।

**3.** प्रगतिवादी काव्य का मुख्य उद्देश्य हिन्दी काव्य को एक नयी सशक्त भाषा देना और उसकी अभिव्यंजना शक्ति में वृद्धि करना है।

**4.** प्रगतिवादी युग के दो कवि व उनकी एक-एक रचना निम्नलिखित हैं—

1. शिवमंगल सिंह सुमन, **रचना** — विन्ध्य हिमालय,
2. रामधारी सिंह 'दिनकर' **रचना** — रश्मिरथी।

**5.** 'निराला' की एक **रचना** — अनामिका।

रामधारीसिंह 'दिनकर' की एक **रचना** — उर्वशी।

**6.** 'परशुराम की प्रतीक्षा' के रचनाकार का नाम हैं—रामधारीसिंह 'दिनकर।'

**7.** 'युगधारा' और 'भस्मांकुर' काव्य-कृतियों के रचनाकार का नाम नागार्जुन हैं।

**8.** नागार्जुन की एक काव्य-कृति का नाम 'प्यासी पथराई आँखें' है।

## प्रयोगवादी युग (सन् 1943 से 1953 ई0)

**1.** प्रयोगवादी युग की कालावधि सन् 1943 से 1953 ई० है।

**2.** प्रयोगवाद का आरंभ अज्ञेय द्वारा सम्पादित एवं सन् 1943 ई० में प्रकाशित प्रथम 'तारसप्तक' कविता संकलन से माना जाता है।

**3.** **प्रयोगवादी कवि रचनाएँ**

अज्ञेय — हरी घास पर क्षणभर

भवानीप्रसाद मिश्र — खुशबू के शिलालेख

**4.** प्रयोगवादी काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(i) वैयक्तिकता की प्रधानता। (ii) अति यथार्थवादी दृष्टिकोण। (iii) कुण्ठा और निराशा के स्वर। (iv) गहन बौद्धिकता। (v) भेदश (अनगढ़, विरूप) का चित्रण। (vi) विद्रोह के सवर की प्रधानता। (vii) व्यंग्य तथा कटूक्ति की प्रधानता। (viii) सौन्दर्य के प्रति व्यापक दृष्टिकोण।

**5.** 'आँगन के पार द्वार' के रचयिता का नाम 'अज्ञेय' है।

**6.** भवानीप्रसाद मिश्र द्वारा लिखित प्रयोगवादी कविता-संग्रहों के नाम हैं—गीतफरोश, अँधेरी कविताएँ, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, अनाम तुम आते हो, इंद न मम, नीली रेखा तक, तूस की आग।

**7.** 'अज्ञेय' द्वारा रचित प्रयोगवादी कविता-संग्रहों के नाम हैं—'कितनी नावों में कितनी बार' तथा 'आँगन के पार द्वार।'

**8.** प्रथम 'तारसप्तक' किस सन् 1943 ई० में प्रकाशित हुआ था। उसके सम्पादक का नाम सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' है। इनके चार कवि हैं—1. अज्ञेय, 2. मुक्तिबोध, 3. नेमिचन्द्र, 4. भारतभूषण।

**9.** 'दूसरा तारसप्तक' के संपादक अज्ञेय थे। प्रकाशन वर्ष 1951 ई० में हुआ था। दूसरे 'तारसप्तक' के कवियों के नाम हैं—

1. भवानीप्रसाद मिश्र, 2. शकुन्तला माथुर, 3. हरिनारायण व्यास, 4. शमशेर बहादुर सिंह, 5. नरेश मेहता, 6. रघुवीर सहाय, 7. धर्मवीर भारती।

**10.** 'तीसरा तारसप्तक' सन् 1959 ई० में अज्ञेय के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ था। 'तीसरा सप्तक' के कवियों के नाम हैं—

1. प्रयागनारायण त्रिपाठी, 2. कीर्ति चौधरी, 3. मदन वात्स्यायन, 4. केदारनाथ सिंह, 5. कुँवर नारायण, 6. विजयदेव नारायण साही, 7. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना।

**11.** रामनरेश त्रिपाठी की एक काव्यकृति का नाम है—स्वदेश-प्रेम।

धर्मवीर भारती की एक काव्यकृति का नाम है—ठंडा लोहा।

'कनुप्रिया' धर्मवीर भारती की रचना है।

**12.** प्रयोगवाद का जनक 'अज्ञेय' को माना जाता है।

## नई कविता का युग (सन् 1953 ई0 से)

**1.** नई कविता का प्रादुर्भाव सन् 1953 ई० से हुआ।

**2.** नई कविता मूलत: 'नए पत्ते' (1953 ई०) के प्रकाशन के साथ प्रकाश में आई।

**3.** अज्ञोय — असाध्य वीण

धर्मवीर भारती — अन्धा युग

**4.** नई कविता की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(i) अहं या अतिवैयक्तिकता की प्रधानता। (ii) अति यथार्थवाद। (iii) यौन भावनाओं का खुला चित्रण। (iv) बौद्धिकता की प्रबलता। (v) लघुता की ओर दृष्टिपात। (vi) आस्था-अनास्था एवं क्षणबोध। (vii) वैचित्र्य प्रदर्शन की भावना एवं अतृप्त प्रेम चित्रण। (viii) नवमानव या लघु मानववाद तथा तीक्ष्ण व्यंग्य की प्रधानता। (ix) भाषा और छन्दों में नवीनता, नवीन बिम्ब, प्रतीक एवं उपमान-योजना।

**5.** हिन्दी के तीन प्रसिद्ध महाकाव्यों के नाम हैं—1. साकेत 2. कामायनी 3. उर्वशी।

**6.** वर्तमान युग के दो जीवित कवियों के नाम हैं—1. भारतेंदु मिश्र, 2. अशोक वाजपेयी।

## बहुविकल्पीय प्रश्न

### उत्तरमाला

**1.** (घ) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ख) **6.** (घ) **7.** (ग) **8.** (क) **9.** (ख) **10.** (ग) **11.** (क) **12.** (घ) **13.** (ख) **14.** (ख) **15.** (ख)।

# 1 सूरदास

**(जन्म : सन् 1478 ई० - मृत्यु : सन् 1583 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (क) **6.** (घ) **7.** (घ) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (घ)।

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1. उद्धव और गोपियों की बातचीत को संवादात्मक रूप**

**उद्धव** —गोपियो! भगवान श्रीकृष्ण सर्वव्यापी हैं। वे तुम्हारे हृदय और समस्त जड़-चेतन में व्याप्त हैं। उनसे तुम्हारा वियोग कभी नहीं हो सकता। उनमें भगवद् बुद्धि करके तुम्हें सर्वत्र व्यापक श्रीकृष्ण का साक्षात्कार करना चाहिए।

**गोपियाँ**—हमारे पास तो एक ही मन था, वह भी श्रीकृष्ण के साथ चला गया। अब हम किस मन से तुम्हारे निर्गुण ब्रह्म की आराधना करें? श्रीकृष्ण के बिना हमारी इन्द्रियाँ उसी प्रकार शिथिल अर्थात् शक्तिहीन और निर्बल हो गई है जैसे बिना सिरवाला धड़ शिथिल और बेकार हो जाता है। श्रीकृष्ण के लौटने की आशा में ही हमारे शरीर में श्वास चल रही है और इस आशा में हम करोड़ों वर्षों तक जीवित रह सकती हैं। हे उद्धव! आप तो परम सुन्दर श्रीकृष्ण के मित्रहो और सभी प्रकार के योग (संयोग; मिलन) के स्वामी हो, अर्थात् आप ही श्रीकृशण से हमारा मिलन करा सकते हैं।

**2.** किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नंद कैं आँगन, बिम्ब पकरिबैं धावत।।
कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौं, कर सौं पकरन चाहत।
किलकि हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत।
कनक-भूमि पर कर-पग छाया, एहि उपमा इक राजति।
करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति।
बाल-दसा-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नंद बुलावति।
अँचरा तर लै ढाँकि, सूर के प्रभु कौ दूध पियावति।

**3.** चरन-कमल बंदौं हरि राइ।
जाकी कृपा पंगु, गिरि लंघे, अंधे कौं सब कुछ दरसाइ।
बहिरौं सुनै, गूँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार-बार बंदौं तिहिं पाइ।

**भाव**—ईश्वर के चरणों की महिमा व्यक्त करते हुए उनके प्रति भक्ति भाव की शक्ति का महत्व बताया गया है।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**1. जीवन-परिचय**—भक्तशिरोमणि सूरदास का जन्म सन् 1478 ई० में रुनकता नामक ग्राम

मथुरा (आगरा) में सारस्वत ब्राह्मण पं० रामदास के घर हुआ था। कुछ विद्वान् सीही नामक स्थान को सूरदास का जन्म स्थान स्वीकार करते हैं। सूरदास जी के जन्मान्ध होने के विषय में विद्वान् एकमत नहीं हैं। कुछ विद्वानों का कहना है कि बाल-मनोवृत्तियों एवं मानव-स्वभाव का अत्यन्त सूक्ष्म और सुन्दर वर्णन करने वाला व्यक्ति जन्मान्ध नहीं हो सकता। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि सूरदास जन्मान्ध नहीं थे, वरन् बाद में अन्धे हुए होंगे।

सूरदास जी श्रीवल्लभाचार्य के शिष्य थे। ये मथुरा के गऊघाट पर श्रीनाथ जी के मन्दिर में रहते थे। कहते हैं कि सूरदास का विवाह भी हुआ था। सांसारिक विरक्ति से पूर्व ये अपने परिवार के साथ ही रहा करते थे। आरम्भ में ये दीनता के पद गाया करते थे, किन्तु वल्लभाचार्य के सम्पर्क में आने के पश्चात् ये कृष्णलीला का गुणगान करने लगे। ऐसा माना जाता है कि एक बार मथुरा में सूरदास जी से तुलसीदास जी की भेंट हुई थी और धीरे-धीरे दोनों में प्रेम-भाव बढ़ गया था। सूर से प्रभावित होकर ही तुलसीदास ने 'श्रीकृष्णगीतावली' की रचना की थी।

सूरदास की मृत्यु के सम्बन्ध में कहा जाता है कि इनकी मृत्यु सन् 1583 ई० में बिट्ठलनाथजी के सामने गोवर्धन की तलहटी में स्थित पारसोली नामक ग्राम में हुई थी। अपने अन्तिम समय में इन्होंने गुरु वल्लभाचार्य को समर्पित निम्न पद गाकर सुनाया था—

**भरोसो दृढ़ इन चरनन केरो।**
**श्रीबल्लभ नख-छंद-छटा बिनु सब जग माँझ अँधेरो॥**

तथा 'खंजन नैन रूप रस माते' पद का गान करते हुए अपने पार्थिव शरीर का परित्याग कर दिया था। सूरदास ने कृष्ण के लीला रूप का ही वर्णन किया है, उनकी दृष्टि कृष्ण के योगी रूप पर नहीं रमी है। महाभारत के राजनीतिज्ञ एवं योगीराज श्रीकृष्ण इनकी दृष्टि से अछूते रहे। ये तो मधुरता के गायक थे अत: कृष्ण का बाल सौन्दर्य ही इनकी रचनाओं में स्थान पा सका। इनके काव्य का मुख्य विषय कृष्णभक्ति है। इन्होंने श्रीकृष्ण के सगुण रूप का सखा-भाव के साथ गुणगान किया और इसके आधार पर मानव हृदय की कोमल भावनाओं का हृदयगाही वर्णन कर साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान निर्मित किया। सूरदास के काव्य में राधाकृष्ण की मनोहारी लीलाओं का बड़ा ही मनोवैज्ञानिक और प्रभावकारी अंकन हुआ है। 'भ्रमर-गीत' इनके द्वारा रचित मौलिक तथा अभिनव प्रसंग है जिसकी उपमा विश्व साहित्य में दुर्लभ है।

**रचनाएँ**—भक्त शिरोमणि के विषय में यह प्रसिद्ध है कि इन्होंने लगभग सवा-लाख पदों की रचना की थी, परन्तु अभी तक केवल आठ-दस हजार पद ही प्राप्त हुए हैं। सूर के ग्रंथों की संख्या 25 मानी जाती है, परन्तु उनके प्रामाणिक तीन ग्रंथ ही उपलब्ध हैं। उनका विवरण इस प्रकार है—1. सूरसागर 2. सूर-सारावली 3. साहित्य-लहरी।

**साहित्यिक अवदान**—सूर हिन्दी-साहित्य-सागर के अमूल्य रत्न हैं। इनका एक-एक पद सरसता, मधुरता, कोमलता, प्रेम और भक्ति के पवित्र भावों से पूर्ण है। हिन्दी-साहित्य सूर जैसे कवि को पाकर धन्य हो उठा। उनका 'सूरसागर' हिन्दी-साहित्य की अमूल्य निधि है।

**2.** महाकवि सूरदास का जन्म 'रुनकता' नामक ग्राम में सन् 1478 ई० में प० रामदास के घर में हुआ था। पं० रामदास सारस्वत ब्राह्मण थे। कुछ विद्वान् 'सीही' नामक स्थान को सूरदास का जन्मस्थल मानते हैं। सूरदासजी जन्मान्ध थे या नहीं, इस सम्बन्ध में भी अनेक मत हैं। कुछ लोगों का कहना है कि बाल-मनोवृत्तियों एवं मानव-स्वभाव का जैसा सूक्ष्म और सुन्दर वर्णन सूरदास

ने किया है, वैसा कोई जन्मान्ध व्यक्ति कर ही नहीं सकता, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि वे सम्भवत: बाद में अन्धे हुए होंगे।

सूरदासजी श्री वल्लभाचार्य के शिष्य थे। वे मथुरा के गऊघाट पर श्रीनाथजी के मन्दिर में रहते थे। सूरदास का विवाह भी हुआ था। विरक्त होने से पहले वे अपने परिवार के साथ ही रह करते थे। पहले वे दीनात के पद गाया करते थे, किन्तु वल्लभाचार्यजी के सम्पर्क में आने के बाद वे कृष्णलीला का गान करने लगे। कहा जाता है कि एक बार मथुरा में सूरदासजी से तुलसी की भेंट हुई थी और धीरे-धीरे दोनों में प्रेम-भाव बढ़ गया था। सूर से प्रभावित होकर ही तुलसीदास ने 'श्रीकृष्णगीतावली' की रचना की थी।

सूरदासजी की मृत्यु सन् 1583 ई० में गोवर्धन के पास 'पारसौली' नामक ग्राम में हुई थी।

**3.** सूरदास के गुरु श्री वल्लभाचार्य थे। ये मथुरा के गऊघाट पर श्रीनाथ जी के मन्दिर में रहते थे।

**4.** सूरदास सगुण भक्ति धारा के कवि थे।
'सूरसागर' उनकी एक प्रसिद्ध रचना है।

**5.** सूरदास की भक्ति वात्सल्य से परिपूर्ण है। वह कृष्ण को बाल रूप में ध्याते हैं।

**6.** सूरदास की दो प्रसिद्ध रचनाएँ हैं—सूरसागर, सूर-सारावली।

## तथ्यपरक एवं काव्य-सांराश पर आधारित प्रश्न

**1.** सूरदास भगवान के चरणों की वन्दना बार-बार इसलिए करना चाहते हैं क्योंकि उनकी कृपा से लँगड़ा व्यक्ति पर्वतों को लाँध जाता है, अन्धे व्यक्ति को सब कुछ दिखाई देने लगता है, बहरा सुनने लगता है, गूँगा फिर से बोलने लगता है और भिखारी मुकुटधारी राजा बन जाता है।

**2.** सूरदास को निराकार ब्रह्म के वर्णन में यह कठिनाई है क्योंकि उनके अनुसार मन और वाणी द्वारा निराकार ब्रह्म तक नहीं पहुँचा जा सकता है। इन्द्रियाँ भी उसको पाने में असमर्थ हैं। उसे वही जान सकता है, जो उसे प्राप्त कर लेता है। उस निराकार ब्रह्म का न कोई रूप है, न पहचान है और न हमें उसके गुणों का ही ज्ञान है।

**3.** माखन-चोरी के सम्बन्ध में गोपी यशोदा के पास यह उलाहना लेकर आयी है कि उनके पुत्र के अपने सखा के साथ घर में आकर मेरा सारा माखन चोरी करके खाया है।

**4.** श्रीकृष्ण गाय चराने इसलिए जाना चाहते हैं क्योंकि उन्हें यह बात अच्छी नहीं लगती कि अन्य सभी ग्वाले गाय चराने के लिए जंगल में बजाएँ और मैं घर पर बैठा रहूँ।

**5.** कृष्ण हर समय अपनी मुरली की तान द्वारा मधुर धुन छेड़ते रहते थे। वे गोपियों की तरफ ध्यान ही नहीं देते थे। गोपियाँ इस उपेक्षा काकारण मुरली को मानती थीं। इसलिए गोपियाँ कृष्ण की मुरली को चुराना चाहती थीं।

**6.** यशोदा देवकी के पास यह संदेश भेजती हैं कि मैं तो तुम्हारे पुत्र की धाय हूँ अत: मुझ पर कृपा करती रहना। सवेरा होते ही मेरे लाडले कृष्ण को माखन-रोटी अच्छी लगती है। उबटन, तेल और गर्म पानी देखते ही श्रीकृष्ण भाग जाते हैं। वे जो कुछ माँगते, मैं वहीं देती थी। इस प्रकार वे धीरे-धीरे स्नान करते हैं।

**7.** उद्धव गोपियों को यह समझाने गोकुल गए थे कि वे कृष्ण के वियोग में अपनेमन पर नियन्त्रण रखे और कृष्ण के प्रति प्रेम-भाव को भुलाकर योग साधना में लीन हो जाएँ।

**8.** गोपियों ने उद्धव को यह उत्तर दिया—हे उद्धव हमारे पास दस-बीस मन नहीं हैं। हमारे पास तो एक ही मन था, वह भी श्रीकृष्ण के साथ चला गया। श्रीकृष्ण के बिना हमारी इन्द्रियाँ उसी प्रकार शक्तिहीन व निर्बल हो गई हैं जैसे बिना सिर के धड़ शिथिल और बेकार हो जाता है। श्रीकृष्ण के लौटने की आशा में ही हमारे शरीर में शवास चल रही है और इसी आशा में हम करोड़ों वर्षों तक जीवित रह सकती हैं।

**9.** भ्रमरगीत के माध्यम से कवि ने गोपियों द्वारा भगवान के सगुण रूप की उपासना की है क्योंकि सूरदास ने योग की अपेक्षा भक्ति का महत्व अधिक प्रतिपादित किया है। सूरदास ने अपने भ्रमरगीत की रचना करते समय अपना उद्देश्य यह रखा है कि सगुण ब्रह्म की विजय की प्रतिष्ठा की जाए। इस कारण उन्होंने अनेक स्थलों पर ब्रह्म के समर्थन में तो अनेक तर्क दिए हैं पर निर्गुण ब्रह्म की ओर से तर्क प्रस्तुत नहीं किए। निर्गुण पर सगुण की विजय इस बात से भी व्यक्त होती है कि उद्धव-गोपी संवाद के समय उद्धव सिर झुकाकर अपनी हार स्वीकार कर लेते हैं।

**10.** सूरदास ने अपनी भक्ति में ईश्वर के समक्ष अनेक प्रकार की विनय भावना व्यक्त की है। सूरदास ने स्वयं को अपने ईश्वर का तुच्छ सेवक मानते हुए उनके समक्ष दैव्य प्रकट किया है। इस प्रकार सूरदास की भक्ति 'दास्य भाव' की भक्ति कहलाती है। जिसमें भक्त स्वयं को अपने ईश्वर का दास मानकर उनकी सेवा और भक्ति करता है।

## पद्यांश व्याख्या

**निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा इनका काव्य-सौन्दर्य भी लिखिए—**

**( क ) चरन-कमल बंदौं .......................................... तिहिं पाइ।**

**सन्दर्भ**—प्रस्तुत वन्दना-पद **महाकवि सूरदास** द्वारा रचित **'सूरसागर'** महाकाव्य से उद्धृत है। यह हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में **'पद'** शीर्षक के अन्तर्गत संकलित है।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पद में महाकवि सूरदास ने अपने आराध्य के चरणों की वन्दना की है।

**व्याख्या**—भक्त सूरदास कहते हैं कि हे प्रभु! मैं आपके कमलरूपी चरणों की वन्दना करता हूँ, जिनकी कृपा से लँगड़ा व्यक्ति पर्वतों को लाँघ जाता है, अन्धे व्यक्ति को सब कुछ दिखाई देने लगता है, बहरा सुनने लगता है, गूँगा फिर से बोलने लगता है और भिखारी मुकुटधारी राजा बन जाता है। सूरदासजी कहते हैं कि हे करुणामय और दयामय स्वामी! मैं ऐसे अद्भुत चरणों की बार-बार वन्दना करता हूँ।

**काव्य-सौन्दर्य—1.** ईश्वर के चरणों की महिमा व्यक्त करते हुए उनके प्रति भक्ति-भाव की शक्ति का महत्व बताया गया है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—भक्ति। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—रूपक, अनुप्रास और पनुरुक्तिप्रकाश। **6. छन्द**—गेय-पद।

**( ख ) अबिगत-गति कछु .......................................... सगुन-पद गावै॥**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पद में महाकवि सूरदास ने निराकार ब्रह्म की साधना को अत्यधिक कठिन बताया है। इसी के साथ साकार ब्रह्म की उपासना को सर्वसाधारण के लिए सरल बताते हुए उसी का समर्थन भी किया है।

**व्याख्या**—निराकार ब्रह्म की स्थिति का वर्णन नहीं किया जा सकता, अर्थात् वह अनिर्वचनीय है। जिस प्रकार गूँगा व्यक्ति मीठे फल का स्वाद अपने हृदय में ही अनुभव करता है, उसका वर्णन नहीं कर सकता, उसी प्रकार आनन्द से भरे हुए और रसमय ईश्वर को प्राप्त करने का अलौकिक आनन्द सभी को निरन्तर अत्यधिक सन्तोष प्रदान करता है। मन और वाणी द्वारा उस परब्रह्म परमात्मा तक नहीं पहुँचा जा सकता। इन्द्रियाँ भी उसको पाने में असमर्थ हैं। उसे वही जान सकता है, जो उसे प्राप्त कर लेता है। उस निराकार ब्रह्म का न कोई रूप है, न पहचान है और न हमें उसके गुणों का ही ज्ञान है; अत: बिना किसी आधार के कहाँ-कहाँ दौड़ते रहें। अन्त में सूरदासजी कहते हैं कि निर्गुण को सब प्रकार से अगम्य मानकर मैं सुगुण ब्रह्म की लीलाओं का वर्णन करता हूँ।

**काव्य-सौन्दर्य—1.** निर्गुण ब्रह्म की उपासना की कठिनाइयों की भावात्मक अभिव्यक्ति करते हुए सगुण ब्रह्म की उपासना को सरल बताया गया है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—यमक, दृष्टान्त, हेतु और अनुप्रास। **6. छन्द**—गेय-पद।

**( ग ) किलकत कान्ह .......................................... पियावति॥**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—बाल-वर्णन के क्षेत्र में कवि सूर की तुलना कोई नहीं कर सका है। बाल-वर्णन का एक-एक पद सूर की अद्‌भुत प्रतिभा का परिचायक है। प्रस्तुत पद में घुटनों के बल चलते हुए श्रीकृष्ण की शोभा का वर्णन हुआ है।

**व्याख्या**—किलकारी मारते हुए श्रीकृष्ण घुटनों क बल आ रहे हैं। नन्दजी के स्वर्ण से बनाए गए और मणियों से युक्त आँगन में श्रीकृष्ण अपनी परछाईं को पकड़ने के लिए दौड़ते हैं। अपनी परछाईं को देखकर वे उसे अपने हाथ से पकड़ना चाहते हैं। किलकारियों मारते समय उनके आगे के दो दाँत सुशोभित हो रहे हैं। बार-बार वे उनहें दिखलाते हैं। स्वर्ण-निर्मित आँगन में श्रीकृष्ण की छाया को देखकर मन में यह उपमान प्रस्तुत होता है कि मानो प्रत्येक मणि में उनके बैठने के लिए पृथ्वी ने कमल का आसन सजा दिया हो। श्रीकृष्ण की बाल-लीला के सुख को देखकर यशोदा बार-बार नन्दजी को बुलाती हैं और अपने आँचल से ढककर सूरदास के स्वामी श्रीकृष्ण को दूध पिलाती हैं।

**काव्य-सौन्दर्य—1.** कृष्ण की बाललीला की सजीव अभिव्यक्ति हुई है। **2.** बालकों की क्रीडा से सम्बन्धित कवि की कल्पना प्रशंसनीय है। **3. भाषा**—ब्रज। **4. रस**—वात्सल्य। **5. गुण**—प्रसाद और माधुर्य। **6. अलंकार**—उत्प्रेक्षा, पुनरुक्तिप्रकाश, वीप्सा और अनुप्रास। **7. छन्द**—गेय-पद।

**( घ ) मैया हौं न .......................................... ताहि रिंगाइ॥**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—श्रीकृष्ण ने गायों को चराने की हठ की। माता ने उन्हें बालकों के साथ भेज दिया, किन्तु वन में बालकों ने उन्हें परेशान किया। इस पद में श्रीकृष्ण ने माँ यशोदा से ग्वालों की शिकायत की है।

**व्याख्या**—श्रीकृष्ण कहते हैं कि मैं गाय चराने नहीं जाऊँगा। सभी ग्वाले मुझसे गायों को घिरवाते हैं, जिससे मेरे पैर दु:खने लगते हैं। हे माता! यदि आपको मेरी बात पर विश्वास न हो तो अपनी सौगन्ध दिलाकर बलराम भैया से पूछ लो। श्रीकृष्ण द्वारा ऐसा कहने पर माता यशोदा क्रोधित होकर ग्वालों को गाली देती हैं और कहती हैं कि मैं अपने पुत्र को वन में इसलिए भेजती हूँ कि वह अपना मन बहलाकर आ जाए। मेरा श्रीकृष्ण अभी छोटा-सा बालक है। ये ग्वाले उसे घुमा-घुमाकर मार डालेंगे।

**काव्य-सौन्दर्य—1.** प्रस्तुत पद में बालक के स्वभाव का और माता के मनोविज्ञान का हृदयस्पर्शी वर्णन हुआ है। **2.** सरल और स्वाभाविक ब्रजभाषा का सौन्दर्य द्रष्टव्य है। **3. रस**—वात्सल्य। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—अनुप्रास। **6. छन्द**—गेय-पद।

**( ङ ) सखी री, .......................................... राग की डोरि।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पद में वंशी के प्रति गोपियों की ईर्ष्या का वर्णन हुआ है।

**व्याख्या**—परस्पर वार्त्तालाप करती हुई गोपियों में से एक सखी दूसरों से कहती है कि हे सुखी! इस मुरली को तो चुरा लेना चाहिए। इस मुरली ने अन्य सभी के प्रेम-सम्बन्धों को समाप्त करके श्रीकृष्ण को अपने अधिकार में कर लिया है। यह मुरली कृष्ण को इतनी प्यारी लगती है कि वे इसे रात-दिन अर्थात् किसी भी समय अपने से अलग नहीं करते, यहाँ तक कि वे मुरली को क्षणभर के लिए भी घर अथवा बाहर नहीं छोड़ते हैं ओर इसे हर समय साथ रखते हैं। वे इसे कभी हाथ में ले लेते हैं, कभी होठों पर रखते हैं और कभी अपने फेंटे में लगा लेते हैं। शायद इस मुरली ने श्रीकृष्ण पर जादू करके उनके एक-एक अंग को भुलावे में डाल रखा है। हे सुखी! इस वंशी ने श्रीकृष्ण का मन प्रेम की डोरी से बाँधा हुआ है।

**काव्य-सौन्दर्य—1.** प्रस्तुत पद में महाकवि सूरदास ने गोपियों की ईर्ष्या का बड़ा सजीव और स्वाभाविक वर्णन किया है। **2.** गोपियों को ऐसा प्रतीत होता है, मानो मुरली उनकी सौत हो; क्योंकि वह कृष्ण को उनसे ज्यादा प्रिय है। **3. भाषा**—ब्रज। **4. रस**—शृंगार। **5. गुण**—माधुर्य। **6. अलंकार**—श्लेष, पुनरुक्तिप्रकाश और अनुप्रास। **7. छन्द**—गेय-पद।

**( च ) ऊधौ मन .......................................... जगदीस।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—यह भ्रमरगीत प्रसंग का एक सरस अंश है। श्रीकृष्ण मथुरा चल गए हैं। उनके वियोग में गोपियाँ अत्यधिक व्याकुल हैं। उद्धवजी श्रीकृष्ण का सन्देश लेकर ब्रज में आए हैं। गोपियाँ उनसे अपने मन की व्यथा कहते हैं कि वे श्रीकृष्ण के अतिरिक्त किसी अन्य की आराधना नहीं कर सकतीं।

**व्याख्या**—गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव! हमारे दस-बीस मन नहीं हैं। हमारे पास तो एक ही मन था, वह भी श्रीकृष्ण के साथ चला गया। अब हम किस मन से तुम्हारे निर्गुण ब्रह्म की आराधना करें? श्रीकृष्ण के बिना हमारी इन्द्रियाँ उसी प्रकार शिथिल अर्थात् शक्तिहीन और निर्बल हो गई हैं जैसे बिना सिरवाला धड़ शिथिल और बेकार हो जाता है। श्रीकृष्ण के लौटने की आशा में ही हमारे शरीर में श्वास चल रही है और इसी आशा में हम करोड़ों वर्षों तक

जीवित रह जाती हैं। हे उद्धव! आप तो परम सुन्दर श्रीकृष्ण के मित्र हो और सभी प्रकार के योग (संयोग; मिलन) के स्वामी हो, अर्थात् आप ही श्रीकृष्ण से हमारा मिलन करा सकते हैं। सूरदासजी कहते हैं कि गोपियों ने उद्धव को स्पष्ट रूप से बता दिया है कि नन्दजी के पुत्र श्रीकृष्ण के अतिरिक्त हमारा कोई और ईश्वर नहीं है, अर्थात् श्रीकृष्ण ही हमारे एकमात्र आराध्य है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ गोपियों के कृष्ण-प्रेम की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति करते हुए सूरदास ने सगुण भक्ति की श्रेष्ठता स्थापित की है। **2.** गोपियों की भक्ति-भावना में स्वाभाविक मानसिक उद्वेगों का चित्रण हुआ है। **3. भाषा**—वियोग श्रृंगार। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—उपमा, श्लेष तथा अनुप्रास। **6. छन्द**—गेय-पद।

**(छ) ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत .......................................... जिनसौं हित जदु-तात॥**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—गोपियों के मन में ज्ञान और योग की स्थापना करने में उद्धव असफल हो गए। इतना ही नहीं, वे स्वयं प्रेम और भक्ति के रंग में रँगकर मथुरा पहुँचे। उद्धव ने श्रीकृष्ण को ब्रज की सम्पूर्ण स्थिति समझाई और माता यशोदा का समाचार दिया। इस पर श्रीकृष्ण ने कहा कि हे उद्धव! ब्रज की याद मुझसे भुलाई नहीं जाती।

**व्याख्या**—श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे उद्धव! मैं अनेक प्रकार से ब्रज को भुलाने का प्रयास करता हूँ, किन्तु भूल नहीं पाता। वृन्दावन और गोकुल के वन, उपवन तथा कुंजों की घनी छाँव भी मुझसे भुलाए नहीं भूलती। प्रात:काल यशोदा माता और नन्दजी मुझे देखकर अत्यधिक आनन्दित होते थे। माता यशोदा दही, मक्खन और रोटी को अत्यधिक प्रेम के साथ मुझे खिलाती थीं। हम गोपियों और ग्वालों के साथ विभिन्न प्रकार की क्रीडाएँ करते थे, हर दिन हँसते और सन्तोष पाते थे। सूरदासजी कहते हैं कि वे ब्रजवासी धन्य हैं, जिन्हें श्रीकृष्ण जैसे हितैषी और प्रेमी मिले हैं।

**काव्य-सौन्दर्य**—**1.** यहाँ गोपियों के कृष्ण-प्रेम की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति करते हुए सूरदास ने सगुण भक्ति की श्रेष्ठता स्थापित की है। 2. गोपयिों की भक्ति-भावना में स्वाभाविक मानसिक उद्वेगों का चित्रण हुआ है। **3. भाषा**—वियोग श्रृंगार। **4. गुण**— माधुर्य। **5. अलंकार**—उपमा, श्लेष तथा अनुप्रास। **6. छन्द**—गेय-पद।

**(ज) निरगुन कौन देस कौ .......................................... सूर सवै मति नासी॥**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—ब्रज में पहुँचकर उद्धव गोपियों को निर्गुण ब्रह्म का उपदेश देते हैं। गोपियाँ साकार ब्रह्म की उपासक हैं। वे उनकी बात को गम्भीरता से नहीं सुनतीं और उद्धव द्वारा बताए गए निर्गुण ब्रह्म का उपहास भ्रमर के माध्यम से करती हैं।

**व्याख्या**—गोपयिाँ कहती हैं—हे भ्रमर! निर्गुण ब्रह्म किस देश का निवासी है? हम शपथ देकर सच-सच पूछ रही हैं, हँसी नहीं करतीं। हमें यह बात पूरी तरह समझाकर बताओ। उसका पिता कौन है, माता कौन है, स्त्री और दासी कौन है? उसका रंग और वेश कैसा है? उसे किस रंग से अधिक लगाव है? यदि तुम कपट करोगे तो उसका फल स्वयं पाओगे।

सूरदास कहते हैं कि गोपियों के ऐसे तर्कपूर्ण प्रश्न सुनकर उद्धव किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए और उनका विधेय के समाप्त हो गया।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** ज्ञानियों का विवेक भी अज्ञानियों के तर्क के सामने शून्य होकर रह जाता है। सूरदास ने निर्गुण ब्रह्म के प्रति अज्ञानता से भरी गोपियों के अद्‌भुत तर्क से हुई उद्धव की विचित्र मनोदशा का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। 2. गोपियाँ यहाँ भ्रमर के माध्यम से उद्धव से व्यंग्यात्मक परिहास करती हैं, जिसमें सूर की कल्पना-शक्ति की उत्कृष्टता विद्यमान है। **3. भाषा**—ब्रज। **4. रस**—वियोग श्रृंगार। **5. गुण**—माधुर्य। **6. अलंकार**—वक्रोक्ति, अन्योक्ति तथा मानवीकरण। **7. छन्द**—गेय-पद।

## काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

**1.** **निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए—**

(क) रूपक अलंकार (ख) रूपक अलंकार (ग) अनुप्रास अलंकार।

**2.** **निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—**

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** सूरदास ने निर्गुण ब्रह्म के प्रति अज्ञानता से भरी गोपियों के अद्‌भुत तर्क का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—वियोग रस। **4. गुण**— माधुर्य। **5. अलंकार**—वक्रोक्ति। **6. छन्द**—गेय-पद।

**3.** सूर वात्सल्य रस के सम्राट कहे जाते हैं।

**4.** निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा रस है ?

(क) भक्ति रस (ख) करुण रस (ग) करुण रस

# 2 गोस्वामी तुलसीदास

**(जन्म : सन् 1532 ई० - मृत्यु : सन् 1623 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (घ) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (ख) **6.** (क) **7.** (क) **8.** (घ) **9.** (क) **10.** (ख) **11.** (क) **12.** (ग) **13.** (क) **14.** (ग) **15.** (क) **16.** (ग)।

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** **तुलसीदास की मुख्य रचनाओं की सूची—**

1. श्रीरामचरितमानस, 2. श्रीकृष्ण गीतावली, 3. गीतावली, 4. विनयपत्रिका, 5. दोहावली, 6. कवितावली, 7. रामलला नहछू, 8. वैराग्य संदीपनी, 9. रामाज्ञा प्रश्न, 10. जानकी-मंगल, 11. पार्वती-मंगल, 12. बरवै-रामायण।

**2.** **'श्रीरामचरितमानस' का महत्त्व**

1. श्रीरामचरितमानस जीवन और संघर्ष का परिचायक है।

2. इसमें माता-पिता की आज्ञा का पालन करने की प्रेरणा दी गई है तथा माता-पिता को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।
3. गुरुजनों की आज्ञा को शिरोधार्य रखने को प्रेरित किया गया है।
4. इसमें भ्रातृ प्रेम को दर्शाया गया है।
5. इसमें दर्शाया गया है कि राजा को प्रजा का सेवक होना चाहिए।
6. इसमें सभी रिश्तों, सभी भावनाओं, सभी मर्यादाओं को संतुलित करके जीवन जीने की प्रेरणा दी गई है।
7. इसमें भारतीय संस्कृति को मानवीय गुणों का संगम दर्शाया गया है।
8. इसमें एकता, अखण्डता, शान्ति और वैशिवक भाईचारे का सन्देश दिया गया है।
9. इसमें नारी का सम्मान व रक्षा करने की प्रेरणा दी गई है।
10. इसमें भक्ति, प्रेम, श्रद्धा, त्याग, विश्वास आदि गुणों को दर्शाया गया है।

**3. समय का महत्व**—समय बीत जाने पर किसी वस्तु की प्राप्ति कोई अर्थ नहीं रखती। खेती सूख जाने पर अमृत जैसा जल देने वाली वर्षा भी फिर से पौधों को हरा नहीं कर सकती। यह स्थिति जीवन में प्राप्त होने वाले अवसरों के विषय में कहीं जा सकती है क्योंकि अवसर किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। समय कभी रुकता नहीं समय हाथ से निकल जाए तो पछताने के अलावा कोई चारा नहीं। अत: आलस्य त्याग कर समय रहते अपने कार्य को पूर्ण करना चाहिए। समय की उपेक्षा करने वालों के हाथ समय कभी नहीं आता। वहीं समय का सदुपयोग करने वालों का वह अनुचर बनकर उनके लिए सभी साधन जुटा देता है। संसार के प्रत्येक सफल व्यक्ति की उपलब्धियों का रहस्य केवल समय की पहचान और उसका सही उपयोग ही होता है। इसलिए हमें भी प्रत्येक कार्य सही समय पर करना चाहिए।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**उत्तर**—

**1. जीवन-परिचय**—तुलसीदास की जन्मतिथि तथा जन्म स्थान के सम्बन्ध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद हैं। शिवसिंह सरोज में इनका जन्म संवत् 1583 वि० सन् (1526 ई०) तथा पं० रामगुलाम द्विवेदी ने इनका जन्म संवत् 1589 वि० (सन् 1532 ई०) माना है। सर जॉर्ज ग्रियर्सन भी इसी जन्म संवत् को मानते हैं, अत: यही हम भी मानते हैं।

मूल गोसाईंचरित 'तुलसीचरित' में इनका जन्म स्थान 'राजापुर' बताया गया है जबकि कुछ विद्वान् इस पंक्ति को आधार मानकर इनका जन्म स्थान 'सोरो' मानते हैं—'मैं पुनि निजगुरु सन सुनि, कथा सो सूकरखेत'।

जनश्रुतियों के आधार पर माना जाता है कि गोस्वामी तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम दुबे एवं माता का नाम हुलसी था। कहा जाता है कि इनके माता-पिता ने इन्हें बाल्यकाल में ही त्याग दिया था। इनका पालन-पोषण प्रसिद्ध सन्त बाबा नरहरिदास ने किया तथा इन्हें ज्ञान तथा भक्ति की शिक्षा प्रदान की। इन्हीं की कृपा से तुलसीदासजी वेद, वेदांग, दर्शन, इतिहास, पुराण आदि में निष्णात हो गए।

तुलसीदास का विवाह रत्नावली के साथ हुआ था, जो पं० दीनबन्धु पाठक की सुन्दर कन्या थी। कहा जाता है कि तुलसीदास रत्नावली के प्रति अत्यन्त आसक्त रहते थे। अपने प्रति अत्यधिक

आसक्ति से रुष्ट होकर इनकी पत्नी ने इन्हें धिक्कारा और कहा—

**'हाड़ मांस की देह सो ऐसी सच्ची प्रीत।**
**ऐसी जो श्रीराम में होत न तो भवभीत।'**

इन पंक्तियों को सुनकर इन्हें आत्मज्ञान हो गया और इनके अन्दर श्रीराम की भक्तिधारा बहने लगी। इन्होंने घर त्याग कर वैराग्य धारण कर लिया। संवत् 1680 (सन् 1623 ई०) में काशी में इनका निधन हो गया।

**2.** तुलसीदास की जन्मतिथि तथा जन्म स्थान के सम्बन्ध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद हैं। शिवसिंह सरोज में इनका जन्म संवत् 1583 वि० सन् (1526 ई०) तथा पं० रामगुलाम द्विवेदी ने इनका जन्म संवत् 1589 वि० (सन् 1532 ई०) माना है। सर जॉर्ज ग्रियर्सन भी इसी जन्म संवत् को मानते हैं, अत: यही हम भी मानते हैं।

**3.** तुलसीदास के चार प्रसिद्ध ग्रंथों के नाम हैं—1. श्रीरामचरितमानस, 2. विनयपत्रिका, 3. दोहावली, 4. पार्वती-मंगल।

**4.** तुलसीदास ने अपने काव्य में भगवान राम के लोकोपकारी रूप को प्रतिष्ठापित करके निराश जनता को संबल दिया है। उन्होंने मर्यादा और समन्वय की भावना पर बल दिया है।

**5.** तुलसीदास के पदों के आधार पर भक्तिकाल की दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं—1. भक्ति-भावना की प्रधानता। 2. सगुण तथा निर्गुण दोनों रूपों में ईश्वर की भक्ति।

**6.** **जीवन-परिचय**—तुलसीदास की जन्मतिथि तथा जन्म स्थान के सम्बन्ध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद हैं। शिवसिंह सरोज में इनका जन्म संवत् 1583 वि० सन् (1526 ई०) तथा पं० रामगुलाम द्विवेदी ने इनका जन्म संवत् 1589 वि० (सन् 1532 ई०) माना है। सर जॉर्ज ग्रियर्सन भी इसी जन्म संवत् को मानते हैं, अत: यही हम भी मानते हैं।

मूल गोसाईंचरित 'तुलसीचरित' में इनका जन्म स्थान 'राजापुर' बताया गया है जबकि कुछ विद्वान् इस पंक्ति को आधार मानकर इनका जन्म स्थान 'सोरो' मानते हैं—'मैं पुनि निजगुरु सन सुनि, कथा सो सूकरखेत'।

जनश्रुतियों के आधार पर माना जाता है कि गोस्वामी तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम दुबे एवं माता का नाम हुलसी था। कहा जाता है कि इनके माता-पिता ने इन्हें बाल्यकाल में ही त्याग दिया था। इनका पालन-पोषण प्रसिद्ध सन्त बाबा नरहरिदास ने किया तथा इन्हें ज्ञान तथा भक्ति की शिक्षा प्रदान की। इन्हीं की कृपा से तुलसीदासजी वेद, वेदांग, दर्शन, इतिहास, पुराण आदि में निष्णात हो गए।

तुलसीदास का विवाह रत्नावली के साथ हुआ था, जो पं० दीनबन्धु पाठक की सुन्दर कन्या थी। कहा जाता है कि तुलसीदास रत्नावली के प्रति अत्यन्त आसक्त रहते थे। अपने प्रति अत्यधिक आसक्ति से रुष्ट होकर इनकी पत्नी ने इन्हें धिक्कारा और कहा—

**'हाड़ मांस की देह सो ऐसी सच्ची प्रीत।**
**ऐसी जो श्रीराम में होत न तो भवभीत।'**

इन पंक्तियों को सुनकर इन्हें आत्मज्ञान हो गया और इनके अन्दर श्रीराम की भक्तिधारा बहने लगी। इन्होंने घर त्याग कर वैराग्य धारण कर लिया। संवत् 1680 (सन् 1623 ई०) में काशी में इनका निधन हो गया।

**रचनाएँ**—तुलसीदास जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार है—1. श्रीरामचरितमानस 2. श्रीकृष्ण गीतावली 3. गीतावली 4. विनयपत्रिका 5. दोहावली 6. कवितावली।

**7.** तुलसीकृत अवधी की एक रचना 'श्रीरामचरितमानस' तथा ब्रजभाषा की एक रचना 'गीतावली' हैं।

**8.** तुलसीदास ने अपने काव्य की रचना अवधी व ब्रजभाषा में की है।

**9.** तुलसीदास के गुरु प्रसिद्ध संत बाबा नरहरिदास थे। वे राजापुर में रहते थे।

**10.** तुलसीदास जी ने तत्कालीन सभी **काव्य-शैलियों** का प्रयोग अपने काव्य में किया। इन्होंने 'रामचरितमानस' में **प्रबन्ध** शैली, 'विनयपत्रिका' में **मुक्तक** शैली और दोहावली में **साखी** शैली का प्रयोग किया। इसके अतिरिक्त दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया, पद आदि **काव्य-शैलियों** में तुलसी ने पूर्ण सफलता के साथ काव्य-रचना की है।

**11.** तुलसीदास का हिन्दी-साहित्य में अभूतपूर्व योगदान है। रामचरितमानस जैसे कालजयी ग्रंथ की रचना करके पूरे विश्व में हिन्दी साहित्य का डंका बजाने का कार्य उन्होंने किया मुगल शासन में भी उन्होंने हिन्दू साहित्य की रचना करके हिन्दू धर्म का संरक्षण, संवर्धन किया। इन्होंने हिन्दी कविता की सर्वतोन्मुखी उन्नति की।

**12.** तुलसीदास के काव्य की प्रमुख दो विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

1. तुलसीदास ने शैव तथा वैष्णव सम्प्रदायों में समन्वय किया।
2. संस्कृत भाषा में रचित रामकथा को तुलसीदास को लोकभाषा अवधि में रचकर उसे सर्वसुलभ कर दिया।

## तथ्यपरक एवं काव्य-सांराश पर आधारित प्रश्न

### धनुष-भंग

**1.** मंच पर राम को विराजमान देखकर वहाँ पर उपस्थित राजाओं की सीता को प्राप्त करने की आशारूपी रात्रि नष्ट हो गई क्योंकि वे यह जान चुके थे कि अब धनुष भंग हो ही जाएगा।

**2.** राम के मंच पर विराजमान होने पर मुनियों और देवताओं का शोक समाप्त हो गया, क्योंकि वे सभी चाहते थे कि श्रीराम और सीता का यह संयोग हो जाए।

**3.** धनुष-भंग के समय सीता की माता ने अपनी सखियों से कहा कि ये (राम) तो अभी बालक हैं। इनका धनुष तोड़ने की हठ करना ठीक नहीं है। इस धनुष की कठोरता और गुरुता के कारण रावण और बाणासुर जैसे वीरों ने इसे छुआ तक नहीं है। सभी राजा इसे तोड़ने का घमंड करके अपनी हार मान चुके हैं, उसी धनुष को तोड़ने के लिए इस राजकुमार के हाथ में दे रहे हैं। भला कहीं हंस का बच्चा मन्दराचल (पहाड़) को उठा सकता है।

**4.** राम की कोमलता देखकर सीता जी की माता का मन विचलित हो गया कि जब अत्यन्त शूरवीर राजागण इस धनुष को उठा तक नहीं सके, तब यह कोमल बालक इसे कैसे तोड़ पाएगा? इसी संशय के कारण वे अत्यन्त भावुक हो उठीं और बिलख पड़ीं।

**5.** सीता जी की चतुर सखी ने उनकी माता को यह कहकर समझाया—हे रानी! तेजवान व्यक्तियों को छोटा होने पर भी छोटा नहीं मानना चाहिए। वह अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहती है कि कहाँ घड़े से उत्पन्न होने वाले छोटे-से मुनि अगस्त्य और कहाँ अपार समुद्र? दोनों में कोई बराबरी नहीं, किंतु उन्होंने सारे समुद्र को सोख लिया था, जिसका सुयश सारे संसार में छाया

हुआ है। इसी प्रकार सूर्य को घेरा (मण्डल) देखने में छोटा लगता है, किंतु उसके उदय होते ही तीनों लोकों का अन्धकार भाग जाता है। अपने मन का संशय त्याग दीजिए। श्रीराम धनुष को अवश्य ही तोड़ देंगे।

**6.** सीता जी की माता ने ईश्वर से प्रार्थना की कि सीता जी का विवाह श्रीराम से हो जाए।

**7.** धनुष के पास पहुँचकर राम ने लोगों को जड़-निश्चेष्ट रूप में देखा।

**8.** धनुष-भंग होने के कठोर शब्द से सब लोक भयंकर कठोर ध्वनि से भर गए, जिससे घबराकर सूर्य के घोड़े मार्ग छोड़कर भागने लगे। दिग्गज (दिशाओं के आठ हाथी) चिंघाड़ने लगे, पृथ्वी काँपने लगी, शेषनाग, वाराह और कच्छप व्याकुल हो उठे। ध्वनि की भयंकरता के कारण देवता, राक्षसों व मुनिगणों ने कानों पर हाथ रख लिए।

**9.** **'धनुष-भंग' का सारांश**—स्वयंवर सभा में सभी राजा शिव के धनुष को तोड़ने के प्रयास में असफल हो गए तब राम धनुष तोड़ने के लिए मंच पर आए। उनके सुन्दर व कोमल शरीर को देखकर सीता जी की माता को उनके धनुष तोड़ने के सामर्थ्य पर सन्देह हुआ और उन्होंने रोकर अपनी सखी के सामने अपना सन्देह प्रकट किया तब उनकी सखी ने उन्होंने आश्वस्त किया कि राम धनुष अवश्य तोड़ देंगे। श्रीराम को मंच पर देखकर सीता जी ईश्वर से प्रार्थना करती हैं कि धनुष का भारीपन बहुत कम कर दें। लक्ष्मण जी ने कच्छ, शेषनाग, वाराह को पृथ्वी को दृढ़ता से थामने के लिए कहा जिससे धनुष-टूटने पर यह तनिक भी न हिलने पाए। इसके पश्चात श्रीराम ने बहुत फुर्ती से धनुष को उठा लिया और श्रीराम ने धनुष की प्रत्यंचा खींचकर धनुष को बीच से तोड़ डाला। धनुष के टूटने की आवाज से सब लोक भयंकर कठोर ध्वनि से भर गए।

## वन-पथ पर

**1.** सीताजी अयोध्या नगर से निकलीं।

**2.** सीताजी ने राम से प्रश्न किया कि हमें अभी कितना और चलना है और आप झोंपड़ी कहाँ बनाएँगे।

**3.** पत्नी सीता की अधीरता देखकर राम के नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित हुई।

**4.** गाँव की एक स्त्री अपनी सखी से वन-पथ पर जाते हुए राम-लक्ष्मण तथा सीता को देखकर कहती है कि रानी कैकेयी बड़ी अज्ञानी हैं। उनका हृदय तो पत्थर और वज्र से भी कठोर है। राजा दशरथ ने भी उचित-अनुचित का विचार नहीं किया और केवल स्त्री के कहने पर इन्हें वन में भेज दिया। ये तो इतनी लुभावनी मूर्तियाँ हैं कि इनके बिछुड़ने पर इनके परिवार के लोग किस प्रकार जीवित रहे होंगे। हे सखी! ये तो आँखों में रखने योग्य हैं तो फिर इन्हें वनवास क्यों दे दिया गया।

**5.** उस स्त्री की बात सुनकर गाँव की अन्य स्त्रियाँ बहुत दुखी हुईं।

**6.** गाँव की स्त्रियों ने सीताजी से से प्रश्न किया कि जिनके सिर पर जटाएँ हैं, जिनकी भुजाएँ और वक्षस्थल विशाल हैं जिनके नेत्र लाला हैं, जिनकी भौंहें तिरछी हैं, जिन्होंने तरकश, धनुष और बाण सँभाल रखे हैं तथा जो बार-बार आदर और चाव से तुम्हारी ओर देखते हुए हमारे मन को मोहित कर रहे हैं, वे साँवले-से तुम्हारे कौन लगते हैं?

**7.** सीता जी ने गाँव की स्त्रियों को उनके प्रश्न का उत्तर संकेतों के द्वारा समझाते हुए दिया।

**8.** 'वन-पथ पर' वे चार पंक्तियाँ जिनमें राम के रूप-सौंदर्य का वर्णन है, निम्नलिखित हैं—

सीस जटा, उर बाहु बिसाल, बिलोचन लाल, तिरीछी सी भौहैं।
तून सरासन बान धरे, तुलसी बन-मारग में सुठि सोहैं।।
सादर बारहिं बार सुभाय, चितै तुम त्यों हमरो मन मौहैं।
पूछति ग्राम बधू सिय सो 'कहौं साँवरे से, सखि रावरे को हैं?'

9. **'वन-पथ पर' कविता का मूल भाव ( सारांश )**—राम, लक्ष्मण और सीता अयोध्या से वनवास के लिए प्रस्थान करते हैं, थोड़ी दूर चलने के बाद सीताजी की व्याकुलता देखकर श्रीराम की आँखों से आँसू बहने लगते हैं। गाँव की स्त्रियाँ उन्हें देखकर उदास होती हैं और कहती हैं कि ये तो सदैव दर्शनीय हैं फिर इन्हें वनवास क्यों दिया गया? मार्ग में ग्रामीण वधुएँ सीताजी से राम के विषय में पूछती हैं। सीता जी मर्यादा का पालन करते हुए संकेतों के द्वारा उन्हें बता देती हैं कि ये मेरे पति हैं और वन के मार्ग पर आगे बढ़ जाती हैं।

## पद्यांश व्याख्या

**निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौंदर्य भी लिखिए—**

**( क ) उदित उदयगिरी ......................................... लोचन भृंग।।**

**सन्दर्भ**—प्रस्तुत काव्यांश **गोस्वामी तुलसीदास** द्वारा रचित **'श्रीरामचरितमानस'** के **'बालकाण्ड'** से उद्धृत है। यह हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में **'धनुष-भंग'** शीर्षक के अन्तर्गत संकलित है।

**प्रसंग**—स्वयंवर सभा में जब सभी राजा शिव के धनुष को तोड़ने का प्रयास करके थक गए, तब श्रीराम गुरु विश्वामित्र की आज्ञा प्राप्त करके धनुष-भंग के लिए मंच से उठ खड़े हुए। उस समय उनकी जो शोभा थी, उसी का वर्णन यहाँ हुआ है।

**व्याख्या**—जब मंचरूपी उदयांचल पर रघुनाथरूपी बालसूर्य का उदय हो गया, तब सभी सन्तरूपी कमल खिल उठे और उनके नेत्ररूपी भौंरे हर्षित हो गए। अर्थात् जब श्रीराम मंच से खड़े हुए, उस समय उनकी शोभा ऐसी थी, मानो प्रात:काल का बालक सूर्य उदय के पशचात उदयाचल पर विराजमान हो गया है। जिस प्रकार सूर्य के उदय होने पर सरोवरों में कमल खिल उठते हैं, उसी प्रकार स्वयंवर-सभा में स्थित सन्तरूपी कमल खिल उठे। अर्थात् अभी तक धनुष-भंग न हो पाने के कारण उनके मुखों पर जो उदासी छाई थी, वह दूर हो गई ओर उनके मुख प्रसन्नता हो उठते हैं, उसी प्रकार सन्तों के नेत्ररूपी भौंरे हर्ष से चंचल हो उठे, उनमें आनन्द की चमक भर उठी।

**काव्य-सौन्दर्य—1.** स्वयंवर-सभा में मंच पर खड़े श्रीराम की शोभा का अत्यन्त मनोहारी वर्णन यहाँ रूपक के माध्यम से किया गया। **2.** श्रीराम के सौन्दर्य के वर्णन के साथ-साथ पर्वत पर उगते सूर्य और प्रात:काल की प्रफुल्लित प्रकृति का चित्रण भी यहाँ हुआ है। **3. भाषा**—अवधी। **4. रस**—शृंगार। **5. गुण**—प्रसाद। **6. अलंकार**—अनुप्रास और रूपक। **7. छन्द**—दोहा।

**( ख ) सखि सब ......................................... तिभुवन तम भागा।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—श्रीराम की कोमलता को देखकर सीताजी की माता विचलित हो उठती है कि जब रावण जैसा शक्तिशाली राजा धनुष को हिला तक भी न सका तब यह बालक इस धनुष को

कैसे तोड़ पाएगा। इस पर उनकी सखियाँ उनके मन की शंका का निवारण करती हुई जो कुछ कहती हैं, उसी का वर्णन प्रस्तुत काव्यांश में किया गया है।

**व्याख्या**—सीताजी की माता अपनी सखियों से कहने लगीं—हे सखि! ये जो हमारे हितैषी कहलाते हैं, ये सभी को तमाशा देखनेवाले हैं। इसीलिए इनमें से कोई भी इनके गुरु विश्वामित्र को जाकर नहीं समझाता कि ये (राम) तो अभी बालक है। इनका धनुष तोड़ने की ऐसी हठ करना ठीक नहीं है। आशय यह है कि जिस धनुष को बड़े-बड़े योद्धा हिला तक न सके, उस धनुष को तोड़ने के लिए विश्वामित्र का राम को आज्ञा दे देना और राम का धनुष तोड़ने के लिए चल देना तमाशे जैसा नहीं है? यह मेरी बेटी का स्वयंवर है, कोई खेल-तमाशा नहीं है, फिर कोई इन्हें क्यों नहीं समझाता। इस धनुष की कठोरता और गुरुता के कारण रावण और बाणासुर जैसे वीरों ने इसे छुआ तक नहीं है। सभी राजागण इसे तोड़ने का घमण्ड करके अपनी हार मान चुके हैं, उसी धनुष को तोड़ने के लिए इस राजकुमार के हाथ में दे रहे हैं। भला कहीं हंस का बच्चा मन्दराचल (पहाड़) को उठा सकता है? रानी राजा जनक को उलाहना देती हैं कि ये बड़े समझदार हैं। सीता इनकी तो बेटी है। चाहे कोई दूसरा विश्वामित्र को समझाए या न समझाए, मगर इन्हें तो समझाना ही चाहिए; किन्तु मुझे तो लगता है कि राजा का भी सारा सयानापन (समझदारी) समाप्त हो गया है। हे सखि! विधाता (भाग्य) की गति भी कुछ जानी नहीं जाती। इस पर वह चतुर सखी अत्यन्त मधुरवाणी में बोली—हे रानी! तेजवान् व्यक्तियों को छोटा होने पर भी छोटा नहीं मानना (गिनना) चाहिए। वह अपनी बात को उदाहरण देकर स्पष्ट करती हैं कि कहाँ घड़े से उत्पन्न होने वाले छोटे-से मुनि अगस्त्य और कहाँ अपार समुद्र? दोनों में कहीं कोई साम्य नहीं, किन्तु उन्होंने सारे समुद्र को सोख लिया था, जिस सुयश सारे संसार में छाया हुआ है। इसी प्रकार सूर्य का घेरा (मण्डल) देखने में छोटा लगता है, किन्तु उसके उदय होते ही तीनों लोकों का अन्धकार भाग जाता है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** जनक की रानी के अन्तर्द्वन्द्व का मार्मिक चित्रण हुआ है। 2. जिस प्रकार रानी के तर्क उसकी शंका के अनुकूल हैं, उसी प्रकार उसी सखी के तर्क राम की महानता के अनुरूप हैं। इनसे तुलसी बुद्धि का परिचय मिलता है। **3. भाषा**—अवधी। **4. रस**—शृंगार। **5. गुण**—प्रसाद। **6. अलंकार**—रूपक, अनुप्रास, प्रश्न और दृष्टान्त। **7. छन्द**—चौपाई और दोहा।

**(ग) नीकें निरखि ........................................ सय सम जाहीं।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—सीताजी के मन में भी यह सन्देह है कि कोमल शरीरवाले राम शिव के कठोर धनुष को नहीं तोड़ पाएँगे। इसीलिए उन्हें पिता के प्रण पर क्रोध आ रहा है। उन्हें वहाँ उपस्थित मन्त्रियों और ज्ञानी-पण्डितों पर भी तरस आ रहा है, जो कि पिता जनक को नहीं समझा रहे हैं। श्रीराम पर अनुरक्त सीताजी के मन की इसी दशा का मनोरम चित्र इस काव्यांश में खींचा गया है।

**व्याख्या**—सीताजी ने धनुष तोड़ने के लिए खड़े श्रीराम की शोभा को नेत्र भरकर भली-भाँति देखा और फिर अपने पिता के धनुष तोड़ने के कठोर प्रण का स्मरण किया। उनका मन संशय से भर उठा कि ये कोमल शरीरवाले कठोर शिव-धनुष को कैसे तोड़ पाएँगे? राम को

असमर्थ जानकर और पिता के कठोर प्रण को सोचकर सीताजी का मन क्षुब्ध हो उठा कि काश! पिता ने ऐसी कठोर प्रतिज्ञा न करके मुझे वर चयन का अधिकार दिया होता तो मैं श्रीराम का वरण कर लेती। वे मन-ही-मन अपने पिता के प्रण पर खीझ रही हैं—अहो! पिताजी ने बड़ी की कठोर हठ ठानी हे, वे अपनी हठ के आगे लाभ-हानि कुछ भी नहीं समझ रहे हैं। मन्त्री भी उनकी हठ से डर रहे हैं; अत: कोई उन्हें सीख भी नहीं दे रहा है। अर्थात् मन्त्री डर के कारण पिता को नहीं समझ रहे हैं। यहाँ बड़े-बड़े ज्ञानी बैठे हैं फिर भी इस सभा में बड़ा अनुचित हो रहा है, कोई भी इसे रोकने का साहस नहीं कर रहा है। कहाँ तो वज्र से भी कठोर यह धनुष और कहाँ ये कोमल शरीरवाले साँवले-सलौने किशोर श्रीराम। जब उन्हें कोई उपाय नहीं दिखता तो वे विधाता को ही दोष देती हैं कि हे विधाता! मैं अपने हृदय में किस प्रकार धैर्य धारण करूँ, भला सिरस के फल के कण से कहीं हीरे को काटा जाता है? यहाँ तो सारी विद्वत-सभा की बुद्धि भोली अर्थात् बावली हो गई है; अत: हे शिवजी के धनुष! अब तो मुझे तुम्हारा ही आसरा है। अब तुम्हीं कोमल होकर मेरी मनोकामना को पूर्ण कर सकते हो। मैं जानती हूँ कि तुम जड़ वस्तु हो, कुछ सोच-विचार नहीं सकते, अत: तुम अपनी इस जड़ता को यहाँ बैठे लोगों पर उतार फेंको; क्योंकि ये चेतन होते हुए भी जड़ बने हुए हैं, तभी तो कोई मेरे पिताजी को समझाने का प्रयास नहीं कर रहा है। जड़ता को त्यागने के पश्चात तुम अपनी दृष्टि रघुनाथजी के कोमल शरीर पर डालो और उसी के अनुरूप हल्के हो जाओ। इस प्रकार सीताजी के मन में बड़ा ही सन्ताप (दु:ख) हो रहा है। यही कारण है कि पलक झपकने में लगा एक क्षण भी उनके लिए सौ युगों के समान बीत रहा है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** श्रीराम के प्रति अत्यधिक स्नेह सीताजी के मन में उनकी सामर्थ्य के प्रति शंका उत्पन्न कर रहा है, उनकी यह शंका स्वाभाविक भी है;क्योंकि व्यक्ति जिससे अधिक प्रेम करता है, उसके प्रति मन में अनेक शंकाएँ भी जन्म लेती रहती हैं। **2. भावसाम्य**—महाकवि कालिदास ने भी अपने प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञानाशाकुन्तलम् में कहा है—स्नेह: पापशङ्की। **3. भाषा**—अवधी। **4. रस**—शृंगार। **5. गुण**—माधुर्य। **6. अलंकार**—मानवीकरण, उत्प्रेक्षा। **7. छन्द**—चौपाई, दोहा।

**( घ ) गिरा अलिनि ......................................... ब्यालहि जैसे।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—सीताजी और श्रीराम के मन के सात्विक भावों का अत्यन्त सुन्दर चित्रण यहाँ हुआ हैं।

**व्याख्या**—सीताजी की वाणीरूपी भ्रमरी को उनके मुखरूपी कमल ने रोक रखा है। वह भ्रमरी जब लज्जारूपी रात्रि को देखती है, तो वह चुपचाप कमल में बैठी रहती है और स्वयं को प्रकट नहीं करती; क्योंकि वह तो रात्रि के बीमने पर ही प्रात:काल में प्रकट होकर गुनगुन की ध्वनि करती है। आशय यही है कि सीताजी क्षोभ के कारण कुछ कहना चाहती हैं, किन्तु लज्जवश कुछ कह नहीं पाती और उनके मन की बात मुख में ही रह जाती है। मन अत्यन्त भावुक है, बार-बार आँखों में आँसू छलछला आते हैं, किन्तु वे उनहें आँखों से बाहर नहीं निकलने देतीं। आँखों के आँसू आँखों के कोनों में उसी प्रकार समाकर रह जाते हैं, जिस प्रकार महाकंजूस का सोना घर के कोनों में ही गड़ा रह जाता है।

सीताजी इस प्रकार अत्यधिक व्याकुल हो रही थी, जब उन्हें अपनी बढ़ी हुई व्याकुलता का ज्ञान हुआ तो वे सकुचता गई और धैर्य धारणकर अपने हृदय में विश्वास ले आईं कि यदि तन, मन और वचन से मेरा श्रीराम के वरण का प्रण सच्चा है और श्रीरघुनाथजी के चरणकमलों में मेरा चित्त वास्तव में अनुरक्त है तो सबके हृदय में निवास करने वाले भगवान् मुझे श्रीराम की दासी अवश्य बनाएँगे; क्योंकि जिनका जिस पर सच्चा स्नेह होता है, वह उसे मिलता ही है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। प्रभु श्रीराम की ओर देखकर सीताजी ने अपने शरीर के द्वारा प्रेम ठान लिया। अर्थात् यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि यह शरीर इन्हीं का होकर रहेगा अथवा रहेगा ही नहीं। उनकी इस भावना को कृपा के निधान श्रीराम ने सब प्रकार से जान लिया। इसलिए उन्होंने सीताजी को देखकर धनुष की ओर कैसे (इस प्रकार) ताका, जैसे गरुड़जी छोटे-से साँप की ओर देखते हैं।

इधर जब लक्ष्मणजी ने देखा कि रघुकुलमणि श्रीराम ने शिवजी के धनुष की और उसका खण्डन करने की दृष्टि से देखा है तो उनका शरीर आनन्द से पुलकित हो उठा। शिव-धनुष के खण्डन से ब्रह्माण्ड में उथल-पुथल न हो, इसलिए उन्होंने को अपने चरणों से दबाकर इस प्रकार के वचन कहे—

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** क्षोभ और लज्जा के परिणामस्वरूप सीताजी के अन्तर्द्वन्द्व का मनोहारी, किन्तु स्वाभाविक चित्रण किया गया है। **2.** सीताजी को श्रीराम के प्रति पूर्ण अनुरक्त दिखाया गया है। **3.** शिवधनुष की महिमा के महत्व को दर्शाने के लिए तुलसी ने लक्ष्मण को सचेत होते दिखाया है। शिव धनुष के खण्डन से ब्रह्माण्ड न उलट-पलट जाए, इसलिए लक्ष्मण को ब्रह्माण्ड को चरणों से दबाते दिखाया गया है। **4. भाषा**—अवधी। **5. रस**—शृंगार। **6. गुण**—माधुर्य। **7. अलंकार**—उपमा, रूपक। **8. छन्द**—चौपाई, दोहा।

**( ङ ) देखी बिपुल .......................................... धुनि घोर कठोरा।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—सीताजी सहित सभी समाज को व्याकुल देखकर श्रीराम ने देखा कि अब धनुष-भंग का सही समय आ गया है। यह सोचकर उन्होंने एक ही क्षण में धनुष को तोड़ डाला। धनुष टूटने पर संसार की क्या स्थिति हुई इसी का मोहक चित्रण यहाँ हुआ है।

**व्याख्या**—श्रीराम ने जानकीजी को अत्यधिक व्याकुल देखा। उनका एक क्षण (पलक झपकने मात्र का समय) कल्प के समान बीत रहा था। इससे उन्होंने जाना कि यही धनुष-भंग का उचित समय है; अत: अब मुझे इस कार्य में एक भी पल का विलम्ब नहीं करना चाहिए; क्योंकि यदि प्यासा व्यक्ति पानी के बिना शरीर त्याग दे अर्थात् जल के अभाव में यदि प्यास से किसी की मृत्यु हो जाए तो उसके मर जाने पर अमृत का तालाब भी क्या करेगा? उस वर्षा का भला क्या लाभ, जब सारी खेती ही सुख जाए अर्थात् खेती के सूख जाने पर वर्षा होने का कोई लाभ नहीं, उसका होना और न होना सब एक बराबर है। इसी प्रकार किसी कार्य के होने का उचित समय बीत जाने पर फिर उस पर पछताने का क्या लाभ? श्रीराम ने अपने मन में इन सब बातों को समझ-विचारकर जानकीजी की ओर देखा और अपने प्रति उनका विशेष प्रेम जानकर प्रभु पुलकित हो गए। इसके पश्चात् उन्होंने मन-ही-मन गुरु को प्रणाम किया और बड़ी फुर्ती से धनुष को उठा लिया। जब उन्होंने धनुष को अपने हाथ में लिया, तब वह धनुष

बिजली की तरह चमका और आकाश में मण्डल के समान (मण्डलाकार) हो गया। श्रीराम ने यहसब इतनी कुशलता और फुर्ती से किया कि उनको हाथ में धनुष लेते, उसकी प्रत्यंचा चढ़ाते, उसे जोर से खींचते किसी ने नहीं देखा। अर्थात् उन्होंने कब धनुष को उठा लिया, कब उसकी प्रत्यंचा चढ़ा दी और कब उसे खींच लिया, इसका किसी को पता नहीं चला ये सब कार्य उन्होंने एक ही पल में कर दिए। सबने श्रीराम को धनुष खींच ही खड़े देखा। उसी क्षण श्रीराम ने धनुष को बीच से तोड़ डाला, जिससे सब लोक भयंकर कठोर ध्वनि से भर गए।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** प्रत्येक कार्य का एक उचित और सर्वश्रेष्ठ समय होता है, उसी समय पर किया गया कार्य सब प्रकार से सुखकारी होता है। समय बीत जाने पर जो लोग किसी कार्य को करते हैं, उन्हें पश्चात् के अतिरिक्त कुछ प्राप्त नहीं होता, इस शाश्वत सत्य का उद्घाटन गोस्वामी तुलसीदास ने मुहावरों और सूक्तियों के मध्य से किया है। **2. भाषा**—अवधी। **3. रस**—श्रृंगार, वीर। **4. गुण**—प्रसाद और ओज। **5. अलंकार**—उपमा, अतिशयोक्ति, अनुप्रास। **6. छन्द**—चौपाई।

**( च ) भरे भुवन घोर ......................................... बचन उचारहीं॥**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पद में तुलसीदास जी ने धनुष टूटने के बाद उत्पन्न हुई स्थिति का अत्यधिक आलंकारिक वर्णन किया है।

**व्याख्या**—घोर, कठोर शब्द से (सब) लोक भर गए,जिससे घबराकर सूर्य के घोड़े मार्ग छोड़कर चलने लगे। दिग्गज (दिशाओं के हाथी) चिंघाड़ने लगे, पृथ्वी काँपने लगी, शेषनाग, वाराह और कच्छप कलमला (व्याकुल) उठे। ध्वनि की भयंकरता के कारण देवता, राक्षस और मुनिगण कानों पर हाथ रखकर सब प्रकार से व्याकुल होकर विचार करने लगे कि अब क्या होने वाला है। तुलसीदासजी कहते हैं कि जब सबको यह निश्चय हो गया कि श्रीराम ने धनुष तोड़ दिया है और यह उसी का भयंकर नाद है, तब सभी मिलकर श्रीराम की जय बोलने लगे।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** धनुष टूटने के बाद की स्थिति का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया गया है। **2. भाषा**—अवधी। **3. रस**—अद्भुत। **4. गुण**—ओज। **5. अलंकार**—उपमा, अतिशयोक्ति, अनुप्रास। **6. छन्द**—सवैया।

**( छ ) रानी मैं जानी ......................................... बनवास दियो है?॥**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—यहाँ ग्रामीण स्त्रियों के माध्यम से राजा दशरथ और कैकेयी की निष्ठुरता का वर्णन हुआ है।

**व्याख्या**—गाँव की एक महिला कहती है कि मैंने समझ लिया है कि रानी कैकेयी बड़ी अज्ञानी हैं। उनका हृदय तो पत्थर और वज्र से भी कठोर है। उधर राजा दशरथ ने भी उचित-अनुचित का विचार नहीं किया और केवल स्त्री के कहने पर इन्हें वन में भेज दिया। ये तो इतनी लुभावनी मूर्तियाँ हैं कि इनके बिछुड़ने पर इनके परिवार के लोग किस प्रकार जीवित रहे होंगे। हे सखी! ये तो आँखों में रखने योग्य हैं, अर्थात् सदैव दर्शनीय हैं तो फिर इन्हें वनवास क्यों दे दिया गया?

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ पर ग्रामीण बालाओं की सहृदयता और दयालुता द्रष्टव्य है। **2. भाषा**—मुहावरेदार ब्रजभाषा। **3. रस**—शृंगार और करुण। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—अनुप्रास। **6. छन्द**—सवैया।

**( ज ) सीस जटा, .......................................... रावरे को हैं?।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—श्रीराम लक्ष्मण और सीता के साथ वन में जा रहे हैं। मार्ग में ग्रामीण वधुएँ सीताजी से राम के बारे में पूछती हैं और उनसे परिहास भी करती हैं। इन प्रसंग का चित्रण करते हुए तुलसीदासजी कहते हैं—

**व्याख्या**—ग्रामीण वधुएँ सीताजी से पूछती हैं कि जिनके सिर पर जटाएँ हैं, जिनकी भुजाएँ और वक्षस्थल विशाल हैं, जिनके नेत्र लाल हैं, जिनकी भौहें तिरछी हैं, जिन्होंने तरकश, धनुष और बाण सँभाल रखे हैं, जो वन के रास्ते में भली प्रकार सुशोभित हो रहे हैं तथा जो बार-बार आदर और चाव के साथ तुम्हारी ओर देखते हुए हमारे मन को मोहित कर रहे हैं; हे सखि! बताओ तो सही, वे साँवले-से तुम्हारे कौन लगते हैं?

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ ग्रामीण बालाओं की स्वाभाविक उत्सुकता का सहज चित्रण हुआ है। **2.** अपनी उत्सुकता को शान्त करने के लिए ग्रामीण बालाओं द्वारा सीताजी से प्रश्न पूछने के चित्रण में नारी-प्रकृति का सजीव चित्रण किया गया है। **3.** राम सीता को देखते हैं और मोहित ग्रामीण बालाओं का मन होता है, इस अंकन में उक्ति-वैचित्रय का सफल प्रयोग किया गया है। **4. भाषा**—ब्रज। **5. रस**—शृंगार। **6. गुण**—प्रसाद और माधुर्य। **7. अलंकार**—अनुप्रास। **8. छन्द**—सवैया।

**( झ ) सुन सुन्दर बैन .......................................... मजुल कंज कली।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—ग्रामबालाओं ने सीताजी से उनके पति के विषय में जानकारी करनी चाहिए। इस पर सीताजी ने उन्हें संकेत से ही सबकुछ बता दिया।

**व्याख्या**—गोस्वामीजी कहते हैं कि गाँव की स्त्रियों की यह अमृतमयी वाणी सुनकर जानकी समझ गई कि ये स्त्रियाँ बहुत चतुर हैं (घुमा-फिराकर प्रभु के साथ मेरा सम्बन्ध जानना चाहती हैं); अत: उन्होंने मर्यादा का पालन करते हुए संकेतों के द्वारा उनहें बता दिया। अपने नेत्र तिरछे करके, इशारा करके कुछ समझाकर सीताजी मुस्कराती हुई आगे बढ़ गईं। तुलसीदासजी कहते हैं कि उस अवसर पर वे स्त्रियाँ उनके दर्शन को स्वयं का लाभ मानकर राम की ओर टकटकी लगाए हुए देखती हुई ऐसी शोभ पा रही थीं, मानो सूर्योदय होने पर प्रेम के तालाब में सुन्दर कमल-कलियाँ खिल उठी हों।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ पर राम सूर्य हैं, स्त्रियों का प्रेम तालाब है और उनके नेत्र कमल की कलियाँ हैं। **2.** इन पंक्तियों में नारी-सुलभ लज्जा का सुन्दर चित्रण हुआ है। **3. भाषा**—ब्रज। **4. रस**—शृंगार। **5. गुण**—माधुर्य। **6. अलंकार**—रूपक, उत्प्रेक्षा और अनुप्रास। **7. छन्द**—सवैया।

## काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. तुलसीदास ने 'धनुष-भंग' प्रसंग में दोहा, चौपाई व सवैया का प्रयोग किया है।
2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए—
   (क) अनुप्रास और रूपक (ख) रूपक (ग) अनुप्रास।
3. **निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए—**
   **काव्य-सौन्दर्य**—श्रीराम ने सभी लोगों को देखा तो उन्हें वे सभी चित्र में लिखे हुए से अर्थात् जड़-निश्चेष्ट से लगे। फिर कृपा के धाम श्रीराम ने सीताजी को देखा और उन्हें विशेष रूप से व्याकुल जाना। **2. भाषा**—अवधी। **3. रस**—शान्त और शृंगार। **4. गुण**—प्रसाद और माधुर्य। **5. अलंकार**—उपमा और अनुप्रास। **6. छन्द**—दोहा।
4. **निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस और उसका स्थायी भाव लिखिए—**
   (क) रस—करुण स्थायी भाव—शोक।
   (ख) रस—शृंगार स्थायी भाव—रति।

# 3 रसखान

**(जन्म : सन् 1533 ई० - मृत्यु : सन् 1618 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (क) **6.** (ख) **7.** (ग) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (ग) **11.** (क) **12.** (ग) **13.** (क) **14.** (क) **15.** (क) **16.** (ग) **17.** (क)।

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. इस सवैये में रसखान ने अपनी इच्छा व्यक्त की है कि मृत्यु के पश्चात यदि मेरा जन्म फिर से मनुष्य के रूप में हो तो मेरी कामना यही है कि मैं ब्रज और गोकुल गाँव के ग्वालों के बीच में निवास करूँ। यदि मेरा जन्म पशु के रूप में हो तो मैरा कोई वश नहीं होगा, किन्तु मेरी इच्छा है कि मैं सदैव नन्दजी की गायों के बीच में चरा करूँ। यदि मेरा पुनर्जन्म एक पत्थर के रूप में हो तो मैं उसी गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनूँ, जिसे श्रीकृष्ण ने इन्द्र के गर्व को चूर करने के लिए छत्र की तरह उठा लिया था। यदि मेरा जन्म एक पक्षी के रूप में हो तो मेरी इच्छा है कि मैं यमुना के किनारे पर स्थित, कदम्ब की डाल पर बसेरा करूँ। उनकी इच्छा का मूल ध्येय किसी भी रूप में श्रीकृष्ण की समीपता प्राप्त करना है।

## जीवन-परिचय एवंकृतित्व पर आधारित प्रश्न

1. रसखान का जन्म सन् 1533 ई० में दिल्ली में हुआ था।
2. रसखान ने अपने काव्य में दोहा, सोरठा, कविन्त व सवैया छन्दों का प्रयोग किया है।
3. रसखान की दो काव्य-कृतियों हैं—1. प्रेमवाटिका 2. सुजान-रसखान।

4. **जीवन-परिचय**—रसखान का वास्तविक नाम सैयद इब्राहीम था। ये दिल्ली के पठान सरदार थे। इनके द्वारा रचित 'प्रेम वाटिका' नामक ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि ये दिल्ली के राजवंश में उत्पन्न हुए थे तथा इनका रचना॰ काल जहाँगीर का राज्यकाल था। इस सम्बन्ध में यह दोहा प्रचलित है—

**देखि गदर हित साहिबी, दिल्ली नगर मसान।**
**छिनहिं बादशा वंश की, ठसक छाड़ि रसखान।।**

डॉ० नगेन्द्र इस दोहे के आधार पर रसखान का कार्यकाल तथा गदर का सम्बन्ध सन् 1555 ई० निर्धारित करते हैं, क्योंकि इसी वर्ष मुगल सम्राट हुमायूँ तथा शेरशाह सूरी का भयंकर युद्ध हुआ था, जिससे दिल्ली में गदर मचा था। उस गदर में रसखान भी दिल्ली छोड़कर गोवर्धन धाम आ गए थे। सूरवंश में उत्पन्न होने तथा शेरशाह सूरी से सम्बन्ध होना सिद्ध करता है कि ये पठान थे।

'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' से भी इस बात पर प्रकाश पड़ता है कि सैयद इब्राहीम का जन्म सन् 1533 ई० में पिहानी, जिला हरदोई (उ० प्र०) में हुआ था। हरदोई में सैयदों की बस्ती है। सम्भव है ये बाल्यावस्था में ही पिहानी से दिल्ली आए तथा शेरशाह सूरी के दरबार में रहने लगे। बाद में दिल्ली में विप्लव हुआ और ये भागकर गोवर्धन धाम चले गए। गदर के समय इनकी आयु बीस-बाईस वर्ष मान लेने पर इनका जन्म सन् 1533 ई० ही ठहरता है।

रसखान रीतिकालीन कवि थे; परन्तु इनकी रचनाएँ कृष्ण भक्तिधारा की हैं। ये जितने श्रीकृष्ण के रूप सौन्दर्य पर मुग्ध थे, उतने ही ब्रजभूमि के प्राकृतिक सौन्दर्य पर मुग्ध थे। कृष्ण के प्रति इनके प्रेमभाव में बड़ी तीव्रता, गहनता तथा आवेशपूर्ण तन्मयता मिलती है। इनकी रचनाएँ पाठक के हृदय पर व्यापक प्रभाव डालती हैं। अपनी भाव सबलता तथा सरलता के कारण इनकी रचनाएँ अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

श्रीकृष्ण के रंग में रँगे रसखान को लोगों ने प्रारम्भ में बहुत डराया, किन्तु इन्होंने उसकी बिल्कुल भी परवाह नहीं की और ये पंक्तियाँ कहीं—

**काहे को सोचु करै रसखानि, कहा करिहै रबिनंद बिचारौ।**
**कौनकी संक परी है जू, माखन चाखनवारो है राखनहारौ।**

रसखान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। इसी कारण ये दिल्ली के ऐश्वर्य शाही जीवन को त्यागकर ब्रज के कुंज-करीलों पर मुग्ध हो गए। कृष्ण के प्रति प्रेम ने इन्हें कवि बना दिया। सन् 1614 ई० में लिखी 'प्रेमवाटिका' इनकी अन्तिम काव्य कृति है। इस रचना के उपरान्त ही सन् 1618 ई० में रसखान का निधन हो गया।

रसखान हिन्दी साहित्योद्यान के सुरभित कुसुम हैं। रसखान **रीतिकालीन कवि हैं, परन्तु उनकी रचना कृष्ण-भक्ति काव्यधारा की परम्परा में है।** कृष्ण भक्त कवियों में रसखान का विशिष्ट स्थान है। **श्रीकृष्ण की भक्ति** में पूर्ण रूप से अनुरक्त होकर उन्होंने अपने काव्य की रचना की। ये जितना कृष्ण के रूप-सौन्दर्य पर मुग्ध थे, उतना ही उनकी लीला-भूमि ब्रज के प्राकृतिक सौन्दर्य पर भी। **कृष्ण के प्रति उनके प्रेम-भाव में बड़ी तीव्रता, गहनता और आवेशपूर्ण तन्मयता मिलती है।** इसी कारण उनकी रचनाएँ हृदय पर मार्मिक प्रभाव डालती हैं। अपनी भाव सबलता तथा सरलता के कारण उनकी रचनाएँ बड़ी लोकप्रिय हैं। रसखान अत्यन्त भावुक, सहृदय और प्रेमी जीव थे। उनके काव्य में श्रीकृष्ण के **बाल रूप** और **यौवन रूप** के अनेक

मोहक रूप देखने को मिलते हैं। सत्यता यह है कि रसखान का सम्पूर्ण काव्य अत्यन्त सरस, मनोरम, मधुर और हृदयस्पर्शी है।

**रचनाएँ**—रसखान द्वारा रचित काव्य ग्रन्थ इस प्रकार हैं—

**प्रेमवाटिका**—इसमें केवल 25 दोहे हैं, जो प्रेम के विविध रूपों को अत्यन्त भावुकतापूर्ण तथा स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करते हैं। इन दोहों में प्रेम (शृंगार) रस का पूर्ण परिपाक हुआ है।

**सुजान-रसखान**—इसमें दोहा, सोरठा, कवित्त, सवैया के 139 छन्द संगृहीत हैं। ये प्रेम तथा भक्ति रस से सराबोर मुक्तक हैं तथा अत्यन्त हृदयस्पर्शी हैं।

## तथ्यपरक एवं काव्य-सांराश पर आधारित प्रश्न

**1.** रसखान कृष्ण के अनन्य भक्त हैं, वे पुन: मनुष्य का जन्म ब्रज क्षेत्र के गोकुल गाँव में लेना चाहते हैं ताकि उन्हें अपने इष्टदेव के बार-बार दर्शन होते रहें।

**2.** कृष्ण जैसे पुत्रको प्राप्त कर यशोदा जी को जो सुख मिला है उस सुख का वर्णन गोपियाँ नहीं कर सकती।

**3.** कृष्ण के हाथ से रोटी छीनकर उड़ जाने वाला कौआ कवि को इसलिए भाग्यशाली लगा क्योंकि उनके अनुसार भगवान कृष्ण की जूठी मक्खन-रोटी खाने का अवसर जिसे प्राप्त हो गया, वह धन्य है।

**4.** श्रीकृष्ण ने ब्रज के निवासियों के ऊपर वंशी बजाकर तथा उस पर मोहक 'गोधन' गीत की तान सुनाकर जादू कर दिया।

**5.** श्रीकृष्ण की मधुर मुस्कान वाली छवि रस बरसाकर नैनों की तपन मिटाने वाली है।

## पद्यांश व्याख्या

**निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा इनका काव्य-सौन्दर्य भी लिखिए—**

**(क) मानुष हौं तौ वही .......................................... कूल कदंब की डारन॥**

**सन्दर्भ**—प्रस्तुत सवैया कविवर **रसखान** द्वारा रचित **'रसखानि-ग्रन्थावली'** से हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित **'सवैये'** शीर्षक से उद्धृत है।

**प्रसंग**—इस छन्द में भक्तकवि रसखान ने श्रीकृष्ण की निकटता प्राप्त करने की तीव्र इच्छा प्रकट की है।

**व्याख्या**—कवि रसखान कहते हैं कि मृत्यु के पश्चात यदि मेरा जन्म फिर से मनुष्य के रूप में हो तो मेरी कामना यही है कि मैं ब्रज और गोकुल गाँव के ग्वालों के बीच में निवास करूँ। यदि मेरा जन्म पशु के रूप में हो तो मेरा कोई वश नहीं होगा, किन्तु मेरी इच्छा है कि मैं सदैव नन्दजी की गायों के बीच में चरा करूँ। यदि मेरा पुनर्जन्म एक पत्थर के रूप में हो तो मैं उसी गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनूँ, जिसे श्रीकृष्ण ने इन्द्र के गर्व को चूर करने के लिए छत्र की तरह उठा लिया था। यदि मेरा जन्म एक पक्षी के रूप में हो तो मेरी इच्छा है कि मैं यमुना के किनारे पर स्थित, कदम्ब की डाल पर बसेरा करूँ। तात्पर्य यह है कि रसखान, किसी भी रूप में श्रीकृष्ण की समीपता प्राप्त करना चाहते हैं।

**काव्य-सौन्दर्य—1.** रसखान ने यहाँ अपने कृष्ण-प्रेम की अदभुत अभिव्यक्ति की है। वे

अगले जन्म में कृष्ण की प्रिय वस्तुओं एवं गोकुल के निर्जीव पत्थर तक के रूप को प्राप्त करने की कामना करते हैं। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—अनुप्रास। **6. छन्द**—सवैया।

**( ख ) आजु गयी हुती ........................................ पुचकारत छौनहिं।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पद में रसखान ने श्रीकृष्ण के प्रति यशोदा के वात्सल्य का वर्णन किया है।

**व्याख्या**—एक सखी (गोपी) दूसरी सखी से कहती है कि श्रीकृष्ण के प्रेम में मग्न हुई मैं आज सवेरे-सवेरे नन्दजी के भवन में गई थी। उनके पुत्र श्रीकृष्ण लाख-करोड़ युगों तक जिएँ। ऐसे पुत्र को प्राप्त कर यशोदाजी को जो सुख मिला है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। वे अपने पुत्र के शरीर में तेल लगाकर, आँखों में काजल लगाकर, भौंहें सँवारकर, माथे पर नजर का टीका लगाकर और उनके गले में पहनने के आभूषण डालकर उन्हें देख रही थीं, उन पर बलिहारी जा रही थीं और अपने पुत्र को पुचकार रही थीं।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** प्रस्तुत पद में बालक श्रीकृष्ण के प्रति माता यशोदा के वात्सल्य का आकर्षक चित्रण हुआ है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—वात्सल्य। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—यमक तथा अनुप्रास। **6. छन्द**—सवैया।

**( ग ) धूरि भरे अति सोभित ........................................ लै गयौ माखन-रोटी।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत सवैये में कविवर रसखान ने श्रीकृष्ण के बाल-सौन्दर्य का  मनोहारी वर्णन किया है।

**व्याख्या**—एक सखी दूसरी सखी से श्रीकृष्ण के बाल-सौन्दर्य का वर्णन करती हुई कहती है कि श्रीकृष्ण धूल से भरे हुए अत्यधिक सुन्दर लग रहे हैं। उनके सिर पर सुन्दर चोटी बनी हुई है। वे अपने घर के आँगन में खेलते हुए घूम रहे हैं। उनके पैरों में पायल बज रही है। उन्होंने पीला कच्छा पहना हुआ है। श्रीकृष्ण की इस सुन्दरता को देखकर कामदेव भी अपनी करोड़ों कलाओं को न्योछावर कर देता है। हे सखी! उस कौए के भाग्य की कितनी सराहना की जाए (वह कौआ तो बड़ा भाग्यवान है) जो श्रीकृष्ण के हाथ से मक्खन और रोटी छीनकर ले गया।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** प्रस्तुत पंक्तियों में रसखान ने श्रीकृष्ण के बाल रूप का अत्यधिक मोहक चित्र प्रस्तुत किया है। **3. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शृंगार। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—अनुप्रास। **6. छन्द**—सवैया।

**( घ ) कान्ह भए बस बाँसुरी ........................................ ब्रज में बँसुरी रहिहै।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पद में गोपियों का श्रीकृष्ण की बाँसुरी के प्रति सौतिया डाह प्रकट हुआ है।

**व्याख्या**—एक सखी दूसरी सखी से कहती है कि हे सखी! श्रीकृष्ण तो बाँसुरी के वश में हो गए हैं, अब हमें कौन चाहेगा और प्रेम करेगा? यह बाँसुरी तो रात और दिन श्रीकृष्ण के साथ लगी रहती है। इस सौतन के द्वारा दिए गए दु:खों को हम कैसे सहन करेंगे? जिस बाँसुरी ने

मनमोहन श्रीकृष्ण को भी मोहित कर लिया है, वही बाँसुरी हमें सदैव जलाती रहती है। हे सखी! आओ हम सब मिलकर इस ब्रज से भाग चलें; क्योंकि अब तो ब्रज में श्रीकृष्ण के साथ केवल यह बाँसुरी ही रहेगी।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ रसखान ने बाँसुरी के प्रति गोपियों के सौतिया डाह का सुन्दर वर्णन किया है। **2. भाषा**—मुहावरेदार ब्रज। **3. रस**—शृंगार। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—रूपक और अनुप्रास। **6. छन्द**—सवैया।

**( ङ ) मोर-पखा सिर ऊपर ........................................ अधरा न धरौंगी।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत सवैया अत्यधिक मार्मिक अनुभूतियों को सँजाए हुए है। श्रीकृष्ण के वियोग में व्याकुल गोपियों ने श्रीकृष्ण का रूप धारण किया हुआ है। इस प्रकार वे स्वयं को धैर्य और सान्त्वना देने का प्रयास कर रही हैं।

**व्याख्या**—एक गोपी कहती है कि मैं तुम्हारे संकेत पर मोर के पंख को अपने सिर पर धारण कर लूँगी, गुंजाओं की माला को अपने गले में पहन लूँगी। पीताम्बर को ओढ़कर, लकड़ी को लेकर मैं जंगल में गायों और ग्वालों के साथ भी घूमूँगी। तुम्हारे कहने पर मैं उन सारी लीलाओं को करने के लिए तैयार हूँ, जो रस की खान श्रीकृष्ण को अच्छी लगती थीं, किन्तु मैं श्रीकृष्ण के अधरों पर सुशोभित होनेवाली बाँसुरी को अपने होठों पर नहीं रखूँगी। तात्पर्य यह है कि गोपियाँ मुरली से सौतिया डाहरखती थीं; अत: वे श्रीकृष्ण की और सभी लीलाओं का अनुकरण करने को तो तैयार हैं, किन्तु बाँसुरी को अपनेअधरों पर नहीं रखना चाहतीं।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ रसखान ने कृष्ण-प्रेम में व्याकुल गोपियों की मनोदशा का अत्यन्त हृदयग्राही और मार्मिक चित्रण किया है। वे कृष्ण की अनुपस्थिति में उनके रूप बनाकर अपने व्याकुल मन को सन्तोष देती हैं, किन्तु बाँसुरी को अपने होठों से नहीं लगाती; क्योंकि बाँसुरी से उन्हें ईर्ष्या है। ईर्ष्या का कारण कृष्ण का उसे हर समय होठों से लगाए रखना है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शृंगार। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—यमक, श्लेष और अनुप्रास। **6. छन्द**—सवैया।

## काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

**1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—**

(क) **1. काव्य-सौन्दर्य**—गोपी कृष्ण की मुरली को अपने होठों पर नहीं रखने को कह रही है। उसके अनुसार उसे यह मुरली उसे सौत की तरह प्रतीत हाती है, अत: वह सौत रूपी मुरली को अपने होंठों से नहीं लगाना चाहती है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शृंगार। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—अनुप्रास।

(ख) **1. काव्य-सौन्दर्य**—रसखान ने यहाँ अपने कृष्ण-प्रेम की अद्भुत अभिव्यक्ति की है। वे अगले जन्म में मनुष्य के रूप में ब्रज और गोकुल गाँव के ग्वालों के बीच निवास करना चाहते हैं। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—अनुप्रास।

**2. निम्नांकित पंक्तियों में कौन-सा रस है? उसके स्थायी भाव का नाम लिखिए—**

(क) **रस**—अद्भुत, **स्थायी भाव**—विस्मय (आशचर्य)

(ख) **रस**—वात्सल्य, **स्थायी भाव**—स्नेह (रति)

**3. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम और उसका लक्षण लिखिए—**

(क) **अलंकार**—अनुप्रास, यमक। **लक्षण**—यहाँ 'म' 'र' व 'ध' वर्ण की आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास तथा 'अधरान' का अर्थ 'होठों पर' एवं दूसरे 'अधरा न' का अर्थ होठों पर नहीं होने के कारण 'यमक' है।

(ख) **अलंकार**—अनुप्रास। **लक्षण**—यहाँ 'क' वर्ण आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

**4. निम्नलिखित शब्दों के खड़ी बोली के रूप लिखिए—**

| **शब्द** | **खड़ी बोली का रूप** | **शब्द** | **खड़ी बोली का रूप** |
|---|---|---|---|
| संजम | **संयम** | काग | **कौआ** |
| सिगरी | **सभी** | दुति | **द्युति** |
| अँगुरी | **अँगुली** | करोर | **करोड़** |
| मानुष | **मनुष्य** | धारन | **धारण** |
| धूरि | **धूल** | नेह | **स्नेह** |
| सिर | **सिर** | | |

# 4 बिहारीलाल

**(जन्म : सन् 1603 ई० - मृत्यु : सन् 1663 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ख) **6.** (घ) **7.** (क) **8.** (ख) **9.** (क) **10.** (घ) **11.** (ख) **12.** (ख) **13.** (ग) **14.** (ख)।

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1. ऐसे दो दोहे हैं—**

1. मोर-मुकुट की चंद्रिकनु, यौं राजत नँदनंद।
   मनु ससि सेखर की अकस, किव सेखर सत चंद।
2. सोहत औढ़े पीतु पटु, स्याम सलौने गात।
   मनौ नीलमनि सैल पर, आतपु परयौ प्रभात।

**2.** बिहारीलाल के नीति-सम्बन्धी दोहों का उद्देश्य जीवन के विभिन्न पक्षों, उतार-चढ़ाव कोदर्शाना है, जीवन की कठोर वास्तविकताओं से परिचित कराना है, जीवन के आनन्द व विषादपूर्ण अनुभवों को व्यक्त करना है।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

1. बिहारी का जन्म सन् 1603 ई० में ग्वालियर के पास बसुआ (गोविन्दपुर गाँव) में हुआ था।
2. बिहारी रीतिकाल के कवि हैं।
3. बिहारी की एकमात्र रचना का नाम 'बिहारी सतसई' है।
4. साहित्य में बिहारी पीयूषवर्षी मेघ हैं जिनके उदय होते ही सबका प्रकाश आच्छन्न हो जाता है। बिहारी हिन्दी साहित्याकाश के उन नक्षत्रों में से हैं, जिनका प्रकाश कभी मन्द नहीं पड़ सकता।
5. 'बिहारी सतसई' की शैली मुक्तक शैली है। इस शैली के अन्तर्गत बिहारी ने समास-शैली का विलक्षण प्रयोग किया है।
6. **जीवन परिचय**—रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक कवि बिहारीलाल का जन्म सन् 1603 ई० में ग्वालियर के पास बसुआ (गोविन्दपुर गाँव) में माना जाता है। इनके पिता का नाम पं० केशवराय चौबे था। इनका बचपन बुन्देलखण्ड में व्यतीत हुआ था। बचपन में ही ये अपने पिता के साथ ग्वालियर से ओरछा नगर में आ गए थे तथा युवावस्था में अपनी ससुराल मथुरा में जाकर रहने लगे थे। इनको अपने जीवन में अनेक कटु अनुभव प्राप्त हुए, जिनसे ये अन्त तक विचलित रहे। इन्होंने अपने जीवनानुभवों से शिक्षा प्राप्त कर विलक्षण काव्य का सृजन किया।

   बिहारी जयपुर के राजा जयसिंह के आश्रित कवि थे। महाराजा जयसिंह बिहारी का बहुत सम्मान करते थे। कुछ समय पश्चात् बिहारी आगरा आए और वहाँ उनकी भेंट रहीम से हुई। सन् 1663 ई० में इनका निधन हो गया।

   बिहारी विस्मयकारी सृजन-प्रतिभा से सम्पन्न कवि थे। उन्होंने किसी महाकाव्य की रचना नहीं की परन्तु उनकी एकमात्र रचना 'सतसई' ने उन्हें अमर बना दिया। ऐसा कोई कवि नहीं मिलेगा जिसकी कविता कहीं रसहीन न हो गई हो, परन्तु बिहारी के सभी दोहे रस से परिपूर्ण हैं। बिहारी ने अपने दोहों में 'गागर में सागर' भर दिया है। उन्होंने अपने एक-एक दोहे में गहन भावों को भरकर उत्कृष्ट कोटि की अभिव्यक्ति दी है। बिहारी ने किसी लक्षण-ग्रंथ की रचना नहीं की, फिर भी काव्य-रचना करते समय उनका ध्यान काव्यांगों पर रहा। सतसई के अनेक दोहे रसों और अलंकारों के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किए जा सकते हैं। **शृंगार, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद, भक्ति, नीति तथा ऋतु-वर्णन भी उनके काव्य के विषय रहे, परन्तु प्रधानता प्रेम और शृंगार की है। बिहारी रीतिकाल के श्रेष्ठ कवियों** में गिने जाते हैं। केवल एक छोटे-से ग्रंथ की रचना करके बिहारी साहित्य-जगत् में अमर हो गए।

   **बिहारी का साहित्यिक योगदान**—बिहारी ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। हिन्दी साहित्य में गागर में सागर भरने की उक्ति को चरितार्थ करने वाले रीतिकालीन कवि बिहारीलाल हिन्दी साहित्य की महान विभूति हैं। इन्होंने अपनी एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' के आधार पर ही हिन्दी साहित्य जगत् में कवि शिरोमणि कहलाने का अधिकार प्राप्त किया। इन्होंने दोहे जैसे लघु छन्द को सशक्त भावों से भर दिया। भावपक्ष व कलापक्ष दोनों ही दृष्टि से इनका काव्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

## तथ्यपरक एवं काव्य-सांराश पर आधारित प्रश्न

1. श्रीकृष्ण के अपने अधर पर धारण करते ही और उस पर होठ, नेत्र तथा पीताम्बर की ज्योति पड़ते ही उनकी हरे बाँस की बाँसुरी इन्द्रधनुष के रंगों वाली हो जाती है।

2. बिहारी श्रीकृष्ण को स्मरण करने के लिए कह रहे हैं।
3. बिहारी श्रीकृष्ण के निर्गुण रूप को हृदय में बसाना चाहते हैं।
4. बिहारी ने मनुष्य की और पानी के नल की गति को समान इसलिए कहा है क्योंकि मनुष्य तथा पानी का नल जितना ही नीचे होकर चलता है, वह उतना ही ऊँचा चढ़ता है। अर्थात् मनुष्य जितना नम्र होकर आचरण करता है वह उतना ही श्रेष्ठ होता जाता है। इसी प्रकार नल जितना नीचा चलाया जाता है उसका पानी उतना ही ऊपर को उठता जाता है।
5. इस भाव की पुष्टि में कवि ने यह दृष्टान्त दिया है—निष्कलंक चन्द्रमा को देखकर अपशुकनों की सम्भावना होने लगती है अर्थात् चन्द्रमा के निष्कलंक रूप में उदित होने पर पृथ्वी पर उत्पात होने लगते हैं।
6. **बिहारी की भक्ति-भावना**—बिहारी के दोहों में अद्वैत, निर्गुण, कृष्ण भक्ति, राम भक्ति, युगल उपासना, सखी भाव आदि के उदाहरण मिलते हैं। बिहारी के अनेक भक्तिपरक दोहे ऐसे हैं जो रागात्मक अनुबन्ध से दीप्त गहन भक्ति भावना को प्रस्तुत करते हैं।

## पद्यांश व्याख्या

**निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा इनके काव्य-सौन्दर्य का भी उल्लेख कीजिए—**

**( क ) मेरी भव बाधा हरो ........................................ हरि-दुति होइ॥**

**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पद्यांश कविवर **बिहारीलाल** द्वारा रचित **'बिहारी-सतसई'** से हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** से संकलित **'सवैये'** शीर्षक से उद्धृत है।

**प्रसंग**—प्रस्तुत दोहे में बिहारी ने 'सतसई' की निर्विघ्न समाप्ति के लिए राधिकाजी की स्तुति की है।

**व्याख्या**—

1. जिनके शरीर की झलक पड़ने से श्रीकृष्ण परम आनन्दित  हो जाते हैं, ऐसी नागरी (चतुर अर्थात् भक्तों का कष्ट हरने में परम प्रवीण) राधाजी मेरे सांसारिक दु:खों को दूर करें।
2. रंग-संयोजन के आधार पर इस दोहे का अर्थ इस प्रकार भी किया जा सकता है—
   जिनके शरीर की पीतिमा श्रीकृष्ण के शरीर की नीलिमा पर पड़कर हरीतिमा में परिवर्तित हो जाती है, ऐसी चतुर राधा मेरी सांसारिक बाधाओं को दूर करें।
3. जिनके शरीर की परछाईं अर्थात् ज्योति पड़ने से मन में आनेवाले सारे पाप (कालुष्य) दूर हो जाते हैं, हृदय का अन्धकार दूर होकर, हृदय प्रकाशवान् हो उठता है, ऐसी चतुर राधा मेरी सांसारिक बाधाओं का हरण करें।
4. इस दोहे का आयुर्वेद सम्बन्धी अर्थ भी किया जा सकता है—जिस प्रकार शरीर पर झाईं नामक रोग के कारण पड़े हुए काले धब्बे हल्दी, नागरमोथा और सोया के लेपन से समाप्त हो जाते हैं, उसी प्रकार चतुर राधा मेरी सांसारिक बाधाओं का भी निवरारण करें।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** प्रस्तुत दोहे की रचना मंगलाचरण के रूप में हुई है। 'बिहारी-सतसई' श्रृंगार रसप्रधान रचना है; अत: इसमें श्रृंगार की अधिष्ठानी देवी राधिकाजी की स्तुति की गई

है। **2.** बिहारी की भाषा की समास-शक्ति का परिचय इस दोहे से प्राप्त होता है। **3. भाषा**—ब्रज। **4. रस**—शृंगार और शान्त। **5. गुण**—प्रसाद और माधुर्य। **6. अलंकार**—(अ) काव्यलिंग, (ब) श्लेष—भवबाधा, झाईं ....... हरित-दुति के कई-कई अर्थ निकलने के कारण, (स) व्यतिरेक—'जा तन की ......... होत' में, (द) परिकर, (य) अनुप्रास। **7. छन्द**—दोहा।

**( ख ) सोहत ओढ़ै पीतु ........................................... आतपु पर्‌यौ प्रभात।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—श्रीकृष्ण का अलौकिक रूप तथा उनके वसत्र देखकर नायिका अपनी सखी से कह रही है—

**व्याख्या**—वे (श्याम) अपने सुन्दर शरीर पर पीताम्बर धारण करके इस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं, मानो नीलमणि के पर्वत पर प्रात:काल के सूर्य की पीली-पीली किरणें पड़ रहे हों।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ श्रीकृष्ण के श्याम शरीर में नीलमणियों के पर्वत को तथा उनके पीले वस्त्रों में प्रात:कालीन धूप को आरोपित किया गया है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शृंगार। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—उत्प्रेक्षा तथा अनुप्रास। **6. छन्द**—दोहा।

**( ग ) अधर धरत हरि ........................................... इन्द्रधनुष-रँग होति।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत दोहे में एक सुखी बाँसुरी के सौन्दर्य से मुग्ध होकर राधिकाजी से उसकी प्रशंसा कर रही है।

**व्याख्या**—श्रीकृष्ण के अपने अधर पर धारण करते ही और उस पर होठ, नेत्र तथा पीताम्बर की ज्योति पड़ते ही, वह हरे बाँस की बाँसुरी इन्द्रधनुष के रंग की हो जाती है। भाव यह है कि होठ की लालिमा, नेत्रों की श्यामता तथा पीताम्बर की पीतिमा के साथ बाँसुरी की हरीतिमा मिलकर विविध रंग धारण कर लेती है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** एक सामान्य बाँसुरी का इन्द्रधनुष के रंग की हो जाना यह संकेत करता है कि यदि राधिकाजी भी उनके समीप जाएँगी तो उनकी शोभा में भी अत्यधिक वृद्धि हो जाएगी। **2.** कवि समर्थ चित्रकार है। उसे रंगों के संयोजन का भली प्रकार ज्ञान है। **3. भाषा**—ब्रज। **4. रस**—शृंगार। **5. गुण**—माधुर्य। **6. अलंकार**—(अ) 'अधर धरत' में यमक अलंकार है, (ब) 'हरित बाँस की बाँसुरी', 'इन्द्रधनुष-रँग' हो जाने में तदगुण अलंकार है। **7. छन्द**—दोहा।

**( घ ) या अनुरागी चित्त की ........................................... त्यौ-त्यौं उज्जलु होई।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—बिहारी का मत है कि श्रीकृष्ण के प्रेम से मन की म्लानता एवं कलुषता दूर हो जाती है तथा हृदय स्वच्छ हो जाता है।

**व्याख्या**—अनुराग से भरे हुए मन की गति को समझना कठिन है। इसकी गति बड़ी विचित्र है। यह प्रेमी मन जितना ही काले रंग के श्रीकृष्ण में डूबता जाता है, उतना ही पवित्र और उज्ज्वल अर्थात् निष्कलुष होता जाता है।

**काव्य-सौन्दर्य**— 1. कृष्ण की भक्ति के महत्वको बताने में कवि ने अदभुत काव्य-

समायोजन किया है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—श्लेष, विरोधाभास और पुनरुक्तिप्रकाश। **6. छन्द**—दोहा।

**( ङ ) जगतु जनायौ .......................................... देखी जाँहि॥**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत दोहे में बिहारीलाल भक्त को प्रेरणा देते हैं कि तू ईश्वर को जान ले।

**व्याख्या**—जिस ईश्वर ने तुम्हें सम्पूर्ण जगत् का ज्ञान कराया है, तुमने उस हरि को नहीं जाना। यह बात ऐसी ही रही, जैसे कि आँखों से हम सबकुछ देख लेते हैं, पर अपनी उन आँखों को, अपनी आँखों से हम नहीं देख पाते।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने सम्पूर्ण संसार का ज्ञान कराने वाले ईशवर को न जानने वाले मनुष्य की स्थिति का सजीव चित्रण किया है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—दृष्टान्त। **6. छन्द**—दोहा।

**( च ) जप-माला, छापा .......................................... साँचे राँचे रामु॥**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—बिहारीलाल कहते हैं कि भक्ति में आडंबर का कोई स्थान नहीं होता, मन का अनुराग ही पहली अनिवार्य आवश्यकता है।

**व्याख्या**—भक्ति के मार्ग में ब्राह्य आडंबरों जैसे लोक दिखावे में जप करना, लोगों को दिखाने के लिए गले में माला पहनना, अपनी प्रसिद्धि हेतु तरह-तरह के तिलक-छापे लगाना आदि से एक भी काम सिद्ध नहीं होता। जब तक तुम्हारा मन कच्चा रहेगा तब तक व्यर्थ ही नाचते रहोगे। राम तो तभी प्रसन्न होंगे, जब तुम सच्चे मन से उनकी शरण में जाओगे।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने यहाँ ईश्वर की भक्ति के लिए बाह्याडंबर करने वालों की आलोचना की है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5.** अलंकार—अनुप्रास। **6. छन्द**—दोहा।

**( छ ) दुसह दुराज .......................................... रवि-चंदु॥**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—बिहारी का यह नीति सम्बन्धी दोहा है। उनका मत है कि दो राजाओं के राज्य में प्रजा का कष्ट बहुत अधिक बढ़ जाता है।

**व्याख्या**—दो राजाओं के असह्य राज्य में प्रजाजनों का दोहरा दु:ख क्यों न बढ़ेगा; अर्थात् अवश्य बढ़ेगा? क्योंकि अमावस्या की तिथि को सूर्य और चन्द्रमा एक ही राशि पर मिलकर संसार में और अधिक अँधेरा करते हैं।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** दोहरे शासन में प्रजा को दो राजाओं की आज्ञा माननी पड़ती है तथा दो राजाओं के लिए सुख-सुविधाएँ जुटानी पड़ती हैं, इस कारण प्रजा का कष्ट और अधिक बढ़ जाता है। **2.** यह बिहारी का नीति सम्बन्धी दोहा है। उनका राजनैतिक ज्ञान भी इससे प्रकट हुआ है। **3. भाषा**—ब्रज। **4. रस**—शान्त। **5. गुण**—प्रसाद। **6. अलंकार**—श्लेष, दृष्टान्त तथा अनुप्रास। **7. छन्द**—दोहा।

**( ज ) बसै बुराई .......................................... ग्रह जपु दानु।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—बिहारी द्वारा रचित इस दोहे में दुष्ट व्यक्तियों की स्थिति का चित्रण हुआ है।

**व्याख्या**—कवि की उक्ति है कि जिसके शरीर में बुराई बसती है, उसी का (संसार में) सम्मान होता है। (देखो), भला ग्रह तो भला कहकर छोड़ दिया जाता है; किन्तु खोटे ग्रह के आने पर जप, दान आदि किए जाते हैं।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने इस दोहे के माध्यम से संसार की वास्तविकता का उद्‌घाटन किया है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—प्रसाद। **4. अलंकार**—दृष्टान्त, पुनरुक्तिप्रकाश तथा अनुप्रास। **5. छन्द**—दोहा। **6. भावसाम्य**—बिहारी से कुछ वर्ष पूर्व गोस्वामी तुलसीदास ने भी यही बात कही थी—

**टेढ़ जानि सब बंदइ काहू। बक चन्द्रमहि ग्रसइ न राहू।।**

**( झ ) नर की अरु नल ......................................... समूल कुम्हिलाइ।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—बिहारी ने इस दोहे में विनम्रता के महत्व का उल्लेख किया है।

**व्याख्या**—नर (मनुष्य) तथा नल के पानी की स्थिति एक जैसी ही समझनी चाहिए। मनुष्य तथा नल का पानी जितना ही नीचा होकर चलता है, वह उतना ही ऊँचा चढ़ता है। तात्पर्य यह है कि मनुष्य जितना नम्र होकर आचरण करता है, वह उतना ही श्रेष्ठ होता जाता है। इसी प्रकार नल जितना नीचा चलाया जाता है, उसका पानी उतना ही ऊपर को उठता जाता है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने पानी के नल से मनुष्य की श्रेष्ठता की अद्‌भुत उपमा प्रस्तुत की है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—उपमा, विरोधाभास, दीपक और श्लेष। **6. छन्द**—दोहा।

**( ञ ) बढ़त-बढ़त ......................................... कुम्हिलाइ।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत दोहे में यह बताया गया है कि धन का मन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

**व्याख्या**—जिस तालाब में कमल होते हैं, उस तालाब में जब पानी बढ़ता है तो उसकी बढ़त के साथ-साथ ही कमल की नाल भी बढ़ती चली जाती है, किन्तु जब पानी उतरता है तो बढ़ी हुई वह नाल छोटी नहीं हो पाती, अपितु समूल नष्ट हो जाती है—यही प्रकृति का नियम है। ऐसे ही जब मनुष्य का सम्पत्तिरूपी जल बढ़ता है, तब उसका मनरूपी कमल भी बढ़ जाता है, अर्थात् सम्पत्ति बढ़ने पर मनुष्य की अभिलाषाएँ भी बढ़ जाती हैं; किन्तु जब सम्पत्तिरूपी जल घटने लगता है, तब मनुष्य का मनरूपी कमल नीचे नहीं आता, अर्थात् उसकी अभिलाषाएँ नहीं घटतीं, भले ही वह समूल नष्ट हो जाए।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कमल से मनुष्य के मन की उपमा देकर, कवि ने यहाँ अपने कथ्य में प्रभावोत्पादकता उत्पन्न की है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश, रूपक तथा अनुप्रास। **6. छन्द**—दोहा।

**( ट ) जौ चाहत ......................................... नेह-चीकने चित्त।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—महाकवि बिहारी द्वारा रचित इस दोहे में एक अनुभवी व्यक्ति (अर्थात् स्वयं कवि) अपने मन को शुद्ध करने की शिक्षा देता हुआ कहता है—

**व्याख्या**—हे मित्र, यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे चित्त की चटक अर्थात् उज्ज्वलता कभी कम न हो और वह मलिन न हो तो प्रेमरूपी तेल से चिकने उस चित्त को गर्व, क्रोध आदि की रजोगुणी धूल का स्पर्श मत होने दो। तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार तेल लगी हुई वस्तु को धूल मैला करके कान्तिहीन बना देती है, उसी प्रकार चिकने एवं स्वच्छ चित्त को गर्व, क्रोध आदि रजोगुणी वृत्तियाँ मलिन कर देती हैं; अत: चित्त की शुद्धि के लिए इस रजोगुणी रज से बचना चाहिए।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ कवि ने चित्त की निर्मलता बनाए रखने के लिए रजोगुण से बचने हेतु प्रेमरूपी तेल एवं धूल के संयोग की जो प्रवृत्तिमूलक उपमा दी है, उसने कवि के कथन को कलात्मक एवं प्रभावोत्पादक रूप दिया है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—अनुप्रास, रूपक तथा श्लेष। **6. छन्द**—दोहा।

**(ठ) बुरौ बुराई जौ ......................................... उतपातु॥**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—बिहारीलाल नीति की बात बताते हैं कि यदि दुष्ट व्यक्ति अचानक ही अपनी दुष्टता छोड़ देता है, तब भी उससे उपद्रव की शंका बनी रहती है।

**व्याख्या**—यदि दुष्ट व्यक्ति अचानक ही अपनी बुराइयाँ छोड़ दे तो उससे भी लोगों के मन में शंका अर्थात् चित्त में अधिक डर बना रहता है। जैसे निष्कलंक चन्द्रमा को देखकर अपशकुनों की सम्भावना होने लगती है। शास्त्रों का कथन है कि चन्द्रमा के निष्कलंक रूप में उदित होने पर पृथ्वी पर उत्पात होने लगते हैं।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** प्रस्तुत दोहे में बिहारीलाल के ज्योतिष सम्बन्धी ज्ञान का परिचय मिलता है। ज्योतिष का सिद्धान्त है कि यदि चन्द्रमा बिना कलंक के दिखाई देने लगे तो उपद्रव-ही-उपद्रव होते हैं। ऐसे ही नीति भी यही कहती है कि यदि दुष्ट अपनी नीचता छोड़ दे तो भी उसके प्रति शंका बनी ही रहती है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—अनुप्रास तथा दृष्टान्त। **6. छन्द**—दोहा।

**(ड) स्वारथु, सुकृत ......................................... न मारि॥**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—कवि ने दूसरे लोगों के बहकावे में आकर, अपने साथियों के साथ दुर्व्यवहार करने वाले व्यक्ति को बाज की अन्योक्ति द्वारा समझाया है।

**व्याख्या**—हे (राजा जयसिंहरूपी) बाज! इन पक्षियों (अपने साथी छोटे राजाओं) को मारने से न तो तेरा स्वार्थ सिद्ध होता है, न ही यह सत्कर्म है और न ही ऐसा करने से तेरा श्रम सार्थक होता है। अत: हे बाज! तू भली प्रकार विचार कर। इस प्रकार दूसरों में पड़कर अपने साथी अन्य पक्षियों की हिंसा मत कर।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** शाहजहाँ के कहने पर हिन्दू-नरेशों का विरोध करनेवाले राजा जयसिंह के लिए कवि ने इस अन्योक्ति का प्रयोग किया था। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—(अ) 'बिहंग' शब्द का विोष अभिप्रायसे प्रयोग होने के कारण परिकरांकुर, (ब) पूरे दोहे में अन्योक्ति, (स) 'पराऐ पानि परि' में लोकोक्ति और

श्लेष। **6. छन्द**—दोहा।

## काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. **निम्नांकित दोहे के काव्य-सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए—**
   **काव्य-सौन्दर्य—1.** कवि ने यहाँ ईश्वर की भक्ति के लिए बाह्य आडंबर करने वालों की आलोचना की है। **2. भाषा**—ब्रज। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—अनुप्रास। **6. छन्द**—दोहा।
2. निम्नलिखित पंक्तियों में 'दोहा' छन्द है क्योंकि इनके प्रथम और तृतीय चरणों में 13-13 तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों में 11-11 मात्राएँ है।
3. **निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों को पहचान कर उनके नाम लिखिए—**
   (क) यमक अलंकार (ख) उत्प्रेक्षा अलंकार।
4. **निम्नलिखित पदों में समास-विग्रह कीजिए तथा उनका नाम लिखिए—**

| **समास** | **समास-विग्रह** | **समास का नाम** |
|---|---|---|
| पितु-पटु | **पीला वस्त्र** | **कर्मधारय समास** |
| मन-सदन | **मनरूपी सदन** | **कर्मधारय समास** |
| नीलमनि | **नीली मणि** | **कर्मधारय समास** |
| रवि-चन्द | **रवि और चन्द्र** | **द्वन्द्व समास** |
| समूल | **मूल के साथ** | **अव्ययीभाव समास** |
| दुपहर | **दो पहर का समूह** | **द्विगु समास** |

# 5 सुमित्रानन्दन पन्त

**(जन्म : सन् 1900 ई० - मृत्यु : सन् 1977 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (ग) **6.** (क) **7.** (क) **8.** (क) **9.** (ग) **10.** (घ) **11.** (ग) **12.** (क) **13.** (क) **14.** (घ) **15.** (क) **16.** (घ) **17.** (क) **18.** (क)

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. (i) चींटियाँ अनुशासन में रहकर पंक्तिबद्ध होकर चलती हैं। हमें भी चींटियों की तरह रहकर कार्य करने चाहिए।
   (ii) चींटियाँ निरन्तर अपने कार्य में लगी रहती हैं। हमें भी चींटियों की भाँति निरन्तर अपना कार्य करते रहना चाहिए।
   (iii) वे अपने लिए भोजन-सामग्री एकत्र करने हेतु कठोर परिश्रम करती हें। मनुष्य को भी

अपने व अपने परिवार के लिए भोजन सामग्री एकत्र करने हेतु कठोर परिश्रम करना चाहिए।

(iv) चींटी अपने कार्य में पूरी लगन व क्रियाशीलता से लगी रहती है। हमें भी चींटी की तरह अपने कार्य पूरी लगन व क्रियाशीलता से करने चाहिए।

(v) चींटी निरन्तर अपने कर्तव्य का पालन करती है। हमें भी निरन्तर अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

(vi) चींटी अपनी भोजन-सामग्री उठाने के साथ-साथ गन्दी चीजें भी उठाकर ले जाती है और घर-आँगन तथा रास्ते को साफ कर देती है। हमें भी चींटी की तरह अपने घर-आँगन तथा आस-पास के स्थानों व रास्तों को साफ करना चाहिए।

(vii) चींटी अपने व अपने अंडों-बच्चों की सुरक्षा के लिए अपने शत्रु से भी भिड़ जाती है। हमें भी अपने परिवार व देश की रक्षा के लिए शत्रु से लड़कर उसे भगा देना चाहिए।

(viii) चींटी निडर होती है। हमें भी चींटी की तरह निडर होना चाहिए।

(ix) चींटी शारीरिक रूप से अत्यन्त छोटी होती हुई भी कर्मठ होती है हमें भी चींटी की तरह कर्मठ होना चाहिए।

(x) चींटी एक-दूसरे की सहायता से कार्य करती हैं हमें भी अच्छे कार्यों में एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए।

**3.** हम आज अणु अथवा परमाणु युग में जी रहे हैं। इसका अर्थ है कि परमाणु-शक्ति से हमारा जीवन बहुत प्रभावित है। बिजली निर्माण से लेकर विभिन्न प्रकार की ऊर्जा आवश्यकताओं को आज परमाणु-शक्ति से पूरा किया जा रहा है। परंतु दुर्भाग्य से मानव ने इस परमाणु-शक्ति का प्रयोग महाविनाशकारी आयुधों को बनाने में भी किया है। द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान पर हुए परमाणु हमले से आज भी विश्व सिर उठता है। परमाणु अस्त्र मानवता के लिए गंभीर खतरा हैं। परमाणु संयंत्रों से निकलने वाली विकिरण-ऊर्जा भी मानव के लिए हानिकारक होती है। हमें परमाणु नि:शस्त्रीकरण तथा परमाणु संयंत्रों की सुरक्षा सुनिशिचत करनी होगी अन्यथा मानव का अस्तित्व संकट में पड़ जाएगा।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**1.** पन्त जी का जन्म 20 मई, 1900 ई० को अल्मोड़ा के निकट कौसानी ग्राम में हुआ था।

**2.** पन्त जी का मूल नाम गुसाईं दत्त था।

**3.** पन्त जी की 'कला और बूढ़ा चाँद' रचना पर 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' और 'चिदम्बरा' रचना पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

**4.** पन्त जी की प्रथम रचना 'गिरजे का घण्टा' थी। उसका रचना-वर्ष सन् 1916 था।

**5.** पन्त जी द्वारा रचित महाकाव्य का नाम 'लोकायतन' है।

**6.** पन्त जी ने 'रूपाभा' नामक पत्रिका का सम्पादन किया।

**7.** पन्त जी की दो प्रसिद्ध रचनाओं के नाम हैं—1. पल्लव 2. युगवाणी।

**8.** पन्त जी हिन्दी काव्य में नवीन विचार और नई काव्यधारा को लेकर आए। वे सबसे बड़े मानवतावादी कलाकार, युग चिंतक, स्वप्नदृष्टा और आधुनिक काव्य को नवीन गतिविधि प्रदान

करने वाले कवि रहे। इन्होंने प्रकृति सौंदर्य और मानव जीवन को कौतूहल, उल्लास और रहस्य की दृष्टि से देखा। भाव और कला दोनों दृष्टि से पन्त जी का काव्य वैभवपूर्ण है। आधुनिक हिन्दी काव्य में पन्त जी का साहित्यिक योगदान अविस्मरणीय है।

**9.** **जीवन-परिचय**—सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म अल्मोड़ा के निकट कौसानी ग्राम में गंगादत्त पन्त के यहाँ 20 मई, 1900 ई० को हुआ था। इनका बचपन का नाम गुसाईं दत्त था। इनके जन्म के छह घण्टे के पश्चात् ही इनकी माता का देहान्त हो गया और पिता तथा दादी के वात्सल्य की छाया में इनका लालन-पालन हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में ही सम्पन्न हुई। इन्होंने घर पर ही संस्कृत एवं बांग्ला का अध्ययन किया। पन्त जी की उच्च शिक्षा का प्रथम चरण अल्मोड़ा में पूरा हुआ। यहीं पर इन्होंने अपना नाम गुसाईं दत्त से बदलकर सुमित्रानन्दन रख लिया। काशी के जयनारायण हाईस्कूल से 'स्कूल लीविंग' परीक्षा उत्तीर्ण की तथा इलाहाबाद के म्योर सेण्ट्रल महाविद्यालय में प्रवेश लिया, किन्तु असहयोग आन्दोलन आरम्भ हो जाने के कारण इन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और देशभक्तों की टीम में शामिल हो गए।

पन्त जी सन् 1919 ई० में अपने मँझले भाई के साथ बनारस चले आए और 'क्वींस कॉलेज' में शिक्षा प्राप्त की। यहीं से इनका वास्तविक कवि कर्म प्रारम्भ हुआ। काशी में इनका परिचय सरोजिनी नायडू तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर के काव्य के साथ-साथ अंग्रेजी की रोमाण्टिक कविता से हुआ। रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविता से ये अत्यधिक प्रभावित थे। काशी में ही इन्होंने कविता-प्रतियोगिता में भाग लेकर समकालीन कवियों की प्रशंसा प्राप्त की। 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने पर इनकी कविताओं ने काव्य-मर्मज्ञों के हृदय में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया।

पन्त जी सन् 1950 ई० में 'ऑल इण्डिया रेडियो' के परामर्शदाता नियुक्त हुए और सन् 1957 ई० तक ये प्रत्यक्ष रूप से रेडियो से जुड़े रहे। सरस्वती का यह पुत्र 28 दिसम्बर, 1977 में इस भौतिक संसार से विदा हो गया।

पन्त जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने मात्र सात वर्ष की अवस्था में ही कविताएँ लिखनी आरम्भ कर दी थीं। सन् 1916 ई० में उन्होंने 'गिरजे का घण्टा' नामक सबसे पहली रचना लिखी। सन् 1920 ई० में उनकी काव्य-कृतियाँ 'उच्छ्वास' और 'ग्रंथि' प्रकाशित हुईं। उनकी 'वीणा' और 'पल्लव' जैसे प्रसिद्ध दो काव्य-संग्रह सन् 1927 ई० में प्रकाशित हुए। उन्होंने 'रूपाभा' नामक एक प्रगतिवादी विचार वाले पत्र का सम्पादन भी किया। पन्त जी सौन्दर्य उपासक थे। प्रकृति, नारी और कलात्मक सौन्दर्य; उनकी सौन्दर्यानुभूति के तीन मुख्य केन्द्र रहे। 'प्रसाद' तथा 'निराला' की भाँति पन्त भी छायावाद के आधार-स्तम्भ हैं। छायावाद अपने पूरे सौन्दर्य और समृद्धि के साथ पन्त के काव्य में प्रकट हुआ है। ये प्रकृति के सुन्दर, सजीव, मनोरम दृश्य अंकित करने में सिद्धहस्त हैं; अत: इन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है।

**रचनाएँ**—उनकी प्रमुख काव्य-कृतियों का विवरण इस प्रकार है—1. वीणा 2. पल्लव 3. गुंजन 4. ग्रंथि 5. युगान्त, 6. युगवाणी और 7. ग्राम्या 8. लोकायतन।

## तथ्यपरक एवं काव्य-सांराश पर आधारित प्रश्न

**1.** पन्त जी ने चींटी को श्रम का प्रतीक माना है।

**2.** चींटी के सामाजिक प्राणी होने, श्रमशील, होने कर्तव्यपरायण होने के गुणों का उल्लेख करके कवि उसे सुनागरिक कहता है।

3. चींटी कविता से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें निरन्तर परिश्रम व अपने कर्तव्य का पालन करते रहना चाहिए।

**4.** पन्त जी ने चींटी को जीवन की 'अक्षय चिंगारी' इसलिए कहा है क्योंकि चींटी आकार में छोटी होती हुए भी पूरी लगन से लगी रहती है। वह क्रियाशीलता की प्रतिमूर्ति है।

**5.** 'चन्द्रलोक में प्रथम बार' कविता से हमें यह शिक्षा मिलती है कि व्यक्ति दृढ़ संकल्प व लगन से असम्भव कार्य को भी सम्भव कर सकता है।

**6.** चन्द्रलोक में मानव के प्रथम पदार्पण को कवि ने महत् ऐतिहासिक क्षण इसलिए कहा है क्योंकि इस घटना के साथ ही देश और काल से जुड़ी बाधाओं के न जीते जा सकने वाले बन्धन छिन्न-भिन्न होकर बिखर गए।

**7.** **'चींटी' शीर्षक कविता का मूलभाव ( सारांश )**—चींटी एक सामाजिक प्राणी है। चींटी का अपना एक समाज होता है और उसी के साथ वह हिल-मिलकर नियमपूर्वक रहती है। वह कठोर परिश्रमी जीव है और उसमें एक अच्छे नागरिक के सभी गुण विद्यमान हैं।

**8.** **'चन्द्रलोक में प्रथम बार' कविता का मूलभाव ( सारांश )**—जब चन्द्रमा पर मानव ने प्रथम बार कदम रखे तो ऐसा करके उसने देश-काल के उन सारे बन्धनों, जिन पर विजय पाना कठिन माना जाता था, छिन्न-भिन्न कर दिया। मनुष्य को यह आशा बँध गई कि इस ब्रह्माण्ड में कोई भी देश और ग्रह-नक्षत्र अब दूर नहीं है।

## पद्यांश व्याख्या

**निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा इनके काव्य-सौन्दर्य का भी उल्लेख कीजिए—**

**( क ) चींटी को देखा .......................................... चुनती अविरत।**

**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि **सुमित्रानन्दन पन्त** द्वारा रचित **'युगवाणी'** काव्य-संग्रह के **'चींटी'** शीर्षक कविता से हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित है।

**प्रसंग**—इस अवतरण में कवि ने चींटी—जैसे लघु प्राणी की कर्मठता पर प्रकाश डाला है।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि क्या तुमने कभी चींटी को ध्यानपूर्वक देखा है? वह सीधी, पतली और काली रेखा; जो काले धागे के समान हिलती-डुलती हुई, अपने छोटे पैरों के द्वारा प्रतिपल मिलती-जुलती हुई चलती है (अर्थात् जो आपस में एक-दूसरे स बातें करते हुए, आपस में एक-दूसरे के पीछे अपने मार्ग की ओर अग्रसर होती हैं), चींटियों की उस पंक्ति को देखो।

कवि आगे चींटी की कार्य-कुशलता पर प्रकाश डालते हुए बताता है कि चींटियाँ अनुशासन में रहकर पंक्तिबद्ध होकर चलती हैं। देखो, ये चींटियाँ किस प्रकार अपने कार्य में निरन्तर लगी हुई हैं। वे अपने लिए भोजन-सामग्री एकत्र करने हेतु कठोर परिश्रम करती हैं। वे एक-एक कण को, बिना किसी रुकावट के एकत्र करती रहती हैं। भाव यह है कि चींटियाँ अपने भोजन

का एक-एक कण बहुत ही मेहनत से एकत्र कर अपने घर तक ले जाती हैं। इस कार्य में वे निरन्तर संलग्न रहती हैं।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने यहाँ चींटियों की कर्मठता का सजीव चित्रण कर मनुष्य को कर्मठता का सन्देश दिया है। **2.** चींटियों की लघुता एवं कर्मठता का तुलनात्मक स्वरूप इस भाव को अभिव्यक्त करता है कि शारीरिक क्षमता का कर्मठता से कोई सम्बन्ध नहीं है,यह तो एक मानसिक प्रवृत्ति है। **3. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **4. रस**—शान्त। **5. गुण**—प्रसाद। **6. अलंकार**—अनुप्रास, उपमा तथा पुनरुक्तिप्रकाश।

**( ख ) देखा चींटी को ......................................... चिंनगी अक्षय।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवि ने चींटी के गुणों और क्रियाशीलता पर प्रकाश डाला है।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि तुमने चींटी को देखा होगा, उसका शरीर भूरे बालों की कतरन की भाँति लघु एवं पतला है। उसके आकार का छोटापन किसी से भी छिपा नहीं है। वह छोटी होती हुंई भी पूरी पृथ्वी पर बड़ी निडरता के साथ घूमती रहती है। वह अपने कार्य में पूरी लगन से लगी रहती है। वह क्रियाशीलता की प्रतिमूर्ति है। वह जीवन की अक्षय चिंगारी के समान है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने यहाँ चींटी का उदाहरण देकर मानव को प्रेरित किया है और उसे निरन्तर अपना कर्तव्य करते रहने की शिक्षा दी है। **2.** कवि ने यहाँ परिश्रम के महत्व पर भी प्रकाश डाला है और सामाजिकता को एक बहुत बड़े सामूहिक बल के रूप में प्रस्तुत किया है। **3. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **4. रस**—शान्त। **5. गुण**—प्रसाद। **6. अलंकार**—उपमा तथा अनुप्रास।

**( ग ) चन्द्र लोक में ......................................... देशों के जन।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने मानव के चन्द्रमा पर पहुँचने की ऐतिहासिक घटना के महत्व को व्यक्त किया है। 'चन्द्रलोक में प्रथम बार' शीर्षक कविता में कवि ने उन सम्भावनाओं का वर्णन किया है, जो मानव के चाँद पर पहुँचने पर साकार-सी होती प्रतीत होती हैं।

**व्याख्या**—आज मानव ने पहली बार चन्द्रलोक में अपने कदम रखे हैं। इस घटना के साथ ही देश और काल से जुड़ी बाधाओं के न जीते जा सकने वाले बन्धन छिन्न-भिन्न होकर बिखर गए हैं।

चन्द्रलोक में मानव के पदार्पण की यह घटना बहुत ही महत्वपूर्ण है। आज निश्चय ही मनु-पुत्र अर्थात् मानव ने दिग्विजय प्राप्त कर ली है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह एक बहुत बड़ा क्षण सिद्ध होता है। इस घटना पर कवि यह मंगलकामना करता है कि पृथ्वी पर दिखाई देने वाले समस्त विरोध शान्त हों और सभी देशों के लोग एक-दूसरे के समीप आएँ।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ कवि ने वैज्ञानिक घटना के परिप्रेक्ष्य में दार्शनिक आदर्शों की प्रेरणात्मक अभिव्यक्ति की है। **2.** भाषा— साहित्यिक हिन्दी । **3.** रस—वीर। **4. गुण**—ओज। **6. अलंकार**—अनुप्रास, रूपक तथा पुनरुक्तिप्रकाश।

**( घ ) फहराए ग्रह .......................................... विस्तृत मन!**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में पन्त जी ने समस्त संसार में सुख तथा सम्पत्ति की प्रचुरता की कामना की है।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि अब धरती का हरा-भरा अंचल ग्रहों और उपग्रहों सब जगह फहराए। समस्त संसार में सुख व सम्पत्ति की प्रचुरता हो और जीवन में कल्याण-ही-कल्याण हो—कवि की यही मंगलकामना है।

चन्द्रलोक पर प्रथम बार मानव के उतरने पर कवि मंगलकामना करता है कि अमेरिका और रूस जैसे विशाल और शक्तिसम्पन्न देश; दिशाओं की नई एवं श्रेष्ठ रचना के संवाहक बने। उसी प्रकार समस्त संसार के प्राणियों के जीवन-मार्गों में समन्वय स्थापित हो और सभी का मन विशाल और उदार बने।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ कवि ने मानव जीवन में कल्याण तथा समस्त संसार के प्राणियों के जीवन-मार्गों में समन्वय स्थापित होने की मंगल-कामना की है। **2. भाषा**— साहित्यिक हिन्दी। **3. रस**—वीर। **5. गुण**—ओज। **6. अलंकार**—रूपकतथा पुनरुक्तिप्रकाश।

**( ङ ) अणु-युग बने .......................................... देख चन्द्रानन।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में पन्तजी ने अणु-युग के प्रति लोकमंगल की कामना को अभिव्यक्त किया है।

**व्याख्या**—पन्तजी की कामना है कि विज्ञान का सम्पूर्ण विकास मानव के कल्याण के लिए हो अर्थात् अणु-शक्ति का प्रयोग मानव-संहार के लिए न होकर, मानव-कल्याण के लिए हो। इसके विकास से संसार के आपसी द्वेषों का नाश हो जाए ओर उनके स्थान पर सद्भावना और भ्रातृ-प्रेम का उदय हो, जिससे यह पृथ्वी; स्वर्ग के समान सुखी और सम्पन्न हो जाए अर्थात् यह अणु-युग; पृथ्वी पर स्वर्ग के निर्माण का साधन बने। मानवता ही केवल इस संसार में एक सत्य है, अन्य वस्तुएँ तो मिथ्या हैं। सच्ची मानवता के लिए सभी राष्ट्रों के बीच के भेदभाव की खाई समाप्त होगी और विश्व में मानवता का साम्राज्य होगा।

पन्तजी कहते हैं कि पृथ्वी और चन्द्रमा का प्रेम बहुत पुराना है। विद्वानों का विश्वास है कि चन्द्रमा पहले पृथ्वी का ही एक टुकड़ा था, जो टूटकर-छिटककर उससे अलग हो गया। आज भी पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा को देखकर सागर के हृदय में ज्वार आता है। यह मानो पृथ्वी और चन्द्रमा के पुरातन सम्बन्ध और प्रेम का ही परिचायक है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** इन पंक्तियों में कविका मानवतावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत हुआ है। **2.** वैज्ञानिक शक्ति के मानवतावादी उपयोग की प्रेरणा दी गई है। **3.** पन्तजी का मत है कि आपसी भेदभाव भुलाकर परस्पर मित्रता करने से ही विश्व की उन्नति होगी। **4. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **5. रस**—शान्त। **6. गुण**—माधुर्य। **7. अलंकार**—अनुप्रास।

## काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

**1. निम्नांकित पंक्ति का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—**

**काव्य-सौन्दर्य**— 1. पृथ्वी के सागर रूपी हृदय में चन्द्रमा के मुख को देखकर ज्वार उठा करता है अर्थात् तात्पर्य यह है कि चन्द्रविजय की सार्थकता तभी है जब वैज्ञानिक उपलब्धियों को मानव-हित में लगाया जाए। **2. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—उपमा।

**2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए—**

(क) **अलंकार**—अनुप्रास (ख) **अलंकार**—उपमा।

**3. निम्नलिखित पदों में प्रत्ययों को अलग करके लिखिए—**

| **शब्द** | **प्रत्यय** | **शब्द** | **प्रत्यय** |
|---|---|---|---|
| पौराणिक | **इक** | मानवता | **ता** |
| माणिक | **इक** | सामाजिक | **इक** |
| छोटापन | **पन** | | |

**4. निम्नलिखित पदों से उपसर्ग और शब्द को पृथक्-पृथक् करके लिखिए—**

| **शब्द** | **उपसर्ग** | **शब्द** | **उपसर्ग** |
|---|---|---|---|
| अक्षय | **अ**, | अथक | **अ** |
| अभ्यागत | **अभि** | स्वार्थ | **स्व** |
| समारम्भ | **सम्** | उपग्रह | **उप** |
| सुनागरिक | **सु** | विमूढ़ | **वि** |

# 6 महादेवी वर्मा

**(जन्म : सन् 1907 ई० - मृत्यु : सन् 1987 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (क) **6.** (क) **7.** (क) **8.** (क) **9.** (ग) **10.** (क) **11.** (घ) **12.** (क) **13.** (घ) **14.** (ख)

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** हिमालय की चोटी बर्फ से ढकी रहती है जिससे हिमालय बहुत शोभायमान दिखता है। हिमालय तीव्र धूप, आँधी, वर्षा, बर्फीली हवाओं को झेलता है फिर भी यह आकाश में सिर ऊँचा किए हुए गर्व से खड़ा रहता है।

**2.** काले-काले बादल ऐसे लगते हैं, जैसे वर्षा के सुगन्धित, महीन, गीले और कोमल वस्त्र हों। वर्षा

की जल की बूँदें ऐसी लगती हैं जैसे प्रसन्नता के साथ नृत्य करती हुई टपक रही हों। वर्षा की विद्युतरूपी उज्ज्वल दृष्टि ऐसी लगती है, जैसे दूर-दूर तक दीपावली के जलते दीपकों की कतार दिखाई देती है।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न–

**उत्तर–**

1. महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई० में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था।
2. महादेवी वर्मा ने 'चाँद' नामक पत्रिका का सम्पादन किया।
3. महादेवी वर्मा ने मुख्य रूप से अपने काव्य में मुक्तक शैली का प्रयोग किया है।
4. महादेवी वर्मा की दो प्रसिद्ध काव्य कृतियों के नाम हैं—1. रश्मि 2. यामा।
5. महादेवी वर्मा के प्रथम काव्य-संग्रह का नाम 'नीहार' है।
6. महादेवी वर्मा को 'सेकसरिया पुरस्कार', 'मंगलाप्रसाद पुरस्कार', पद्मभूषण पुरस्कार, 'ज्ञानपीठ पुरस्कार', 'भारत भारती' पुरस्कार प्राप्त हुए।
7. छायावाद की एकमात्र कवयित्री का नाम महादेवी वर्मा है।
8. महादेवी वर्मा ने अपने गीतों में करुणा व विरह-वेदना की भावना को अभिव्यक्ति दी है।
9. महादेवी वर्मा को काव्यग्रन्थ 'यामा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।
10. महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' के उपनाम से पुकारा जाता है।
11. **जीवन परिचय**—प्रसिद्ध छायावादी कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई० में उत्तर प्रदेश के सुप्रसिद्ध नगर फर्रूखाबाद में होलिका-दहन के दिन हुआ था। इनके पिता गोविन्द सहाय वर्मा एक अध्यापक थे और माता हेमरानी साधारण कवयित्री के साथ-साथ श्रीकृष्ण में अटूट श्रद्धा रखती थीं। इनके मातामह (नाना) भी ब्रजभाषा में अच्छी कविता करते थे। नाना एवं माता की साहित्यिक रुचि का महादेवी पर बड़ा प्रभाव पड़ा। नौ वर्ष की छोटी अवस्था में ही इनका विवाह स्वरूपनारायण वर्मा से हो गया, किन्तु इन्हीं दिनों इनकी माता का देहान्त हो गया। इनका दाम्पत्य जीवन सुखद नहीं रहा, फिर भी इन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा तथा पढ़ने में और अधिक रुचि दिखायी, जिसके परिणामस्वरूप इन्होंने मैट्रिक से लेकर एम० ए० तक की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। बहुत समय तक इन्होंने 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' के प्रधानाचार्या पद को सुशोभित किया।

    सर्वप्रथम इनकी रचनाएँ 'चाँद' नामक पत्रिका में प्रकाशित होती थीं। ये 'चाँद' पत्रिका की सम्पादिका भी रहीं। इनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए इन्हें जहाँ 'सेकसरिया' तथा 'मंगलाप्रसाद' पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, वहीं भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म-भूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। सन् 1983 ई० में इनके काव्यग्रन्थ 'यामा' पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' और इसी वर्ष उत्तर प्रदेश सरकार ने इनको एक लाख रुपए का 'भारत भारती' पुरस्कार देकर इनकी प्रतिभा का सम्मान किया। महादेवी के काव्य में बुद्ध की करुणा, मीरा की वेदना, सूर का संगीत तथा छायावादी काव्य की सौन्दर्य चेतना प्राप्त होती है। इनका देहावसान सन् 1987 ई० को हुआ।

    महादेवी जी साहित्य और संगीत के अलावा चित्रकला में भी रुचि रखती थीं। इनके जीवन पर

महात्मा गांधी तथा टैगोर का बहुत प्रभाव पड़ा। महादेवी जी जीवनपर्यन्त प्रयाग में ही रहकर साहित्य साधना करती रहीं। आधुनिक काव्य के साथ श्रृंगार में इनका अविस्मरणीय योगदान है। इनके काव्य में उपस्थित विरह-वेदना अपनी भावनात्मक गहनता के लिए अमूल्य मानी जाती है। करुणा और भावुकता इनके काव्य की पहचान है।

महादेवी वर्मा की एक प्रसिद्ध रचना का नाम 'नीरजा' है।

## तथ्यपरक एवं काव्य-सारांश पर आधारित प्रश्न

1. 'हे चिर महान्!' कविता में हिमालय के लिए कवयित्री ने 'महान्' 'रागहीन' विशेषणों का प्रयोग किया है। उनसे हिमालय के विशाल व वैरागी के समान उदासीन रहने के गुणों पर प्रकाश पड़ता है।
2. **'हिमालय से' शीर्षक कविता का सारांश**—कविता में महादेवी जी हिमालय की महानता का वर्णन करते हुए कहती हैं कि हे हिमालय! तुम दीर्घकालीन महान हो। तुम्हारे बर्फ से ढके पर्वतों पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो वह तुम्हारी हँसी के समान दिखाई पड़ती हैं तथा बर्फ पर सूर्य की किरणें इन्द्रधनुषी रंगों की पगड़ी के समान लगती हैं। ठण्डी वायु तुम्हारे प्रत्येक अंग में सुगन्ध का लेपन करती हैं परन्तु फिर भी तुम उदासीन वैरागी के समान हो। तुम आकाश में सिर ऊँचा किए खड़े हो, परन्तु तुम्हारा हृदय इतना उदार है कि तुमने दीन-हीन मि—ी को भी अपनी गोद में लिया हुआ है। तुम्हारा मन विश्व को तुम्हारे चरणों में झुका देखकर द्रवित हो जाता है। तुम जितने कोमल हो उतनी ही कठोरता को सहन करने की शक्ति रखते हो। हे हिमालय! तुम्हारी समाधि तो सैकड़ों तूफानों एवं झंझावतों के आने पर भी नहीं टूटती। तुच्छ धूल के जलते कणों की पुकार से तुम्हारी आँखों से करुणा के आँसू जल-धारा बनकर बहने लगती है। तुम सब सुखों से विरक्त हो एवं सुख व दु:ख में समान बने रहते हो। महादेवी जी भी अपने को हिमालय जैसा बनाना चाहती हैं। वह भी हिमालय के समान कठोर साधना शक्ति से पूर्ण एवं कोमल हृदय वाली बनना चाहती हैं। जिसके हृदय में करुणा का सागर हो तथा आँखों में ज्ञान की ज्योति जगमगाती रहे।
3. कवयित्री के अनुसार वर्षा का केश-जाल बादलों के सामन श्यमाल है। उसका श्याम और कोमल केश-बाल सुगन्ध से युक्त होकर लहरा रहा है। उसके भीगे हुए अंग काँप रहे हैं। उसका शरीर उस महिला के शरीर के समान सिहर रहा है, जो अभी-अभी स्नान करके आई हो। उसकी भीगी हुई अलकों के छोरों से जल की बूँदें प्रसन्नता के साथ नृत्य करती हुई टपक रही हैं। उसका बादलरूपी बालों का समूह बड़ा आकर्षक लग रहा है।
4. 'बकपाँतों का अरविन्द हार' से कवयित्री का आशय है—हे वर्षारूपी सुन्दरी! दीर्घ शवास के कारण तेरा वक्षस्थल कम्पित-सा हो रहा है, जिसके कारण बगुलों की पंक्तिरूपी कमल के पुष्पों की माला चंचल-सी प्रतीत हो रही है।
5. कविता 'हिमालय से' का सारांश (मूल भाव) के लिए प्रश्न **2** का उत्तर देखें।

   **कविता 'हिमालय से' का उद्देश्य**—'हिमालय से' कविता का उद्देश्य मनुष्यों को हिमालय की तरह गर्वित, जीवन की कठिन परिस्थितियों के लिए कठोर बनने व कोमल हृदय बनने वाला बनने तथा अपने से छोटे लोगों को अपनाने को प्रेरित करना है।

6. **'वर्षा सुन्दरी के प्रति' कविता का केन्द्रीय भाव ( मूल भाव )**—'वर्षा सुन्दरी के प्रति' कविता में कवयित्री महादेवी वर्मा जी ने वर्षारूपी सुन्दरी का अलंकारिक वर्णन किया है। उन्होंने वर्षा का युवती के रूप में मानवीकरण करके उसके रूप सौन्दर्य का अनुपम वर्णन किया है। महादेवी जी ने बादलों की उपमा एक रूपसी युवती के केशों से की है। उन्होंने वर्षा रूपी सुन्दरी के शरीर को उस महिला के शरीर के समान बताया है जो अभी स्नान करके आई हो। कवयित्री ने बादलों को वर्षा रूपी सुन्दरी का वस्त्र तथा जुगनू को उसके आँचल के सोने के फूल बताया है। महादेवी जी ने आकाश में उड़ते बादलों की पंक्ति को इस सुन्दरी के गले के श्वेत कमल के फूलों के हार के समान बताया है। इस सुन्दरी के आगमन पर प्रकृति मनोरम हो जाती है तथा वातावरण में मधुरता छा जाती है। कवयित्री का भाव इस सुन्दरी से आग्रह करना है कि हे वर्षारूपी सुन्दरी! तुम संसाररूपी अपने शिशु को अपनी गोद में समेट लो तथा इस पर अपना दुलार बरसाती रहो।
7. 'रूपसि तेरा घन-केश-पाश' काव्य पंक्तियों में 'रूपसि' वर्षा है। उसे इस सम्बोधन से कवयित्री महादेवी वर्मा ने उसके सुन्दर रूप के कारण पुकारा है।

## पद्यांश व्याख्या

**निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा इनके काव्य-सौन्दर्य पर भी प्रकाश डालिए—**

**( क ) हे चिर महान् ......................................... तू हिमनिधान।**

**सन्दर्भ**—प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ आधुनिक युग की मीरा **श्रीमती महादेवी वर्मा** की **'हिमालय से'** नामक कविता से उद्धृत हैं। यह कविता हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में उनके काव्य-संग्रह **'सान्ध्यगीत'** से संकलित है।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में महादेवीजी ने हिमालय की प्राकृतिक सुन्दरता का वर्णन किया है।

**व्याख्या**—हे हिमालय! तुम सदैव महान् हो। बर्फ से ढके हुए तुम्हारे श्वेत मस्तक का स्पर्श करके सूर्य की सुनहली किरणें हँसने लगती हैं और उसकी रंगीन हँसी चारों ओर बिखर जाती है। उस समय ऐसो प्रतीत होता है, मानो चारों और प्रकृति प्रसन्नता से हँस रही हो। रंग-बिरंगा इन्द्रधनुष ऐसा लगता है कि जैसे तुम्हारे सिर पर पगड़ी बाँध दी गई हो। शीतल वायु तुम्हारे अंग-अंग में सुगन्धित पदार्थों का लेपन कर देती है, किन्तु हे हिमालय! तुम फिर भी वैरागी के समान उदासीन ही रहते हो।

हे हिमालय! तुम आकाश में सिर ऊँचा किए हुए गर्व से खड़े हुए हो। तुम्हारा सिर किसी के सामने नहीं झुकता। तुम इतने महान् हो कि दीन-हीन मि—ी को भी अपनी गोद में लिए हुए हो। संसार को अपने सामने झुका हुआ देखकर तुम्हारा मन दया से पिघल जाता है। तुम्हारा शरीर कठोर भार को भी सहन कर लेता है। हे हिमालय! तुम अन्दर से कोमल हो; किन्तु कठोरता को भी सहन करने की शक्ति रखते हो।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ पर हिमालय की प्राकृतिक सौन्दर्य का सजीव अंकन हुआ है। **2.** भाषा की संगीतात्मकता द्रष्टव्य है। **3. भाषा**—खड़ीबोली। **4. रस**—श्रृंगार। **5. गुण**—माधुर्य। **6. अलंकार**—उपमा, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण तथा अनुप्रास।

**( ख ) नभ में गर्वित .......................................... कितने कठिन प्राण।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—कवयित्री ने इन पंक्तियों में हिमालय की कठोरता और कोमलता का वर्णन किया है।

**व्याख्या**—कवियत्री कहती है कि हे हिमालय! स्वाभिमान से आकाश को छूने वाला तुम्हारा मस्तक किसी शक्ति के सम्मुख कभी नहीं झुकता है, फिर भी तुम्हारा हृदय इतना उदार है कि तुम अपनी गोद में तुच्छ धूल को भी धारण किए रहते हो। संसार को अपने चरणों में झुका देखकर तुम्हारा कोमल हृदय पिघलकर सरिताओं के रूप में प्रवाहित होने लगता है। हे हिमालय! तुम अपने शरीर पर व्रज के आघात सहकर भी विचलित नहीं होते। इस प्रकार तुम हृदय से कोमल और शरीर से कठोर हो।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** इन पंक्तियों में कवयित्री ने हिमालय का मानवीकरण करते हुए उसके कोमल एवं कठोर स्वरूप का चित्रण किया है। **2. भाषा**—सरल, साहित्यिक खड़ीबोली। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—अनुप्रास एवं विरोधाभास। **6. छन्द**—अतुकान्त-मुक्त।

**( ग ) टूटी है तेरी .......................................... दृग में विहान!**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत अवतरण में महादेवीजी ने हिमालय की दृढ़ता एवं उसके प्रति अपनी भावनात्मक अनुभूति का वर्णन किया है।

**व्याख्या**—हे हिमालय! तू कठोर तपस्वी की भाँति समाधि लगाए हुए है। इस समाधि को आँधी के सैकड़ों झटके भी भंग नहीं कर सके। वे तो केवल टकराए और हार मानकर ही लौट गए। एक ओर तो तुममें इतनी कठोरता है और दूसरी ओर जब तुमने तीव्र धूप से तपे हुए, धूल के कण की चीत्कार सुनी तो दया के कारण तुम्हारे नेत्रों से जलधारा फूट पड़ी। तुम सुख की कामना नहीं करते, अपितु सुख-दु:ख में समान रहने वाले योगी हो।

महादेवीजी कहती हैं—हे गिरिराज! मेरी तो यही कामना है कि मेरे जीवन की मौन भावना तुम्हारी विस्तृत छाया से मिल जाए। मेरा शरीर भी साधना की उस सीमा तक पहुँच जाए, जहाँ तक तुम्हारी साधना पहुँची है। मेरा मन भी उतना ही करुणापूर्ण हो जाए, जितनी करुणा तुम्हारे हृदय में भरी हुई है। मेरे हृदय में भी वर्षा का निवास है तथा नेत्रों में प्रात:कालीन सौन्दर्य विद्यमान है। कवयित्री का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार हिमालय सारे कष्टों, संकटों, आँधी, वर्षा आदि को झेलता है, उसी प्रकार मैं भी संकटों के आने पर अपने जीवन के आदर्शों से विचलित न हो सकूँ।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवयित्री का मन मानव-कष्टों को देखकर उन्हें दूर करने के लिए व्याकुल है। **2.** कवयित्री हिमालय को देखकर उसके महान् गुणों को अपने मन में सहेजने की कामना कर रही है। **3.** यहाँ हिमालय का मानवीकरण किया गया है। **4.** कवयित्री का प्रकृति-चित्रण दर्शनीय है। **5.** छायावाद का प्रभाव स्पष्ट रूप में परिलक्षित है। **6. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **7. रस**—शान्त। **8. गुण**—माधुर्य। **9. अलंकार**—मानवीकरण, पुनरुक्तिप्रकाश तथा रूपकातिशयोक्ति।

**( घ ) मेरे जीवन का .......................................... में विहान।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवयित्री हिमालय की महानता का वर्णन करती हुई अपने जीवन को हिमालय के समान ढालना चाहती हैं।

**व्याख्या**—महादेवी जी अपने जीवन को हिमालय की छाया में मिला देना चाहती हैं। तात्पर्य यह है कि वे हिमालय के सदगुणों को अपने आचरण में उतारना चाहती हैं। इसीलिए वे हिमालय से कहती हैं कि मेरी कामना है कि मेरा शरीर भी तुम्हारी तरह कठोर साधना-शक्ति से परिपूर्ण हो और हृदय में तुम्हारे जैसी करुणा का सागर भर जाए। मेरे हृदय में तुम्हारे जैसी करुणा की बरसात के कारण सरसता बनी रहे, परन्तु आँखों में ज्ञान की ज्योति जगमगाती रहे।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** महादेवी जी अपने तन-मन को हिमालय के समान साधना-शक्ति और करुणा से भर देना चाहिए। **2. भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—अनुप्रास। **6. छन्द**—अतुकान्त मुक्त।

**( ङ ) रूपसि तेरा .......................................... तेरा घन-केश पाश!**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में वर्षा को सुन्दरी के रूप में चित्रित किया गया है।

**व्याख्या**—महादेवीजी कहती हैं कि हे वर्षारूपी सुन्दरी! तेरा केश-जाल बादलों के समान श्यामल-श्यामल है। तेरा श्याम और कोमल केश-जाल सुगन्ध से युक्त होकर लहरा रहा है। हे सुन्दरी! क्या तू इन केशों को रात्रि के समय रजत-धार से युक्त आकाशगंगा में धोकर आई है? तेरे भीगे हुए अंग काँप रहे हैं। तेरा शरीर उस महिला के शरीर के समान सिहर रहा है, जो अभी-अथी स्नान करके आई हो। तेरी भीगी हुई अलकों के छोरों से जल की बूँदें प्रसन्नता के साथ नृत्य करती हुई टपक रही हैं। हे वर्षारूपी सुन्दरी! तेरा बादलरूपी बालों का समूह बड़ा आकर्षक लग रहा है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ वर्षा को सुन्दरी के रूप में प्रस्तुत करके, उसका मानवीकरण किया गया है। **2. भाषा**—परिमार्जित खड़ीबोली। **3. रस**—शृंगार। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—अनुप्रास, रूपक, पुनरुक्तिप्रकाश तथा मानवीकरण।

**( च ) सौरभ भीना झीना .......................................... तेरा घन-केश पाश!**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—वर्षा को सम्बोधित करती हुई महादेवीजी कहती हैं—

**व्याख्या**—हे वर्षा-सुन्दरी! तुम्हारे शरीर पर सुगन्ध से भरा महीन, गीला और कोमल सुरमे जैसा काला-काला रेशमी वस्त्र लिपटा हुआ है। ये काले-काले बादल ऐसे लगते हैं, जैसे वर्षा-सुन्दरी के सुगन्धित, महीन, गीले और कोमल वस्त्र हों। तुम्हारे चंचल आँचल से राह में जुगनूरूपी सुवर्ण के फूल निरन्तर झर-झर करते झर रहे हैं। तुम्हारा उज्ज्वल चितवन-विलास अर्थात् तुम्हारी विद्युतरूपी उज्जवल दृष्टि ऐसी लगती है, जैसे दूर-दूर तक दीपावली के जलते दीपकों की कतार दिखाई देती है। हे रूपसम्पन्न वर्षा-सुन्दरी! तुम्हारा बादलरूपी

केश-पाश लहरा रहा है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** वर्षा का मानवीकरण किया गया है। **2. भाषा**—खड़ीबोली। **3. रस**—श्रृंगार। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—उपमा, रूपक, अनुप्रास तथा मानवीकरण।

**( छ ) उच्छ्वसित वक्ष पर .......................................... तेरा घन-केश पाश!**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में महादेवीजी ने वर्षा-सुन्दरी के रमणीक रूप की सजीव अभिव्यक्ति की है।

**व्याख्या**—हे वर्षारूपी सुन्दरी! दीर्घ शवास के कारण तेरा वक्षस्थल कम्पित-सा हो रहा है, जिसके कारण बगुलों की पंक्तिरूपी कमल के पुष्पों की माला चंचल-सी प्रतीत हो रही है। जब तेरी साँसें पृथ्वी को स्पर्श करती हैं तो वे मलय पर्वत की सुगन्धित हवा बन जाती हैं और चारों ओर के वातावरण को सुगन्ध से परिपूर्ण कर देती हैं। हे वर्षारूपी सुन्दरी! तुम्हारे आगमन पर जब मोर 'केकी-केकी' ध्वनि करते हैं, तब वह ध्वनि ऐसी प्रतीत होती है, मानो तेरे पैरों के घुँघरू बज रहे हों। उस ध्वनि को सुनकर पृथ्वी की मौन पिपासा जाग्रत हो जाती है। हे वर्षारूपी सुन्दरी! तेरा केश-जाल काले-काले बादलों के समान है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ प्रकृति का मानवीकरण हुआ है। **2.** वर्षा को सुन्दर नायिका के रूप में चित्रित करके कवयित्री ने प्रकृति के कोमलतम रूप को प्रस्तुत किया है। **3. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **4. रस**—श्रृंगार। **5. गुण**—माधुर्य। **6. अलंकार**—रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा, यमक, अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश तथा मानवीकरण।

**( ज ) इन स्निग्ध लटों से .......................................... तेरा घन-केश-पाश!**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवयित्री वर्षा में मातृत्व की और जग में उसके शिशु की कल्पना करती हुई कहती हैं—

**व्याख्या**—हे वर्षा सुन्दरी! तुम्हारा बादलरूपी केश-जाल लहरा रहा है। तुम्हारा जगरूपी शिशु उदास-उदास दिखाई दे रहा है। तुम इसे दुलार दो, प्यार दो। जैसे माँ अपने बच्चे को गोद में लेकर तथा नीचे को मुख करके उसे चूम लेती है, उसे दुलारती है; ऐसे ही तुम भी अपने जगरूपी शिशु को दुलार लो। बच्चे को प्यार करते समय माँ की अलकें उसके ऊपर गिर जाती हैं और बच्चे का शरीर उनसे ढक जाता है। ऐसे ही हे रूपसी वर्षा! तुम भी अपनी स्निग्ध लटों अर्थात् काले-काले बादलरूपी लटों से जगरूपी शिशु का शरीर ढक दो। इसे अपनी विशाल रोमांचित गोद में भर लो। नीचे की ओर झुको, आसमान से जमीन की ओर आओ और मुस्कराहट-भरे ठण्डे चुम्बन से संसार के मस्तक अर्थात् पृथ्वी के ऊँचे उठे पर्वत आदि को ऐसे चूम लो, जैसे माँ अपने बच्चे के कोमल मस्तक को चूम लेती है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** वर्षा कामातृत्व रूप में मनोहर वर्णन हुआ है। **2. भाषा**—खड़ीबोली। **3. रस**—वात्सल्य। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—रूपकातिशयोक्ति, मानवीकरण तथा रूपक।

## काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. **निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—**

   **काव्य-सौन्दर्य—1.** वर्षा को सुन्दर नायिका के रूप में चित्रित करके प्रकृति के कोमलतम रूप को प्रस्तुत किया है। **2. भाषा**—साहित्यिक खड़ी बोली। **3. रस**—शृंगार। **4. गुण**—माधुर्य। **5. अलंकार**—रूपक, पुनरुक्तिप्रकाश।

2. **निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?**

   (क) 'पुनरुक्तिप्रकाश' अलंकार (ख) उपमा अलंकार (ग) यम और अनुप्रास।

3. **निम्नलिखित में समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम बताइए—**

| **समास** | **समास-विग्रह** | **समास का भेद** |
|---|---|---|
| ऋतुराज | **ऋतुओं का राजा** | **सम्बन्ध ( षष्ठी ) तत्पुरुष समास** |
| सजल | **जल सहित** | **अव्ययीभाव समास** |
| अनन्त | **न अन्त** | **तत्पुरुष समास** |
| हिमनिधान | **हिम का निधान** | **सम्बन्ध ( षष्ठी ) तत्पुरुष समास** |
| स्वर्णरश्मि | **स्वर्ण की रश्मि** | **सम्बन्ध ( षष्ठी ) तत्पुरुष समास** |

# 7 रामनरेश त्रिपाठी

**(जन्म : सन् 1889 ई० - मृत्यु : सन् 1962 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (ख) **6.** (क) **7.** (घ) **8.** (क) **9.** (घ) **10.** (क) **11.** (क) **12.** (ग) **13.** (क) **14.** (घ) **15.** (क) **16.** (घ) **17.** (क) **18.** (क) **19.** (घ) **20.** (क)।

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. मातृभूमि की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।

### जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न–

**उत्तर—**

1. रामनरेश त्रिपाठी का जन्म सन् 1889 ई० में जिला जौनपुर (उ० प्र०) के कोइरीपुर ग्राम में हुआ था।
2. त्रिपाठी जी के एक काव्य-संग्रह का नाम 'कविता कौमुदी' है।

3. त्रिपाठी जी के दो खंडकाव्यों के नाम हैं—1. मिलन 2. स्वप्न।
4. रामनरेश त्रिपाठी ने अपने काव्य में प्रबन्धात्मक और मुक्तक शैली का प्रयोग किया है।
5. **जीवन परिचय**—रामनरेश त्रिपाठी का जन्म सन् 1889 ई० में जिला जौनपुर (उ०प्र०) के कोइरीपुर ग्राम के एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। इनके पिता पं० रामदत्त त्रिपाठी एक ईश्वरभक्त ब्राह्मण थे। इन्होंने केवल नवीं कक्षा तक ही विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की। आगे इन्होंने स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया तथा साहित्य-सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। इन्होंने स्वाध्याय से न केवल हिन्दी का, वरन् संस्कृत, बांग्ला और गुजराती भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया।

   किशोरावस्था से ही साहित्य के प्रति रामनरेश त्रिपाठी जी की विशेष रुचि थी। इन्हें अनेक भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। 'हिन्दी-साहित्य सम्मेलन' के प्रचारमन्त्री के रूप में इन्होंने दक्षिणी भारत में हिन्दी का प्रचार-कार्य करके अदम्य उत्साह का परिचय दिया। इनके काव्य में द्विवेदी युग की नैतिकता एवं आदर्श का अपूर्व समन्वय तथा छायावादी काव्य के सूक्ष्म सौन्दर्य-चित्रण की प्रवृत्ति सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। इन्होंने राष्ट्रीयता, देशप्रेम, सेवा, त्याग आदि भावनाप्रधान विषयों पर अनेक मनोहारी कविताओं की रचना करके हिन्दी काव्य में अपना विशेष स्थान बनाया। सन् 1962 ई० में इनका निधन हो गया।

   रामनरेश त्रिपाठी की साहित्य के प्रति आरम्भ से ही विशेष रुचि थी। त्रिपाठी जी द्विवेद्वी युग के उन साहित्यकारों में हैं, जिन्होंने द्विवेदी-मंडल के प्रभाव से पृथक् रहकर अपनी मौलिक प्रतिभा से कई कार्य किए। हिन्दी के प्रचार-प्रसार और साहित्य-सेवा की भावना से प्रेरित होकर उन्होंने 'हिन्दी-मन्दिर' की स्थापना की। स्वयं द्वारा रचित समस्त रचनाओं का प्रकाशन भी उन्होंने स्वयं ही किया। त्रिपाठी जी स्वच्छन्दतावादी कवि थे। ये लोकगीतों के सर्वप्रथम संकलनकर्त्ता थे। उनके काव्य में द्विवेदी युग की नैतिकता एवं आदर्श तथा छायावादी सूक्ष्म सौन्दर्य-चित्रण का अपूर्व समन्वय देखने को मिलता है।

   **रचनाएँ**—रामनरेश त्रिपाठी ने विभिन्न साहित्यिक विधाओं के क्षेत्र में कार्य किया। उनकी प्रमुख काव्य-कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

1. **खण्डकाव्य**—त्रिपाठी जी के 'पथिक', 'मिलन' और 'स्वप्न' प्रबन्धात्मक खण्डकाव्य हैं। इनकी विषय वस्तु ऐतिहासिक और पौराणिक है जो राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत है।
2. **ग्राम्यगीत**—यह लोकगीतों का संग्रह है।
3. **मानसी**—यह इनकी फुटकर रचनाओं का संग्रह है।
4. **कविता-कौमुदी**—इसमें भी इनकी फुटकर कविताएँ संगृहीत हैं।

   त्रिपाठी जी का गद्य साहित्य इस प्रकार है—उपन्यास-वीरांगना तथा लक्ष्मी।

   **नाटक**—सुभद्रा तथा प्रेमलोक।

   **कहानी-संग्रह**—स्वप्नों के चित्र।

   **आलोचना**—तुलसीदास और उनकी कविता।

   **सम्पादित**—कविता कौमुदी, शिवा बावनी।

   **बाल-साहित्य**—गुपचुप कहानी, बुद्धि विनोद, आकाश की बातें तथा फूलरानी।

   **जीवन-चरित**—महात्मा बुद्ध तथा अशोक।

## तथ्यपरक एवं काव्य-सांराश पर आधारित प्रश्न

**1.** अपनी मातृ-भूमि पर संकट आने पर हमें उसकी रक्षा के लिए अपने प्राण तक न्योछावर कर देने चाहिए।

**2.** संसार को परीक्षास्थल मानने से कवि का आशय यह है कि जीवन में मनुष्य को कठोर से कठोर परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है और उन परिस्थतियों पर विजय प्राप्त करने पर ही मनुष्य का जीवन सफल होता है।

**3.** मातृभूमि के प्रति मनुष्य में स्वाभाविक प्रेम होता है, क्योंकि विषुवत् रेखा का वासी व ध्रुववासी अपनी मातृभूमि से प्रेम के कारण कठोर परिस्थिति में जीवन जीते हैं। और मातृभूमि की रक्षा के लिए लोग अपने प्राण तक न्योछावर कर देते हैं।

**4.** वास्तविक प्रेम वही कहलाता है जिसकी परिणति आत्मत्याग में होती है। इस सच्चे प्रेम के लिए यदि व्यक्ति को अपने प्राणों का भी बलिदान करना पड़े तो उसे प्रसन्नतापूर्वक कर देना चाहिए; क्योंकि बिना त्याग के प्रेम प्राणहीन होता है।

## पद्यांश व्याख्या

**निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा इनका काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—**

**( क ) शोभित है .......................................... वक्षःस्थल पर।**

**सन्दर्भ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ **'स्वप्न'** काव्य-संग्रह से हमारी पाठयपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित **रामनरेश त्रिपाठी** द्वारा रचित **'स्वदेश-प्रेम'** शीर्षक कविता से ली गई हैं।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में भारत देश के उच्च चरित्र वाले पूर्वजों व हिमालय का यशोगान किया गया है।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि यह 'भारत' हमारे चिरस्मरणीय पूर्वजों का देश है। इसका भाल हिमालयरूपी सर्वोच्च मुकुट से सुशोभित है। हमारे पूर्वज ऐसे थे, जिनके विजय के गीतों से आज तक भी सम्पूर्ण दिशाएँ गूँज रही हैं। ये ही तो वे पूर्वज थे, जिनकी महिमा की साक्षी आज भी सत्य स्वरूपवाला श्रेष्ठ हिमालय दे रहा है अथवा जिनकी महिमा की साखी हिमालय आज भी सत्यरूप में दे रहा है। हिमालय का भी अपना इतिहास है, इसके विशाल वृक्षस्थल पर विभिन्न लोगों के विमान समूह बना-बनाकर उतरा करते थे।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने अपने पूर्वजों के गुणों का गरिमापूर्वक गान किया है। **2.** यहाँ देशप्रेम का भाव मुखरित हुआ है। **3. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **4. रस**—वीर। **5. गुण**—ओज। **6. अलंकार**—उपमा तथा रूपक।

**( ख ) विषुवत् रेखा का .......................................... प्राण निछावर॥**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवि ने देशप्रेम की महत्ता को बताते हुए कहा है कि देशप्रेमी दुविधाओं अथवा सुविधाओं का विचार नहीं करता।

**व्याख्या**—त्रिपाठीजी कहते हैं कि भूमध्यरेखा-क्षेत्र में रहने वाले व्यवि, जो वहाँ की असहनीय गर्मी के कारण हाँफ-हाँफकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं, अपनी जन्मभूमि से

बहुत अधिक प्रेम करते हैं और उसके प्रति अपार श्रद्धा का भाव रखते हैं। वे ऐसे भीषण गर्मी के क्षेत्र को त्यागकर अन्य शीतल प्रदेश में जाकर रहना पसन्द नहीं करते हैं। इसी प्रकार ध्रुव प्रदेश में, जहाँ हर समय बर्फ जमी रहती है, असहनीय सर्दी पड़ती है तथा कोहरे के कारण दिन में भी रात का भ्रम होने लगता है, किन्तु वहाँ के निवासी भी जीवन की यातनाओं और विपदाओं को सहते हुए, काँप-काँपकर, अपना जीवन उसी प्रदेश में व्यतीत करना पसन्द करते हैं; क्योंकि उनमें भी अपने देश और जन्मभूमि के प्रति अटूट प्रेम होता है। उनकी रक्षा के लिए वे अपने प्राणों को न्योछावर कर देते हैं।

**काव्य-सौन्दर्य— 1.** कवि ने इस सत्य को प्रमाणित करने का सफल प्रयास किया है कि अपनी जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान होती है—'जननी जन्मभूमिशचस्वर्गादपि गरीयसी।' **2.** कवि ने दृष्टान्तों के द्वारा यह स्पष्ट किया है कि दुर्गम प्रदेशों में रहनेवाले लोग भी अपने देश को छोड़कर सुविधाजनक स्थानों पर नहीं जाना चाहते। **3.** यहाँ कवि ने उपर्युक्त उदाहरण के द्वारा विदेशों में प्राप्त भौतिक सुविधाओं के प्रति आकर्षित होकर विदेश की ओर पलायन करनेवाले भारतवासियों के अन्तर में स्वदेश-प्रेम जाग्रत करने का प्रयत्न किया है। **4. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **5. रस**—वीर। **6. गुण**—ओज। **7. अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश तथा अनुप्रास।

**( ग ) तुम तो, हे .......................................... वीरों के वंशज।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवि द्वारा जनता से स्वदेश-प्रेम का आग्रह किया गया है।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि कोई विषुवत-रेखा का वासी हो या ध्रुववासी हो, उसे भी अपनी जन्मभूमि से प्यार होता है। हे बन्धु! तुम्हें तो पृथ्वी का वह भाग मिला है, जिससे अच्छा खण्ड कोई है ही नहीं। वास्तव में तुम धन्य हो, क्योंकि तुमने उस मातृभूमि पर जीवन पाया है, जो समस्त पृथ्वी में सर्वोच्च मानी जाती है। यह भारत नाम की मातृभूमि सुख देनेवाली है तथा समस्त ऐश्वर्यों की खान है। हे वीरों के वंश में उत्पन्न बन्धु! तुमने जिस मातृभूमि का जल और अन्न ग्रहण किया है तथा जिसकी रज में तुम बड़े हुए हो, यह कैसे सम्भव हो सकता है कि शरीर रहते तुम उस मातृभूमि को त्याग दो।

**काव्य-सौन्दर्य— 1.** इन पंक्तियों में मातृभूमि के प्रति ममत्व की भावना का प्रस्तुतीकरण हुआ है। **2. भाषा**—खड़ीबोली। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—उपमा।

**( घ ) सच्चा प्रेम वही .......................................... है विकसित।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—कवि का कथन है कि देशप्रेम के लिए त्याग और बलिदान की भावना आवश्यक है।

**व्याख्या**—वास्तविक प्रेम वही कहलाता है, जिसकी परिणति आत्मत्याग में होती है अर्थात् सच्चा प्रेम आत्मत्याग पर निर्भर होता है। इस सच्चे प्रेम के लिए यदि हमें अपने प्राणों का भी बलिदान करना पड़े तो हमें प्रसन्नतापूर्वक कर देना चाहिए; क्योंकि बिना त्याग के प्रेम प्राणहीन होता है। तात्पर्य यह है कि सच्चे प्रेम के लिए त्याग की भावना परम आवश्यक है। देशप्रेम ऐसा पवित्र क्षेत्र है, जो कि निर्मल और निस्समीम त्याग के बल पर ही सुशोभित है, अर्थात् देशप्रेम की शोभा निर्मल त्याग पर निर्भर है। देशप्रेम की भावना से ही मनुष्य की आत्मा

और मानवता का विकास होता है। इसलिए मानवता को विकसित करने के लिए देशप्रेम परम आवश्यक है।

**काव्य-सौन्दर्य– 1.** यहाँ देशप्रेम की उत्पत्ति के मूल भावों पर प्रकाश डाला गया है। **2. भाषा**—भावात्मक हिन्दी। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—अनुप्रास।

## काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. **निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—**

**काव्य-सौन्दर्य—1.** कवि ने इन पक्तियों में बताया है कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी मातृभूमि से स्वाभाविक प्रेम होता है। **2. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **3. रस**—वीर। **4. गुण**—ओज। **5. अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश।

2. **निम्नांकित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम तथा लक्षण लिखिए—**

(क) 'कामारूपी वस्त्र' में 'रूपक अलंकार' हैं।

**लक्षण**—उपमेय और उपमान में जब अंतर दिखाई न दे तो वहाँ रूपक अलंकार होता है।

(ख) 'यश-धारा' में 'उपमा अलंकार' है।

**लक्षण**—यहाँ 'नदियाँ' उपमेय है, 'यश-धारा' उपमान है, इसलिए यहाँ उपमा अलंकार है।

3. निम्नलिखित पदों में समास-विग्रह कीजिए तथा नाम भी बताइए—

| **समस्त** | **पद समास-विग्रह** | **समास का नाम** |
|---|---|---|
| देश-जाति | **देश और जाति** | **द्वन्द्व समास** |
| चरण-चिह्न | **चरणों के चिहन** | **सम्बन्ध ( षष्ठी ) तत्पुरुष समास** |
| शत्रुंजय | **शत्रु को जय कर लिया है जिसने** | **बहुव्रीहि** |
| गिरी-वर | **गिरी में श्रेष्ठ ( वर )** | **अधिकरण ( सप्तमी ) तत्पुरुष समास** |
| परीक्षा-स्थल | **परीक्षा का स्थल** | **सम्बन्ध ( षष्ठी ) तत्पुरुष समास** |

# 8 माखनलाल चतुर्वेदी

(जन्म : सन् 1889 ई० - मृत्यु : सन् 1968 ई०)

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (क) **6.** (क) **7.** (घ) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (क) **11.** (ग) **12.** (क) **13.** (घ) **14.** (क) **15.** (घ) **16.** (क) **17.** (क)।

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1. पुष्प के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि—**

1. हमें देश की रक्षा के सम्मुख सब चीजों को व्यर्थ समझना चाहिए।
2. हमें सम्मान, प्रेम, लोभ का त्याग कर देश के लिए स्वयं को समर्पित कर देना चाहिए।
3. देश की रक्षा के लिए प्राणाहुति देना सर्वोच्च बलिदान है।
4. हमें देश की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।
5. देश पर मर-मिटने वालों का हमेशा सम्मान करना चाहिए।

**2.** कवि ने 'जवानी' कविता में देश की युवा-शक्ति को देश के उत्थान के कार्यों को करने, स्वाभिमान के साथ जीने तथा देश के लिए बलिदान होने का सन्देश दिया है।

**3.** विद्यार्थी स्वयं करें।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**1. जीवन परिचय**—माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म सन् 1889 ई० में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बावई नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० नन्दलाल चतुर्वेदी था। इनकी प्राथमिक शिक्षा गाँव की ही पाठशाला में हुई तथा घर पर ही रहकर इन्होंने संस्कृत, बांग्ला, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। कुछ समय तक ये अध्यापक भी रहे तत्पश्चात् इन्होंने खण्डवा से 'कर्मवीर' पत्र निकालना शुरू कर दिया, जो इनके क्रान्तिकारी विचारों का वाहक था। सन् 1913 ई० में ये सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'प्रभा' के सम्पादक नियुक्त हो गए। श्री गणेशशंकर 'विद्यार्थी' की प्रेरणा तथा साहचर्य से राष्ट्रीय आन्दोलनों में कूद पड़े और 'एक भारतीय आत्मा' के गुप्त नाम से देश भक्तिपरक रचनाएँ लिख-लिखकर पत्रिका में प्रकाशित करते रहे। ये कई बार जेल भी गए। इन्हें हरिद्वार में महन्त शान्तानन्द के द्वारा चाँदी के सिक्कों से तौलकर सम्मानित किया गया। सन् 1943 ई० में इन्हें 'प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन' का अध्यक्ष बनाया गया।

भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म विभूषण' की उपाधि से भी अलंकृत किया था। इनकी साहित्य सेवा के लिए सागर विश्वविद्यालय ने इन्हें डी० लिट्० की मानद उपाधि प्रदान की। 'हिमतरंगिणी' काव्य पर इन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' मिला था।

माखनलाल चतुर्वेदी का साहित्यिक जीवन पत्रकारिता से शुरू हुआ था और इन्होंने अपनी राष्ट्र-प्रेम की कविताओं से शीघ्र ही हिन्दी काव्यधारा में प्रमुख स्थान बना लिया था। ये आजीवन देश-प्रेम तथा राष्ट्र-कल्याण के गीत गाते रहे। ब्रिटिश साम्राज्य के अत्याचारों को देखकर इनका अन्तर्मन ज्वालामुखी की तरह धधकता रहता था। ये एक ऐसे कवि थे, जो सर्वस्व देकर भी अपने राष्ट्र का उत्थान करना चाहते थे। इनके इसी बलिदानात्मक योगदान के कारण इन्हें 'भारतीय आत्मा' के सम्बोधन से पुकारा जाता है।

राष्ट्रीयता के इस अमर क्रान्तिकारी कवि का निधन 80 वर्ष की आयु में 30 जनवरी, सन् 1968 ई० में हुआ था।

उनका काव्य राष्ट्रीय भावना का पर्याय है। चतुर्वेदी जी महान कवि तो थे ही, परन्तु एक पत्रकार, समर्थ निबन्धकार और सिद्धहस्त सम्पादक भी थे। इस बहुमुखी प्रतिभा ने हिन्दी साहित्य को विविध क्षेत्रों में नई दिशा प्रदान करने में अपूर्व योगदान दिया।

**रचनाएँ**—उनकी प्रमुख काव्य-कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

1. हिम किरीटिनी 2. हिमतरंगिणी 3. युगचरण 4. रामनवमी 5. कृष्णार्जुन-युद्ध 6. साहित्य देवता 7. कला का अनुवाद 8. सन्तोष, बन्धन-सुख 9. कोकिल बोली।

इसके अतिरिक्त **'माता', 'समर्पण'** और **'वेणु लो गूँजे धरा'** चतुर्वेदी जी के अन्य काव्य-संग्रह हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने सम्पूर्ण काव्य में मुक्तक शैली का प्रयोग किया है। उनकी शैली में सरसता, सुबोधता, मधुरता, ओजस्विता और लाक्षणिकता के दर्शन होते हैं। उनकी शैली में किसी प्रकार की कृत्रिमता या अस्वाभाविकता के दर्शन नहीं होते हैं। उनकी शैली में कल्पना की ऊँची उड़ान के साथ भावों की सजीवता दृष्टिगोचर होती है। छन्दों के प्रयोग में चतुर्वेदी जी ने छायावादी कवियों की तरह स्वच्छन्दता से काम लिया है। उनकी भाषा साहित्यिक खड़ीबोली है।

**साहित्यिक अवदान**—माखनलाल चतुर्वेदी जी ने ओजपूर्ण भावात्मक शैली में रचनाएँ कर युवकों में ओज और प्रेरणा का भाव भरा है। इनके काव्य में त्याग, बलिदान, कर्तव्य क्षेत्रों में नई दिशा प्रदान करने में अपूर्व योगदान दिया।

**2.** माखनलाल चतुर्वेदी जी ने 'कर्मवीर' पत्र तथा 'प्रभा' नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन किया।

**3.** माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य का मूल स्वर राष्ट्रवाद है।

**4.** 'साहित्य-देवता' मारखनलाल चतुर्वेदी जी के भावात्मक निबंधों का संग्रह हैं।

**5.** माखनलाल चतुर्वेदी जी को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्यम विभूषण' की उपाधि से विभूषित किया। 'हिमतरंगिनी' रचना के लिए इन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से पुरस्कृत किया गया।

**6.** चतुर्वेदी जी के भाषणों के संग्रह 'चिन्तक की लाचारी' तथा 'आत्म-दीक्षा' नाम से प्रकाशित हुए हैं।

**7.** माखनलाल चतुर्वेदी जी आधुनिक हिदी काव्य के एक सशक्त हस्ताक्षर थे। माखनलाल चतुर्वेदी जी ने अपनी ओजपूर्ण वाणी से भारतीयों में राष्ट्रवाद की अलख जगाई। वे देश के उत्थान की कामना हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। इनका नाम उन कवियों में अमर है, जिन्होंने राष्ट्रहित को ही अपना परम लक्ष्य माना था।

**8.** माखनलाल चतुर्वेदी जी 'एक भारतीय आत्मा' उपनाम से लेख व कतिवाएँ लिखते थे।

**9.** श्री गणेशशंकर विद्यार्थी की प्रेरणा साहचर्य के कारण वे राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़े।

**10.** 'कोकिल बोली' में चतुर्वेदी जी के बंदी जीवन की यातनाओं का मर्मस्पर्शी वर्णन हुआ है।

## तथ्यपरक एवं काव्य-सांराश पर आधारित प्रश्न

**1.** 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता में पुष्प त्याग, बलिदान और समर्पण का प्रतीक है।

**2.** माखनलाल चतुर्वेदी ने 'जवानी' शीर्षक कविता में 'ग्राम-सिंह' कुत्ते को सम्बोधित किया है।

**3.** 'पुष्प की अभिलाषा' कविता में फूल को किसी देवकन्या के आभूषणों में गुँथने की चाह नहीं है, क्योंकि वह सुख प्राप्त करना नहीं चाहता। फूल को किसी प्रेमी द्वारा अपनी प्रेमिका के लिए बनाई गई माला में बिंधने की चाह नहीं है, क्योंकि वह किसी को आकर्षित नहीं करना चाहता। फूल को किसी महामहिम सम्राट के शव पर चढ़ाए जाने की चाह नहीं है, क्योंकि वह राजकीय सम्मान नहीं पाना चाहता। फूल को देवी-देवताओं के मस्तक पर चढ़ने की चाह नहीं है, क्योंकि वह ऐसा करके अपने भाग्य पर अभिमान नहीं करना चाहता।

**4.** 'पुष्प की आभिलाषा' कविता में कवि हमें देश के प्रति समर्पित होने का संदेश देना चाहता है।

**5.** 'जवानी' कविता में कवि ने युवकों को स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा दी है। उन्हें कायर, स्वाभिमान से रहित और परतंत्र प्रकृति वाले व्यक्तियों के साथ जीवन-निर्वाह न करने को कहा है।

**6.** 'मसलकर ___________ गोल कर दें', कहने में यह भाव-सौन्दर्य है, तुम्हारे पास दो हथेलियाँ हैं। अपनी हथेलियों को अपने ऊँचे संकल्पों के समान उठाकर तुम पृथ्वी को गोल कर सकते हो अर्थात् तुममें इतना बल है कि यदि तुम चाहो तो पृथ्वी का आकार भी बदल सकते हो।

**7.** कुत्ता चाहे कितना ही जोर-से भौंक ले, किन्तु उसमें इतना साहस नहीं होता कि वह शक्तिशाली सिंह को डाँट सके, क्योंकि जब वह दूसरों की रोटियाँ खाता है, तब वह रोटियाँ नहीं बल्कि अपना साहस खा रहा होता है।

**8.** कवि कहता है कि क्या इस संसार में केवल तलवार अर्थात् शस्त्र बल से ही क्रान्ति लाई जा सकती है? नहीं, ऐसा नहीं है। यह संसार संकल्प पर आधारित है। इस पर विजय तलवार की धार से नहीं बल्कि दृढ़ निश्चय द्वारा ही पाई पाई जा सकती है। जब नवयुवक किसी बात का संकल्प कर लेते हैं तो उनके इस संकल्प के फलस्वरूप ही संसार में परिवर्तन प्रारम्भ हो जाता है उनके संकल्पों से एक क्रान्ति आ जाती है।

**9.** माखनलाल चतुर्वेदी ने 'पुष्प की अभिलाषा' कविता द्वारा मानव-जाति को देशभक्ति का सन्देश दिया है।

**10.** 'जवानी' कविता में कर्तवय-भावना और समर्पण के भाव निहित हैं।

**11.** **पुष्प की अभिलाषा का मूलभाव**—हमें अपने देश के लिए त्याग-बलिदान करने में पीछे नहीं रहना चाहिए। हमें अपने देश पर स्वयं को बलिदान करने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए।

**12.** **'जवानी' शीर्षक कविता का मूलभाव**—युवकों को स्वाभिमान के साथ जीने की प्रेरणा देना, युवाओं को देश के उत्थान के कार्यों में प्रवृत्त होने की प्रेरणा देना, युवकों को देश के लिए बलिदान करने कीप्रेरणा देना।

## पद्यांश व्याख्या

**निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा इनका काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—**

**( क ) चाह नहीं, मैं .......................................... जिस पथ जावें वीर अनेक।**

**सन्दर्भ**—प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ **माखनलाल चतुर्वेदी** द्वारा रचित **'पुष्प की अभिलाषा'** नामक कविता से अवतरित हैं। यह कविता उनके कविता-संग्रह **'युगचरण'** से हमारी पाठयपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित है।

**प्रसंग**—चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना की गूँज है। उसमें त्याग, बलिदान और समर्पण की भावना विद्यमान है। इस कविता में भी कवि ने 'एक पुष्प की अभिलाषा' के माध्यम से अपने इन्हीं भावों को व्यक्त किया है।

**व्याख्या**—कवि माखनलाल चतुर्वेदी कहते हैं कि पुष्प के मन में अन्य किसी भी प्रकार का सम्मान पाने की अभिलाषा नहीं है। वह कहता है कि मेरी इच्छा यह नहीं कि है कि मैं किसी

देवकन्या के आभूषणों में गूँथकर सुख प्राप्त करूँ। मेरी इच्छा यह भी नहीं है कि किसी प्रेमी द्वारा अपनी प्रेमिका के लिए बनाई गई माला में बिंधकर प्रेमिका को आकर्षित करूँ। न मैं महामहिम सम्राटों के शवों पर चढ़ाया जाकर राजकीय सम्मान पाना चाहता हूँ और न श्रद्धालु भक्तों द्वारा पूज्य देवी-देवताओं के मस्तक पर चढ़कर अपने भाग्य पर अभिमान ही करना चाहता हूँ। इस प्रकार के किसी भी सम्मान को पुष्प व्यर्थ और निरर्थक मानता है।

पुष्प अपनी अभिलाषा प्रकट करता हुआ कहता है कि हे माली! तुम मुझे तोड़कर उस मार्ग में फेंक देना, जिस मार्ग से होकर देश के वीर जवानों की टोलियाँ अपनी जन्मभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुतियाँ देने के लिए जाएँ। इस प्रकार पुष्प बलिदान के मार्ग में स्वयं को अर्पित किए जाने में ही सुख का अनुभव करता है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** इस कविता में राष्ट्रीयता की भावना मुखर हुई है। **2.** पुष्प किसी राजनेता की तरह सम्मान प्राप्त नहीं करना चाहता, वह तो एक आत्मबलिदानी सैनिक के समान ही स्वयं को समर्पित कर देना चाहता है। **3. भाषा**—परिमार्जित खड़ीबोली का प्रयोग। **4. रस**—वीर। **5. गुण**—ओज। **6. अलंकार**—अनुप्रास तथा पुनरुक्तिप्रकाश।

**( ख ) प्राण अन्तर में ........................................ तेरी लहर जाए।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवि ने देश की युवा-शक्ति को देश के उत्थान के कार्यों में प्रवृत्त होने के लिए प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि अरी पागल जवानी! वह तू ही तो है जो अपने भीतर उत्साह शक्ति और प्राणवत्ता को समेटे रहती है। यह कौन कहता है कि तूने अपना तेज खो दिया है और तू निसतेज हो गई है? मैं जिधर भी दृष्टिपात करता हूँ उधर गति-ही-गति दिखाई देती है। घड़ियाँ (अर्थात् समय) निरन्तर चल रही हैं। आसमान के सितारों में भी गति दिखाई दे रही है। नदियाँ निरन्तर गतिमान हैं और पहाड़ों पर बर्फ के टुकड़े सरक-सरककर अपनी गति दिखा रहे हैं। प्राणिमात्र की साँसें निरन्तर चल रही हें। इस गतिशील वातावरण में ऐसा कैसे सम्भव हो सकता है कि तू ठहर जाए? जब आवश्यकता हो तो तुझमें ज्वार-भाटा न आए और दो-सौ वर्ष बाद तुझमें लहरें उठें, यह कैसे सम्भव हो सकता है?

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने युवावस्था को सम्बोधित करते हुए यह अपेक्षा की है कि वह गतिशील, उत्साही और शिव संकल्पवाली बने। **2. भाषा**—खड़ीबोली। **3. रस**—वीर। **4. गुण**—ओज। **5. अलंकार**—अनुप्रास और उपमा।

**( ग ) द्वार बलि का खोल ........................................ सीस दे-देकर जवानी?**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रवादी कवि हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में देश के युवकों को उद्‌बोधित और प्रेरित किया है। इस कविता में भी वे देश के युवकों को सम्बोधित कर रहे हैं।

**व्याख्या**—हे युवको! तुम अपनी मातृभूमि के लिए बलिदान का द्वार खोलकर इस धरती को कम्पित कर दो और हिमालय के एक-एक कण के लिए एक-एक सिर समर्पित कर दो। हे जवानो! तुम्हारे संकल्प ऊँचे हैं। तुम्हारे पास दो हथेलियाँ हैं। अपनी हथेलियों को अपने ऊँचे

संकल्पों के समान उठाकर तुम पृथ्वी को बोल कर सकते हो अर्थात् तुममें इतना बल है कि यदि तुम चाहो तो पृथ्वी का आकार भी बदल सकते हो।

हे वीरो! तुम अपनी युवावस्था को परख अपने शीश देकर कर सकते हो। इस बलिदान से तुम्हें यह भी ज्ञात हो जाएगा कि तुम्हारी धमनियों में रक्त दौड़ रहा है अथवा उनमें तुच्छ पानी भरा हुआ है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने देश के नवयुवकों को बलिदान की प्रेरणा दी है। **2.** यहाँ उच्च आदर्शों के लिए कर्तव्य की ओर उन्मुख होने का स्वर मुखरित हुआ है। **3. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **4. रस**—वीर। **5. गुण**—ओज। **6. अलंकार**—अनुप्रास।

**( घ ) श्वान के सिर हो ......................................... अभिमान मस्तानी जवानी!**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवि ने मनुष्य को स्वाभिमान के साथ जीने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**—कवि का कथन है कि सिर को कुत्ते के भी होता है, किन्तु स्वाभिमान की भावना न होने के कारण वह अपने पालने वाले के पैरों को चाटता रहता है। कुत्ता चाहे कितना ही जोर से भौंक ले, किन्तु उसमें इतना साहस नहीं होता कि वह शक्तिशाली सिंह को डाँट सके; क्योंकि जब वह दूसरों की रोटियाँ खाता है, तब वह रोटियाँ नहीं, अपितु अपना साहस खा रहा होता है। तात्पर्य यह है कि स्वाभिमान को त्यागकर अपना पेट भरनेवाला व्यक्ति को अपने साहस ओर अपनी क्षमताओं को नष्ट हो कर देता है। जीवित प्राणी होने पर भी ऐसा व्यक्ति मृतक के समान ही हो जाता है। इसलिए कवि ने युवाशक्ति को सम्बोधित करते हुए कहा है कि शक्ति के पुंज हे युवाओ! तुम संसार का अभिमान हो। तुम कायर, स्वाभिमान से रहित और परतन्त्र प्रकृति वाले कुत्तों (ग्राम-सिंहों) जैसे व्यक्तियों के साथ जीवन-निर्वाह मत करो, इससे तुम्हारा स्वाभिमान भी नष्ट हो जाएगा। तात्पर्य यह है कि श्वान-वृत्तिवाले इन कायरों का साथ छोड़ दो। तुम ही तो इस विश्व के स्वाभिमान हो।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ कवि ने देश की युवा पीढ़ी को स्वाभिमान की प्रेरणा देने के लिए स्वाभिमानरहित व्यक्तियों की उपमा कुत्ते से की है। **2.** इन पंक्तियों में स्वाभिमान का जीवन जीने की प्रेरणा मुखरित हुई है,जो कवि की उदात्त भावनाओं का परिचय देती है। **3. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **4. रस**—वीर। **5. गुण**—ओज। **6. अलंकार**—उपमा, रूपक तथा अनुप्रास।

**( ङ ) ये न मग हैं ......................................... चढ़ती जवानी।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों के द्वारा कवि ने युवा-वर्ग को सम्बोधित किया है।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि अरी जवानी! ये जो मार्ग दिखाई दे रहे हैं ये ऐसे नहीं हैं कि तू इन्हें पार न कर सके। ये तो तेरे चरणों की रेखामात्र हैं। इन मार्गों का निर्माण जवानियों ने ही तो किया है। जवानी उन मार्गों का निर्माण करती है, जो बलिदेवी की दिशा की ओर बढ़ते हैं। यही जवानी का लक्ष्य भी होना चाहिए कि जब आवश्यकता पड़े तो दूसरों की देखा-देखी स्वयं का भी बलिदान कर दे। भाव यह है कि वीर युवक ही प्राणों की चिन्ता किए बिना नए पथ का निर्माण करते हैं। वे दूसरे की देखा-देखी स्वयं भी बलिदान-पथ की ओर अग्रसर हुआ करते

हैं। बलिदान के मार्ग केवल सामान्य मार्ग नहीं हैं, वरन् ये तो संसार-पथ पर पैरों से लिखे वे लेख हैं, जिनके भीतर सत्कर्मों की सुगन्ध है तथा जिनमें सत्कर्म हेतु लिया गया शिव-संकल्प निहित है। ये पवित्र मार्ग पृथ्वी के तीर्थों की दिशा-निर्धारण करने वाले स्तम्भ हैं। कवि आगे कहता है कि हे जवानी! तू प्राणों की रेखा खींच दे, अर्थात् स्वतन्त्रता की बलिदेवी पर प्राणों की ऐसी अमिट छाप छोड़ जा कि युग-युग तक तुझे याद किया जाता रहे। जवानी! तू अपना मौन तोड़ और उठकर बोल कि चढ़ती जवानी का मूल्य ही जीवन का बलिदान है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने देश की युवा-शक्ति को सशक्त प्रेरणात्मक स्वर में राष्ट्र-कल्याण का पथ प्रशस्त करने का सन्देश दिया है। **2.** यहाँ राष्ट्र-कल्याण के पथ पर बलिदान हो जाने का भाव मुखरित हुआ है,जो कवि की आदर्श भावनाओं का परिचायक है। **3. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **4. रस**—वीर। **5. गुण**—ओज। **6. अलंकार**—रूपक तथा अनुप्रास।

**( च ) टूटता-जुड़ता समय .......................................... तू जवानी है, जवानी!**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने देश के नवयुवकों को अपने देश में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने के लिए प्रोत्साहित किया है तथा उनमें चेतना जाग्रत की है।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि समय का भूगोल तो टूटता-जुड़ता चलता रहता है। ब्रह्माण्ड जिन तारक-मणियों को गोद में लेकर घूमता है, वे भी खगोलीय विस्फोट की ही अमूल्य भेंट हैं। यदि बारूद बर्फ जैसा ठण्डा हो जाएगा तो वह क्या जलेगा? जिस तरह बारूद को गर्मी चाहिए, ऐसे ही जवानी को भी ऊष्मा की आवश्यकता है। यदि मनुष्य को प्रलय के स्वप्न नहीं आते तो उसका जीवन व्यर्थ ही माना जाएगा। जीवन की उपलब्धि प्रलय की क्रान्ति है, निष्क्रियता की शान्ति नहीं। प्रलय के स्वप्न देखने वालों के लिए विशाल पृथ्वी भी तरबूज-जैसी छोटी वस्तु बन जाती है। तुम प्रलय के स्वप्न-द्रष्टा हो; अत: तरबूज जैसी इस पृथ्वी की दो फाँक कर सकते हो। कवि पुन: कहता है कि हे जवानी! इस समय तेरा प्रथम कर्तव्य यह है कि स्वतन्त्रता के देवता पर तू वह अमर जल अर्थात् अपना रक्त चढ़ा दे, जिससे कि संसार तेरा गुणगान इस रूप में करे—''वस्तुत: जवानी का परम उज्ज्वल रूप तो तुम्हारी ही जवानी है।''

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** विध्वंस की गोद से ही निर्माण के पुष्प खिलते हैं और प्रलय के बाद ही नई सृष्टि का निर्माण होता है। कवि ने यहाँ इसी भावना को व्यक्त करते हुए, देश की युवा शक्ति को बलिदान करने तथा अपने शीश को अर्पण करके मृत्यु का वरण करने की प्रेरणा दी है, जिससे राष्ट्र का कल्याण हो सके। **2. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **3. रस**—रौद्र एवं वीर। **4. गुण**—ओज। **5. अलंकार**—रूप तथा अनुप्रास।

**( छ ) विश्व है असि का .......................................... त्योहार, जीवन की जवानी!**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवि नवयुवकों को उनकी दृढ़-निश्चय और संकल्प पर आधारित शक्ति के सम्बन्ध में जाग्रत करते हुए कहता है कि नवयुवक ही देश के अन्दर क्रान्ति ला सकते हैं; इसलिए उन्हें सदैव देश पर न्योछावर होने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि क्या यह सम्पूर्ण संसार तलवार की धार अर्थात् शस्त्र-बल का ही है अर्थात् क्या इस संसार में केवल हथियारों के आधार पर ही क्रान्ति लाई जा सकती है? नहीं, ऐसा नहीं है। यह संसार दृढ़-निश्चय वाले व्यक्तियों का है, अर्थात् यह संसार संकल्प पर आधारित है। इस पर विजय तलवार की धार द्वारा नहीं, अपितु दृढ़-निश्चय द्वारा ही पाई जा सकती है। प्रत्येक प्रलय का उद्देश्य संसार में पूर्ण परिवर्तन या क्रान्ति ला देना होता है; अत: जब नवयुवक किसी बात का संकल्प कर लेते हैं तो उनके इस संकल्प के फलस्वरूप ही विश्व में परिवर्तन प्रारम्भ हो जाता है, उनके संकल्पों से एक क्रान्ति आ जाती है; अत: युवकों को दृढ़-संकल्प के द्वारा क्रान्ति लाने के लिए अग्रसर होना चाहिए।

जब व्यक्ति में दृढ़-संकल्पों की कमी होती है तो उसका पतन हो जाता है। वायु के हल्के झोंके से फूल नीचे गिर जाते हैं और उनकी समस्त सुन्दरता नष्ट हो जाती है; लेकिन काँटे आँधी और तूफान में भी गर्व से अपना सिर उठाए रहते हैं। काँटा अपनी दृढ़-संकल्प से युक्त व्यक्ति अपने इरादे से विचलित नहीं होते हैं। काँटे फूलों की कोमलता और सरसता के अभिमान को, अपनी दृढ़-संकल्प-शक्ति से चकनाचूर कर देते हैं।

कवि जवानी को सम्बोधित करते हुए कहता है कि हे जवानी! सजग होकर देख ले कि कहीं तेरा रक्त पानी न हो जाए, अर्थात् तेरा उत्साह समाप्त न हो जाए। वस्तुत: युवा जीवन में मृत्यु (बलिदान) एक उल्लास-भरा त्योहार होता है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ कवि ने आत्मिक शक्ति और संकल्प के महत्व को स्पष्ट किया है। **2.** कवि ने इन पंक्तियों में स्पष्ट किया है कि क्रान्ति तलवार या शस्त्र से नहीं, संकल्प की शक्ति से प्राप्त होती हैं। **3.** कवि ने फूल एवं काँटे की उपमा देकर संकल्प की दृढ़ता का महत्व स्थापित किया है, जो उनकी काव्यात्मक प्रतिभा का परिचायक है। **4. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **5. रस**—वीर। **6. गुण**—ओज। **7. अलंकार**—उपमा तथा अनुप्रास।

## काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

**1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—**

**काव्य-सौन्दर्य**—**1.** कवि ने फूल एवं काँटे की उपमा देकर संकल्प की दृढ़ता का महत्व स्थापित किया है। **2. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **3. रस**—वीर। **4. गुण**—ओज। **5. अलंकार**—उपमा।

**2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम तथा उसका लक्षण भी लिखिए—**

(क) यमक अलंकार, प्रथम 'लाल' शब्द का अर्थ लाल रंग तथा द्वितीय 'लाल' शब्द का अर्थ पुत्र हैं; अत: यहाँ यमक अलंकार है।

(ख) रूपक अलंकार।

**3. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का काव्य-सौन्दर्य—**

1. इस कविता में राष्ट्रीयता की भावना मुखर हुई है। 2. पुष्प किसी प्रकार का सम्मान या सुख प्राप्त करना नहीं चाहता, वह तो एक आत्मबलिदानी सैनिक के समान स्वयं को समर्पित कर देना चाहता है। **3. भाषा**—परिमर्जित खड़ीबोली। **4. रस**—वीर। **5. गुण**—ओज। **6. अलंकार**—अनुप्रास तथा पुनरुक्तिप्रकाश।

**4.** 'जवानी' कविता का सौन्दर्य उसकी फड़कती ओजपूर्ण शब्द-शैली में प्रफुल्लित हुआ है। इस कथन की पुष्टि कविता की इन पंक्तियों से होती है—

पहन ले नर-मुंड-माला,
उठ स्वमुंड सुमेरु कर ले,
भूमि-सा तू पहन बाना आज धानी
प्राण तेरे साथ हैं, उठ री जवानी!
द्वार बलि का खोल
चल, भूडोल कर दें,
एक हिम-गिरि एक सिर
का मोल कर दें,
मसल कर, अपने
इरादों सी, उठा कर,
दो हथेली हैं कि
पृथ्वी गोल कर दें?
रक्त है? या है नसों में क्षुद्र पानी!
जाँच कर, तू सीस दे-देकर जवानी?

**5.** चतुर्वेदी जी की दोनों कविताओं में वीर रस प्रधान है।

**6.** चतुर्वेदी जी की कविताओं में आए निम्नांकित मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

**खून पानी होना** — बदमाश सरेआम गुण्डागर्दी करते हैं, कोई उनका विरोध नहीं करता, लगता है जैसे सबका खून पानी हो गया है।

**चरण चाटना** — चरण चाटकर धन कमाने से अच्छा तो मजदूरी करके पेट भरना है।

**काया-कल्प होना** — दो वर्षों में ही निर्जन गाँव का काया-कल्प हो गया।

**पृथ्वी को गोल करना** — यदि मनुष्य मन में ठान ले तो वह अपने कार्यों से पृथ्वी को गोल कर सकता है।

**नसों में पानी होना** — जो व्यक्ति देशभक्त नहीं होता, उसकी नसों में पानी होता है।

**प्रलय के सपने आना** — राणा प्रताप से युद्ध करने की बात सुनते ही मानसिंह को प्रलय के सपने आने लगे।

# 9 सुभद्राकुमारी चौहान

**(जन्म : सन् 1904 ई० - मृत्यु : सन् 1948 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (घ) **6.** (क) **7.** (क) **8.** (ग) **9.** (क) **10.** (ग) **11.** (क) **12.** (क) **13.** (क) **14.** (क) **15.** (घ) **16.** (क) **17.** (क)।

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** रानी लक्ष्मीबाई ने पुरुषों के समान साहस दिखाया। अंग्रेजों के साथ युद्ध करते हुए अपनी अन्तिम साँस तक वह आघात-पर-आघात सहती रहीं और वीरांगना की तरह लड़ती रहीं ओर अन्त में वीरगति को प्राप्त हो गईं।

**2.** लार्ड डलहौजी की राज्य हड़प नीति के अनुसर जिस राज्य के राजा या रानी का उत्तराधिकारी नहीं था वह राज्य अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया जाता था। रानी लक्ष्मीबाई के भी कोई सन्तान नहीं थी इसलिए अंग्रेजों ने रानी लक्ष्मीबाई के किले पर अधिकार करने के लिए उन पर आक्रमण किया। रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के साथ बड़ी वीरता से युद्ध किया किन्तु अंग्रेजों की विशाल सेना होने के कारण रानी चारों ओर से शत्रुओं से घिर गईं और वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हो गईं।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**1.** सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 ई० में इलाहाबाद में हुआ था।

**2.** सुभद्राकुमारी चौहान अपने साहित्यिक तथा राजनीतिक जीवन में हिन्दी के विख्यात कवि माखनलाल चतुर्वेदी से प्रोत्साहित हुई।

**3.** सुभद्रा जी के काव्य-संग्रह 'मुकुल' को 'सेकसरिया पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

**4.** सुभद्रा जी की दो मुख्य काव्य-कृतियों के नाम हैं—1. मुकुल 2. त्रिधारा।

**5.** सुभद्रा जी की 'झाँसी की रानी की समाधि पर' कविता उनके काव्य-संग्रह 'त्रिधारा' से संगृहीत है।

**6.** **जीवन परिचय**—हिन्दी कवयित्री श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 ई० में इलाहाबाद के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। ये प्रयाग के 'क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज' की छात्रा रहीं। 15 वर्ष की किशोरावस्था में इनका विवाह खण्डवा (म० प्र०) के ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ हुआ। पर विवाहोपरान्त सुभद्रा जी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से प्रभावित होकर पढ़ाई-लिखाई छोड़कर देश-सेवा में लग गयीं तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने लगीं। अत: इन्हें कई बार जेल-यात्रा करनी पड़ी। इनकी **'झाँसी की रानी'** और **'वीरों का कैसा हो वसंत?'** कविताएँ आज भी लाखों युवकों के हृदय में वीरता की ज्वाला धधकाती हैं।

इन्हें इनके 'मुकुल' काव्य संग्रह तथा 'बिखरे मोती' कहानी-संग्रह पर 'सेकसरिया' पुरस्कार प्राप्त हुआ।

सुभद्राजी को साहित्यिक तथा राजनैतिक कार्यों में पं० माखनलाल चतुर्वेदी से विशेष प्रोत्साहन मिला, जिसके परिणामस्वरूप इनकी देशभक्ति का रंग और भी गहरा तथा व्यापक हो गया। इसी बीच सन् 1948 ई० में 44 वर्ष की आयु में एक मोटर-दुर्घटना में स्वतन्त्रता की इस पुजारिन का असामयिक निधन हो गया।

सुभद्राकुमारी चौहान ने अपने साहित्यिक जीवन में बहुत कम लिखा, परन्तु जो कुछ भी लिखा

वह अद्वितीय है। बाल्यावस्था से ही सुभद्रा जी को काव्य के प्रति लगाव था। सुभद्रा जी की काव्य-साधना के पीछे उत्कट देशप्रेम, अपूर्व साहस तथा आत्मोत्सर्ग की प्रबल कामना है। उनकी **कविता में सच्ची वीरांगना का ओज और शौर्य** प्रकट हुआ है। हिन्दी-काव्य जगत में ये अकेली ऐसी कवयित्री हैं, जिन्होंने अपने कण्ठ की पुकार से लाखों भारतीय युवक-युवतियों को युग-युग की अकर्मण्य उदासी को त्याग, स्वतन्त्रता-संग्राम में अपने को झोंक देने के लिए प्रेरित किया। वर्षों तक सुभद्रा जी की **'झाँसी वाली रानी थीं'** और **'वीरों का कैसा हो वसन्त'** शीर्षक कविताएँ लाखों तरुण-तरुणियों के हृदय में आग फूँकती रहीं। उनकी 'झाँसी की रानी' नामक कविता सर्वाधिक लोकप्रिय है और उससे उन्हें जो प्रसिद्धि प्राप्त हुई, वह कई बड़े-बड़े महाकाव्यों को भी प्राप्त न हो सकी।

**रचनाएँ**—सुभद्रा जी ने काव्य और कहानी विधा पर अपनी लेखनी चलाई। उनकी काव्य-कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

1. **मुकुल**—यह सुभद्रा जी का काव्य-संग्रह है। इसी में उनकी 'वीरों का कैसा हो वसन्त?' कविता संगृहीत है। इस संग्रह को 'सेकसरिया पुरस्कार' प्राप्त हुआ था।
2. **त्रिधारा**—इस काव्य-संग्रह में सुभद्रा जी की लोकप्रिय कविता 'झाँसी की रानी की समाधि पर' संगृहीत है।

भाषा-शैली सुभद्राजी की भाषा सरल तथा आडम्बरहीन है। अलंकारों तथा कल्पित प्रतीकों के मोह में न पड़कर सीधी सादी स्पष्ट अनुभूति को इन्होंने प्रधानता दी है। पूर्ण व्यावहारिक शब्दावली इनकी भाषा की अन्यतम विशेषता है।

सुभद्राकुमारी चौहान की शैली सुगम, समतल पगडंडी के समान है। उसमें कहीं भी अस्वाभाविकता के दर्शन नहीं होते हैं। यह उनके भावों का पूर्ण प्रतिनिधित्व करने में सफल है। उनकी शैली को कोई विशेष नाम तो नहीं दिया जा सकता है, परन्तु सरल और सुबोध होने के कारण व्यावहारिक शैली कहा जा सकता है। उसमें प्रवाह, माधुर्य, लय, ओज, प्रसाद आदि गुण विद्यमान हैं।

## तथ्यपरक एवं काव्य-सांराश पर आधारित प्रश्न

1. कविता में वर्णित समाधि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की है। इस समाधि में झाँसी की रानी की राख छिपी हुई है।
2. 'झाँसी की रानी' के लिए कवयित्री ने 'मरदानी' व 'वीर' विशेषणों का प्रयोग किया है। वीरता, साहस, ताकत, युद्ध कौशल, घुड़सवारी, तलवारबाजी—ये सभी मर्दों वाले गुण झाँसी की रानी में विद्यमान थे। रानी लक्ष्मीबाई ने वीर सेनापति की तरह अंग्रेजों से युद्ध किया और झाँसी की रक्षा करती रही। इसलिए उनके लिए कवयित्री द्वारा प्रयुक्त विशेषण 'मरदानी' व 'वीर' पूर्णत: सार्थक हैं।
3. 'झाँसी की रानी की समाधि' को कवयित्री ने 'रानी से भी अधिक प्यारी' इसलिए बतलाया है क्योंकि इससे उसे स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती है।
4. 'पर कवियों की अमर गिरा से इसकी अमिट कहानी' का अभिप्राय है—परन्तु कवियों की अमर वाणीके माध्यमसे वीरों की वाणी अत्यधिक श्रद्धा और प्रेम के साथ रानी लक्ष्मीबाई की अमिट

कहानी को गाती है।

5. 'झाँसी की रानी की समाधि पर' में कवयित्री ने वीरता, पराक्रम व बलिदान के भावों को प्रस्तुत किया है।

6. **'झाँसी की रानी की समाधि पर' कविता का सारांश ( केन्द्रीय भाव )**—इस कविता में सुभद्राजी ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि का वर्णन करते हुए उनकी वीरता का गुणगान किया है। कवयित्री लक्ष्मीबाई की समाधि के विषय में कहती हैं यह समाधि एक राख की ढेरी है। वह जलकर अमर हो गईं। उन्होंने स्वतन्त्रता की बलिदेवी पर अपनी चिता जलाकर सुंदर आरती की है।

## पद्यांश व्याख्या

**निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा इनका काव्य-सौन्दर्य भी लिखिए—**

**( क ) इस समाधि ........................................ मरदानी की।**

**संदर्भ**—प्रस्तुत काव्यांश हिन्दी की सुविख्यात कवयित्री **सुभद्राकुमारी चौहान** द्वारा रचित **'त्रिधारा'** नामक ग्रन्थ से हमारी पाठयपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित **'झाँसी की रानी की समाधि पर'** शीर्षक कविता से अवतरित है।

**प्रसंग**—इन कविता में कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान की गौरवगाथा प्रस्तुत की है।

**व्याख्या**—इस समाधि में उस वीरांगना की राख रखी हुई है, जिसने स्वयं जलकर स्वतन्त्रता की अलौकिक आरती उतारी थी। यह छोटी-सी समाधि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की है, जिन्होंने पुरुषों के समान साहस दिखाया। यह समाधि रानी की अन्तिम कर्मस्थली है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की वीरता और बलिदान की गौरवगाथा का ज्ञान किया है। **2. भाषा**—सरल खड़ीबोली। **3. रस**—वीर। **4. गुण**—प्रसाद और ओज। **5. अलंकार**—'आरती' में श्लेष।

**( ख ) यहीं कहीं पर बिखर ........................................ चमक उठी ज्वाला सी।।**

**संदर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उनके प्रतिभावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की है।

**व्याख्या**—कवयित्री कहती हैं कि अपनी समाधि के आस-पास ही रानी लक्ष्मीबाई टूटी हुई विजयमाला के समान बिखर गईं। अर्थात् युद्धभूमि में अंग्रेजी सेना के साथ बहादुरी से लड़ते हुए रानी के शरीर के अंग, यहीं-कहीं बिखर गए थे। इस समाधि में वीरांगना लक्ष्मीबाई की अस्थियाँ एकत्र करके रख दी गई हैं, जिससे कि देश की भावी पीढ़ी उनके गौरवपूर्ण त्याग-बलिदान से प्रेरणा ले सके। कवयित्री कहती हैं कि वीरांगना लक्ष्मीबाई अंतिम साँस तक शत्रुओं की तलवारों के प्रहार सहती रहीं। जिस प्रकार यज्ञ-कुंड में आहुतियाँ पड़ने से अग्नि प्रज्वलित होती है,उसी प्रकार रानी के आत्म बलिदान से आजादी की आग चारों और फैल गई। रानी के इस महान त्याग ने अग्नि में आहुति का काम किया, जिससे लोग अधिक उत्साह से स्वतन्त्रता-संग्राम में भाग लेने और रानी लक्ष्मीबाई की कीर्ति चारों ओर फैल गई।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवयित्री ने रानी लक्ष्मी की वीरता और बलिदान की गौरवगाथा का बखान किया है। **2. भाषा**—सरल खड़ीबोली। **3. रस**—वीर। **4. गुण**—प्रसाद और ओज। **5. अलंकार**—'यहीं-कहीं ........ ज्वाला सी' में उपमा, उदाहरण देने में दृष्टान्त, 'फूल' में श्लेष।

**( ग ) बढ़ जाता है मान .......................................... आशा की चिनगारी।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवयित्री कहती हैं कि देश के गौरव की रक्षा के लिए अपना बलिदान करने से रानी का महत्व और अधिक बढ़ गया है।

**व्याख्या**—कवयित्री कहती हैं कि स्वतन्त्रता पर बलि होने से वीर का सम्मान बढ़ जाता है। रानी लक्ष्मबाई भी युद्ध में बलिदान हुईं। अत: उनका सम्मान उसी प्रकार और भी अधिक बढ़ गया जैसे कि सोने की अपेक्षा स्वर्णभस्म अधिक मूल्यवान होती है। यही कारण है कि रानी लक्ष्मीबाई की यह समाधि हमें रानी लक्ष्मीबाई  से भी अधिक प्रिय है, क्योंकि इस समाधि में स्वतन्त्रता-प्राप्ति की आशा की एक चिंगारी छिपी हुई हे,जो आग के रूप में फैलकर पराधीनता से मुक्त होने के लिए देशवासियों को सदैव प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवयित्री ने लक्ष्मीबाई की समाधि से स्वतन्त्रता-प्राप्ति की प्रेरणा प्राप्त करने के लिए युवकों का आह्वान किया है। **2. भाषा**—सरल खड़ीबोली। **3. रस**—वीर। **4. गुण**—ओज एवं प्रसाद। **5. अलंकार**—'बढ़ जाता ................ सोने से' में दृष्टान्त, 'आशा की चिंनगारी' में रूपक और अनुप्रास।

**( घ ) इससे भी सुन्दर समाधियाँ .......................................... वीरों की बानी।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि को अन्य समाधियों से अधिक महत्वपूर्ण माना है।

**व्याख्या**—कवयित्री कहती हैं कि संसार में रानी लक्ष्मीबाई की समाधि से भी सुन्दर अनेक समाधियाँ बनी हुई हैं, परन्तु उनका महत्व इससमाधि से कम ही है।

क्षुद्र जन्तु (झींगुर और छिपकलियाँ आदि) ही रात्रिके अन्धकार में उन समाधियों पर ध्वनि करके मानो उनकी कहानी कहते हैं। लेकिन कवियों की अमर वाणी के माध्यम से वीरों की वाणी अत्यधिक श्रद्धा और प्रेम के साथ रानी लक्ष्मीबाई की अमिट कहानी को गाती है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवयित्री ने रानी की समाधि के प्रति अपना श्रद्धा-भाव व्यक्त किया है। **2. भाषा**—सरल खड़ीबोली। **3. रस**—वीर। **4. गुण**—प्रसाद और ओज। **5. अलंकार**— सर्वत्र अनुप्रास।

## काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

**1.** **काव्य-सौन्दर्य**— 1. कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की वीरता और बलिदान की गौरवगाथा का वर्णन किया है। **2. भाषा**—सरल खड़ीबोली। **3. रस**—वीर। **4. गुण**—ओज एवं प्रसाद। **5. अलंकार**—'आहुति-सी', 'ज्वाला-सी' में उपमा अलंकार।

2. (क) उपमा अलंकार (ख) उपमा अलंकार (ग) अनुप्रास अलंकार।

3. **वीर** रस।

4. **निम्नलिखित में उपसर्ग और प्रत्ययों को अलग करके लिखिए—**

| **शब्द** | **उपसर्ग** | **प्रत्यय** | **मूल शब्द** |
|---|---|---|---|
| अमर | **अ** | — | **मर** |
| निहित | **नि** | — | **हित** |
| मूल्यवती | — | **वती** | **मूल्य** |
| अन्तिम | — | **इम** | **अन्त** |
| विधान | **वि** | — | **धान** |
| पुलकित | — | **इत** | **पुलक** |

5. **निम्नलिखित पदों में समास का नाम बताते हुए समास-विग्रह कीजिए—**

| **समस्त-पद** | **समास-विग्रह** | **समास का नाम** |
|---|---|---|
| शिला-खण्ड | **शिला का खण्ड** | **सम्बन्ध ( षष्ठी ) तत्पुरुष समास** |
| स्मृतिशाला | **स्मृति के लिए शाला** | **सम्प्रदान ( चतुर्थी ) तत्पुरुष समास** |
| अमिट | **न मिटने वाला नञ्** | **तत्पुरुषसमास** |
| वीर-बाला | **वीरता से युक्त बाला** | **कर्मधारय समास** |
| आदि-अन्त | **आदि और अन्त** | **द्वन्द्व समास** |
| विजय-माला | **विजय की माला** | **सम्बन्ध ( षष्ठी ) तत्पुरुष समास** |

# 10 मैथिलीशरण गुप्त

**(जन्म : सन् 1886 ई० - मृत्यु : सन् 1964 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ख) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (घ) **6.** (क) **7.** (घ) **8.** (घ) **9.** (ग) **10.** (क)

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. (i) माखनलाल चतुर्वेदी (ii) मैथिलीशरण गुप्त (iii) रामनरेश त्रिपाठी (iv) रामधारीसिंह 'दिनकर' (v) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'।

2. प्रेम एक मानवीय गुण है जो जीवन को सार्थकता देता है। मानव का यह प्रेम विविध रूपों में छुलकता है, जैसे—पारिवारिक प्रेम, जातीय प्रेम, दोस्तों से प्रेम। इन सबसे बढ़कर प्रेम का जो स्वरूप है, वह है राष्ट्रप्रेम अथवा स्वदेश प्रेम। मानव ही नहीं पशु और पक्षी भी अपनी जननी जन्मभूमि से अगाध प्रेम करते हैं, फिर भला मानव इससे अछूता कैसे रह सकता है।

प्रत्येक भारतीय अपनी जन्मभूमि को माँ कहकर सम्बोधित करता है, उसके मन का यह भाव राष्ट्रप्रेम की तीव्र अभिव्यंजना करता है। यह प्रेम स्वाभाविक हैं क्योंकि जिस भूमि की मि—ी में हम पले-बढ़े, हमने अपना विकास किया, तथा जीवन की आवश्यक सुविधाओं को इसने प्रदान किया, उससे हमारा हृदय स्वत: ही प्रेम करने लगता है। संकट आने पर लोग अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राण भी न्योछावर कर देते हैं। बहुत-से लोग मानते हैं कि अपने राष्ट्र के लिए मर-मिटने वाला ही राष्ट्रप्रेमी होता है, जबकि ऐसा नहीं है। देश में बसने वाले आम नागरिक, शिक्षक, छात्र, राजनेता व्यापारी आदि भी राष्ट्रप्रेमी होते हैं जो अपने देश के विकास व सुधार में अपना अधिकतम योगदान देने का प्रयत्न करते हैं। लोग स्वदेश में बनी वस्तुओं के उपयोग को बढ़ावा देकर, समाज में शान्ति व भाइचारे की स्थापना करके अपने राष्ट्र की तरक्की में योगदान दे सकते हैं।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**1.** मैथिलीशरण गुप्त जी का जन्म सन् 1886 ई० में झाँसी जिले के चिरगाँव नामक स्थान पर हुआ था।

**2.** गुप्त जी को 'संकेत' ग्रन्थ पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ था।

**3.** गुप्त जी की कविता का मूल स्वर राष्ट्र प्रेम है।

**4.** गुप्त जी की दो प्रमुख काव्य कृतियों का नाम हैं—1. पंचवटी 2. जय भारत।

**5.** गुप्त जी ने अपनी रचनाएँ साहित्यिक खड़ीबोली में लिखी हैं।

**6.** **जीवन परिचय**—मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई० में झाँसी जिले के अन्तर्गत चिरगाँव नामक स्थान पर एक वैश्य कुल में सेठ रामचरण के घर में हुआ था। सेठ रामचरण भगवान् के भक्त थे और हिन्दी-काव्य के प्रेमी थे। वे स्वयं भी कविता किया करते थे। मैथिलीशरण गुप्त को कविता लिखने की प्रेरणा अपने पिता से ही प्राप्त हुई।

बाल्यकाल से ही गुप्त जी की रुचि शिक्षा में नहीं थी। प्राथमिक शिक्षा के उपरान्त अंग्रेजी का अध्ययन करने के लिए इन्हें झाँसी भेजा गया परन्तु वहाँ पर भी इनका मन नहीं लगा और ये वापस आ गए। इन्होंने घर पर रहकर ही अपने ज्ञान की वृद्धि की और कुछ दिन बाद ये काव्य-रचना करने लगे। इनकी रचनाएँ हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशित होने लगीं। गुप्त जी आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी को अपना गुरु मानते थे। इनके छोटे भाई सियारामशरण गुप्त भी अच्छे कवि और लेखक थे। इनका हृदय राष्ट्र-प्रेम से परिपूर्ण था, अत: देश की स्वतन्त्रता के लिए गुप्त जी को जेल यात्रा भी करनी पड़ी। इनकी निरन्तर काव्य-साधना और अपूर्व राष्ट्र-प्रेम से प्रभावित होकर आगरा विश्वविद्यालय ने डी० लिट्० तथा हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने 'साहित्य-वाचस्पति' की उपाधि से इन्हें विभूषित किया। इनकी अद्वितीय साहित्य-साधना और कर्मठता को देखकर स्वयं राष्ट्रपति ने इनको दो बार राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया था। गुप्त जी सीधे और सरल स्वभाव के व्यक्ति थे, इन पर गांधीवाद का पूर्ण प्रभाव था। सरस्वती के ये अमर पुत्र 12 दिसम्बर, सन् 1964 ई० को परलोक सिधार गए।

मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक युग की खड़ी बोली के निर्माता और उन्नायक कवियों में से हैं। गुप्त जी द्विवेदी युग के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं। आचार्य द्विवेदी जी के सम्पर्क में आने के उपरान्त इनकी रचनाएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगीं। सन् 1906 ई० में सबसे पहले

उनकी पुस्तक 'रंग में भंग' प्रकाशित हुई। सन् 1912 ई० में उनकी प्रसिद्ध रचना 'भारत-भारती' का प्रकाशन हुआ। इस रचना से गुप्त जी को अपार ख्याति प्राप्त हुई। उनके काव्य में सम्पूर्ण भारत की आत्मा मुखरित हो उठी है। राष्ट्र प्रेम उनकी कविता का मूल स्वर है।

**रचनाएँ**—उनकी प्रसिद्ध रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—

1. भारत-भारती 2. साकेत 3. यशोधरा 4. पंचवटी 5. द्वापर 6. जयद्रथ वध 7. जयभारत।

इनके अतिरिक्त गुप्त जी की अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं—'चन्द्रहास', 'कुणाल गीत' 'सिद्धराज', 'मंगलघट', 'अनद्य', 'मेघनाद-वध', 'रंग में भंग', 'विष्णुप्रिया', 'गुरुकुल', 'झंकार', 'नहुष' आदि।

**साहित्यिक अवदान**—मैथिलीशरण गुप्त ने हिन्दी को अपनी प्रतिभा के स्पर्श से संजीवनी प्रदान की। गुप्त जी ने 'पंचवटी', 'झंकार', 'साकेत' और 'यशोधरा' जैसी अद्वितीय कृतियों का सृजन किया। खड़ीबोली के स्वरूप-निर्धारण और उसके विकास में इन्होंने अपना अमूल्य योगदान दिया। इन्होंने अपनी कविताओं से राष्ट्रभक्ति और राष्ट्र-प्रेम का स्वर प्रमुख रूप से मुखरित किया। इसी कारण इन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि से विभूषित किया गया।

**शैली**—गुप्त जी ने अपने काव्य में विविध शैलियों का प्रयोग किया है। मुख्य रूप से प्रबन्धात्मक शैली, गीति शैली, अलंकृत शैली, उपदेशात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, आत्म-प्रधान शैली और मिश्र शैली को अपने काव्य में प्रयुक्त किया है। गुप्त जी ने शिखरिणी, द्रुतविलम्बित, दोहा, मालिनी, घनाक्षरी, सवैया, रोला, छप्पय आदि छन्दों को स्थान दिया है। गुप्त जी की शैली सरल, सुबोध, प्रवाहमय और मधुर है।

## तथ्यपरक एवं काव्य-सांराश पर आधारित प्रश्न

**1.** भारत माता के मन्दिर में समता का संवाद है।

**2.** जाति-धर्म या सम्प्रदाय का भेद और व्यवधान भारत माता के मन्दिर में नहीं है।

**3.** भिन्न-भिन्न संस्कृतियों और उनके महापुरुषों के गुण गौरव का ज्ञान भारत माता के मन्दिर में है।

**4.** अजातशत्रु बनकर हमें सबको मित्र बना लेना चाहिए।

**5.** हमें महान लोगों के गुणों को अपना आदर्श बनाकर उनके जैसा चरित्र बनाना चाहिए।

**6.** 'भारतमाता का मंदिर यह' कविता के माध्यम से कवि ने भारतवासियों को भारत के आदर्शों को अपनाने, गौरवशाली परम्पराओं को निभाने, भारतभूमि के महापुरुषों के चरित्र का अनुकरण करने, भारत माता की सेवा करने का संदेश दिया है।

## पद्यांश व्याख्या

**निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा इनका काव्य-सौन्दर्य भी लिखिए—**

**( क ) जाति-धर्म ........................................ ज्ञान यहाँ।**

**सन्दर्भ**—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित कवि **मैथिलीशरण गुप्त** द्वारा रचित **'भारत माता का मन्दिर यह'** शीर्षक कविता से उद्धृत है।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने समस्त भारतभूमि को भारत माता का मन्दिर (पवित्र स्थल) बताते हुए उसकी विशेषताओं का वर्णन किया है।

**व्याख्या**—इस भारत देश में जहाँ एक ओर समानता व कल्याण का भाव देखने को मिलता

है, वहीं इस देश की एक प्रमुख विशेषता के रूप में यह भी द्रष्टव्य है कि यहाँ अनेक जातियों, धर्मों या सम्प्रदायों के लोग रहते हैं, परन्तु उनके मध्य किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है। जाति, धर्म या सम्प्रदाय सम्बन्धी भेदभावों के कारण किसी भी देश का विकास एवं प्रगति विशेष रूप से बाधित होती है, परन्तु यहाँ इस प्रकार का कोई भी अवरोध परिलक्षित नहीं होता। यहाँ तो सबका समान रूप से स्वागत होता है। किसी भी धर्म आदि का व्यक्ति यहाँ का निवासी हो अथवा वह बाहर के देशों में आए, यहाँ सभी की बिना किसी भेदभाव के समान रूप से आवभगत की जाती है और सम्मान दिया जाता है। इस पावन भारतभूमि में हिन्दू धर्म के देवता श्रीराम हों, मुस्लिम धर्म के पैगम्बर मुहम्मद साहब या रहीम हों, बौद्ध धर्म के महात्मा बुद्ध हों अथवा ईसाई धर्म के ईसामसीह हों, सबके अनुयाइयों को अपने-अपने इष्ट की समान रूप से आराधना व ध्यान की स्वतन्त्रता प्राप्त है। हमारे देश की एक अन्य प्रमुख विशेषता यह भी है कि यहाँ किसी भी देश या धर्म की संस्कृति में निहित महत्वपूर्ण व कल्याणकारी विचारों, परम्पराओं, आदर्शों आदि को विराट हृदयता के साथ स्वीकार किया जाता है। इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए सम्पूर्ण विश्व में जितनी भी संस्कृतियों का उद्भव हुआ है, उन सभी के गुणों एवं महिमायुक्त बातों का यहाँ चिन्तन, मनन व अध्ययन किया जाता है। शिक्षालयों और समाज में उन संस्कृतियों के ज्ञान का प्रसार किया जाता है।

**काव्य-सौन्दर्य**—**1.** कवि ने अपने हृदयस्पर्शी भावों के माध्यम से भारत देश के आदर्शों एवं परम्पराओं का जो चित्रण किया है, वह अत्यन्त अनुपम बन पड़ा है। **2.** यहाँ गुप्तजी नेभारतीय संस्कृति की गौरवपूर्ण विशेषताओं से अपनी प्रभावपूर्ण भाषा में परिचित कराया है। **3.** भारतीय संस्कृति के प्राण यहाँ की समानता, प्रेमभाव, उदारता और सर्वकल्याण की भावना में ही निहित हैं, जिसका चित्रांकन कवि ने अत्यन्त मनोहारी रूप में किया है। **4. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **5. रस**—शान्त। **6. गुण**—प्रसाद। **7. अलंकार**—अनुप्रास, उपमा।

**( ख ) सब तीर्थों का .......................................... चित्र बना लें हम।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने लोगों से भारत माता मन्दिर के गुणों को अपने जीवन-चरित्र में उतारने की बात कहीं है।

**व्याख्या**—यह भारत माता का मन्दिर सभी तीर्थों में उत्तम तीर्थ है क्योंकि यह किसी एक सम्प्रदाय या किसी धर्म से जुड़ा तीर्थ नहीं है। यद्यपि इसमें सभी तीर्थों का समावेश है, इसलिए इस तीर्थ का तीर्थाटन करके अपने हृदय को हम पवित्र बना लें। यह ऐसा पवित्र व उत्तम स्थान है जहाँ पर कोई किसी का शत्रु नहीं है इसलिए यहाँ बसकर हम सबको अपना मित्र बना लें। इस पावन एवं अद्भुत देश में अपने मन में निहित स्वप्नों, आदर्शों या कल्पनाओं को साकार करने या अन्तर्निहित योग्यताओं के प्रस्फुटन के लिए भी समस्त सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। इसके लिए हमें अपने इस महान् देश में सभी प्रकार की प्रेरणाएँ, मार्गदर्शन और सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** भारत माता के मंदिर के रूप में मानवता की साकार मूर्ति का चित्रांकन। **2.** कवि की शब्द-भक्ति के द्वारा प्रेम से परिपूर्ण दुनिया का निर्माण करना। **3. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **4. रस**—शान्त। **5. गुण**—प्रसाद। **6. अलंकार**—रूपक।

**( ग ) मिला सेव्य .......................................... सभी प्रसाद यहाँ।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने भारतवासियों को भारत माता की सेवा करने, अपने समस्त कार्य उसी की सेवा में समर्पित करने और मुक्तिको ही अपना परम कर्तव्य बनाने की प्रेरणा दी है।

**व्याख्या**—कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि भारतवासी अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं कि उन्हें भारत माता के मन्दिररूपी इस पूज्य देश की सेवा का अवसर एक पुजारी के रूप में प्राप्त हुआ है। हमारे समस्त कर्म अपने उस भारत देश ओर भारतवासियों के उत्थान के लिए ही होने चाहिए, जहाँ किसी के भी साथ किसी भी प्रकार का अन्याय नहीं होता, प्रत्येक दशा में सबके साथ न्याय ही होता है। भारत के आदर्शों और महापुरुषों का जो भी अनुगामी है, जिसकी भी इनमें श्रद्धा है, उसे केवल मुक्ति को ही अपना लक्ष्य बनाकर अपने समस्त कर्मों को सम्यक रीति से सम्पन्न करने में सफल होता है। हमारी यह भारत माता इतनी पावन और महान् है कि देश के समस्त करोड़ों भारतवासियों को एक स्वर में इसकी जय-जयकार करनी चाहिए। इस प्रकार हमारी यह महान् भारतभूमि सभी के लिए समान रूप से मंगलकारी है। हमें इससे जो भी प्राप्त हुआ है, उस सबको प्रसाद के रूप में ग्रहण करके स्वयं को सौभाग्यशाली समझना चाहिए।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्यों के निर्वाह की प्रेरणा का बड़े अनुपम ढंग से चित्रण हुआ है। **2.** कवि ने समस्त भारतवासियों को अपने तन-मन से अपने देश की सेवा करने हेतु उद्‌बोधित किया है। **3. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **4. रस**—शान्त। **5. गुण**—प्रसाद। **6. अलंकार**—उपमा, अन्योक्तिप्रकाश।

## काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

**1.** (क) रूपक अलंकार (ख) अनुप्रास अलंकार।

**2.**

| शब्द | समास विग्रह | समास का नाम |
|---|---|---|
| जाति-धर्म | **जाति और** | **द्वन्द्व समास** |
| अजातशत्रु | **जिसका कोई शत्रु न हो** | **कर्मधारय समास** |
| भाई-बहन | **भाई और बहन** | **द्वन्द्व समास** |
| सेव्य | **सेवा योग्य** | **अव्ययीभाव समास** |
| जयनाद | **जय का नाम** | **तत्पुरुष समास** |

**4.** शांत रस।

**3.**

| शब्द | उपसर्ग | प्रत्यय | मूल शब्द |
|---|---|---|---|
| अमर | **अ** | — | **मर** |
| निहित | **नि** | — | **हित** |
| अनुयायी | **अनु** | — | **यायी** |
| कल्याण | — | **कारी** | **कल्याण** |

# 11 केदारनाथ सिंह

**(जन्म : 7 जुलाई, सन् 1934 ई० - मृत्यु : 19 मार्च सन् 2018 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (ग) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (क) **9.** (ख) **10.** (क) **11.** (क) **12.** (घ) **13.** (क) **14.** (घ) **15.** (क) **16.** (ग) **17.** (क) **18.** (घ) **19.** (क) **20.** (क)।

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** नदी का महत्व जीवन में अत्यधिक महत्व है। नदी किसानों के लिए बहुत मददगार है। नदी से खेतों की सिंचाई के लिए जल मिलता है। नदी हमारे पीने के पानी की आपूर्ति करती है। नदी में स्नान करने से हमारे स्वास्थ्य में सुधार होता है। नदी हमारे व्यापार में मदद करती है। नदी की धारा का प्रयोग मिलों के पहियों को मोड़ने या बिजली पैदा करने में किया जाता है। नदी के किनारे बड़े बंदरगाह विकसित होते हैं। नदी में नाव, स्टीमर आदि द्वारा हम यात्रियों व सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जा सकते हैं। नदी जिन स्थानों से होकर गुजरती है, उन स्थानों को उपजाऊ बनाती है। जिससे उन स्थानों में काफी मात्रा में फसलें उगती हैं। नदियाँ मछलियों के ताजा भोजन का स्रोत हैं। नदी वन्य जीवों के लिए पीने के पानी का महत्वपूर्ण स्रोत है।

**2.** विद्यार्थी स्वयं करें।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**1.** केदारनाथ सिंह का जन्म 7 जुलाई, 1934 ई० को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के चकिया गाँव में हुआ था।

**2.** केदारनाथ सिंह की कविता का मुख्य विषय ग्रामीण और शहरी समस्याएँ है।

**3.** केदारनाथ सिंह का पहला कविता-संग्रह सन् 1960 ई० में प्रकाशित हुआ।

**4.** केदारनाथ सिंह की दो काव्य-कृतियों के नाम हैं—1. अकाल में सारस 2. मेरे समय के शब्द।

**5.** केदारनाथ सिंह की 'बाघ' शीर्षक कविता लम्बी है।

**6.** केदारनाथ सिंह की कविता की मुख्य विशेषता मिट्टी से जुड़ाव है।

**7.** **जीवन परिचय**—प्रगतिवादी कवि केदारनाथ सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के चकिया गाँव में 7 जुलाई, 1934 ई० में हुआ था। इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में तथा हाईस्कूल से लेकर पी-एच०डी० तक की शिक्षा बनारस में प्राप्त की। इन्होंने बनारस विश्वविद्यालय से सन् 1956 ई० में हिन्दी में एम० ए० और सन् 1964 ई० में पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। अनेक कॉलेजों में अध्यापन कार्य करते हुए अन्ततः जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए। इन्होंने काव्य तथा गद्य की अनेक कृतियों की

रचना की। समकालीन कविता के ये प्रमुख हस्ताक्षर हैं। इनकी कविता में गाँव व शहर का द्वन्द्व स्पष्ट दृष्टिगत होता है। 'बाघ' इनकी प्रमुख लम्बी कविता है, जिसे नयी कविता के क्षेत्र में मील का पत्थर कहा जाता है।

इनके कविता-संग्रह 'अकाल में सारस' के लिए इन्हें सन् 1989 ई० का साहित्य अकादमी पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, कुमारन आशातन पुरस्कार (केरल), दिनकर पुरस्कार, जीवन भारती सम्मान (ओडिशा) और व्यास सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। हिन्दी साहित्य अकादमी का वर्ष 2009-10 का प्रतिष्ठित और सर्वोच्च शलाका सम्मान भी इनको मिल चुका है। किन्तु इन्होंने हिन्दी और हिन्दी की सच्ची सेवा करने वालों को उचित सम्मान न दिए जाने के विरोध में इस सम्मान को लेने से मना कर दिया। हिन्दी साहित्य की निरन्तर सेवा करते हुए 19 मार्च, 2018 ई० को 83 वर्ष की उम्र में इनका स्वर्गवास हो गया।

केदारनाथ सिंह की कविता का **मुख्य विषय** ग्रामीण और शहरी समस्याएँ हैं। यही कारण है कि इनकी कविताओं में ग्रामीण और नगरीय परिवेश का द्वंद्व स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इनकी कविता कल्पना की शक्तिशाली क्षमता से पूर्ण है। इनकी कविता परिवेश के जटिल अनुभव को अत्यंत सहज रूप में प्रकट करती हैं। **इनकी कविता के संसार में रंग, रोशनी, रूप, दृश्य सब एक-दूसरे में खो जाते हैं।** इनकी कविता नारों और आंदोलनों से नहीं अपितु जीवन और उसके विविध संस्कारों से अपनी यामा पूर्ण करती है। इनका **पहला कविता संग्रह सन् 1960 ई० में प्रकाशित हुआ।** इनकी कविताओं में सर्वत्र निराशा में भी आशा की किरण दिखाई देती है, पतझड़ में भी वसंत के आगमन की पदचाप सुनाई पड़ती है। इनकी कविता में मनुष्य की अक्षय ऊर्जा तथा अदम्य जिजीविषा है और परंपरा से मिली दिशाएँ हैं, जिनका संधान इन्होंने आवश्यकतानुसार अपनी पिछली जिंदगी की ओर मुड़कर भी किया है। वे अपने काव्य-सृजन में आगे बढ़ते रहे हैं, परंतु पीछे का नष्ट नहीं करते, अपितु उसकी भी कोई-न-कोई लीक बची रहती है, जहाँ आवश्यकता के अनुसार वे लौटते हैं।

केदारनाथ सिंह की भाषा बोलचाल की सरल और सहज खड़ीबोली है, परंतु उसकी प्रवाहत्मकता नदी की जलधारा के समान अविचल और अविरल है। काव्य में भाषा का परिष्कार करने में अकेले ही दृष्टिगोचर होते हैं। **इन्हें अनुभव होता है कि अभी भाषा को विकसित करने की आवश्यकता है।** वस्तुत: केदारनाथ सिंह लगातार भाषा की मुक्ति की ओर झुके हुए हैं। उसके स्वभाव को समझाने में लगे हैं। उसका गुणात्मक परिवर्तन इनकी भाषा में स्पष्ट दिखाई देता है।

**रचनाएँ**—केदारनाथ सिंह की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

अभी बिल्कुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, अकाल में सारस, उत्तर कबीर तथा अन्य कविताएँ, बाघ, ताल्स्ताय और साइकिल, मेरे समय के शब्द, कविता-दशक तथा ताना-बाना।

## तथ्यपरक एवं काव्य-सांराश पर आधारित प्रश्न

1. 'नदी' कविता में नदी अनवरत प्रगति का प्रतीक है।
2. यदि हम सामान्य गति से चलते रहे और सांसारिकता में न पड़कर भाग-दौड़ में न रहें तो यह हमारे साथ प्रत्येक स्थिति में किसी न किसी रूप में रहती है। इस प्रकार यह हमारे साथ किसी-

न-किसी रूप में कबाड़ी की दुकान तक भी चली जाएगी क्योंकि यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग है, न तो वह हमसे अलग हो सकती है और न हम उससे।

3. 'नदी' करोड़ों तारों की आँख बचाकर अपनी एक नई दुनिया बसा लेती है।
4. यदि हम सदा साथ रहने वाली नदी को किसी अनुचित स्थान पर छोड़ दें तो वह वहाँ भी अपनी एक पूरी दुनिया बसा लेगी। जैसे हम कहीं भी रहें, वर्ण के सबसे कठिन माने जाने वाले ग्रीष्म के दिनों में भी नदी हमें अपने स्नेहरूपी जल से सिक्त करती है।
5. 'नदी' कविता के माध्यम से कवि हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति से जुड़े रहने का सन्देश देना चाहता है।
6. 'नदी' इस समय घर में नहीं हैं तो वह हमारे पारस्परिक सम्बन्धों की चटाई अथवा भावनाओं के कोमल गुलदस्ते के नीचे से चुपचाप बह रही होगी।
7. **'नदी' कविता का मूलभाव ( सारांश )**—मानव जाति को नदी की तरह अनवरत प्रगति की ओर बढ़ने तथा अपनी सभ्यता और संस्कृति से जुड़े रहने की प्रेरणा देना।

## पद्यांश व्याख्या

**निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौंदर्य भी लिखिए—**

**( क ) अगर धीरे चलो ........................................ एक समूची दुनिया।**

**सन्दर्भ**—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठयपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में कवि **केदारनाथ सिंह** के काव्य-संग्रह **'अकाल में सारस'** से संकलित कविता **'नदी'** से उद्धृत है।

**प्रसंग**—इस काव्यांश में 'नदी' को सभ्यता और संसकृति के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कवि ने यहाँ अपनी सभ्यता और संस्कृति से कटते लोगों की मानसिकता पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उसके संरक्षण के उपायों की विवेचना की है।

**व्याख्या**—कवि केदारनाथ सिंह कहते हैं कि नदी वास्तव में बहते हुए जल की धारामात्र नहीं है; बलिक वह तो हमारा जीवन है, हमारा प्राणतत्व है। हमारी संस्कृति का जीवन्त रूप है, वह हमारी सभ्यता की जननी है। नदी हमारी रग-रग में दौड़ रही है। यदि हम धीरे से पूर्ण मनोयोग के साथ अपनी सभ्यता और संस्कृतिरूपी नदी के विषय में गम्भीरतापूर्वक विचार करें, उससे रागात्मक रूप में जुड़ने के लिए परस्पर संवाद करें तो वह हमारे अन्तर्मन की छूकर गहरे तक उसे भिगो जाती है। इसके विपरीत यदि हम अत्याधुनिकता की भ्रामक दौड़ में अन्धाधुन्ध दौड़ते जाएँगे और अपनी सभ्यता और संस्कृति की ओर दृष्टि उठाकर भी नहीं देखेंगे तो यह नदी हम से छूट जाएगी, दिन-प्रतिदिन दूर होती चली जाएगी। यदि हम अपनी संस्कृति और सभ्यता का थोड़ा-सा भी ध्यान रखें और उसे अपने साथ ले चलने का लेशमात्र भी विचार हमारे मस्तिष्क में हो तो यह नदी हमारे साथ सदैव आगे बढ़ती जाती है,फिर हम चाहे संसार के किसी भी कोने में जाएँ, यह हमारे साथ रहती है। यह सचचे साथी की तरह कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ती, फिर चाहे हम कबाड़ी की दुकान में बैठे हों अथवा किसी राजमहल में।

कवि केदारनाथ का अपनी सभ्यता और संस्कृति के विषय में अत्यन्त व्यापक दृष्टिकोण है। उनका मानना है कि यदि हम अपनी सभ्यता और संस्कृति से जरा भी कटते हैं अर्थात् एकपल के लिए भी उसकी अनदेखी करते हैं तो हम सम्पूर्ण समाज से, स्वयं से अलग-थलग पड़ जाते

हैं। वैसे यह यूँ ही हमारा साथ नहीं छोड़ देती; क्योंकि इसकी जड़ें इतनी गहरी हैं कि विषम परिस्थिति में भी यह मरती नहीं है। यह ब्रह्म की भाँति अनिर्वचनीय और चिरजीवी है, जो सब जगह किसी-न-किसी रूप में सदैव जीवित रहती है। यदि इसका सूक्ष्मतम अंश भी कहीं छूट जाता है अर्थात् शेष रहता है तो यह गहनतम अन्धकार में भी करोड़ों-करोड़ तारोरूपी अपने विघातकों की दृष्टि बचाकर भी चुपचाप धीरे-धीरे अपना विशाल साम्राज्य स्थापित कर लेती है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति कवि का प्रेम यहाँ प्रकट हुआ है। **2.** आधुनिकता की दौड़ में अपनी सभ्यता और संस्कृति से दूर होते जाने की प्रवृत्ति पर कवि की चिन्ता भी यहाँ व्यक्त हुई है। **3.** सभ्यता और संस्कृति ही वह तत्व है, जो संसार में व्यक्ति को उसकी पहचान देती हैं तथा विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति का साथ नहीं छोड़ती। **4. भाषा**—प्रतीकात्मक सरल, प्रवाहपूर्ण खड़ीबोली। **5. रस**—शान्त। **6. गुण**—प्रसाद। **7. अलंकार**—मानवीकरण।

**( ख ) सच्चाई यह है .......................................... चुपचाप बहती हुई।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि नदी सभी स्थानों पर हमारे साथ रहती है।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि हम कहीं पर भी रहें, वर्ष के सबसे कठिन माने जाने वाले ग्रीष्म के दिनों में भी यह हमें अपने स्नेहरूपी जल से सिक्त करती है और अत्यधिक प्रेम प्रदान करती है। कवि नदी की सर्वव्यापकता की ओर संकेत करता हुआ कहता है कि जो नदी विभिन्न स्थलों के मध्य से अनवरत प्रवाहित होती रहती है वह किसी न किसी रूप में हमारे घरों में भी प्रवाहित होती हुई हमें सुख और आनन्द की अनुभूति देती है। इसके बहने की ध्वनि हमें किसी चटाई या फूलदान से भी सुनाई पड़ सकती है और इसको मन-ही-मन अनुभव भी कर लेते हैं।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** नदी से अटूट सम्बन्ध का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि नदी घरों में भी चुपचाप बहती रहती है। **2. भाषा**—सरल और प्रवाहपूर्ण खड़ीबोली। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—मानवीकरण।

**( ग ) कभी सुनना .......................................... सुनाई देगी नदी।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि नदी प्रत्येक समय हमारे बीच उपस्थित रहती है।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि यदि आप इस बात से सन्तुष्ट नहीं हैं कि नदी हमारे आपके बीच हमेशा विद्यमान रहती है तो अपनी सन्तुष्टि के लिए, जब मनुष्यों के सभी क्रिया-कलाप बन्द हो जाएँ और समस्त चराचर प्रकृति शान्त रूप में हो; अर्थात् सारा शहर गहरी निद्रा में सो रहा हों; उस समय आप घरों के दरवाजों से कान लगाकर, एकाग्रचित्त होकर नदी की आवाज को सुनने का प्रयास कीजिए। आपको अनुभव होगा कि नदी की प्रवाहित होने वाली मधुर ध्वनि एक मादा मगरमच्छ की दर्दयुक्त कराह जैसी आती प्रतीत होगी। स्पष्ट है कि नदी किसी-न-किसी रूप में सदैव हमारे साथ रहती है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने नदी की निरन्तरता का जीवन्त रूप में वर्णन किया है। **2. भाषा**—सरल और प्रवाहपूर्ण खड़ीबोली। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश और अनुप्रास।

## काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

**1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—**

| शब्द | पर्यायवाची | शब्द | पर्यायवाची |
|---|---|---|---|
| आँख | **नेत्र, दृग** | नदी | **सरिता, तटिनी** |
| अँधेरा | **तम, अन्धकार** | घर | **सदन, गृह** |
| दुनिया | **विश्व, जग** | फूल | **पुष्प, कुसुम** |

**2.** **काव्य-सौन्दर्य**—1. अपनी सभ्यता व संस्कृति के प्रति कवि का प्रेम यहाँ प्रकट हुआ है। **2. भाषा**—सरल व प्रवाहपूर्ण खड़ीबोली। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद। **5. अलंकार**—मानवीकरण।

**3.** ल, च, क की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार।

**4.** शान्त रस।

# 12 अशोक वाजपेयी

**(जन्म : सन् 11941 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (ग) **6.** (ग) **7.** (क) **8.** (क) **9.** (ख) **10.** (क) **11.** (क) **12.** (ख) **13.** (ग) **14.** (क) **15.** (घ) **16.** (क) **17.** (घ) **18.** (क) **19.** (ख) **20.** (क)

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** जंगलों (वृक्षों) प्रकृति के द्वारा दी गई वह देन है जिसका कोई दूसरा विकल्प नहीं है। इनके कारण ही पृथ्वी पर हमारा अस्तित्व है। जहाँ वृक्ष अधिक होंगे, वहाँ साफ व शुद्ध जलवायु होगी। पेड़ों का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व है। वृक्ष हमें वे सब चीजें देते हैं जो हमें जीने के लिए अति आवश्यक होती हैं; जैसे—रहने के लिए घर, खाने के लिए फल, वृक्षों से ही वर्षा होती है। आज वृक्षों की अधिक कटाई होने से वृखों की कमी हो रही है जिसके फलस्वरूप वातावरण में सभी प्रकार का प्रदूषण बढ़ रहा है। इस प्रदूषण से कई गंभीर बीमारियाँ हो रही हैं। वृक्षों की कमी से पृथ्वी का तापमान बएलरहा है; कई स्थानों पर अधिक वर्षा हो रही है, कई स्थानों पर सूखा पड़ रहा है, अनेक जानवरों की प्रजातियाँ विलुप्त हो गई हैं और कुछ विलुप्त होने के कगार पर हैं। इसीलिए हम सभी को वृक्षों की महत्ता को समझकर वृक्षों को बचाने का प्रयास करना

चाहिए। वृक्ष होंगे तो हमें किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं होगी और हमें शुद्ध और स्वच्छ वायु मिलती रहेगी।

**2. भाषा ( शब्द ) की अनन्तता ( अमरता ) पर पाँच वाक्य**

(i) एक बार उत्पन्न होने के बाद भाषा (शब्द) का कभी नाश (क्षय) नहीं होता।

(ii) भाषा का प्रयोग सार्वकालिक है।

(iii) भाषा अजर, अमर है।

(iv) भाषा एक बार अस्तित्व में आने के बाद कभी अतीत नहीं बनती।

(v) समय के साथ भाषा की अभिव्यंजना-शक्ति में वृद्धि होती है क्योंकि उसका नित नए-नए अर्थों में प्रयोग किया जाने लगता है।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**1.** अशोक वाजपेयी का जन्म 16 जनवरी, सन् 1941 में मध्य प्रदेश के दुर्ग (सागर) में हुआ था।

**2.** वाजपेयी जी 'नयी कविता के युग' के कवि हैं।

**3.** वाजपेयी जी ने मध्य प्रदेश में संस्कृति एवं प्रकाशन विभाग में विशेष सचित्र के पद पर कार्य किया।

**4.** अशोक वाजपेयी ने मध्य प्रदेश में 'भारत भवन', 'उस्ताद अलाउद्दीन खाँ' 'संगीत अकादमी', 'धुपद केन्द्र', 'चक्रधर नृत्य केन्द्र' तथा 'मध्य प्रदेश लोक कला परिषद्' आदि संस्थाओं की स्थापना की।

**5.** वाजपेयी जी द्वारा संपादित दो पत्रिकाओं के नाम हैं—1. पहचान 2. पूर्व ग्रह।

**6.** वाजपेयी जी का पहला कविता-संग्रह सन् 1966 ई० में प्रकाशित हुआ।

**7.** वाजपेयी जी को उनकी कृति 'कहीं नहीं वहीं' पर 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार प्राप्त हुआ।

**8.** वाजपेयी जी की दो रचनाओं के नाम हैं—1. शहर अब भी सम्भावना है, 2. थोड़ी-सी जगह।

**9.** **जीवन परिचय**—पूर्ण आधुनिक कवि, आलोचक, सम्पादक और संस्कृतिकर्मी अशोक वाजपेयी का जन्म 16 जनवरी सन् 1941 ई० में मध्य प्रदेश के दुर्ग (सागर) में हुआ था। इन्होंने सागर विश्वविद्यालय से बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा सेंट स्टीवेंस कॉलेज, दिल्ली से अंग्रेजी साहित्य में एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। इन्होंने 'भारतीय प्रशासनिक सेवा' परीक्षा भी उत्तीर्ण की तथा भारत सरकार की प्रशासनिक सेवा के विभिन्न पदों पर कार्य किया है। वाजपेयीजी ने मध्य प्रदेश में भारत भवन, उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी, धुपद केन्द्र, चक्रधर नृत्य केन्द्र तथा मध्य प्रदेश लोक कला परिषद् आदि संस्थाओं की स्थापना करके वर्षों तक उनका संचालन किया। ये महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रथम कुलपति भी रहे हैं।

वाजपेयी जी का रचनात्मक व्यक्तित्व बहुआयामी है। वे जितने सिद्ध सम्पादक और मुखर आलोचक हैं, उतने ही महत्त्वपूर्ण कवि हैं। इनका पहला कविता-संग्रह 'शहर अब भी सम्भावना है' सन् 1966 ई० में प्रकाशित हुआ था।

वाजपेयी जी को सन् 1994 ई० में 'कहीं नहीं वहीं' रचना पर 'साहित्य अकादमी' सम्मान तथा दयावती मोदी 'कवि शिखर' सम्मान मिल चुके हैं।

**भाषा-शैली**—वाजपेयी जी की काव्यभाषा समय सापेक्ष तथा एकान्तिक है। वाक्य रचना नितान्त भौगोलिक और आत्मपरक शब्दावली में गठित है। सहज अनुभूत व्यावहारिक शब्द सामान्य बोलचाल से उठाए गए हैं।

इनकी शैली वर्णनात्मक है, जिसमें शब्द गंधाते हैं, बतियाते हैं और पाठक के साथ चलते-चलते उसके हृदय में पहुँच जाते हैं। आत्मपरक, सम्बोधन शैली, वार्तालाप शैली इनके काव्य की अन्यतम विशेषताएँ हैं।

**रचनाएँ**—अशोक वाजपेयी की उल्लेखनीय कृतियाँ इस प्रकार हैं—

**काव्य-संग्रह**—शहर अब भी सम्भावना है, एक पतंग अनन्त में, अगर इतने से, तत्पुरुष, कहीं नहीं वहीं, बहुरि अकेला, थोड़ी-सी जगह, घास में दुबका आकाश, जो नहीं है, अभी कुछ और, तिनका-तिनका, पुनरपि, दु:ख चिट्ठी-रसा है, कुछ रफू कुछ थिगड़े, समय से अनुरोध, सूर्य तथा गाढ़े अँधेरे में आदि।

## तथ्यपरक एवं काव्य-सांराश पर आधारित प्रश्न

**1.** 'युवा जंगल' कविता से जीवन में दृढ़, आशान्वित व उताहित रहने तथा पेड़ों का संरक्षण करने की प्रेरणा मिलती है।

**2.** 'युवा जंगल' में 'जंगलों के विनाश' की पीड़ा को व्यक्त किया गया है।

**3.** 'युवा जंगल' कवि को अपने अस्तित्व के संरक्षण के लिए बुला रहे हैं।

**4.** फूल विकसित होने (खिल जाने) के कुछ समय पश्चात मुरझाकर डाली से गिर जाता है। उसी के साथ उसके रूप, रस, गन्ध आदि भी समाप्त हो जाते हैं। शब्द एक बार विकसित हो जाने के पश्चात अमर हो जाता है। उसके रूप, रस, गन्ध में किसी प्रकार की कोई कभी नहीं आती है, बल्कि समय के साथ उसकी अभिव्यंजना-शक्ति में वृद्धि ही होती है; क्योंकि उसका नित नए-नए अर्थों में प्रयोग किया जाता है।

**5.** भाषा (शब्द) इतिहास और भूगोल की सीमाओं से परे हैं; क्योंकि वह एक बार अस्तित्व में आने के पश्चात कभी इतिहास (अतीत) नहीं बनती, सदैव वर्तमान रहती है। ऐसे ही देश-जाति की भौगोलिक सीमाएँ उसे अपने बन्धन में नहीं बाँध पाती, वरन् उसका प्रयोग (व्यवहार) अथवा विस्तार अनन्त है, सार्वकालिक है।

**6.** 'भाषा एकमात्र अनंत है' में कवि कहना चाहता है कि संसार की सभी वस्तुएँ और क्रियाएँ क्षणभंगुर हैं; कुछ क्षणों, दिनों अथवा वर्षों तक ही उनका अस्तित्व इस संसार में रहता है। परन्तु भाषा एक बार विकसित हो जाने के बाद अमर हो जाती है। भाषा अजर, अमर और अनन्त है।

**7.** **'युवा जंगल' कविता का मूल भाव**—हरे युवा जंगल को एक प्रेरणा स्रोत के रूप में प्रस्तुत करके जीवन से हताश-निराश मानव में आशा और उत्साह का संचार करना तथा जंगलों के विनाश की पीड़ा काके एक पेड़ के द्वारा व्यक्त करते हुए उनके संरक्षण की आवश्यकता पर बल देना।

**8.** **'भाषा एकमात्र अनंत है' कविता का मूल भाव**—इस सत्य की ओर ध्यान दिलाना कि संसार में सभी वस्तुएँ नाशवान हैं परन्तु भाषा अजर, अमर और अनन्त है।

## पद्यांश व्याख्या

**निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी लिखिए—**

**( क ) एक युवा जंगल ........................................ एक दीप्त रचना।**

**सन्दर्भ**—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठयपुस्तक के '**काव्य-खण्ड**' में संकलित कवि **अशोक वाजपेयी** की कविता '**युवा जंगल**' से उद्धृत है।

**प्रसंग**—इस काव्यांश में कवि ने हरे युवा जंगल को एक प्रेरणा स्रोत के रूप में प्रस्तुत करके जीवन से हताश-निराश मानव में आशा और उत्साह का संचार करने का प्रयत्न किया है।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि एक नया उगा हुआ युवा जंगल उत्साह से झूमता, आकाश को छू लेने को लालायित अपनी हरी टहनीरूपी उँगलियों से मुझे अपनी ओर बुलाता है, शायद मुझे अपने जैसा हरा-भरा जीवन रस से परिपूर्ण बनाने के लिए अथवा अपने अस्तित्व के संरक्षण के लिए उसके आमन्त्रण को पाकर मेरी जीवन रस से रहित सूखी नसों में जीवन के प्रति नवीन आशा और उत्साह का हरा रक्त बहने लगता है जिससे मेरी आँखों में सुखद-सुनहरे भविष्य के स्वप्नों के बिम्ब उभरने लगते हैं। मुझे अपने कन्धों पर अपने उन दायित्वों का भार अनुभव होने लगता है, जिनको जीवन से निराश होने पर मैंने स्वयं से दूर छिटक दिया था। जीवन में निराशा के कठोर सूखे से जड़ हो चुके मेरे होठ की जो हरियालीरूपी हँसी गायब हो गई थी वह आशा और उत्साह के हरे रस को प्राप्त करके सचेतन हुए होठों पर मुस्कान बिखेरती हुई जीवन का नव गीत गाने के लिए उन्हें प्रेरित कर रही है। वास्तव में मैं अब व्यक्ति नहीं रह गया हूँ, वरन् एक हरा-भरा जीवन रस से परिपूर्ण पेड़ बन गया हूँ, जो उत्साहरूपी हरी पत्तियों की आभा से युक्त है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने जंगल को एक प्रेरणास्रोत के रूप में प्रस्तुत किया है। **2.** कवि ने यह भी संकेत किया है कि हम तनों का संरक्षण एक वृक्ष की भावना के साथ ही अच्छी तरह से कर सकते हैं। **3. भाषा**—सरल और प्रतीकात्मक। **4. रस**—शान्त। **5. गुण**—प्रसाद। **6. अलंकार**—रूपक, मानवीकरण।

**( ख ) फूल झरता है ........................................ उसे एक बच्ची।**

**सन्दर्भ**—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठयपुस्तक के '**काव्य-खण्ड**' में संकलित कवि **अशोक वाजपेयी** की कविता '**भाषा एकमात्र अनन्त है**' से उद्धृत हैं।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि भाषा (शब्द) की शक्ति की सामर्थ्य और उसकी शाशवत सत्ता का विवेचन कर रहा है।

**व्याख्या**—फूल विकसित होने अर्थात् खिल जाने के कुछ समय पश्चात मुरझाकर डाली से गिर जाता है। उसी के साथ उसके रूप, रस, गन्ध आदि भी समाप्त हो जाते हैं। इस फूल का सम्पूर्ण अस्तित्व समाप्त हो जाता है। फूल शब्द की भाँति अनन्त, अजर-अमर नहीं है; क्योंकि शब्द एक बार विकसित हो जाने के पश्चात अमर हो जाता है। उसके रूप, रस, गन्ध में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आती है, बलिक समय के साथ उसकी अभिव्यंजना-शक्ति में वृद्धि ही होती है; क्योंकि उसका नित नए-नए अर्थों में प्रयोग किया जाने लगता है।

कवि कहता है कि संसार की सभी वस्तुएँ और क्रियाएँ क्षणभंगुर हैं; कुछ पलों, दिनों अथवा

वर्षों तक ही उनका अस्तित्व इस संसार में रहता है। कुछ समय पश्चात वे सभी पूर्णत: समाप्त हो जाती हैं जैसे—यदि आज कोई बच्चा गेंद उछालता है, तो उसकी वह क्रिया अधिकतम एक-दो शताब्दी तक ही अस्तित्व में रह सकती है। शायद उसकी वह क्रिया तब तक स्मरण में रहकर अस्तित्व में रह सकती है, जब तक वह बच्चा इस संसार में जीवित रहे अथवा उस क्रिया को देखने वाले उसके माता-पिता आदि परिजन जीवित रहें। अधिक-से-अधिक यह हो सकता है कि गेंद उछालने वाला वह बच्चा अपनी उस क्रिया की स्मृति को अपनी आने वाली पीढ़ी की किसी बच्ची को वह बता दे। इस प्रकार एक बालक के गेंद उछालने की क्रिया को एक-दो शताब्दी बाद तक ही किसी बच्ची (व्यक्ति) द्वारा देखा, समझा अथवा जाना जा सकता है। वह क्रिया सदैव के लिए लोगों द्वारा न व्यवहार में लाई जाएगी और न ही समझी और जानी जाएगी।

**काव्य-सौन्दर्य**— 1. शब्द अर्थात् ध्वनि अमर है, एक बार उत्पन्न होने के बाद उसका कभी क्षय (नाश) नहीं होता। **2.** कविता में फूल बच्चा, गेंद,बच्ची का प्रयोग संसार की विभिन्न वस्तुओं ओर क्रियाओं की जीवनावधि को दर्शाने के लिए किया गया है। **3. भाषा**—सरल और प्रवाहपूर्ण खड़ीबोली। **4. रस**—शान्त। **5. गुण**—प्रसाद।

**(ग) न बच्चा रहेगा .......................................... अनन्त है।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि सब कुद समाप्त होने के बाद भी भाषा की विद्यमानता रहेगी, क्योंकि भाषा अनन्त है।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि न बच्चा रहेगा, न वृद्ध; क्योंकि बच्चा एक समयान्तरण पर वृद्ध हो जाएगा और वृद्ध जीवन छोड़ चुका होगा। न गेंद रहेगी, न ही फूल और न ही दालानु, क्योंकि ये सभी वस्तुएँ नाशवान हैं। एक-न-एक दिन सभी को समाप्त हो ही जाता है। लेकिन इन सबके समाप्त हो जाने के बाद भी शब्द बने रहेंगे क्योंकि भाषा ही वह एक भाग है और भाषा ही एकमात्र अनन्त है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने केवल भाषा की ही सत्ता को स्वीकार किया है। **2. भाषा**—सरल और प्रवाहपूर्ण खड़ीबोली। **3. रस**—शान्त। **4. गुण**—प्रसाद।

## काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

**1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—**

**काव्य-सौन्दर्य—1.** भाषा की विशिष्टता का वर्णन है कि भाषा अनन्त है। **2.** सदियों पूर्व की घटनाओं को हमारे समक्ष उपस्थित करने का एकमात्र साधन भाषा है। **3. भाषा**—सरल और प्रवाहपूर्ण खड़ीबोली। **4. रस**—शान्त। **5. गुण**—प्रसाद।

**2.** अनुप्रास अलंकार।

**3. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—**

| **शब्द** | **पर्यायवाची शब्द** | आकाश | **नभ, आसमान** |
|---|---|---|---|
| आँख | **चक्षु, लोचन** | पेड़ | **वृक्ष, तरु** |
| फूल | **पुष्प, कुसुम** | जंगल | **कानन, अरण्य** |

**4. निम्नलिखित शब्दों के तद्‌भव शब्द लिखिए—**

| **तद्‌भव शब्द** | **तत्सम शब्द** | **तद्‌भव शब्द** | **तत्सम शब्द** |
|---|---|---|---|
| होंठ | **ओष्ठ** | फूल | **पुष्प** |
| बच्चा | **वत्स** | गेंद | **कन्दुक** |
| बूढ़ा | **वृद्ध** | | |

**5.** शान्त रस।

# 13 श्यामनारायण पाण्डेय

**(जन्म : सन् 1907 ई० - मृत्यु : सन् 1991 ई०)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (घ) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (क) **9.** (ग) **10.** (क) **11.** (ख) **12.** (क) **13.** (क) **14.** (ख) **15.** (ख) **16.** (ख) **17.** (घ) **18.** (क)।

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** महाराणा प्रताप शत्रु की सेना को धराशायी करने के लिए स्वयं दौड़-दौड़ कर युद्ध करते थे। कभी वे अपने घोड़े चेतक पर बैठकर शत्रुओं का संहार करते। महाराणा की तलवार जिधर भी बढ़ती, उधर ही शत्रु भय से काँप उठता। महाराणा अपने भाले की नोक के तीव्र प्रहार से शत्रुओं का मर्दन करते थे।

**2.** वीर रस से ओत-प्रोत दो कवियों की रचनाएँ हैं—1. पुष्प की अभिलाषा—माखनलाल चतुर्वेदी 2. झाँसी की रानी की समाधि पर—सुभद्राकुमारी चौहान।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**1.** श्यामनारायण पाण्डेय का जन्म सन् 1907 ई० में आजमगढ़ जिले के डुमराव नामक गाँव में हुआ था।

**2.** 'हल्दीघाटी' कृति पर पाण्डेय जी को 'देव पुरस्कार' मिला था।

**3.** पाण्डेय जी ने 'कुमार सम्भव' नामक ग्रन्थ का हिन्दी में अनुवाद किया।

**4.** पाण्डेय जी की कविता में स्वतन्त्रता और राट्रीयता के भावों की प्रधानता है।

**5.** श्यामनारायण पाण्डेय जी की दो रचनाओं के नाम हैं—1. जौहर 2. माधव।

**6.** **जीवन परिचय**—श्यामनारायण पाण्डेय जी का जन्म सन् 1907 ई० में आजमगढ़ जिले के डुमराव नामक ग्राम में हुआ था। उनके पिता पं० रामाज्ञा पाण्डेय हिन्दी और संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। वे अपने पुत्र को बचपन में ही असहाय छोड़कर इस नश्वर संसार से चल बसे। पिता की मृत्यु के बाद पाण्डेय जी का लालन-पालन उनकी माता जी ने किया। पाण्डेय जी की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में हुई। उन्होंने मिडिल परीक्षा उर्दू और हिन्दी में उत्तीर्ण की। इसके

पश्चात् पाण्डेय जी के बड़े भाई पं० विष्णुदत्त पाण्डेय ने उनकी अध्ययनशीलता को देखते हुए आगे की शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया उसी के परिणामस्वरूप उन्होंने काशी के राजकीय संस्कृत महाविद्यालय से साहित्य-शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् उन्होंने तीन वर्ष तक संस्कृत महाविद्यालय में साहित्य अन्वेषक के रूप में कार्य किया। वे बनारस में सारंग माधव संस्कृत विद्यालय के प्रधानाध्यापक रहे।

पाण्डेय जी बचपन से ही परिश्रमी और अध्ययनशील रहे। वे अपने जीवन के स्वयं निर्माता थे। उन्हें सांस्कृतिक संस्कार बचपन से ही परिवार से प्राप्त हुए। उनका परिवार धर्म एवं संस्कृति के प्रति आस्थावान था। धार्मिक एवं सांस्कृतिक पारिवारिक परिवेश ने उनके अन्त:करण में भक्ति और राष्ट्रीयता की गंगा प्रवाहित कर दी। उसी का फल है कि काव्य-क्षेत्र में प्रवेश करते समय उनके रोम-रोम में अपनी संस्कृति के प्रति अनुराग था, उनकी नस-नस में अपने धर्म की सुरभि थी और उनका अंग-अंग स्वदेश के अभिमान से दीप्त था। पाण्डेय जी ने महाकवि अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' से काव्य-दीक्षा ली। उन्हें अपने 'हल्दीघाटी' महाकाव्य की रचना में हरिऔध जी से पर्याप्त प्रेरणा मिली। इस ग्रन्थ को 'देव पुरस्कार' प्राप्त हुआ। पं० मदनमोहन मालवीय के तेजस्वी व्यक्तित्व से पाण्डेय जी बहुत प्रभावित थे। 'जौहर' महाकाव्य की रचना के लिए पाण्डेय जी को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रेरित किया था। 'शिवाजी' महाकाव्य लिखने की प्रेरणा उन्हें गुरु माधवराव सदा शिवराय से प्राप्त हुई। पाण्डेय जी की काव्य कृतियों में भारत के प्राचीन गौरव के प्रति आस्था और राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है। उनकी काव्य रचनाओं में वीर रस की ऐसी उग्र भावनाएँ भरी हुई हैं कि उन्हें पढ़कर पाठकों की भुजाएँ फड़क उठती हैं। सन् 1991 में वीर रस के इस प्रसिद्ध कवि ने अपना नश्वर शरीर त्याग दिया।

**रचनाएँ**—पाण्डेय जी की प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

**महाकाव्य**—हल्दीघाटी, जौहर।

**खण्डकाव्य**—त्रेता के दो वीर, तुमुल, गौरावध, जय हनुमान।

**मुक्तक काव्य**—माधव, रिमझिम, आँसू के कण, आरती।

**साहित्यिक अवदान**—श्यामनारायण पाण्डेय जी ने अपने काव्यों में आर्य-संस्कृति का गौरव ज्ञान दिया। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से कर्तव्यपरायणता और कार्यशीलता का सन्देश दिया। उन्होंने ओज, शौर्य और देशभक्ति की ऐसी काव्य धारा का निर्माण किया जो अनन्त काल तक हिन्दी-साहित्य में अमूल्य धरोहर के रूप में सुरक्षित रहेगी।

**भाषा-शैली**—श्यामनारायण पाण्डेय की भाषा शुद्ध साहित्यिक परिष्कृत खड़ीबोली है, जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ-साथ अरबी भाषा के शब्द भी सहजता से ग्रहण किए गए हैं। सामान्यत: इनके काव्य में भाषा के व्यावहारिक और संस्कृत-गर्भित दो मुख्य रूप दृष्टिगोचर होते हैं। भाषा के संस्कृतनिष्ठ होने पर भी वह कहीं भी क्लिष्ट नहीं है। प्रसंगानुकूल मुहावरों का प्रयोग इनकी भाषा को चुटीला बनाता है। विषय, परिस्थिति व कालानुसार इनकी भाषा परिवर्तित होती रहती है। इनकी भाषा में व्याकरण की त्रुटियाँ प्राय: कम ही दिखती हैं। हाँ, कहीं-कहीं ग्रामीण पूर्वी प्रयोग अवश्य खटकते हैं, मगर ऐसे स्थान बहुत कम ही हैं।

पाण्डेयजी ने मुक्तक और प्रबन्ध-काव्य दोनों काव्य-शैलियों को अपनाया है।

## तथ्यपरक एवं काव्य-सांराश पर आधारित प्रश्न

1. राणा प्रताप का सामर्थ्य उसकी सेना के सैनिकों को ऊर्जा प्रदान करता था।
2. मेवाड़ केसरी मानसिंह के रक्त का प्यासा था।
3. राणा प्रताप की तलवार की तुलना रण चण्ड़ी की चीभ से की गई है।
4. राणा ने 'मुगलों का अभिमान' मानसिंह के लिए प्रयोग किया।
5. राणा प्रताप अपने घोड़े 'चेतक' पर सवार होकर अपनी सेना की रखवाली करते हुए इस प्रकार का रण कर रहे थे जैसे मानो अपने साथ मृत्यु का प्रलयकारी भीषण रूप लिए साक्षात् महाकाल युद्धभूमि में आ गए हों। उनको उससे इसलिए संतोष नहीं था क्योंकि वे विश्वासघाती मानसिंह को युद्ध करने के लिए तलाश रहे थे ताकि वे उसका संहार करके अपनी जीत सुनिश्चित कर सकें।
6. प्रस्तुत 'हल्दीघाटी' कविता में वीर रस की प्रधानता है और उसका स्थायी भाव 'उत्साह' है।
7. **'हल्दीघाटी' का मूलभाव**—हल्दीघाटी का मूलभाव महाराणा प्रताप की वीरता, पराक्रम का वर्णन करना और महाराणा प्रताप के माध्यम से नवयुवकों को यह प्रेरणा देना है कि देश की आन और मान के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करने से भी पीछे नहीं हटना चाहिए।

## पद्यांश व्याख्या

**निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी लिखिए—**

**( क ) मेवाड़ केसरी ........................................ प्यासा था।**

**सन्दर्भ**—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठयपुस्तक के **'काव्य-खण्ड'** में संकलित **श्यामनारायण पाण्डेय** की कविता **'हल्दीघाटी'** से उद्धृत है।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में महाराणा प्रताप और उनके घोड़े चेतक की वीरता, अकबर के प्रधान सेनापति मानसिंह के प्रति महाराणा की क्रोधाग्नि की प्रबलता और युद्ध में उनके भयानक रूप का रोमांचकारी चित्रण किया गया है।

**व्याख्या**—वीर रस के सुविख्यात कवि श्यामनारायण पाण्डेय का कथन है कि महाराणा प्रताप और मुगल सम्राट के बीच 1576 ई० में हुआ हल्दीघाटी का ऐतिहासिक युद्ध अत्यन्त भीषण और भयावह था। इस युद्ध में मेवाड़ राज्य का वह सिंह, अर्थात् महाराणा प्रताप युद्ध के विकराल दृश्यों को कहीं दूरस्थ एवं सुरक्षित स्थान से नहीं देख रहे थे। वे इस युद्ध को केवल एक तमाशा या खेल समझकर एक तमाशबीन की तरह ही इसका अवलोकन नहीं कर रहे थे, वरन् वे स्वयं भी पूरे जोश और उत्साह के साथ युद्ध में अपना अपूर्व शौर्य दर्शा रहे थे। अपने सैनिकों में उत्साह एवं वीरता का संचार करने के उद्देश्य से तथा शत्रु की सेना को धराशायी करने हेतु वे स्वयं भी दौड़-दौड़कर युद्ध कर रहे थे। इस युद्ध में भी उनका सर्वाधिक आक्रोश न केवल अकबर के प्रति था, वरन् अकबर के प्रधान सेनापति मानसिंह के प्रति भी था। मानसिंह ने राजपूत राजाओं के साथ विश्वासघात कर जघन्य अपराध किया था। एक समय वह स्वयं अम्बर (जयपुर) का राजा था, परन्तु उसने मुगल सम्राट अकबर की अधीनता स्वीकार करके अकबर को प्रसन्न कर लिया और राजपूतों के विरुद्ध अकबर का साथ देना प्रारम्भ कर दिया। उसी ने महाराणा प्रताप से अकबर के साथ सन्धि करने के लिए कहा और

महाराणा द्वारा सन्धि को अस्वीकार किए जाने के उपरान्त अकबर को महाराणा प्रताप को परास्त करने के लिए उत्साहित किया। इस प्रकार राजपूत जाति का कलंक और राष्ट्रद्रोही मानसिंह महाराणा की आँखों में खटक रहा था और अब जबकि वह हल्दीघाटी के युद्ध में स्वयं उपस्थित था क्रोध से लाल महाराणा की दृष्टि उसे सर्वत्र खोज रही थी। वे उसके खून के प्यासे हो रहे थे, उसकी जान के दुश्मन बने हुए थे।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ कवि ने युद्ध में महाराणा प्रताप के समीप शौर्य से परिचित कराया है। **2.** महाराणा प्रताप का अशव 'चेतक' कितना वेगवान, स्वामिभक्त और बहादुर था, यह दर्शाकर कवि ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि एक अश्व होकर भी 'चेतक' क्यों जग-प्रसिद्ध हुआ। **3. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **4. रस**—वीर। **5. गुण**—ओज। **6. अलंकार**—रूपक तथा उपमा।

**( ख ) क्षण भर में ........................................ नर-मुण्डों से।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने राजा प्रताप के शौर्य से युद्धभूमि में फैले हाहाकार का वर्णन किया है।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि राणा प्रताप के हमले से शत्रुओं के धड़ हाथियों की सूँड़ों के समान गिर रहे थे। हाथियों और घोड़ों की भयंकर विकलता के कारण युद्धभूमि मानवों के कटे हुए सिरों से पढ़ी हुई दिखाई पड़ रही थी।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने राणा प्रताप के पराक्रम का बड़ा ही ओजस्वी वर्णन किया है। **2. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **3. रस**—वीर। **4. गुण**—ओज। **5. अलंकार**—अतिशयोक्ति।

**( ग ) ऐसा रण राणा ........................................ था रोष नहीं।।**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने राणा प्रताप द्वारा मुगल सेना के छक्के छुड़ाने का वर्णन किया है।

**व्याख्या**—कवि राणा प्रताप के रण कौशल के बारे में कहता है कि राणा इस प्रकार भयानक युद्ध करते थे कि वे कहीं रुकने का नाम ही नहीं लेते थे। वे युद्धभूमि में जैसे-जैसे आगे बढ़ते थे, वैसे-वैसे उनका और भी युद्ध का उत्साह और क्रोध बढ़ता जाता था।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** कवि ने राणा प्रताप के शौर्य का गुणगान किया है। **2. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **3. रस**—वीर। **4. गुण**—ओज। **5. अलंकार**—अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश।।

**( घ ) कहता था लड़ता ........................................ अभिमान कहाँ?**

**सन्दर्भ**—उपरोक्त।

**प्रसंग**—इन पंक्तियों में कवि ने मुगल सेनापति मानसिंह के प्रति महाराणा प्रताप के रोष का बखान किया है।

**व्याख्या**—कवि कहता है कि युद्ध करते हुए महाराणा प्रताप बस यही कह रहे थे कि मुगल सेना का सेनापति वह मानसिंह कहाँ है, जिसने राजपूतों के साथ विश्वासघात किया है, जो अकबर से मिलकर राजपूतों के सर्वनाश की कामना लिए बचता फिर रहा है। मुझे शीघ्रातिशीघ्र और प्रत्येक दशा में उस मानसिंह की तलाश हे, जिससे मैं उसका संहार करके, उसके रक्त में स्नान कर लूँ। मुझे प्रत्येक स्थिति में वह विश्वासघाती मानसिंह चाहिए, जिसका अन्त करते ही हमारी जीत सुनिश्चित है।

**काव्य-सौन्दर्य**— **1.** यहाँ विश्वासघाती मानसिंह के प्रति महाराणा प्रताप की व्यग्रता और रोषपूर्ण मन:स्थिति का प्रभावपूर्ण चित्रण किया गया है। **2. भाषा**—साहित्यिक हिन्दी। **3. रस**—वीर। **4. गुण**—ओज। **5. अलंकार**—उपमा।

## काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

**1. काव्य-सौन्दर्य**—(क) उपमा अलंकार (ख) अतिश्योक्ति अलंकार।

**2. मुहावरा वाक्य प्रयोग**

1. टूट पड़ना — चोर को देखते ही भीड़ उस पर टूट पड़ी।
2. रक्त का प्यासा होना — रमेश चुनाव हारने के बाद से ही विमल के रक्त का प्यासा हो गया है।
3. जवानी को सफल करना — विराट ने सेना में भर्ती होकर अपनी जवानी को सफल कर दिया।
4. कटाक्ष करना — विमला की सास हर समय उस पर कटाक्ष करती रहती है।

# संस्कृत-खण्ड

## 1 वाराणसी
### (बनारस)

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ग) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (घ) **6.** (ग) **7.** (घ) **8.** (क) **9.** (ख) **10.** (ग)

### उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** **वाराणसी नगरी का वर्णन**—वाराणसी गंगा नदी के तट पर स्थित प्रसिद्ध नगरी है। वाराणसी में गंग्रा के घाटों की घुमावदार पंक्ति चाँदनी रात में बहुत सुंदर लगती है। असंख्य पर्यटक यहाँ आकर इसके घाटों की प्रशंसा करते हैं। यहाँ अनेक विद्वान् संस्कृत साहित्य के अध्ययन और अध्यापन में लगे हुए है। यहाँ पर भारतीय और विदेशी सभी देववाणी (संस्कृत) के अध्ययन के लिए यहाँ आते हैं और नि:शुल्क विद्या ग्रहण करते हैं। यहाँ पर हिन्दू विश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय और काशी विद्यापीठ तीन विश्वविद्यालय है। मुगल युवराज दाराशिकोह ने यहाँ आकर भारतीय दर्शन शास्त्रों का अध्ययन किया था। उसी ने उपनिषदों का पारसी भाषा में अनुवाद कराया।

यह नगरी विभिन्न धर्मों की संगमस्थली है। महात्मा बुद्ध, तीर्थकर पार्श्वनाथ, शंकराचार्य, कबीर, तुलसीदास और अन्य बहुत से महात्माओं ने यहाँ आकर अपने विचारों का प्रसार किया। यह नगरी दर्शन साहित्य, धर्म और विभिन्न कलाओं के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। यहाँ की रेशमी साड़ियाँ और पत्थर की मूर्तियाँ विश्व में प्रसिद्ध है। काशी में मरना मंगलकारी माना जाता है। काशी अर्थात् वाराणसी की महिमा का वर्णन कवियों ने भी किया है।

**2.** **वाराणसी पर चार वाक्य संस्कृत में निम्नलिखित है—**

1. वाराणसी गङ्गाया: कूले स्थिता अस्ति।
2. एषा नगरी भारतीय संस्कृते: संस्कृतभाषाश्च केन्द्रस्थलम् अस्ति।
3. वाराणस्यां प्राचीनकालादेव गेहे–गेहे विद्याया: दिव्यं ज्योति: द्योतते।
4. अत्रत्या: कौशेयशाटिका: देशे देशे सर्वत्र स्पृह्यन्ते।

**3.** विद्यार्थी स्वयं करें।

**4.** महात्मा बुद्ध, तीर्थकर पार्श्वनाथ, शंकराचार्य, कबीर, गोस्वामी तुलसीदास और बहुत से महात्माओं ने वाराणसी में आकर अपने विचारों का प्रसार किया।

**5.** वाराणसी में तीन विश्वविद्यालय हैं। उनके नाम निम्नलिखित हैं—1. हिन्दू विश्वविद्यालय, 2. संस्कृत विश्वविद्यालय 3. काशी विद्यापीठ।

## पाठ पर आधारित प्रश्न

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—**

**उत्तरम्—**

(क) वाराणसी नगरी गङ्गाया: नद्या: कूले स्थिता।

**अथवा**

वाराणसी नगरी गङ्गाया: नद्या: कूले स्थित अस्ति।

(ख) वाराणस्यां हिन्दूविश्वविद्यालय:, संस्कृत विश्वविद्यालय:, काशीविद्यापीठम् इत्येते त्रय: विश्वविद्यालया: सन्ति।

**अथवा**

वाराणस्यां हिन्दूविश्वविद्यालय:, संस्कृत विश्वविद्यालय:, काशीविद्यापीठम् त्रय: विश्वविद्यालया: सन्ति।

(ग) दाराशिकोह: वाराणस्यां आगत्य भारतीयशास्त्राणम् अध्ययनम् अकरोत्।

(घ) वाराणसी नगरी विविधानां कलानां शिल्पानाञ्च कृते लोके विश्रुता अस्ति।

(ङ) वैदेशिका: गीर्वाणवाण्या: अध्ययनाम अत्र आगच्छन्ति निशुल्कं च विद्यां गृह्णन्ति।

(च) वाराणसीनगर्या: घट्टानाञ्च शोभां अवलोक्य वैदेशिका: पर्यटका: वाराणसीं बहु प्रशंसन्ति।

(छ) वाराणसी संस्कृतभाषाया: केन्द्रस्थलम् अस्ति।

**अथवा**

वाराणसी भारतीय संस्कृते: संस्कृतभाषायाश्च केन्द्रस्थलम् अस्ति।

(ज) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय: वाणस्यां नगर्यां विद्यते।

(झ) वाराणसी नगरी विविध धर्माणां सङ्गमस्थली अस्ति।

**अथवा**

वाराणसी नगरी विविधधर्माणां सङ्गमस्थली अस्ति।

(ञ) संस्कृतविश्वविद्यालय: वाराणस्यां नगर्यां विद्यते।

(ट) वाराणसी प्रस्तरमूर्तय: प्रसिद्धा।

(ठ) वाराणसीनगर्यां मरणं मङ्गलं भवति।

(ड) वाराणस्या: कौशेयशारिका: प्रस्तरमर्तयश्च इति वस्तूनि प्रसिद्धानि सन्ति।

(ढ) दाराशिकोहेन उपनिषदाम् अनुवाद: पारसी भाषायां कारित:।

(ण) वाराणस्यां गेहे-गेहे विद्याया: दिव्या, ज्योति: द्योतते।

(त) वैदशिका: पर्यटका: घटटानां शोभाम् अवलोक्य वाराणसीं प्रशंसन्ति।

## अनुवादात्मक प्रश्न

**1. निम्नलिखित अवतरणों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—**

**उत्तर—**

**( क ) वाराणस्यां ......................................... विद्यां गृह्णन्ति।**

**अनुवाद**—वाराणसी में प्राचीन काल से ही घर-घर में विदया की अलौकिक ज्योति प्रकाशित होती है। आज भी यहाँ संस्कृत वाणी की धारा निरंतर होती है और लोगों के ज्ञान को बढ़ाती है। यहाँ अनेक आचार्य, उच्चकोटि के विद्वान वैदिक साहित्य के अध्ययन और अध्यापन में इस समय भी संलग्न रहते हैं। न केवल भारतीय अपितु विदेशी भी देववाणी (संस्कृत) के अध्ययन के लिए यहाँ आते हैं और नि:शुल्क विद्या ग्रहण करते हैं।

**( ख ) एषा नगरी भारतीय .......................................... कारित:।**

**अनुवाद**—यह नगरी भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा की केंद्रस्थली है। यहीं से संस्कृत साहित्य और संस्कृति का प्रकाश (ज्ञान) सभी जगह फैला है। मुगल युवराज दाराशिकोह ने यहाँ आकर भारतीय दर्शन शास्त्रों का अध्ययन किया। वह उनके ज्ञान से ऐसा प्रभावित हुआ कि उसने उपनिषदों का अनुवाद फारसी भाषा में कराया।

**( ग ) इयं नगरी .......................................... सर्वत्र स्पृह्यते।**

**अनुवाद**—यह नगरी विविध धर्मों की संगमस्थली है। महात्मा बुद्ध, तीर्थंकर पार्श्वनाथ, शंकराचार्य, कबीर, गोस्वामी, तुलसीदास और अन्य बहुत-से महात्माओं ने यहाँ आकर अपने विचारों को फैलाया। न केवल दर्शन, साहित्य, धर्म में अपितु कला के क्षेत्र में भी यह नगरी विविध कलाओं और शिल्पकलाओं के लिए संसार में प्रसिद्ध है। यहाँ रेशमी साड़ियाँ देश-विदेश में सब जगह पसंद की जाती हैं।

**( घ ) मरणं मङ्गलं .......................................... केन मीयते।।**

**अनुवाद**—जहाँ पर मरना कल्याणकारी समझा जाता है, जहाँ (शरीर पर) भ्रस्म धारण करना आभूषण हैं, जहाँ कोपीन (लंगोटी ही) रेशमी वस्त्र है, वह काशी किसके द्वारा मापी जा सकती है। अर्थात् उसकी समता किससे की जा सकती है? अर्थात् किसी से भी नहीं।

**2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) वाराणसी गङ्गाया: कूले स्थिता प्राचीना नगरी अस्ति।

(ख) अत्ररया: कौशेयशाटिका: विश्वप्रसिद्धा:।

(ग) एषा नगरी प्राचीनकालादेव संस्कृतभाषाया: केन्द्रस्थलम् अस्ति।

(घ) अत्र वैदेशिका: अपि संस्कृतभाषाया: अध्ययनाय अत्र आगच्छन्ति।

(ङ) दाराशिकोह: अत्रागत्य संस्कृतभाषायाम् अध्ययनम् अकरोत्।

(च) स: गृहम् आगच्छत्।

(छ) अभ्यासेन विद्या वर्धते।

## व्याकरण संबंधी प्रश्न

**1. निम्नलिखित क्रिया-रूपों में धातु, लकार, वचन तथा पुरुष बताइए—**

| शब्द: | धातु: | लकार: | वचनम् | पुरुष: |
|---|---|---|---|---|

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अकरोत् | **कृ** | **लङ्** | **एकवचनम्** | **प्रथमः** |
| इयम् | **'इदम्'** | **शब्द, प्रथमा** | **विभक्ति** | **एकवचन** |
| देशेभ्य: | **देश शब्द** | **चतुर्थी, पञ्चमी** | **विभक्ति** | **बहुवचन** |
| स्वीयान | **स्वीय शब्द** | **द्वितीया** | **विभक्ति** | **बहुवचन** |
| आयान्ति | **उपसर्ग या लट्** | **बहवुचनम्** | **प्रथमः** | **पुरुषः** |
| वर्द्धयति | **वर्ध् लट्** | **एकवचनम्** | **प्रथमः** | **पुरुषः** |

**2. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त विभक्ति एवं वचन लिखिए—**

| **शब्द** | **विभक्ति** | **वचन** |
|---|---|---|
| देशेभ्य: | **चतुर्थी-पञ्चमी** | **बहुवचनम्** |
| स्नानेन | **तृतीया** | **एकवचनम्** |
| कूले | **सप्तमी** | **एकवचनम्** |
| विचारान् | **द्वितीया** | **बहवचनम्** |
| कविभि: | **तृतीया** | **बहवचनम्** |
| अध्ययनाय | **चतुर्थी** | **एकवचनम्** |

**3. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए और संधि का नाम लिखिए—**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्राचीन + कालात् + एव् | — | **प्राचीन कालादेव,** | **व्यंजन सन्धि** |
| वलय + आकृति: | — | **वलयाकृतिः, स्वर** | **सन्धि (दीर्घ)** |
| अत्र + आगत्य | — | **अत्रागत्म, स्वर** | **सन्धि (दीर्घ)** |
| विभूति + च | — | **विभूतिश्च** | **विसर्ग सन्धि** |
| इति + एते | — | **इत्येते,** | **यण् सन्धि** |

# 2 अन्योक्तिविलासः
## (अन्योक्ति का सौन्दर्य)

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (क) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (ख)

### उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** विद्यार्थी स्वयं करें।

**2.** अन्योक्ति अलंकार की परिभाषा तथा उदाहरण—जब किसी उक्ति में सामर्थ्य के कारण कथित-वस्तु के माध्यम से किसी अन्य को कोई उपदेश, शिक्षा अथवा संदेश दिया जाता है तो

उसे अन्योक्ति अलंकार कहते हैं; जैसे—पाँचवे श्लोक में सोने और गुंजा के माध्यम से गुणवान् स्वाभिमानी व्यक्ति की मानसिक पीड़ा को व्यक्त किया गया है, जो उसको नीच व्यक्ति से अपनी तुलना करने पर होती है।

**3.** विद्‌यार्थी स्वयं करें।

**4.** विद्‌यार्थी स्वयं करें।

## पाठ पर आधारित प्रश्न

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—**

(क) कूप: नितरां नीच: अस्ति, अत: स: दु:खम् अनुभवति।

(ख) जना: सुवर्णं गुञ्जया सह तोलयन्ति इति सुवर्णस्य मुख दु:खम् अस्ति।

(ग) कोशगत: भ्रमर: अचिन्तयत् रात्रि: गमिष्यति, सुप्रभातं भविष्यति, सूर्यम् उदेष्मति कमलं विकसति।

(घ) भ्रमरे चिन्तयति गज: नलिनीम् उज्जहार।

**अथवा**

गज: नलिनीम् उज्जहार।

(ङ) कवि: हंसं नीर-क्षीर:-विभागे आलस्यं न कुर्तं बोधयति।

(च) अत्यन्तसरसहृदयो यत: परेषां गुण ग्रहीतासि।

(छ) कूप: अत: न दु:खी न भवेत् यतोहि स: परेषां गुणान् गृह्णाति।

(ज) नीर-क्षीर-विषये नीर-क्षीर-विवेकम् एवं हंसस्य विशेषता अस्ति।

(झ) कवि: कोकिलं बोधयति यत् वसन्तकालं यावत् कोऽपि रसाल: न समुल्लसति तावत् करीलविटपेषु एव सन्तोषं कर्त्तव्यम्।

**अथवा**

कवि: कोकिलं बोधयति यत् वसन्तकालं यावत् को—पि रसाल: न समुल्लसति तावत् करीलविटपेषु एव सन्तोषं कर्त्तव्यम्।

(ञ) कवि: चातकम् उपदिशति (शिक्षयति) यत् स: सर्वेषां पुरत: दीनं वच: न ब्रूयात्।

(ट) गगने सर्वे नैतादृशा: अम्भोदा: वसन्ति। केचिद् वसुधां वृष्टिभि: अङ्गियन्तिं केचिद्द वृथा गर्जन्ति।

## अनुवादात्मक प्रश्न

**1. निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए–**

**(क) नितरां नीचो-स्मीति ......................................... गुणग्रहीतासि।।**

**अनुवाद**—हे कुएँ! (मैं) अत्यंत नीचा (गहरा) हूँ, इस प्रकार कभी भी दु:ख मत करो क्योंकि (तुम) अत्यंत सरस हृदय वाले (जलयुक्त) और दूसरों के गुणों (रस्सियों) को ग्रहण करने वाले हो।

**(ख) नीर-क्षीर-विवेके ......................................... पालयिष्यति।।**

**अनुवाद**—हे हँस! यदि तुम ही दूध और पानी को अलग करने में आलस्य करोगे तो एक संसार में दूसरा कौन अपने कुल की मर्मादा का पालन करेगा।

**( ग ) कोकिल! ........................................ समुल्लसति।।**

**अनुवाद**—हे कोयल! तुम तब तक अपने नीरस दिनों को नरील के पेड़ों पर बिता लो, जब तक भौंरों की पंक्ति से युक्त कोई आम का पेड़ विकसित नहीं होता है अर्थात् सुशोभिज होता है।

**( घ ) रे रे चातक! ........................................ दीनं वचः।।**

**अनुवाद**—हे मित्र चातक! तुम क्षण-भर सावधान चित्त होकर मेरी बात सुनो। आकाश में बहुत-से बादल रहते हैं, किंतु सभी ऐसे (उदार) नहीं हैं। उनमें से कुछ ही पृथ्वी को वर्षा से भिगोते हैं और कुछ व्यर्थ में गरजते हैं। तुम जिस-जिस बादल को (आकाश) में देखते हो, उस-उसके सामने अपने दीनतापूर्ण वचन मत कहो।

**( ङ ) न वै ........................................ तोलयन्ति।।**

**अनुवाद**—मैं (स्वर्ण) न पीटने से, न आग में तपाने से और न बेचने से दु:खी हूँ। मुझे तो बस एक ही मुख्य दु:ख है कि लोग मुझे श्त्री (गुञ्जा) से तौलते हैं।

**( च ) रात्रिर्गमिष्यति ........................................ गजः उज्जहार।।**

**अनुवाद**—(कमलिनी में बंद भौंरा सोचता है कि) रात व्यतीत होगी। सुंदर-प्रभात होगा। सूर्य निकलेगा। कमलों का समूह खिलेगा। इस प्रकार कमलपुर में बैठे हुए भौंरे के ऐसा सोचते-सोचते हाय! बड़ा दु:ख है कि हाथी ने उसी कमलिनी को उखाड़ लिया।

**2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) चातक! सर्वेषां पुरतो भा ब्रूहि दीनं वच:।

(ख) रात्रि: गमिष्यति, भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कआलि:।

(ग) हे हंस: नीर-क्षीर-विवेके आलस्यं मत कुरु।

(घ) जगते क: कुलव्रतं पालमिष्यति।

(ङ) वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।

(च) विनय: मनुष्याणाम् आभूषणम् अस्ति।

(छ) त्वम् कुत्र गमिष्यसि?

## व्याकरण संबंधी प्रश्न

**1. निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए—**

| | | |
|---|---|---|
| नीचोऽस्मीति | — | **नीचः + अस्मि + इति** |
| गुणग्रहीवसि | — | **गुणग्रहीता + असि** |
| अस्मीति | — | **अस्मि + इति** |
| अधुनान्य: | — | **अधुना + अन्यः** |
| नौतादृशा: | — | **न + एतादृशाः** |

| | | |
|---|---|---|
| तदेकम् | — | **तत् + एकम्** |
| विश्वस्मिन्नधुनान्य: | — | **विश्व + अस्मिन् + अधुना + अन्यः** |

**2. निम्नलिखित धातुओं के लट् लकार में रूप लिखिए—**

**(i) दृश–पुरुषः**

| | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथम: | पश्यति | पश्यत: | पश्यन्ति |
| मध्यम: | पश्यसि | पश्यथ: | पश्यथ |
| उत्तम: | पश्यामि | पश्मावः | पश्याम: |

**(ii) पठ्**

| | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथम: | पठति | पठत: | पठन्ति |
| मध्यम: | पठसि | पठथ: | पठथ |
| उत्तम: | पठामि | पठाव: | पठाम: |

**(iii) हँस**

| | **एकवचनम्** | **द्विवचनम्** | **बहुवचनम्** |
|---|---|---|---|
| प्रथम: | हसति | हसत: | हसन्ति |
| मध्यम: | हससि | हसथ: | हसथ |
| उत्तम: | हसामि | हसाव: | हसाम: |

**3. पाठ की अन्योक्तियों में विभिन्न वस्तुओं का प्रतीकात्मक रूप में उल्लेख किया गया है। ये वस्तुएँ जिनकी प्रतीक हैं, उन्हें लिखिए—**

| **वस्तु** | **प्रतीक** | **वस्तु** | **प्रतीक** |
|---|---|---|---|
| कोकिल | विद्वान पुरुष | हंस | गुणग्राही पुरुष |
| कूप | गंभीर पुरुष | चातक | विद्वान पुरुष |
| गज | मृत्यु | द्विरेफ (भौंरा) | मनुष्य |
| सुवर्ण | विद्वान स्वाभमानी पुरुष | गुंजा | नीच व्यक्ति |

# 3 वीरः वीरेण पूज्यते
## (वीर के द्वारा वीर पूजा जाता है)

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (क) **6.** (ख)

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** विद्‌यार्थी स्वयं करें। **2.** विद्‌यार्थी स्वयं करें।

**3.** विद्‌यार्थी स्वयं करें।

### पाठ पर आधारित प्रश्न

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—**

(क) अलक्षेन्द्र: यवनराज: आसीत्।

(ख) पुरुराज: अलक्षेन्द्र: सह युद्धम् अकरोत्।

(ग) अलक्षेन्द्र: पुरुराजस्य वीर भावेन हर्षित: अभवत्।

(घ) वीर: वीरेण पूज्यते।

अथवा वीर: वीरेण पूज्यते।

(ङ) सिकन्दर: पुरुं अपृच्छत्, ''कस्तावत् गीताया: सन्देश:?''

(च) अलक्षेन्द्र: राज्ञा पुरुणा सह मित्रवत् व्यवहारम् अकरोत्।

(छ) भारतम् एकं राष्ट्रम् इति तव वचनं विरुद्धम् अलक्षेन्द्रस्य उक्ति:।

(ज) भारतविजय: न केवलं दुष्कर: असम्भवो—पि: इति पुरुराजस्य उक्ति:।

(झ) अलक्षेन्द्र: सेनापतिं आदिशत् यत् ''वीरस्य पुरुराजस्य बन्धानि मोचय।''

(ञ) गीताया: सन्देश:—हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं जित्वा भोक्ष्यसे महीन्।

(ट) पुरुराज: गीताया: इति सन्देशम् अकथयत्—'हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम।''

(ठ) पुरुराज: एक: भारतवीर: आसीत्।

(ड) युद्धं जित्वा भोक्ष्यसे महीम्।

(ढ) कस्तावत् गीताया: सन्देश:? इति अलक्षेन्द्र पुरु अपृच्छत्।

(ण) पुरुराज: आत्मानं वीरं दर्शयति।

## अनुवादात्मक प्रश्न

**1. निम्नलिखित अवतरणों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—**

**(क) पुरुराज: —एष भारतवीरो–पि ................................. वीरभावो हि वीरता।**

**अनुवाद—**

पुरुराज—यह भारतीय वीर (मैं) भी यवनराज का अभिवादन करता है।

सिकंदर—(व्यंग्यपूर्वक) अहा! बंधन में पड़े हुए भी तुम अपने को वीर मानते हो पुरुराज!

पुरुराज—यवनराज! सिंह तो सिंह ही होता है, वन में रहे या पिंजरे में।

सिकंदर—किंतु पिंजरे में पड़ा हुआ सिंह कोई कुछ भी पराक्रम नहीं करता है।

पुरुराज—यदि अवसर मिल जाए। तो अवश्य करता है और भी हे भवनराज!

''बंधन हो अथवा मरण, जीत हो या हार, दोनों ही अवस्थाओं में वीर समान रहता है। वीर भाव को ही वीरता कहते हैं।

**( ख ) अलक्षेन्द्रः–मैत्रीकरणे–पि ......................................... यत्र सन्ततिः।**

**अनुवाद—**

सिकंदर—मित्रता करने में भी राष्ट्रद्रोह?

पुरुराज—हाँ! राष्ट्रद्रोह। हे यवनराज! यह भारत राष्ट्र एक है, और यहाँ बहुत-से राज्य और बहुत-से शासक हैं। तुम मैत्री संधि के द्वारा उनको विभाजित करके भारत को जीतना चाहते हो। और आम्भक इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

सिकंदर—भारत एक राष्ट्र है, तुम्हारा यह वचन विरुद्ध है। यहाँ तो राजा और प्रजा आपस में द्वेष करते हैं।

पुरुराज—वह सब हमारा आंतरिक विषय है। हे यवनराज! बाहरी शक्ति का हस्तक्षेप असहनीय है भवनराज! अलग धर्म, अलग भाषा वेशभूषा के होते हुए भी हम सब भारतीय हैं। हमारा राष्ट्र विशाल है। जैसा कि—जो समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में है, वह भारतवर्ष है। हम सब भारतीय उसकी संतान है।

**( ग ) अलक्षेन्द्रः—अथ मे भारतविजयः ...................................... भोक्ष्यसे महीम्।**

**अनुवाद—**

सिकंदर—फिर तो मेरी भारत पर विजय कठिन हैं?

पुरुराज—न केवल कठिन अपितु असंभव भी है।

सिकंदर—(क्रोध सहित) दुष्ट! क्या नहीं जानता कि इस समय विश्व विजयी सिकंदर के सामने खड़े हो।

पुरुराज—जानता हूँ, किंतु सत्य तो सत्य ही हे यवनराज! हम भारतीय गीता के संदेश को नहीं भूल सकते हैं।

सिकंदर—कौन सा गीता का संदेश?

पुरुराज —सुनो—(युद्ध में) मारे जाओगे तो स्वर्ग की प्राप्ति होगी और जीवित रहे तो पृथ्वी का भोग करोंगे।

**( घ ) अलक्षेन्द्रः — ( किमपि विचिन्त्य ) ............................... बन्धनानि मोचय।**

**अनुवाद—**

सिकंदर— (कुछ सोचकर) बस तुम्हारी गीता।

पुरुराज! तुम हमारे बंदी हो। बताओ तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए?

पुरुराज—जैसा (व्यवहार) एक वीर दूसरे वीर के प्रति करता है।

सिकंदर—(वीरता के भाव से हर्षित होकर) धन्य वीर! धन्य! तुम निश्चय ही वीर हो। तुम धन्य हो, तुम्हारी मातृभूमि धन्य है। (सेनापति को आदेश देता है) सेनापति!

सेनापति—सम्राट्।

सिकंदर—वीर पुरुराज के बंधनों को खोल दो।

**2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) त्वं आत्मानं वीरं इति कथयसे।

(ख) कथं त्वयि वर्तितव्यम्।

(ग) वीरस्य पुरुराजस्य बान्धनानि मोचम।

(घ) एक: वीर: अन्य वीरस्य सम्मानं करोति।

(ङ) तौ पठेताम्।

(च) अहं प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छामि।

(छ) यूयं पुस्तकं पठथ।

**व्याकरण संबंधी प्रश्न**

**1. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त विभक्ति और वचन बताइए—**

| **शब्द** | **विभक्ति** | **वचन** |
|---|---|---|
| जना: | प्रथमा | बहुवचनम् |
| बंधनम् | द्वितीया | एकवचनम् |
| सर्वे | प्रथमा | बहुवचनम् |
| गीताया: | पंचमी/षष्ठी | एकवचनम् |
| वने | सप्तमी | एकवचनम् |
| राजन: | प्रथमा | बहुवचनम् |
| अस्वीकारणे | सप्तमी | एकवचनम् |

**2. निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अत्रागत्य | — | अत्र + आगत्य | मदान्ध | — | मद + अन्ध: |
| उपर्युक्तम् | — | उपरि + उक्तम् | रत्नौध: | — | रत्न + औध: |
| सदैव | — | सदा + एव | महौज: | — | महा + औज: |
| यद्यपि | — | यदि + अपि | | | |

**3. निम्नलिखित शब्दों के धातु, लकार, पुरुष और वचन लिखिए—**

| **शब्द:** | | **धातु:** | **लकार:** | **पुरुष:** | **वचन** |
|---|---|---|---|---|---|
| भवतु | = | भू, | लोट् | प्रथम: | एकवचन |
| लभते | = | लभ् | लट् | प्रथम: | एकवचन |
| इच्छसि | = | इच्छ् | लट् | मध्यम: | एकवचन |
| द्रुह्यन्ति | = | द्रुह | लट् | प्रथम | बहुवचन |

# 4 प्रबुद्धो ग्रामीणः
## (बुद्धिमान ग्रामीण)

**बहुविकल्पीय प्रश्न**

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (घ)

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. प्रस्तुत पाठ का मूल भाव यह है कि हमें कभी भी अहंकार नहीं करना चाहिए और न ही किसी व्यक्ति का मजाक करना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को कभी भी छोटा नहीं समझना चाहिए। ज्ञान सभी जगह होता है। मूर्ख और ज्ञानी मनुष्य सभी जगह होते हैं। ग्रामीण भी विद्वान होते हैं।
2. प्रस्तुत पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि ज्ञान सभी जगह होता है। अत: हमें कभी किसी को छोटा या अज्ञानी समझकर उसका मजाक नहीं करना चाहिए।
3. एक बार कुछ ग्रामीण और शहरी एक रेलगाड़ी में नगर की ओर जा रहे थे। सभी चुप बैठे थे। तब एक नागरिक ने ग्रामीणों का उपहास करते हुए कहा कि ग्रामीण पहले ही की तरह अज्ञानी और मूर्ख है न उनका विकास हुआ है और न ही होगा। ग्रामीण बोला, श्रेष्ठ व्यक्ति आप ही कुछ बोले। नागरिक ने कहा, पहले आप कोई शर्त रख लो। चतुर ग्रामीण ने कहा, ठीक है। हम एक-दूसरे से पहेली पूछेंगे। अगर आपने उत्तर नहीं दिया तो आप दस रुपये दोंगे क्योंकि आप ज्ञानी है और अगर हमने उत्तर नहीं दिया तो हम दस रुपये के आधे पाँच रुपये आपको देंगे क्योंकि हम मूर्ख और कम जानकार है।

   ग्रामीण ने नागरिक से जब पहेली पूछने के लिए कहा। तो वह बोला पहले आपही पूछिए। ग्रामीण बोला, ठीक है लेकिन दूर तक जाता है। साक्षर है लेकिन पंडित (विद्वान) नहीं है। बिना मुख वाला है लेकिन स्पष्टवक्ता है। जो उसे जानता है, वही पंडित है।

   नागरिक ने बहुत समय तक सोचा लेकिन पहेली का उत्तर नहीं दे सका। नागरिक ग्रामीण से बोला मैं इस पहेली का उत्तर नहीं जानता हूँ। कृपया आप ही मुझे इसका उत्तर बता दीजिए। ग्रामीण ने कहा, "पहले आप दस रुपये दीजिए।" मलिन मुख वाले नागरिक ने शर्त के अनुसार ग्रामीण को दस रुपये दिये। पुन: ग्रामीण ने कहा, अब आप पहेली पूछिए।

   दु:खी नागरिक के बहुत समय तक सोचने पर भी कोई पहेली याद नहीं आयी। तब ग्रामीण ने हँसकर अपनी पहेली का उत्तर बताया। यह 'पत्र' है। जो बिना पैर के भी दूर तक जाता है। अक्षरों से युक्त होता हुआ भी पंडित नहीं होता है। इसी समय उस ग्रामीण का गाँव आ जाता है और वह हँसता हुआ गाँव की ओर चला जाता है। नागरिक लज्जित होकर चूप बैठ जाता है और अनुभव करता है कि ज्ञान सभी जगह होता है। ग्रामीण भी नागरिकों से अधिक बुद्धिमान होते हैं।
4. ग्रामवासी ने नगरवासी से निम्नलिखित पहेली पूछी—

   अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डित:।

   अमुख: स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डित:।।

   पहले का उत्तर 'पत्रम्' है।
5. विद्यार्थी स्वयं करें।

## पाठ पर आधारित प्रश्न

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—**

   (क) नागरिक: ग्रामीणान् उपहसन् अकथयत्—"ग्रामीणा: अद्यापि पूर्ववत् अशिक्षिता: अज्ञाश्च सन्ति। न तेषां विकास: अभवत् न च भवितुं शक्नोति।"

(ख) दण्डदानेन खिन्न नागरिक: बहुकालं विचार्य न काञ्चित प्रहेलिकाम् अस्मगत् अत: अधिकं लज्जमान: अभवत्।

(ग) ग्रामीणस्य प्रहेलिकाया: 'पत्रम्' इति उत्तरम् आसीत्।

(घ) अन्ते नागरिक: अनुभवम् यत् ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति।
अथवा ग्रामीणा: अनुभवम् यत् ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति।

(ङ) प्रथमं प्रश्नं ग्रामीण: अपृच्छत्।

(च) एक: नागरिक: ग्रामीणान् उपाहसत्।

(छ) बहव: जना: धूमयानम् आरुह्य नगरं प्रति गच्छन्ति स्म।

(ज) धूमयाने समय: ग्रामीण: जित:।

(झ) पत्रं पदेन विना दूरं याति।

(ञ) अमुखो—पि 'पत्रं' स्फुटवक्ता भवति।

(ट) ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति।

(ठ) समये स्वीकृते प्रथमं ग्रामीण: अवदत्।

(ड) 'कथयिष्यामि परं पूर्वं समय: विधातव्यं' इति नागरिकेन उक्तम्।

(ढ) नागरिक: बहुकालं विचार्य न काञ्चित् पहेलिकाम् अस्मरत् यत् नागरिक: प्रहेलिकां न अपृच्छत्।

(ण) 'ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति' इति नागरिक: अन्वभवत्।

(त) ग्रामीण: नागरिकं प्रहेलिकाम् अपृच्छत्।

## अनुवादात्मक प्रश्न

**1. निम्नलिखित अवतरणों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—**

**(क) एकदा बहव: .......................................... च अस्ति।**

**अनुवाद**—एक बार बहुत-से लोग रेलगाड़ी में चढ़कर नगर की ओर जा रहे थे। उनमें कुछ ग्रामीण और कुछ नागरिक थे। मौन बैठे हुए उनमें से एक नागरिक ने ग्रामीणों का मजाक उड़ाते हुए कहा, ग्रामीण आज भी पहले की तरह अशिक्षित और अज्ञानी है। न तो उनका विकास हुआ है और न ही हो सकता है। उसके उस कथन को सुनकर कोई चतुर ग्रामीण बोला, श्रेष्ठ नागरिक! आप ही कुछ बोले, क्योंकि आप शिक्षित और बहुत जानने वाले हो।

**(ख) तस्य तां वार्तां .......................................... दास्याय:।**

**अनुवाद—**

उसकी उस बात को सुनकर वह चतुर ग्रामीण ने बोला, ''अरे, हम सब अशिक्षित और आप शिक्षित हैं, हम कम जाने वाले हैं और आप बहुत अधिक जानने वाले हैं, यह जानकर हमें शर्त रखनी चाहिए, हम आपस में पहेली पूछेंगे। यदि आप उत्तर देने में समर्थ ना हुए तो आप दस रुपये दोंगे। यदि हम उत्तर देने में समर्थ न हुए तो (हम) दस रुपया का आधा पाँच रुपये देंगे।

**( ग ) ''आम् स्वीकृत .......................................... ब्रवीतु भवान्।''**

**अनुवाद—**

''हाँ, शर्त स्वीकार है'' यह कहते हुए उस नागरिक से ग्रामीण ने कहा, ''पहले आप ही (पहेली) पूछिए।'' नागरिक ने ग्रामीण से कहा, ''तुम ही पहले पूछो'' यह सुनकर ग्रामीण बोला, ''ठीक है मैं ही पहले पूछता हूँ।''—

बिना पैर के दूर तक जाता है पढ़ा-लिखा नहीं है लेकिन पंडित है। मुख नहीं है, लेकिन स्पष्ट वक्ता है जो उसे जानता है वही पंडित है। आप इस (पहेली का) उत्तर बताइए।''

**( घ ) नागरिकः .......................................... दत्तानि।**

**अनुवाद—**

नागरिक ने बहुत समय तक सोचा, परंतु पहेली का उत्तर देने में समर्थ न हुआ; अत: ग्रामीण से कहा मैं इस पहेली का उत्तर नहीं जानता हूँ। यह सुनकर ग्रामीण ने कहा, यदि आप उत्तर नहीं जानते हो तो दस रुपये दो। अत: मलिन मुख वाले नागरिक ने शर्त के अनुसार दस रुपये दिए।

**( ङ ) तदा सः .......................................... प्रबुद्धतराः भवन्ति।**

**अनुवाद—**

तब उस ग्रामीण ने हँसकर अपनी पहेली का ठीक उत्तर बताया 'पत्र' बताया। क्योंकि यह बिना पैरों के दूर तल जाता है, अक्षर से युक्त होता हुआ भी पंडित (विद्वान) नहीं होता है। उसी समय ही उस ग्रामीण का गाँव आ गया। वह हँसता हुआ रेलगाड़ी से उतरकर अपने गाँव की ओर चल दिया। नागरिक लज्जित होकर पहले की तरह चुप बैठ गया। सभी नागरिक अधिक बोलने वाले उस नागरिक को देखकर हँसने लगे। तब उस नागरिक ने अनुभव किया कि ज्ञान सभी जगह हो सकता है। ग्रामीण भी कभी नागरिकों से अधिक बुद्धिमान होते हैं।

**2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) अहम् अस्या: प्रहेलिकाया: उत्तरं न जानासि।

(ख) भवान् दश रुप्यकाणि ददातु।

(ग) इदानीं भवान् पृच्छतु प्रहेलिकाम्।

(घ) ग्रामीण: प्रहेलिकाया: उत्तरम् अवदत्।

(ङ) नागरिक: लज्जितो भूम तूष्णीम् अतिष्ठत्।

(च) वयं ध्यानेन पठेम।

(छ) वृक्षात् पुष्पाणि पतन्ति।

(ज) गुरु:शिष्यम् अपश्यत्।

## व्याकरण संबंधी प्रश्न

**1. निम्नलिखित धातुओं में 'तव्यत्' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए—**

| धातु | प्रत्यय | नए शब्द | धातु | प्रत्यय | नए शब्द |
|---|---|---|---|---|---|
| पठ | तव्यत् | पठितव्य | स्था | तव्यत् | स्थातव्य |
| पा | तव्यत् | पातव्य | प्राप् | तव्यत् | प्राप्तव्य |
| ध्या | तव्यत् | ध्यातव्य | दृश् | तव्यत् | द्रष्टव्य |

**2. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए—**

| संधि विच्छेद | | संधि | संधि विच्छेद | | संधि |
|---|---|---|---|---|---|
| युक्तम् + अपि | = | युक्तमपि | मनु + अन्तर: | = | मन्वन्तर |
| वधू + उत्सव: | = | वधूत्सव: | समय + उचित | = | समयोचित |
| देव + ऐश्वर्यम् | = | देवैश्वर्यम् | प्रति + एक: | = | प्रत्येक: |

**3. निम्नलिखित शब्दों के प्रथम विभक्ति और द्विवचन में रूप लिखिए—**

| शब्द | विभक्ति | द्विवचन | शब्द | विभक्ति | द्विवचन |
|---|---|---|---|---|---|
| मधु | प्रथमा | मधुनी | नदी | प्रथमा | नद्यो |
| हरि | प्रथमा | हरी | फल | प्रथमा | फले |
| रमा | प्रथम | रमे | | | |

**4. 'पच' धातु के लृट् लकार में रूप लिखिए।**

| पुरुष: | | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|---|
| प्रथम: | = | पक्ष्यति | पक्ष्यत: | पक्ष्यन्ति |
| मध्यम: | = | पक्ष्यसि | पक्ष्यथ: | पक्ष्यथ |
| उत्तम: | = | पक्ष्यामि | पक्ष्याव: | पक्ष्याम: |

## 5 देशभक्तः चन्द्रशेखरः
### (देशभक्त चन्द्रशेखर)

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ग) **6.** (क)

### उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** सिपाही 16 वर्षीय हृष्ट-पुष्ट अंगों वाले और गौर वर्ण वाले युवक को पकड़कर न्यायाधीश के सामने लाते है।

वाराणसी का न्यायालय होता है। न्यायाधीश के आसन्न पर एक दुर्दमनीय पारसी बैठा है।

सिपाही — सिपाही कहता है कि यह चंद्रशेखर है। कल इसने असहयोगियों की सभा में दुर्जयसिंह नामक सिपाही के मस्तक पर पत्थर से प्रहार किया था जिससे दुर्जय

सिंह घायल हो गया था।

न्यायधीश — (उस बालक को आशचर्य से देखते हैं और कहते हैं) अरे बालक! तुम्हारा क्या नाम है?

चंद्रशेखर — आजाद (दृढ़ता से कहता है)।

न्यायधीश — तुम्हारे पिता का क्या नाम है?

चन्द्रशेखर — स्वतंत्र।

न्यायधीश — तुम कहाँ रहते हो?

चंद्रशेखर — जेल ही मेरा घर है।

न्यायधीश — (अपने मन में) स्वतंत्रता के लिए यह कैसा पागलपन है? (प्रत्यक्ष) यह नवयुवक अत्यंत उद्दंड और धृष्ट है। मैं इसे पंद्रह कोड़े मारने का दंड देता हूँ।

चंद्रशेखर — चिंता नहीं।

इस प्रकार चंद्रशेखर और न्यायधीश का संवाद पाठ में इतना ही है।

**2.** विद्यार्थी स्वयं करें।

**3.** आज राष्ट्र को सच्चरित्र, कर्मठ, ईमानदार, देशभक्त और अनुशासित युवाओं की आवश्यकता है। चरित्रवान और देशभक्त युवा ही देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करेंगे। आज के युवा कल देश के कर्णधार होंगे। अगर युवा ईमानदार और चरित्रवान है, तो देश में भ्रष्टाचार जैसी समस्या स्वत: ही दूर हो जायेगी। साहसी और कर्मठ युवा ही देश का नाम विशव में ऊँचा करेंगे।

**4.** विद्यार्थी स्वयं करें।

## पाठ पर आधारित प्रश्न

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—**

(क) कशायाताडित: चन्द्रशेखर: पुन:-पुन: 'जयतु भारतम्' इति अवदत्।

(ख) 'कारागार एव मम गृहम्' इदं कथनं चन्द्रशेखरस्य न्यायाधीशं प्रति अस्ति?
अथवा 'कारागार एव मम गृहम्' इदं कथनं चन्द्रशेखर अवदत्।

(ग) यदा चन्द्रशेखर: कारागारात् बहि: आगच्छति तदा बालका: तस्य पादयो: पतन्ति, तं मालभि: अभिनन्दमन्ति।

(घ) भारतमाताया: शत्रूणां कृते चन्द्रशेखरस्य रक्तबिन्दव: अग्निस्फुलिङ्गा: भविष्यन्ति।

(ङ) चन्द्रशेखर: पुष्टाङ्ग: गौरपूर्ण षोडश वर्षीय: किशोर: आसीत्।

(च) चन्द्रशेखर: गतदिने असहयोगिनां सभायां एकस्य आरक्षकस्य दुर्जनसिंहस्य मस्तके प्रस्तर खण्डेन प्रहार:कृत: येन कारणेन चन्द्रशेखर: न्यायालये आनीत:।

(छ) चन्द्रशेखर: स्वपितु: नाम 'स्वतन्त्र:' इति अकथयत्।

अथवा

'स्वतन्त्र:' चन्द्रशेखरस्य पितु: नाम।

(ज) चन्द्रशेखर: स्वनाम् 'आजाद:' इति अकथयत्।

(झ) न्यायाधीशः चन्द्रशेखरं पञ्चदश कशाघातान् अदण्डयत्।
अथवा न्यायाधीशः चन्द्रशेखरं पञ्चदश कशाघातान् अदण्डयत्।

(ञ) चन्द्रशेखरः स्वगृहं कारागारम् अवदत्।

(ट) 'शत्रूणां कृते मदीयाः रक्तबिन्दवः अग्निस्फुलिङ्गाः भविष्यन्ति।' इति चन्द्रशेखरस्य कथनमस्ति।

(ठ) दुर्मुखः एकः चाण्डालः आसीत्।

(ड) राष्ट्रभक्तः चन्द्रशेखरः अस्ति।

(ढ) चन्द्रशेखरः असहयोगिनां सभायां एकस्य आरक्षयस्य दुर्जयसिंहस्य मस्तके प्रएतर खण्डेन प्रहारः कृतः येन दुर्जयसिंह आहतः। तेन कारणेन चन्द्रशेखरः बन्दीकृत।

(ण) 'जयतु भारतम्' इति कथनम् चन्द्रशेखरस्य न्यायधीशस्य प्रति।

(त) प्रति कशाघात पश्चात् चन्द्रशेखरः 'जयतु भारतम्' इति अकथयत्।

(द) आरक्षकस्य नाम दुर्जय सिंहः आसीत्।

## अनुवादात्मक प्रश्न

**1. निम्नलिखित अवतरणों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—**

**(क) स्थानम्– वाराणसी .......................................... दुर्जयसिंहः आहतः।**

**अनुवाद**—

(स्थान—वाराणसी न्यायालय। न्यायाधीश के आसन पर एक अत्यंत कठोर पारसी बैठा है। सिपाही चन्द्रशेखर को उसके सामने लाते हैं। मुकदमा आरंभ होता है। चन्द्रशेखर पुष्ट अंगों वाला, गोरे रंग का, सोलह वर्षीय एक किशोर है।)

सिपाही—श्रीमान जी! यह चन्द्रशेखर है। यह राजद्रोही है। बीते दिन इसने ही असहयोगिों की सभा में एक सिपाही दुर्जयसिंह के माथे पर पत्थर के टुकड़े से प्रहार किया था जिससे दुर्जयसिंह घायल हो गया था।

**(ख) गण्डासिंहः – (चाण्डालं प्रति) दुर्मुख। .................................... इति वदति।**

**अनुवाद**—

गण्डासिंह—(जल्लाद से) दुर्मुख! मेरा आदेश पाते ही कोड़े मारना। (चन्द्रशेखर के प्रति) अरे दुष्ट युवक! अब अपनी धृष्टता का फल प्राप्त करा। कर राजद्रोह। दुर्मुखः! एक कोड़ा मारो। (दुर्मुख चन्द्रशेखर को कोड़े से मारता है।)

चन्द्रशेखर—भारतमाता की जय हो।

गण्डासिंह—दुर्मुख! दूसरा कोड़ा। (दुर्मुख फिर मारता है।) पीटा गया चन्द्रशेखर बार-बार 'भारत माता की जय हो' बोलता है।

**(ग) यदा चन्द्रशेखरः ......................................... अग्निस्फुलिङ्गाः भविष्यन्ति।**

**अनुवाद**—

जब चन्द्रशेखर जेल बाहर आता है, उसम समय सभी लोग उसे चारों ओर से घेर लेते हैं, बहुत-से बालक उसके पैरों में पड़ते हैं, और उसका मालाओं से अभिनंदन करते हैं।

चन्द्रशेखर—आप सब यह क्या कर रहे है? हम सब भारत माता के अनन्य भक्त है। उसके शत्रुओं के लिए मेरी ये रक्त की बूँदें आग की चिंगारियाँ होगी।

**2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) न्यायाधीशस्य पीठे एक: दुर्धर्ष: पारसी तिष्ठति।

(ख) आरक्षक चन्द्रशेखरं तस्य सम्मुखम् अनयन्ति।

(ग) न्यायाधीश: चन्द्रशेखरं पञ्चदश कशाघातान् दण्डयति।

(घ) वयं भारत मातु: अनन्या: भक्ता: स्म:।

(ङ) वयं स्वकर्तव्यपालनं कुर्याय।

(च) देशभक्त: निर्भीका: भविन्त।

(छ) सदाचारस्य रक्षां कर्तव्या।

(ज) वयम् एक: भवेम।

(झ) देशवासिषु राष्ट्रप्रेम भवेत्।

## व्याकरण संबंधी प्रश्न

**1. निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए—**

| **शब्द** | | **सन्धि-विच्छेद** | **शब्द** | | **सन्धि-विच्छेद** |
|---|---|---|---|---|---|
| स्वाविनयस्य | = | स्व + अविनयस्य | नास्ति | = | न + अस्ति |
| तदैव | = | तदा + एव | सूक्ति: | = | सु + उक्ति: |
| अत्रैव | = | अत्र + एव | अत्यधिकम् | = | अति + अधिकम् |
| स्वागतम् | = | सु + आगतम् | लाकृति | = | ऌ + आकृति: |

**2. युष्मद के सप्तमी में और मति के चतुर्थी विभक्ति में रूप लिखिए।**

| **विभक्ति** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|---|
| सप्तमी | त्वयि | युवमो: | युष्मासु |
| **विभक्ति** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
| चतुर्थी | मत्यै, मतये | मतिभ्याम् | मतिभ्य: |

**3. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति एवं वचन लिखिए—**

| **शब्द** | **विभक्ति** | **वचन** |
|---|---|---|
| सर्वे | प्रथमा | बहुवचन |
| तस्या: | पञ्चमी, | षष्ठी एकवचन |
| मालाभि: | तृतीय | बहुवचन |

**4. निम्नलिखित धातु-रूपों के लकार, वचन और पुरुष लिखिए—**

| **धातु:** | **लकार:** | **पुरुष:** | **वचनम्** |
|---|---|---|---|
| ताडयति | लट् | प्रथम: | एकवचन |
| वदति | लट् | प्रथम: | एकवचन |

| | | | |
|---|---|---|---|
| अस्ती | लट् | प्रथम: | एकवचन |
| निवससि | लट् | मध्यम: | एकवचन |
| लभस्व | लोट् | मध्यम: | एकवचन |
| तिष्ठति | लट् | प्रथम: | एकवचन |
| आगच्छति | लट् | प्रथम: | एकवचन |
| भविष्यन्ति | लट् | प्रथम: | बहुवचन |

# 6 केन किं वर्धते?
## (किससे क्या बढ़ता है?)

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ग) **6.** (ख) **7.** (क) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (घ)

### उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** संसार में मनुष्य को सुखी रहने के लिए निम्नलिखित कार्य करने चाहिए—

1. सुंदर और मधुर वचन बोलने चाहिए।
2. दान देने से यश और कीर्ति बढ़ती है। अत: यथायोग्य दान देना चाहिए।
3. सत्य बोलकर धर्म को बढ़ाना चाहिए।
4. सदाचारी होना चाहिए और उदारता का गुण भी मनुष्य में अवश्य होना चाहिए।
5. सज्जनों का संग करना चाहिए।
6. पवित्र, नम्र, परिश्रमी, क्षमाशील और करुणावान होना चाहिए। निरंतर अभ्यास के द्वारा अपनी विद्या को बढ़ाना चाहिए।

उपर्युक्त गुणों को अपना कर मनुष्य सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है।

**2.** विद्यार्थी स्वयं करें।

**3.** प्रेम, विनय, दान, सदाचार, परिश्रम और क्षमा का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान हैं। इन गुणों को अपना कर ही मनुष्य श्रेष्ठ मानव बन सकता है और सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है।

**4.** **अभ्यास का महत्व**

अभ्यास का जीवन में बहुत महत्व है। बार–बार अभ्यास करने से जड़मति अर्थात् मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान हो जाता है। जिस प्रकार कुएँ पर रस्सी के बार–बार खिंचने से उस रस्सी से पत्थर भी घिस जाता है। उसी प्रकार किसी भी विद्या को बार–बार पढ़ने से अभ्यास करने से वह विद्या याद हो जाती है। खिलाड़ी अगर खेल का अभ्यास नहीं करेगा तो वह अच्छा नहीं करेगा तो वह गा नहीं सकता है। संगीतकार अगर अभ्यास नहीं करता तो वह नए–नए गीतों की धुन तैयार नहीं कर पायेगा, अत: अभ्यास का हमारे जीवन में भी महत्व है।

## पाठ पर आधारित प्रश्न

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—**

(क) श्री: उद्यमेन वर्धते।
अथवा उद्यमेन श्री: वर्धते।

(ख) विद्या अभ्यासेन वर्धते।

(ग) इन्दुदर्शनेन समुद्र: वर्धते।
अथवा समुद्र: इन्दुदर्शनेन वर्धते।

(घ) नीचसङ्गेन दुश्शीलता वर्धते।

(ङ) मैत्री सुवचनेन वर्धते।
अथवा सुवचने मैत्री वर्धते।

(च) राज्यं न्यायेन वर्धते।

(छ) दानेन कीर्ति: वर्धते।

(ज) दानेन अममेव लाभ: भवति यत् अनेन कीर्ति: वर्धते।

(झ) सदाचारेण विश्वास: वर्धते।

(ञ) तृष्णा असन्तोषेण वर्धते।

(ट) औदार्येण प्रभुत्वम् वर्धते।

(ठ) कुटुम्बकलहेन दु:खम् वर्धते।

(ड) अभ्यासेन विद्या वर्धते।

(ढ) मित्रदर्शनेन आह्लाद: वर्धते।

(ण) दुश्शीलता नीचसङ्गेन वर्धते।

(त) रोग: अपथ्येन वर्धते।

(थ) सत्येन धर्म: वर्धते।
अथवा धर्म: सत्येन वर्धते।

(द) दुर्व्यसनेन विषय: वर्धते।

(ध) असन्तोषेण तृष्णा वर्धते।

(न) तप: क्षमया वर्धते।

(प) विनयेन गुण: वर्धते।
अथवा गुण: विनयेन वर्धते।

(फ) वैश्वानर: तृणै: वर्धते।

(ब) दुर्वचनेन कलह: वर्धते।

(भ) पुत्रदर्शनेन हर्ष: वर्धते।
अथवा पुत्रदर्शनेन हर्षं: वर्धते।

(म) लोभ: लाभेन वर्धते।

(य) शत्रु उपेक्षया वर्धते।

अथवा शत्रु वर्धते।

**अनुवादात्मक प्रश्न**

**1. निम्नलिखित अवतरणों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—**

**(क) सुवचनेन मैत्री ......................................... सदाचारेण विश्वासः।**

**अनुवाद—**

सुंदर वचनों से मित्रता बढ़ती है। श्रृंगार से प्रेम बढ़ता है। दान देने से कीर्ति बढ़ती है। सत्य से धर्म बढ़ता है। सदाचार से विश्वास बढ़ता है।

**(ख) अभ्यासेन विद्या ......................................... तृणैः वैश्वानरः।**

**अनुवाद—**

अभ्यास से विद्‌या बढ़ती है। उचित व्यवहार से महत्व बढ़ता है। क्षमा करने से तप बढ़ता है। लाभ होने से लोभ बढ़ता है। मित्र के दर्शन से आनंद बढ़ता है। तिनके से अग्नि बढ़ती है।

**2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) दानेन कीर्तिः सत्येन च धर्मः वर्धते।

(ख) दुर्वचनेन कलहः वर्धते कुटुम्बकलहेन दुःखम् च वर्धते।

(ग) कर्त्तव्यपालनेन अधिकाराः वर्धते।

(घ) पुत्रदर्शनेन हर्षः वर्धते चन्द्रदर्शनेन च समुद्रः वर्धते।

(ङ) अस्मिन् पाठे 'केम किं वर्धते'—अस्मिन् प्रश्नस्य उत्तम् अस्ति।

(च) अशौचेन दारिद्रयं वर्धते।

(छ) सः श्वः गृहम् अगच्छत्।

(ज) छात्रों परिश्रमेण पठेयुः।

(झ) सदाचारेण विश्वासः वर्धते।

## व्याकरण संबंधी प्रश्न

**1. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए—**

| **शब्द** | | **संधि-विच्छेद** | **शब्द** | | **संधि-विच्छेद** |
|---|---|---|---|---|---|
| दुश्शीलता | = | दुः + शीलता | सदाचारेण | = | सत् + आचारेण |
| अन्वेषणम् | = | अनु + एषणम् | गुणैश्वर्यम् | = | गुण + ऐश्वर्यम् |
| विद्याध्ययनम् | = | विद्या + अध्ययनम् | | | |

**2. निम्नलिखित शब्दों के चतुर्थी, पञ्चमी और षष्ठी विभक्तियों में रूप लिखिए—**

**शब्द = रिपु**

| **विभक्ति** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|---|
| चतुर्थी | रिपवे | रिपुभ्याम् | रिपुभ्यः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| पञ्चमी | रिपोः | रिपुभ्याम् | रिपुभ्यः |
| षष्ठी | रिपो | रिपवोः | रिपूणाम् |

**शब्द = क्षमा**

| **विभक्ति** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|---|
| चतुर्थी | क्षमायै | क्षमाभ्याम् | क्षमाभ्यः |
| पञ्चमी | क्षमायाः | क्षमाभ्याम् | क्षमाभ्यः |
| षष्ठी | क्षमायाः | क्षमयोः | क्षमाणाम् |

**शब्द = विनय**

| **विभक्ति** | **एकवचन** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|---|
| चतुर्थी | विनयाय | विनयाभ्याम् | विनमेभ्यः |
| पञ्चमी | विनयात् | विनयाभ्याम् | विनमेभ्यः |
| षष्ठी | विनयस्य | विनयोः | विनयानाम् |

**3. निम्नलिखित पदों में विभक्ति और वचन लिखिए—**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क्षमया | — | तृतीया | विभक्तिः | एकवचनम् |
| व्यसनेन | — | तृतीया | विभक्तिः | एकवचनम् |

**4. निम्नलिखित शब्दों के दिए गए विभक्ति और वचनों में रूप लिखिए–**

(क) शब्द = नदी

| **विभक्ति** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| सप्तमी | नद्याम् | नदीषु |

शब्द = युष्मद्

| **विभक्ति** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| सप्तमी | त्वमि | युष्मासु |

(ख) शब्द = यति

| **विभक्ति** | **द्विवचन** |
|---|---|
| चतुर्थी | यती |

शब्द = युष्मद्

| **विभक्ति** | **द्विवचन** |
|---|---|
| चतुर्थी | युवाभ्याम् |

शब्द = फल

| **विभक्ति** | **द्विवचन** |
|---|---|
| चतुर्थी | फलाभ्याम् |

शब्द = मधु

| **विभक्ति** | **द्विवचन** |
|---|---|
| चतुर्थी | मधुभ्याम् |

# 7 आरुणि श्वेतकेतु संवादः
## (आरुणि श्वेतकेतु का संवाद)

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (क) **6.** (ग) **7.** (घ) **8.** (ख) **9.** (क)

### उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** छांदोग्य उपनिषद सामवेदीय ब्राह्मण का औपनिवद्रिक भाग है जो प्राचीनतम दस उपनिषदों नवम एवं सबसे बृहदाकार है। इसके आठ प्रपाठकों में प्रत्येक में अनेक खंड है। यह उपनिषद ब्रह्मज्ञान के लिए प्रसिद्ध है। संन्यासप्रदान इस उपनिषद का विषय अपाप, जरा–मृत्यु, शोकरहित, सत्यकाम, सत्य संकल्प आत्मा की खोज तथा सम्यक ज्ञान है।

**2.** विद्‌यार्थी स्वयं करें।

**3.** विद्‌यार्थी स्वयं करें।

**4.** प्राचीन काल में शिक्षा गुरुकुल में होती थी। शिष्य गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे। राजकुमार भी गुरुकुल में ही शिक्षा ग्रहण करते थे। जब उनकी शिक्षा समाप्त हो जाती थी तब अपने महल में चले जाते थे। श्री रामचंद्र जी ने विश्वामित्र के आश्रम में और श्री कृष्ण ने संदीपन गुरु के आश्रम में शिक्षा में रहकर ही शिक्षा ग्रहण की थी।

### पाठ पर आधारित प्रश्न

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—**

(क) श्वेतकेतु: आरुणेय: पुत्र: आसीत्।

(ख) श्वेतकेतु: द्वादशवर्षाणि पर्यन्तं वेदान् अधीतवान्।

(ग) श्वेतकेतु: ह द्वादशवर्षं उपेत्य चतुर्विंशतिवर्ष: सर्वान् वेदान् धीत्य महामना अनूचानयानी स्तब्ध एयाय।

(घ) आरुणेय: पुत्र: श्वेतकेतु: आसीत्।

(ङ) येनाश्रुतं श्रुतं भवत्यमतं मतमविज्ञानं विज्ञातमिति।

(च) ब्रह्मचारी ब्रह्मबन्धुरिव अननूच्य भवति।

(छ) नखनिकृन्तनेन सर्वं कार्ष्णायसं विज्ञातम्।

(ज) लोहमणिना सर्वं लोहमयं विज्ञातम्।

(झ) येनाश्रुतम् श्रुतं भवत्यमतं विज्ञातमिति।

### अनुवादात्मक प्रश्न

**1. निम्नलिखित अवतरणों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—**

**(क) स ह द्वादशवर्षं ........................................ स्तब्ध एयाय।**

**अनुवाद—**

वह (श्वेतकेतु) बाहर वर्ष की आयु में गुरु के निकट जाकर चौबीस वर्ष को हाकर सभी विधाओं का अध्ययन करके बड़े मन वाला अपने आपको पूरा विद्वान् समझता हुआ और बड़ा अकड़वाला बनकर वापस लौट आया।

**( ख ) श्वेतकेतुर्हारुणेय .......................................... ब्रह्मबन्धुरिव भवतीति।**

**अनुवाद—**

श्वेतकेतु आरुणेय आरुणि का पुत्र था। उसको उसके पिता ने कहा, ''शवेतकेतु। (जाओ), ब्रह्मचर्य वास करो, क्योंकि हमारे कुल में ऐसा पुरुष नहीं होता कि जो वेद को न पढ़कर ब्रह्मबंधु सा बन जाए।''

**( ग ) न वै नूनं .......................................... सोम्येति होवाच।**

**अनुवाद—**

(पुत्र के कहा) निशचय ही भगवन (मेरे आचार्य) इसे नहीं जानते होंग; क्योंकि यदि वह जानते तो मुझे कैसे न बतलाते। इसलिए आप ही मुझे यह बतलाइएँ। उसने (पिता ने) कहा, 'ऐसा ही हो, हे सौम्या!'

**( घ ) यथा सोम्यैकेन .......................................... स आदेशो भवतीति।**

**अनुवाद—**

और जैसे हे सौम्य! एक नख काटने वाले से काले लोहे की प्रत्येक वस्तु जानी जाती हे, विकार केवल नाममात्र का है, जो वाणी का सहारा है, पर वह लोहा ही है, वही सत्य है। इस प्रकार हे सौम्य! वह आदेश (उपदेश) होता है।

**2. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—**

(क) जिसके द्वारा न सुना हुआ भी सुना हुआ हो जाता है।

(ख) हे पूज्यषाद भगवन्! वह आदेश (उपदेश) किस प्रकार का है?

(ग) जैसे सुवर्ण के पिंड से सब कुछ सुवर्णमय ज्ञात हो जाता है विकार केवल नाममात्र का है, जो वाणी का सहारा है, पर वह सुवर्ण ही है, यही सत्य है।

**3. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) अविज्ञानं विज्ञातमिति।

(ख) कथं स आदेशो भवतीति।

(ग) न वै सोम्यास्मत्कुलीनो—ननूच्य ब्रह्मबन्धुत्वि भवतीति।

(घ) स: सर्वान् वेदानधीत्य।

(ङ) येनातर्कं तर्कमिति।

(च) लोहमणिना सर्वं लोहमयं विज्ञात।

(छ) आरुणेय: पुत्र: श्वेतकेतु आसीत्।

## व्याकरण संबंधी प्रश्न

**1. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि विच्छेद कीजिए—**

| शब्द | | संधि-विच्छेद | शब्द | | संधि-विच्छेद |
|---|---|---|---|---|---|
| यन्नु | = | यत् + नु | ब्रह्मबन्धुरिव | = | ब्रह्मबन्धुः + इव |
| भगवन्तस्ते | = | भगवन्तः + ते | लोहमित्येव | = | लोहम् + एव |
| सोम्येति | = | सोम्य + इति | भवतीति | = | भवति + इति |
| पितोवाच | = | पिता + उवाच | भवत्यमतम् | = | भवति + अमतम |

**2. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति व वचन लिखिए—**

| शब्द | विभक्ति | वचन |
|---|---|---|
| वेदान् | द्वितीया | बहुवचन |
| श्रुतम् | द्वितीया | एकवचन |
| श्वेतकेतुः | प्रथमा | एकवचन |
| ब्रह्मबन्धुः | प्रथमा | एकवचन |
| लोहमणिना | तृतीया | एकवचन |
| तम् | द्वितीया | एकवचन |
| सर्वं | प्रथमा | एकवचन |
| अस्मत् | पञ्चमी | एकवचन |

**3. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिए—**

(क) **क्त प्रत्यय**—इस प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल में होता है 'क्त' के क् (क) का लोप हो जाता है और धातु के अंत में केवल 'त' जुड़ता है।

जैसे—

पठ् + क्त (त) = पठितः पढ़ा गया।

कृ + क्त = कृतः ले जाया गया।

(ख) **'भू' धातु, लट् लकार**

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम | भवति | भवतः | भवन्ति |

**'ब्रू' धातु लट् लकार**

| पुरुष | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|

**4. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग बताइए—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विज्ञातं | = | वि | विकारः | = | वि |
| उपागच्छ | = | उप | प्रगतिः | = | प्र |
| अनुहुतम् | = | अनु | | | |

**5. निम्न पदों में प्रत्यय बताइए—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आगत्य | — | आ + गम् + ल्यप् | अधीत्य | — | अ + धी + ल्यप् |
| विज्ञाप्य | — | वि + ज्ञा + ल्यप् | पठित्वा | — | पठ् + क्त्वा (त्वा) |

# 8 भारतीया संस्कृतिः
## (भारतीय संस्कृति)

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (घ) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (घ) **6.** (घ)

### उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. ''विश्व का रचयिता ईश्वर एक है।'' यह भारतीय संस्कृति का मूल है। सभी मतों के प्रति समान भाव और सममान भारतीय संस्कृति की विशेषता है। भारतीय संस्कृति सभी मतों को मानने वालों की संगम स्थली है। भारतीय संस्कृति समंवयात्मक संस्कृति है। इसके विकास में विविध जातियों, संप्रदायों और विश्वासों का योगदान दिखाई देता हे। भारतीय संस्कृति सदा गतिशील है। मानव जीवन को सँवारने के लिए यह समय-समय पर नई-नई विचारधारा को स्वीकार करती है। जो उचित और कल्याणकारी है उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करती है। यह कर्मवीरों की संस्कृति है।''इस लोक में कर्म करते हुए मनुष्य सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करें'' यहाँ इसकी घोषणा है। पहले कर्म और उसके बाद फल—यह हमारी संस्कृति का नियम है।

   भारतीय संस्कृति का यह दिव्य संदेश है—

   सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।

   सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कशिचद् दु:खभाग भवेत्।

   सत्य की प्रतिष्ठा, सभी प्राणियों के प्रति समान भाव, विचारों में उदारता और आचरण की दृढ़ता भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।
3. इसके लिए उत्तर 1 देखे।
4. भारत की प्राचीन और नवीन संस्कृति ।
5. विद्यार्थी स्वयं करें।

### पाठ पर आधारित प्रश्न

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—**

(क) अस्माकं पूर्वजा: जीवनं सस्कर्तुं यान् आचारान् विचारान् च अदर्शयन् तत् सर्वं भारतीय-संस्कृते: तात्पर्यं।

(ख) विश्वस्य स्रष्टा ईश्वर: एक एव अस्ति इति भारतीय संस्कृते: मूलम् अस्ति।

(ग) सर्वेषां मतानां समभाव: सम्मानश्च भारतीय सस्कृते: दिव्य: सन्देश: अस्ति।

(घ) अस्माकं संस्कृति: सदा गतिशीला वर्तते।

(ङ) ''मा कश्चित् दु:खभाग्भवेत्''—एव भारतीय संस्कृति: दिव्य: सन्देश:।

(च) सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कशिचद् दु:ख भाग् भवेत्।।
इति भारतीय संस्कृते: अभिलाष:।

(छ) भारतीय-संस्कृतौ सर्वेषां मतानां समभाव: इति विशेष: गुण: अस्ति।

(ज) 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' सुस्माकं संस्कृते सन्देशमस्ति।

(झ) मानवजीवनस्य संस्करणम् इति संस्कृति अस्ति।

(ञ) भारतीय संस्कृति: विश्वस्य अभ्युदयाय अस्ति।

(ट) इदानीं यदा वयं राष्ट्रस्य नवनिर्माणे संलग्ना: स्म: निरन्तरं कर्मकरणम् अस्माकं मुख्य कर्त्तव्यं।

(ठ) भारतीय संस्कृते गतिशीलताया: रहस्यम् मानव जीवनस्य शाशवतमूल्येषु निहितम्, तद् यथा सत्यस्य प्रतिष्ठा, सर्वभूतेषु समभाव: विचारेषु औहार्यम् आचारे दृढ़ता चेति।

## अनुवादात्मक प्रश्न

**1. निम्नलिखित गद्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए–**

**(क) मानव-जीवनस्य .......................................... संस्कृते: सन्देश:।**

**अनुवाद**—

मानव जीवन को सँवारना (दोषों को दूर करना) ही संस्कृति है। हमारे पूर्वजों ने मानव-जीवन को सँवारने के लिए महान प्रयत्न किया था। उन्होंने हमारे जीवन को सँवारे के लिए जिन आचारों-विचारों को दिखाया (प्रदर्शित किया), वह सब हमारी संस्कृति है। ''विश्व का रचयिता ईश्वर एक ही है,'' यह भारतीय संस्कृति का मूल है। विभिन्न मतों के अनुयायी अनेक नामों से एक ही ईश्वर का भजन करते हैं। अग्नि, इंद्र, कृष्ण, करीम, राम, रहीम, जिन, बुद्‌ध, ख्रिस्त अलाह इत्यादि नाम एक ही परमात्मा के हैं। उसी ईश्वर को लोग गुरु भी मानते हैं। अत: सभी मतों के प्रति समान भाव और सम्मान (ही) हमारी संस्कृति का संदेश है।

**(ख) भारतीया संस्कृति: .......................................... उन्नति: कर्त्तव्या।**

**अनुवाद**—

भारतीय संस्कृति तो सभी मतों के मानने वालों की संगम स्थली है। समय-समय पर भारतीय संस्कृति में विभिन्न विचार मिल गए। यह संस्कृति समंवयात्मक संस्कृति है जिसके विकास में विविध जातियों, संप्रदायों और विश्वासों का योगदान दिखाई देता है। अतएव हम भारतीयों की एक संस्कृति और एक राष्ट्रीयता है। हम सभी एक संस्कृति की उपासना करने वाले और एक राष्ट्र के नागरिक हैं। जिस प्रकार भाई-भाई परस्पर

मिलकर सहयोग और प्रेम से परिवार की उन्नति करते हैं उसी प्रकार हमें भी सहयोग और प्रेम से राष्ट्र की उन्नति करनी चाहिए।

**( ग ) अस्माकं संस्कृतिः ........................................ दृढता चेति।**

**अनुवाद—**

हमारी संस्कृति सदा गतिशील है। मानव-जीवन को सँवारने के लिए यह समय-समय नई-नई विचारधारा को स्वीकार करती है और नई-नई शक्ति को प्राप्त करती है। यहाँ हठधार्मिता नहीं है जो उचित और कल्याणकारी है, वह यहाँ प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार होता है। इसकी गतिशीलता का रहस्य मानव-जीवन के सदा रहने वाले आदर्शों; जैसे कि सत्य की प्रतिष्ठा, सभी प्राणियों के प्रति सम्मान भाव, विचारों में उदारता और आचरण की दृढ़ता में निहित है।

**( घ ) एषा कर्मवीराणां ........................................ संस्कृतेः उपासकाः।**

**अनुवाद—**

यह कर्मवीरों की संस्कृति है। ''इस लोक में कर्म करते हुए (मनुष्य) सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करें। यह इसकी घोषणा है। पहले कर्म और उसक`बाद फल—यह हमारी संस्कृति का नियम है। इस समय जब हम राष्ट्र के नव-निर्माण में लगे हुए है, निरंतर कर्म करना हमारा मुख्य कर्तव्य है। अपने परिश्रम का फल भोगने योग्य है, दूसरे के परिश्रम का शोषण सब प्रकार से छोड़ने योग्य है। यदि हम इसके विपरीत आचरण करते हें तो हम भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक नहीं हैं।

**( ङ ) सर्वे भवन्तु ........................................ दुःखभाग् भवेत।**

**अनुवाद—**

सब सुखी हों, सब नीरोगी हों।

सब कल्याण को देखें, कोई भी दु:खी न हो।

**2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) सर्वेषां मतानां समभाव: सम्मानश्च अस्माकं संस्कृते: सन्देश:।

(ख) वयं भारतीयमानाम् एका संस्कृति: एका च राष्ट्रीयता।

(ग) असमाभि: सहमोगेन सौहार्द्रेन च राष्ट्रस्य उन्नति: कर्त्तव्या।

(घ) वयं राष्ट्रस्य नवनिर्माणे संलग्ना: सन्ति।

(ङ) सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निराममा:।

(च) स्व संस्कृते: रक्षाणम् अस्माकं धर्म: अस्ति।

(छ) माता मातृभूमे: गुरुतरा भवति।

(ज) अहं गृहं गच्छेयम्।

## व्याकरण संबंधी प्रश्न

**1. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—**

अभ्युदय: = अभि + उदय:     इत्यपि = इति + अपि

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नास्ति | = | न + अस्ति | दुराग्रह: | = | दुह् + आग्रह: |
| कुर्वन्नेवेह | = | कुर्वन् + एव + इह | | | |

**2. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति और वचन लिखिए—**

| **शब्द** | **विभक्ति** | **वचन** |
|---|---|---|
| कर्माणि | प्रथमा द्वितीया | बहुवचन |
| संस्कृतौ | सप्तमी | एकवचन |
| विविधै: | तृतीया | बहुवचन |
| नवनिर्माणे | सप्तमी | एकवचन |
| उपासका: | प्रथमा | बहुवचन |
| अस्माभि: | तृतीया | बहुवचन |

**3. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिए—**

**(क) पठ् (पढ़ना) धातु**

**लट् लकार (भविष्यत् काल)**

| **पुरुष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| मध्यम | पठिष्यसि | पठिष्यथ |
| हस् | (हँसना) | धातु |

**लट् लकार (भविष्यत् काल)**

| **पुरुष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| मध्यम | हसिष्यसि | हसिष्यथ |

**(ख) दृश (पश्य) देखना**

**लङ् लकार (भविष्यत् काल)**

| **पुरुष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| उत्तम | अपश्यम् | अपश्याम |

**पच् (पकाना) (भविष्यत् काल)**

**लङ् लकार**

| **पुरुष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| उत्तम | अपचम् | अपचाम |

**4. युष्मद् और फल के सप्तमी विभक्ति, द्विवचन और बहुवचन में रूप लिखिए।**

**युष्मद् (तुम)**

| **विभक्ति** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| सप्तमी | युवयो: | युष्मासु |

**फल (फल)**

| **विभक्ति** | **द्विवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| सप्तमी | फलयो: | फलेषु |

# 9 जीवन-सूत्राणि
## (जीवन के सूत्र)

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (घ) **6.** (ग) **7.** (ग) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (क) **11.** (ख) **12.** (क)

### उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** चिंता मनुष्य को अंदर ही अंदर खाती रहती है। चिंता चिता से भी अधिक हानिकारक मानी जाती है। चिंता अनंत होती है। उसकी कोई निश्चित संख्या नहीं होती है। जबकि तिनकों को गिना भी जा सकता है। इसलिए चिंता को तिनकों से बढ़कर बताया गया हे। चिंता मनुष्य को तिनके से भी अधिक दुर्बल बना देती है।

**2.** **नौ श्लोक का अनुवाद**—किसको छोड़कर मनुष्य सबका प्यार हो जाता है? किसको छोड़कर शोक नहीं करता है? जिसको त्यागकर मनुष्य धनवान हो जाता है? किसको छोड़कर मनुष्य सुखी हो जाता है।

**दस श्लोक का अनुवाद**—अभिमान छोड़कर मनुष्य सबका प्यारा हो जाता है। क्रोध को छोड़कर शोक नहीं करता है। कामना को त्यागकर धनवान बन जाता है। लोभ को छोड़कर सुखी हो जाता है।

**3.** **''चिंता चिंत्त दहति''**

''चिंता चिंत्त दहति'' अर्थात् चिंता मनुष्य के हृदय को जलाती है। चिंता मनुष्य को अंदर ही अंदर खाती रहती है। वह मनुष्य को दीमक की तरह खोखला कर देती हैं। चिंतित व्यक्ति दिन-रात सोचता ही रहता है। चिंतित व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाता है। उसके मन में तरह-तरह के नकारात्मक विचार आते है। इसलिए कहा जाता है कि चिंतन करना चाहिए, चिंता नहीं। चिंता मनुष्य को तिनके से भी अधिक दुर्बल और कमजोर बना देती है।

**4.** विद्यार्थी स्वयं करें।

**5.** विद्यार्थी स्वयं करें।

### पाठ पर आधारित प्रश्न

**1.** **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—**

(क) वातात् शीघ्रतरं मन: अस्ति।

(ख) तृणात् बहुतरं चिन्ता अस्ति।

(ग) मनुष्य: लोभं हित्वा सुखी भवेत्।
अथवा मनुष्य: लोभं हित्वा सुखी भवति।

(घ) भिषक् आतुरस्य मित्रं भवति/अस्ति।
अथवा आतुरस्य मित्रं भिषक् भवति।

(ङ) पिता खात् उच्चतर: भवति।
अथवा खात् आकाशात् उच्चतर: अस्ति।

(च) माता गुरुतरा भूमे:।
अथवा भूमे: गुरुतरा माता अस्ति।

(छ) गृहे सत: मित्रं भार्या अस्ति।

(ज) आकाशात् उच्चतरं पिता अस्ति।

(झ) मरिष्यत: दानं मित्रं भवति।

(ञ) मन: शीघ्रतरं वातात् चिन्ता बहुतरी तृणात्।

(ट) जन: मानं हित्वा प्रियो भवति।
अथवा मानं हित्वा नर: प्रियो भवति।

(ठ) सत्येन अनृतं जयेत्।

(ड) विदेशे मित्रं सार्थ: अस्ति।

(ढ) सर्वेषु उत्तमं धनं श्रुतम् अस्ति।
अथवा धनानां उत्तम धनं श्रुतम् अस्ति।

(ण) लाभानाम् उत्तमं श्रेय आरोग्य अस्ति।

(त) नर: क्रोधं हित्वा न शोचति।

(थ) लोभं हित्वा सुखी भवेत्।

## अनुवादात्मक प्रश्न

**1. निम्नलिखित श्लोकों का संदर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए—**

**(क) किंस्विद् गुरुतरं .......................................... बहुतरी तृणात।।**

**सन्दर्भ**—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठय पुस्तक हिन्दी के 'संस्कृत खण्ड' के 'जीवन-सूत्राणि' नामक पाठ से अवतरित है। यहाँ यक्ष के द्वारा पूछे गए प्रश्न और युधिष्ठिर द्वारा दिए गए उनके उत्तर का वर्णन है।

**अनुवाद**—

(यक्ष) भूमि से (भी) भारती है? आकाश से (भी) ऊँचा क्या है? वायु से (भी) शीघ्रगोमी कया है? तिनकों से (भी) अधिक (असंख्य) क्या है?

**(ख) किंस्वित् प्रवासो .......................................... मित्रं मरिष्यत:।।**

**अनुवाद**—

(यक्ष) प्रवासी का मित्र कौन है? गृह में निवास करते हुए अर्थात् गृहस्थ का मित्र कौन है? रोगी का मित्र कौन है? और मरने वाले का मित्र कौन है?

(युधिष्ठिर) सहयात्रियों का समूह (कारवाँ) प्रवासी का मित्र है। गृह में निवास करने

वाले अर्थात् गृहस्थ की मित्र पत्नी है। रोगी का मित्र वैद्य है और मरने वाले का मित्र दान है।

**(ग) किंस्विदेक धर्म्यं ........................................ शीलमेकपदं सुखम्।।**

**अनुवाद—**

(युधिष्ठिर) धर्म का मुख्य स्थान उदारता है, यज्ञ का मुख्य स्थान दान है, स्वर्ग का मुख्य स्थान सत्य है। सुख का मुख्य स्थान शील है।

**(घ) धान्यानामुत्तमं ........................................ तुष्टिरुत्तमा।।**

**अनुवाद—**

(युधिष्ठिर) अन्नों में उत्तम (अन्न) चतुरता है। धनों में उत्तम (धन) शासत्र है। लाभों में उत्तम (लाभ) आरोग्य है। सुखों में उत्तम (सुख) संतोष है।

**(ङ) किं नु हित्वा ........................................ सुखी भवेत्।।**

**अनुवाद—**

यक्ष क्या त्यागकर (मनुष्य प्रिय हो जाता है? क्या त्यागकर शोक नहीं करता। क्या त्यागकर धनवान होता है? क्या त्यागकर सुखी हो जाता है।

(युधिष्ठिर) अभिमान छोड़कर (मनुष्य) प्रिय हो जाता है, क्रोध त्यागकर शाक नहीं करता है, कामना (इच्छा) त्यागकर धनवान् होता है और लोभ छोड़कर सुखी हो जाता है।

**2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

(क) जननी और जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

(ख) गङ्गा हिमालयात् निर्गच्छति।

(ग) धीरा: स्वकर्तव्यात् कदापि विचलन्ति न भवन्ति।

(घ) मोहन: सोहनात् अधिक: चतुर: अस्ति।

(ङ) कामात् क्रोध: क्रोधात् सम्मोह: च उद्‌भवति।

(च) धन प्रवसतो मित्रं भवति।

(छ) मम ग्राम: यमुनातटे अस्ति।

(ज) सर्वे भवन्तु सुखिन।

**व्याकरण संबंधी प्रश्न**

**1. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति और वचन बताइए—**

| **शब्द** | **विभक्ति** | **वचन** |
|---|---|---|
| तृणात् | पञ्चमी | एकवचन |
| मित्रम् | द्वितीया | एकवचन |
| प्रिय: | प्रथमा | एकवचन |
| भूमे: | पञ्चमी, षष्ठी | एकवचन |

| | | |
|---|---|---|
| गृहे: | सप्तमी | एकवचन |
| कामम् | द्वितीया | एकवचन |
| वातात् | पञ्चमी | एकवचन |

**2. निम्नलिखित में धातु, लकार, पुरुष और वचन लिखिए—**

| **शब्द:** | **धातु:** | **लकार:** | **पुरुष:** | **वचन** |
|---|---|---|---|---|
| स्यात् | अस् | विधिलिङ् | प्रथम: | एकवचन |
| शोचति | शुच् | लट् | प्रथम: | एकवचन |
| भवेत् | भी | विधिलिङ् | प्रथम | एकवचन |
| मरिष्यत: | मृ | ऌट् | प्रथम | द्विवचन |

**3. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए—**

| | | |
|---|---|---|
| पितोच्चतरस्तथा | = | पिता + उच्चतर: + तथा |
| हित्वार्थवान | = | हित्वा + अर्थवान् |
| पितृणम् | = | पितृ + ऋणम् |
| मात्राज्ञा | = | मातृ + आज्ञा |
| महौषधम् | = | महा + औषधम् |
| गुर्वादेश: | = | गुरु + आदेश: |

## खण्डकाव्य

# 1 तुमुल

**(श्यामनारायण पाण्डेय)**

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (घ) **6.** (ग) **7.** (क) **8.** (ख) **9.** (क) **10.** (घ)।

### अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–**(घ) यदि 'A' असत्य है लेकिन 'R' सत्य नहीं है।

### कूट आधारित प्रश्न

**1. चतुर्थ सर्ग में किसकी चिन्ता का वर्णन किया है?**

**उत्तर–**(क) केवल (i)

**2. लक्ष्मण की दशा देखकर राम के नेत्रों से बहने लगी**

**उत्तर–**(ख) केवल (i)

### रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

**रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

**1. ____________ की मृत्यु के पश्चात रावण बहुत दुःखी हो उठा।**

**उत्तर–**(क) मकराक्ष

**2. ____________ के उपरान्त लक्ष्मण स्वस्थ हो गए।**

**उत्तर–**(ख) उपचार

### सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

**उत्तर–**(ख) (ii) (iii) (iv) (i)

- **कौन-सा ही कथन सही नहीं है?**

**उत्तर–** (i) दशरथ इक्ष्वाकु वंश के शासक थे।

### सत्य/असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए—**

**उत्तर–**(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य (घ) असत्य

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** राम जैसा भ्रातृ वत्सल भाई संसार में कोई दूसरा नहीं है। अपनी इसी भ्रातृ वत्सलता के कारण वे भाई के अमंगल की बात के मस्तिष्क में आने मात्र से व्याकुल हो उठते हैं—

**बैठे कुशासन पर कुटी में,**
**राम पर उन्मन हुए।**
**होने लगे अपशकुन एका-**
**एक चिन्तित-मन हुए।**

वे लक्ष्मण के बिना एकपल भी जीवित नहीं रहसकते; क्योंकि लक्ष्मण बचपन से ही उनके भक्त हैं। उनके तो प्राण ही लक्ष्मण में बसते हैं—

**मैं जी न सकता तुम बिना,**
**तुत बाल भक्त अनन्य हो।**
**हा हन्त! बन्धु-विहीन कैसे**
**अवध जाऊँगा अहो।**
**माता सुमित्रा को बदन कैसे**
**दिखाऊँगा कहो॥**

अपने इसी भ्रातृ-प्रेम के कारण वे लक्ष्मण के रणधीर होने पर भी उसे एक बालक से अधिक नहीं मानते और सब प्रकार से उसकी रक्षा का दायित्व उठाना अपना कर्तव्य मानते हैं। यही कारण है कि वे लक्ष्मण को युद्ध में भेजते समय सभी योद्धाओं से विनय करते हैं कि वे सभीयुद्ध में लक्ष्मण के साथ रहें और उसे अकेला न छोड़ें—

**सब लोग मेरे बन्धु के ही,**
**साथ रहना युद्ध में।**
**रणदक्ष, पर हे बल, दायाँ,**
**हाथ रहना युद्ध में॥**

**2.** 'तुमुल' खण्डकाव्य का प्रतिपाद्य विषय एवं मेघनाद के युद्ध का वर्णन है। 'श्रीरामचरितमानस' के इस प्रसंग को आधार बनाकर ही कविवर श्यामनारायण पाण्डेय ने इस खण्डकाव्य की रचना की है। उन्होंने इस खण्डकाव्य की रचना की है। उन्होंने इस खण्डकाव्य के माध्यम से अन्याय एवं नृशंसता पर आधारित जीवन-पद्धति को अनुचितएवं विफल सिद्ध करते हुए न्याय, दशा, प्रेम तथा सद्‌भावना से युक्त संसकृति की उत्कृष्टता प्रमाणित की है।

इस खण्डकाव्य का प्रयोजन लक्ष्मण के चरित्र की उदात्त विशेषताओं को प्रकाशित करना है। कवि को अपने इस प्रयत्न में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। लक्ष्मण शक्ति के पुंज होते हुए भी शील, विनय एवं सदाचार की मूर्ति हैं। दूसरी ओर मेघनाद शक्तिसम्पन्न तो है, किन्तु उसमें अपनी शक्ति के प्रति अहंकार का भाव विद्यमान है और वह अपनी कामानाओं की पूर्ति के लिए इस

शक्ति का अनुचित प्रयोग करता है। लक्ष्मण की प्रेरणा के स्रोत मर्यादा, सदाचार एवं विनय की मूर्ति श्रीराम हैं। मेघनाद की प्रेरणा का स्रोत अहंकारी, क्रोधी एवं वासनाओं से युक्त व्यक्तित्व वाला रावण है। कवि ने इन दोनों शक्तियों का द्वन्द्व; लक्ष्मण एवं मेघनाद के द्वन्द्व के रूप में दिखलाया है और खण्डकाव्य में यह स्पष्ट किया है कि तामसी और अत्याचारी शक्तियाँ चाहे कितनी भी प्रबल क्यों नहों, उन पर सदाचार की शक्ति ही सदा विजय प्राप्त करती है।

इस खण्डकाव्य का उद्देश्य छात्र-छात्राओं एवं देश की युवा पीढ़ी को लक्ष्मण के त्याग, धैर्य, वीरता, साहस और सदाचार पर आधारित सदगुणों को विकसित करने के लिए उत्साहित करना है।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**1.** इस प्रकार के उत्तर के लिए सभी सर्गों के सारांश को पढ़िए।

**2.** **द्वितीय सर्ग ( दशरथ-पुत्रों का जन्म एवं बाल्यकाल )**—इक्ष्वाकु वंश के प्रबल प्रतापी शासक महाराजा दशरथ के राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चार पुत्र थे। चारों ही इक्ष्वाकु वंश की शोभा बढ़ाने वाले वीर, प्रतापी और तेजस्वी थे। चारों ही अपनी बाल-लीलाओं से सबका मन मोहते थे। महाराजा दशरथ का यश चारों दिशाओं में व्याप्त था। युद्ध में उनकी कोई समता नहीं कर सकता था। राजा दशरथ अपनी कर्त्तव्यपरायणता, दानवीरता तथा युद्धविद्या के लिए सर्वत्र विख्यात थे। वे नीतिज्ञ, धर्मपरायण और लोकसेवक, शान्तिप्रिय शासक थे। उनके राज्य में प्रजा अत्यन्त सुखी थी।

**3.** **तृतीय सर्ग ( मेघनाद )**—कवि ने तृतीय सर्ग में रावण के पुत्र मेघनाद के शौर्य और पराक्रम का ओजस्वी शब्दों में वर्णन किया है। उसने इन्द्र के पुत्र जयन्त को पराजित कर अपनी अजेयता सिद्ध कर दी थी। मेघनाद के नाम से धरती के समस्त वीर योद्धा काँपते थे। वह सूर्य के समान तेजस्वी था।

**4.** **चतुर्थ सर्ग ( मकराक्ष-वध )**—प्रस्तुत सर्ग में कवि ने रावण के पुत्र मकराक्ष के वध तथा रावण के मन की चिन्ताओं का हृदयग्राही वर्णन किया है। रामचन्द्र जी ने अपने तीक्ष्ण बाणों के द्वारा जब मकराक्ष को मार डाला तब रावण उसे याद करके अश्रु बहाने लगा। मकराक्ष बड़ा बलशाली था उसके मरने पर रावण को बहुत दु:ख हुआ। रावण ने उसकी मृत्यु हो जाने पर मेघनाद को युद्ध के लिए भेजा।

**5.** **षष्ठ सर्ग ( मेघनाद-प्रतिज्ञा )**—रावण से आज्ञा लेकर मेघनाद युद्धभूमि की ओर चला। उसने भयंकर गर्जना की। उस गर्जना से स्वयं रावण और उसका स्वर्णमहल भी हिल उठे। रावण के सम्मुख उसने प्रतिज्ञा की कि मैं आपके शत्रुओं का विनाश करके ही युद्धभूमि से लौटूँगा। यदि मैं ऐसा न कर सका तो भविष्य में कभी युद्ध नहीं करूँगा। मैं शत्रुओं को आकाश-पाताल में भी नहीं छोड़ूँगा, अत: आप निश्‍चिंत होकर मेरे पराक्रम को देखें।

**6.** **सप्तम सर्ग ( मेघनाद का अभियान )**—मेघनाद ने युद्धभूमि की ओर प्रस्थान किया जिसे देखकर देवलोक के देवतागण भी चिंतित हो उठे। उसका मुख क्रोध से लाल था और आँखों से मानो चिंगारियाँ निकल रही थीं। उसने यज्ञ किया, युद्ध के लिए रथ सजवाया और बड़े विधि-विधान से रथ पर सवार होकर चल दिया। मेघनाद की भयंकर गर्जना से चारों दिशाएँ कंपित हो गईं। देवतागण राम और लक्ष्मण की कुशलता की कामना करने लगे।

7. **अष्टम सर्ग ( युद्धासन्न सौमित्र )**—लक्ष्मण भी राम की आज्ञा शिरोधार्य कर युद्धभूमि के लिए प्रस्थान करने लगे। उनके साथ हनुमान आदि वीर भी बढ़ चले। थोड़ी ही देर में दोनों योद्धा आमने-सामने आ गए। दोनों में भयंकर युद्ध होने लगा। दोनों में से किसी का भी पराजित होना असम्भव प्रतीत हो रहा था। लक्ष्मण ने मेघनाद के बल-पौरुष की प्रशंसा की और कहा कि मुझे तेरे ऊपर बाण चलाने में संकोच हो रहा है। मैं तुझ जैसे वीर को मारना नहीं चाहता। मेघनाद ने लक्ष्मण के शब्दों को सुना। वह भी लक्ष्मण के ज्ञान और पौरुष को जानता था, पर स्वयं को संयत करके युद्ध करने लगा। लक्ष्मण अपने तीक्ष्ण बाणों के द्वारा मेघनाद को परास्त करने का प्रयत्न करने लगे।

8. **नवम सर्ग ( लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध तथा लक्ष्मण-मूर्च्छा )**—लक्ष्मण के प्रशंसापूर्ण शब्दों को सुनकर मेघनाद कुछ समय के लिए स्थिर हो गया। किन्तु उसे शीघ्र ही अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण हुआ। उसने लक्ष्मण से कहा—''यह बात तो सच है कि तुम मुझे मारना नहीं चाहते, किन्तु मैं अपनी प्रतिज्ञा पर अटल हूँ। मैं युद्ध में तुम्हें परास्त करके ही अपने पिता की आज्ञा और अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करूँगा। आओ मुझसे युद्ध करो।'' मेघनाद की चुनौती को स्वीकार करके लक्ष्मण ने उसके ऊपर बाणों की वर्षा कर दी। लक्ष्मण के बाणों से राक्षस-सेना मैदान में इधर-उधर भागने लगी तब मेघनाद ने उनका साहस बढ़ाते हुए अपने बाणों का केन्द्र लक्ष्मण को बना दिया। दोनों में घमासान युद्ध होने लगा। मेघनाद के बाणों से लक्ष्मण हताहत हो गए। लक्ष्मण ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति से मेघनाद पर प्रहार किया, किन्तु जैसे ही मेघनाद को अवसर मिला उसने लक्ष्मण पर अपनी शक्ति का प्रहार कर दिया। शक्ति के प्रहार से लक्ष्मण मूर्च्छित होकर युद्धभूमि में गिर पड़े। मेघनाद विजयी-मुद्रा में सिंह गर्जना करता हुआ लंका लौट गया।

9. **दशम सर्ग ( हनुमान द्वारा उपदेश )**—प्रस्तुत सर्ग में कवि ने लक्ष्मण मूर्च्छा के उपरान्त वानर सेना में छाई उदासी का सुन्दर चित्रण किया है। लक्ष्मण के मूर्च्छित हो जाने पर वानर सेना में शोक की लहर छा गई। सभी को चिन्ता सताने लगी कि इस मूर्च्छा को कैसे दूर किया जाएगा। राम देखेंगे तो उन पर क्या बीतेगी? वानर सेना की व्याकुलता को दूर करते हुए हनुमान ने उन्हें बड़े प्रेम से नीतिगत बातें बताईं कि यदि तुम लक्ष्मण की मूर्च्छा को अपनी बहुत बड़ी हानि मानोगे और दु:खी होओगे तो शत्रु पक्ष बड़ा प्रसन्न होगा। इसे एक सामान्य घटना मानकर दु:ख मत करो। हनुमान के इस उपदेश से वानर सेना की व्याकुलता दूर हो गई। वे ऐसा प्रदर्शन करने लगे जैसे कुछ हुआ ही न हो। उधर राम के हृदय में अकस्मात् ही शोक की लहरें उठने लगीं। वे कुछ चिन्तित से अपनी कुटी में बैठे रहे।

10. **राम विलाप और सौमित्र का उपचार**—प्रस्तुत सर्ग अपनी मार्मिकता में सर्वश्रेष्ठ है। यह सम्पूर्ण खण्डकाव्य के मूल विषय का केन्द्र है। राम के हृदय की व्याकुलता करुणा को उत्पन्न करके पाठकों को उद्वेलित करने में सक्षम है। उनको साधारण मनुष्य की भाँति विलाप करते हुए देखकर सभी वानर मण्डली का मन द्रवित हो गया। हनुमान द्वारा शीघ्र लंका से वैद्य सुषेण को लाया गया। वैद्य ने संजीवनी द्वारा मूर्च्छा टूटने की बात कही। तब हनुमान संजीवनी के लिए हिमालय गए और पूरे पर्वत को ही उखाड़कर युद्ध स्थल पर ले आए। उपचार के उपरान्त लक्ष्मण स्वस्थ हो गए। राम तथा वानर सेना में खुशी एवं उत्साह की लहर छा गई।

11. **विभीषण की मन्त्रणा**—वानर सेना युद्ध की तैयारी में व्यस्त थी। सब रामचन्द्र जी के पास बैठे

आगे की रणनीति पर विचार कर रहे थे कि तभी विभीषण ने राम को आकर सूचना दी कि मेघनाद यज्ञ कर रहा है। उसका यह यज्ञ पूर्ण होने पर फिर वह किसी के द्वारा नहीं मारा जा सकता। लक्ष्मण को तुरन्त उससे युद्ध करके उसे मार देना चाहिए। विभीषण की बात सुनकर राम ने लक्ष्मण को मेघनाद-वध करने की आज्ञा दे दी। लक्ष्मण ने सहर्ष राम की आज्ञा का पालन करना उचित समझा और युद्ध में मेघनाद को मारने की प्रतिज्ञा करके प्रस्थान किया।

**12. चतुर्दश सर्ग ( मख-विध्वंस और मेघनाद-वध )**—लक्ष्मण वानर सेना के साथ शीघ्र उस स्थल पर जा पहुँचे, जहाँ पर मेघनाद यज्ञ कर रहा था। लक्ष्मण ने मेघनाद को ललकारते हुए उसे युद्ध की चुनौती दी और बाणों की वर्षा आरम्भ कर दी। लक्ष्मण के प्रहारों से मेघनाद के शरीर से इतनी रक्त की धारा बही, जिसने यज्ञ की अग्नि को बुझा दिया। मेघनाद ने लक्ष्मण के इस प्रकार युद्ध करने को अनुचित कहा। वानरों ने लक्ष्मण का साथ देकर यज्ञ स्थल को छिन्न-भिन्न कर दिया। इससे मेघनाद क्रुद्ध हो उठा और लक्ष्मण पर वार करने को पलटा। लक्ष्मण ने अपने तीक्ष्ण बाणों से कुछ ही समय में मेघनाद का अन्त कर दिया। उस समय आकाश से देवगणों ने फूल बरसाए। इस प्रकार यज्ञ भूमि में ही मेघनाद का प्राणान्त कर लक्ष्मण ने राम का मनोरथ पूर्ण किया।

**13. पञ्चदश सर्ग ( राम की वन्दना )**—मेघनाद का प्राणान्त कर लक्ष्मण वानर सेना सहित राम के पास लौट आए। विभीषण ने राम को मेघनाद-वध का समाचार दिया। इस समाचार से राम बड़े प्रसन्न हुए, उन्होंने कहा कि मैं जानता था मेघनाद को केवल लक्ष्मण ही मार सकता है। यज्ञ विध्वंस और मेघनाद वध का समाचार सुनकर रावण अश्रुसिक्त नयनों से विलाप करने लगा। लक्ष्मण ने राम के चरणों में अपना सिर झुकाया और राम की वन्दना में मुख से ये शब्द उचारे—''हे राम! जिस पर आपकी कृपा हो जाती है, वह जग-विजेता हो जाता है। यह सब आपकी अनुकम्पा का ही फल है।''

**14.** कवि श्यामनारायण पाण्डेय कृत 'तुमुल' खण्डकाव्य के नायक 'लक्ष्मण' और प्रतिनायक मेघनाद हैं। लक्ष्मण में एक श्रेष्ठ नायक के अनेक गुण विद्यमान हैं। खण्डकाव्य का सम्पूर्ण कथानक उनके चारों ओर ही केन्द्रित है। लक्ष्मण की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार है—

**1. सौन्दर्य के आगार**—लक्ष्मण का व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक है। वे रघुकुल की शोभा बढ़ानेवाले तथा अपनी उपस्थिति से सर्वत्र निराली छटा बिखेरनेवाले मनोहर राजकुमार हैं। शैशवकालमें वेऐसे प्रतीत होते हैं, मानो समुद्र-मंथन से निकले एक रत्न हो। इस सन्दर्भ में कवि ने लिखा है—

**माता सुमित्रता को मिला था, एक लाल अमूल्य ही।**

लक्ष्मण के सौन्दर्य को सब देखते ही रह जाते हैं। वे जब बोलते हैं तो अत्यन्त मधुर तथा कर्णप्रिय संगीत कानों में घोल देते हैं। कवि ने उनके सौन्दर्य की प्रशंसा इस प्रकार की हैं—

**थी बोल में सुन्दर सुधा, उर में दया का वास था।**
**था तेज में सूरज, हँसी मेंचाँद का उपहास था।**

लक्ष्मण सचमुच ही सौन्दर्य अथवा क्रान्ति के प्रतीक हैं। स्वयं मेघनाद भी उनके रूप पर विमोहित हो जाता है। वह उन्हें 'लावण्यधारी ब्रह्मचारी' कहकर उनके सौन्दर्य की प्रशंसा करता है।

**2. शीलवान**—लक्ष्मण का बाह्य शरीर जितना आकर्षक तथा सुन्दर है, उतना ही उनका अन्त:करण भी सरल, शुद्ध तथा कोमल है। लक्ष्मण में उदारता, कोमलता तथा स्वाभाविकता के गुण विद्यमान हैं। वे अपने भाई राम के प्रति अटूट श्रद्धा रखते हैं। उन पर राम की भी असीम कृपा रहती है। वे राम के भक्त,अनुचर एवं सखा हैं। उनके चरित्र में कृत्रिमता नहीं है। यदि उदारता का गुण उनमें है तो यह गुण उनकी प्रत्येक अवस्था में परिलक्षित होता है। मेघनाद को युद्धस्थल मेंदेखकर लक्ष्मण के हृदय में जो दया या कोमलता का भाव उत्पन्न होता है, वह उनका जन्मजात गुण है।

**3. शक्ति के पुंज**—लक्ष्मण शीलावान, उदार, दयालु और आज्ञाकारी हैं, तथापि उनमें पराक्रम, शक्ति, साहस, उत्साह तथा वीरता की भावना भी कूट-कूटकर भरी हुई है। लक्ष्मण धीर, वीर, तथा साहसी योद्धा हैं। युद्धक्षेत्र में शत्रु को ललकारने, भीषण युद्ध करने तथा विजय-पताका फहराने में उनके शौर्य को देखा जा सकता है। शौर्य तथा शक्ति का गुण भी लक्ष्मण को बाल्यकाल से ही प्राप्त हुआ है। लक्ष्मण अपने युद्ध-कौशल तथा वीरता को युद्ध क्षेत्र में ही प्रदर्शित करते हैं। वे रणोन्मत होकर शत्रु को परास्त करने में ही अपना कर्तव्य मानते हैं। कवि ने लिखा भी है—

**सौमित्रि को घननाद का रव, अल्प भी न सहा गया।**
**निज शत्रु को देखे बिना, उनसे न तनिक रहा गया।**

युद्धमें शत्रु के मनोभावों को भली-भाँति पहचानने में लक्ष्मण अत्यन्त कुशल हैं। वेयुद्धमें मेघनपाद की गर्वोक्ति को सुनकर इस प्रकार कहते हैं।

**सच है सुधामय भारती से, खल सुधरते हैं नहीं।**
**क्या क्षीर पाने पर फणी, विष त्याग देते हैं कहीं?**

लक्ष्मण के शौर्य तथा पराक्रम को देखकर स्वयं राम इस प्रकार कहते हैं—

**मैं जानता था मार सकते हो तुम्हीं घननाद को।**

**4. मानवीय गुणों के भण्डार**—लक्ष्मण मानवीय गुणों के भण्डार हैं। कवि के शब्दों में—

**निशदिन क्षमा में क्षिति बसी, गम्भीरता में सिन्धु था।**
**था धीरता में अद्रि, यश में खेलना शरन्दि था।।**

वस्तुत: लक्ष्मण अनेक गुणों से विभूषित हैं। नायक होने के लिए आवश्यक सभी गुण उनमें पूर्णतया विद्यमान हैं।

**15.** कवि श्यामनारायण पाण्डेय विरचित 'तुमुल' खण्डकाव्य में 'मेघनाद' को प्रतिनायक के रूप में चित्रित किया गया है। मेघनाद तेजस्वी, पराक्रमी तथा वीर योद्धा। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है—

**1. तेजस्वी व्यक्तित्व**—मेघनाद तेजस्वी व्यक्तित्व का युवक है। उसके मुखमण्डल पर ऐसा ओज है,जो बड़े-बड़े वीरों को एक टक देखने के लिए विवश कर देता है। उसके तेजस्वी रूप को देखकर सभा में बैठे हुए अन्य वीरों की दशा का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है—

**जो वीर थे बैठे वहाँ वे, टक-टक लखने लगे।**

उन्नत ललाट, अतुलित पराक्रम, सिंह-गर्जना आदि गुण मेघनाद के व्यक्तित्व को

अधिक तेजस्वी बनाते हैं। युद्धस्थल में स्वयं लक्ष्मण भी मेघनाद के ऊँचे मस्तक, विशाल नेत्र और केहरी जैसी कमर हो देखकर क्षणभर के लिए विस्मित हो जाते हैं।

**2. अतुल पराक्रमी**—मेघनाद के पराक्रम को राम, लक्ष्मण तथा अन्य वीर भी स्वीकार करते हैं। उसने युद्ध में इन्द्र को भी परासत किया है। रावण को तो अपने पुत्र मेघनाद के पराक्रम पर अत्यधिक भरोसा है। मकराक्ष की मृत्यु का बदला लेने के लिए रावण केवल मेघनाद को उपयुक्त मानता है और कहता है—

**हे तात, तेरी शक्तियों का अन्त है मिलता नहीं।**
**घमासान में भी पुत्र तेरा, बाल तक हिलता नहीं।**

युद्धक्षेत्र की ओर जाते हुए मेघनाद के पराक्रम के सम्मुख धरती काँप उठती है। वृक्ष अपने आप गिरने लगते हैं और बड़े-बड़े धैर्यशाली वीरों का कलेजा दहलने लगता है।

**3. परम उत्साही एवं दृढ़-प्रतिज्ञ**—मेघनाद के मन में मकराक्ष की मृत्यु का बदला लेने तथा लक्ष्मण से युद्ध करने के लिए उत्पन्न परम उत्साह एवं साहस को देखकर सम्पूर्ण पृथ्वी काँप उठती है। रावण भी अपने पुत्र के साहस को जानकर कहता है—

**मम सुत षडाननसे नहीं है, युद्ध में डरता कभी।**

**4. पितृभक्त तथा विवेकी वीर**—मेघनाद अपने पिता रावण के प्रति पूर्ण भक्ति रखता है। वह अपने पिता को चिन्तामग्न देखकर स्वयं भी व्याकुल हो जाता है। अपने पिता को धैर्य प्रदान करनेके लिए वह गर्वोक्ति करता है। वह कहता है कि मैं सिंह के समान युद्ध में उठूँगा और संग्राम में विजयी होकर रहूँगा। मेघनाद परिस्थिति को समझनेवाला विवेकी वीर है। लक्ष्मण द्वारा अपने व्यक्तित्व की प्रशंसा सुनकर भी वह अपने निश्चय से विचलित नहीं होता और युद्ध करने के लिए ही तत्पर रहता है। मेघनाद लक्ष्मण से कहता है—

**अतएव मानूँगा नहीं, सन्नद्ध अब हो जाइए।**
**हे वीरवर! मेरी विनय से, बद्ध अब हो जाइए।**

**5. आत्मविश्वासी तथा अभिमानी**—मेघनाद को अपने पराक्रम, शौर्य तथा युद्ध-कौशल पर पूर्ण विशवास है कि वह युद्ध में लक्ष्मण को परासत करेगा और वह ऐसा करके दिखाता भी है। पिता के सम्मुख भी मेघनाद का यही आत्मविश्वास झलक उठता है। उसकी गर्वोक्तियों को सुनकर तो सब भयभीत हो जाते हैं। लक्ष्मण की बात को वह ध्यानपूर्वक सुनकर व्यंग्यभरी हँसी हँसता है। ऐसा करने में वह अपने आत्मविश्वास तथा अभिमान को प्रकट करता है। कवि ने इस भाव का चित्रण इस प्रकार किया है—

**जो-जो कहा उसको उन्होंने, ध्यान से तो सुन लिया।**
**पर गर्व से घननाद ने, सौमित्रि को लख हँस दिया।**

**6. यज्ञनिष्ठ एवं शील-सम्पन्न**—मेघनाद राक्षस-वंश से सम्बन्धित है, फिर भी वह यज्ञ-अनुष्ठान आदि कर्मों को करनेवाला है। वह युद्ध से पूर्व यज्ञ करता है। यज्ञ-वेदी पर लक्ष्मण के बाणों से घायल होने पर भी वह यज्ञ को अधूरा नहीं छोड़ता। वह क्षणभर में ही विभीषण द्वारा उत्साहित लक्ष्मण के आक्रमण के रहस्य को जान लेता है, फिर भी वह अपने शील स्वभाव के कारण लक्ष्मण के कृत्य की ओर संकेत करता हुआ कहता है—

**सम्मुख समर में हारने पर, यह नया संग्राम है।**
**योधा न कर सकता कभी, इतना घृणास्पद काम है।**

इस प्रकार कवि ने मेघनाद के चरित्र और उसके वीर रूप का चित्रण इस प्रकार किया है कि वह काव्य की गरिमा से परिपूर्ण हो उठा है।

**16.** 'तुमुल' खण्डकाव्य कथा का आधार यद्यपि राम-रावण युद्ध ही है, तथापि इसमें राम के चरित्र पर बहुत अधिक प्रकाश नहीं डाला गया है। वे युद्ध के प्रणेता अवश्य हैं, किन्तु विजयेच्छा के साधक उनके अनुज लक्ष्मण हैं। खण्डकाव्य के 15 सर्गों में से केवल तीन सर्गों में उनके चरित्र-चित्रण का प्रयास लेखक द्वारा किया गया है। खण्डकाव्य में हम उनके चरित्र का मूल्यांकन निम्नांकित बिन्दुओं के अन्तर्गत कर सकते हैं—

**1. अधीर**—राम को अन्य काव्यों मेंभले ही धीरे-वीर के रूप में चित्रितकिया गया है, किन्तु कवि श्यामनारायण पाण्डेय ने उनके अधीर रूप का चित्रण ही यहाँ किया है। वे सदैव युद्ध में लक्ष्मण की विजय और कुशलता के प्रति शंकित और व्याकुल रहते हैं। उनकी अधीनता को कवि ने स्वयं राम के मुख से इस रूप में व्यक्त किया है—

**जाता क्यों न धरा है धीर,**
**नयनों से क्यों झरता नीर।**
**होता जाता दृश्य उदास,**
**कैसा आता है उच्छ्वास।।**

उनकी अधीनरता को उस समय चरम पर पहुँच जाती है, जब वे अनुज लक्ष्मण को मूर्च्छित अवस्था में देखकर स्वयं धरती पर गिर पड़ते हैं और विलाप करने लगते हैं—

**रघुवर देख बन्धु का हाल,**
**गिरे धरातल पर तत्काल।**
**लगे विलपने हुए अधीर,**
**बहे दृगों से झर-झर नीर।।**

**2. अति सामान्यजन**—राम को एक सामान्यजन के रूप में प्रस्तुत खण्डकाव्य में निरूपित किया गया है। अपने भाई लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर वे साधारण मनुष्य की भाँति फूट-फूटकर विलाप करने लगते हैं और स्वयं को असहाय अनुभव करने लगते हैं—

**हा, क्या कहूँ, कैसे जगाऊँ,**
**प्रार्थना किसकी करूँ।**
**मुँह तक, कलेजा आ रहा है,**
**क्या करूँ,कैसे मरूँ।।**

**3. अद्वितीय भ्रातृ वत्सल**—राम जैसा भ्रातृ वत्सल भाई संसार में कोई दूसरा नहीं है। अपनी इसी भ्रातृ वत्सलता के कारण वे भाई के अमंगल की बात के मस्तिष्क में आने मात्र से व्याकुल हो उठते हैं—

**बैठे कुशासन पर कुटी में,**

**राम पर उन्मन हुए।**
**होने लगे अपशकुन एका-**
**एक चिन्तित-मन हुए।**

वे लक्ष्मण के बिना एकपल भी जीवित नहीं रहसकते; क्योंकि लक्ष्मण बचपन से ही उनके भक्त हैं। उनके तो प्राण ही लक्ष्मण में बसते हैं—

**मैं जी न सकता तुम बिना,**
**तुत बाल भक्त अनन्य हो।**
**हा हन्त! बन्धु-विहीन कैसे**
**अवध जाऊँगा अहो।**
**माता सुमित्रा को बदन कैसे**
**दिखाऊँगा कहो।।**

अपने इसी भ्रातृ-प्रेम के कारण वे लक्ष्मण के रणधीर होने पर भी उसे एक बालक से अधिक नहीं मानते और सब प्रकार से उसकी रक्षा का दायित्व उठाना अपना कर्तव्य मानते हैं। यही कारण है कि वे लक्ष्मण को युद्ध में भेजते समय सभी योद्धाओं से विनय करते हैं कि वे सभीयुद्ध में लक्ष्मण के साथ रहें और उसे अकेला न छोड़ें—

**सब लोग मेरे बन्धु के ही,**
**साथ रहना युद्ध में।**
**रणदक्ष, पर हे बल, दायाँ,**
**हाथ रहना युद्ध में।।**

**4. अनीति के पोषक**—'तुमुल' खण्डकाव्य में कवि श्यामनारायण पाण्डेय ने राम को अनीति के पोषक के रूप में चित्रित किया है। नीति कहती है कि युद्ध में निहत्थे पर और छिपकर वार नहीं करना चाहिए और राम ने नीति के विरुद्ध यही सब किया। उन्होंने यज्ञ करते मेघनाद का वध करनेकी आज्ञा लक्ष्मण को दे दी और अपने मन में यह भी नहीं सोचा कि उनके इस कृत्य से रघुवंश पर लगे कलंक को किसी प्रकार धोया न जा सकेगा। मेघनाद ने उनके इस दुष्कृत्य की इन शब्दों में भर्त्सना की—

**इस कार्य से रघुवंश मेंजो,**
**कालिमा है लग रही।**
**उसको न घन भी धो सकेगा,**
**भारत नत होगी मही।।**

**5. सर्वज्ञ**—कवि पाण्डेय ने राम को यद्यपि साधारण मनुष्य के रूप में चित्रित किया है, तथापि 'राम की वन्दना' सर्ग में उन्होंने उनके अवतारी रूप की उपासना की है और सर्वज्ञ बताया है। उन्होंने साधारण मनुष्य के रूप में जो आचरण किया वह सब उनकी लीला थी, अन्यथा उन्हें 'सम्पूर्ण वृत्तान्त पहले से ज्ञात था, फिरभी वे अनजान बने रहें—

**भगवान् के पद छू सभी ने,**
**प्रति से वन्दन किया।**

**मंगल समझकर राम नेभी,**
**अमित अभिनन्दन किया।।**
**सब जानते भी राम बोले,**
**युद्ध का क्या वृत्त है।**
**कोई मुझे जल्दी बता दें,**
**व्यग्र होता चित्त है।।**

**6. भावुक हृदय**—राम यद्यपि सर्वज्ञ है, फिर भी स्वयं पर नियन्त्रण नहीं रख पाते और भावनाओं में बह जाते हैं। लक्ष्मण मेघनाद को मारकर युद्ध जीत आए हैं और यह विजय उन्हें सहज ही प्राप्त हो गई है, विभीषण के मुख से यह समाचार सुनकर भगवान् राम भावुक हो उठते हैं। वे पहले लक्ष्मण की पीठ ठोकते हैं और फिर सिर पर आशीर्वाद का हाथ फेरते हैं। इसके पश्चात लक्ष्मण का मुख अपलक देखते हुए उनकी आँखों से आँसू निकल आते हैं और इस भावावेश मेंवे अपने मुख से कुछ भी नहीं कह पाते—

**सौमित्रि-मुख की ओर अपलक,**
**देखते ही रह गए।**
**बोले, मगर पहले हृदय के,**
**भाव दृग से बह गए।।**

**7. वीराग्रणी**—राम वीरों में अग्रणी वीर हैं। कवि ने स्वयं उनके लिए वीराग्रणी शब्द का प्रयोग किया है—

**वीराग्रणी रघुनाथ के जो,**
**प्राण का आधार है।**

जो सच्चा वीर होता है, वही दूसरों की वीरता का सम्मान करता है और उसे उसकी वीरता का श्रेय भी देता है। यही गुण राम में है। लक्ष्मण ने मेघनाद को मारकर युद्ध जीता है, इसका पूर्ण श्रेय वह उन्हें देते हुए कहते हैं कि तुमने जो कठिन लड़ाई लड़ी है, उसके बाद तो मेरे लड़ने के लिए अब कुछ रह ही नहीं गया है, अर्थात् तुमने तो एक प्रकार से मेरा कार्य ही समाप्त कर दिया है। इस लड़ाई को तुम्हारे अलावा और कोई नहीं लड़ सकता था—

**तुमने विजय पाई, तुम्हारी,**
**मैं बड़ाई क्या करूँ।**
**तुमने लड़ाई की कठिन, अब**
**मैं लड़ाई क्या करूँ।**
**मैं जानता था मार सकते हो**
**तुम्हीं घननाद को।**

इस प्रकार कवि ने राम के चरित्र-चित्रण में नवीन और प्राचीन दोनों ही दृष्टियों का समावेश करते हुए उनके चरित्र की अविवादिता से रक्षा करते हुए जहाँ उन्हें एक साधारण मनुष्य के रूप में चित्रित किया है; वहीं उनके दिव्य, अलौकिक अवतारी रूप की वन्दना करके उनके ईश्वरत्व को भी स्वीकार किया है।

## मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  **इक्ष्वाकु वंश ................................ सुखी थी।**

  (i) इक्ष्वाकु वंश के प्रबल प्रतापी शासक महाराजा दशरथ के राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चार पुत्र थे।

  (ii) चारों ही अपनी बाल–लीलाओं से सबका मन मोहते थे।

  (iii) राजा दशरथ अपनी कर्त्तव्यपरायणता, दानवीरता तथा युद्धविद्या के लिए सर्वत्र विख्यात थे।

## केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद (केस/स्रोत) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  **वानर सेना .............................. प्रस्थान किया।**

  (i) विभीषण ने राम को आकर सूचना दी कि मेघनाद यज्ञ कर रहा है।

  (ii) विभीषण की बात सुनकर राम ने लक्ष्मण को मेघनाद–वध करने की आज्ञा दे दी।

  (iii) लक्ष्मण ने सहर्ष राम की आज्ञा का पालन करना उचित समझा और युद्ध में मेघनाद को मारने की प्रतिज्ञा करके प्रस्थान किया।

# 2 मातृभूमि के लिए

**(डॉ० जयशंकर त्रिपाठी)**

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (ग) **6.** (क)।

## अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–**(क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

## रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**
  **भारतीयों पर —————— के अत्याचार बहुत समय से होते आ रहे थे।**

**उत्तर–**(ख) अंग्रेजों के

## सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

**उत्तर–**(क) (ii) (iv) (i) (iii)

## सत्य/असत्य

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए**

**उत्तर–**(क) सत्य (ख) असत्य (ग) असत्य (घ) असत्य

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1. सतत जागरूक क्रान्तिकारी**—यद्यपि आजाद महात्मा गांधी की अहिंसक नीतियों से अधिक प्रभावित थे, तथापि जलियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड कोदेखकर तथा अंग्रेजों की अत्याचारपूर्ण हिंसक नीतियों को देखकर चन्द्रशेखर 'आजाद' का विशवास भी हिंसक क्रान्ति में बदल गया था। उनका कहना था—

**सम्मान हेतु लड़ना होगा, आजाद राष्ट्र करना होगा।**
**यह प्रश्न चुनौती जीवन की, जीना होगा, मरना होगा।।**

वे अपने इन कार्यों को करते हुए अत्यधिक सचेत रहते थे। उन्होंने गोलियाँ चलाईं, बम बनाए तथा अंग्रेजों को मौत के घाट उतारा। पुलिस सदैव उनके पीछे रहती थी। वे तरह-तरह के वेश बदलकर पुलिस को चकमा देने में प्रवीण थे।

**2. अमर बलिदानी**—चन्द्रशेखर 'आजाद' ने जो भी संकल्प किया, उसे पूरा कर दिखाया। आजाद के शौर्य एवं पराक्रम की प्रशंसा अंग्रेज भी करते थे। उन्होंने शत्रु को कभी पीठ नहीं दिखाई। अल्फ्रेड पार्क में पुलिस से घिर जाने पर भी आजाद ने डटकर उनका सामना किया। जीते-जी वे अंग्रेजों की पकड़ में नहीं आना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने पिस्तौल की अन्तिम गोली अपनी कनपटी पर दाग ली। वे इतने निडर थे कि मृत्यु की गोद में सो जाने पर भी अंग्रेज अफसर उनके समीप जाने का साहस नहीं कर सका। कवि ने इस दृश्य का वर्णन इस प्रकार किया है—

**गिर पड़ा वीर, पर हिम्मत थी, आने की पास नहीं उनकी।**
**कहते थे जीवित होगायह, क्या जाने गोली कब खनकी।।**

कवि ने आजाद के सम्पूर्ण जीवन को न लेकर इस खण्डकाव्य में कुछ ऐसे प्रेरक-प्रसंगों को स्थान दिया है, जिनसे राष्ट्र की भावी पीढ़ी को उन उदात्त आदर्शों की प्रेरणा प्राप्त हो सके। राष्ट्र-प्रेम के एक आदर्श को कवि ने इस रूप में व्यक्त किया है—

**स्वाभिमानहित देश के, लड़ता है जो वीर।**
**विजय, मृत्यु में एक को, लेता है आखीर।।**

इस प्रकार कवि ने आजाद के चरित्र का चित्रण युवा पीढ़ी को उनके आदर्शों से प्रेरणा लेने हेतु किया है और यही इस खण्डकाव्य का उद्देश्य भी है।

## मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  **भारतीयों पर .............................. कूद पड़े।**

(i) गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन द्वारा विरोध करना शुरू कर दिया था।

(ii) भारत की स्वतन्त्रता के लिए जनता में आक्रोश पनप रहा था।

(iii) चन्द्रशेखर ने प्रारम्भ से ही भारत माता की सेवा करने का व्रत ले लिया और बाल्यकाल में ही स्वतन्त्रता–संग्राम में कूद पड़े।

### केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद (केस/स्रोत) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**कुछ समय .............................. तय करूँगा।**

(i) कुछ समय बाद फूलबाग में एक नेता भाषण करने के लिए आए।

(ii) उनका भाषण सशस्त्र क्रान्ति के विरुद्ध था।

(iii) आजाद उस भाषण से उत्तेजित हो रहे थे।

## 3 कर्ण

**(केदारनाथ मिश्र 'प्रभात')**

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ख) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (क) **6.** (क) **7.** (क) **8.** (घ) **9.** (क) **10.** (क) **11.** (ख)।

### अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–**(ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

### चित्र आधारित प्रश्न

- **कवच और कुण्डल को दान करने में महाभारत के युद्ध को किस प्रकार प्रभावित किया और यदि कर्ण ऐसा नहीं करता तो क्या महाभारत के युद्ध का परिणाम किसी भी प्रकार के अलग हो सकता था?**

**उत्तर–**कवच और कुंडल दान करनेसे महाभारत के युद्ध में कौरवों का पलड़ा हल्का हो गया। इससे अर्जुन को कर्ण के वध का मार्ग मिल गया। इससे कौरवों की पराजय निशिचत हो गई।

यदि कर्ण ऐसा नहीं करता, तो भी महाभारत के युद्ध का परिणाम अलग नहीं होता। चूँकि कर्ण अधर्म का साथ दे रहा था, इसलिए अंत में उसके कवच कुंडल उसी प्रकार निष्प्रभावी हो जाते, जिस प्रकार होलिका का वरदान निष्प्रभावी हो गया था।

## कूट आधारित प्रश्न

**1. 'कर्ण' खण्डकाव्य का नायक है**

**उत्तर–**(घ) केवल (iv)

**2. युद्ध में कर्ण के रथ का पहिया धँस गया**

**उत्तर–**(ख) केवल (ii)

## रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

  **पाण्डव ——— सब कुछ हारकर जंगलों में भटकने लगे।**

**उत्तर–**(ख) जुए में

## सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

**उत्तर–**(ग) केवल (iii)

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' कृत 'कर्ण' खण्डकाव्य का नायक स्वयं कर्ण है। कर्ण की चरित्रगत विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है—

**1. सुन्दर, आकर्षक एवं तेजवान**—कर्ण सूर्य से उत्पन्न कुन्ती का पुत्र है। उसके भव्य मुखमण्डल पर अपूर्व तेज विद्यमान है। वह गुदड़ी में लाल की तरह चमकनेवाला है। जब हधिकरथ सूत ने उसे गंगा से निकाला था, तब उसे भी कर्ण के तेजस्वी व्यक्तित्व का ज्ञान नहीं था। कवि ने कर्ण के तेजयुक्त मुख की प्रशंसा इस प्रकार की है—

**अधिरथ को क्या ज्ञात कि उसनेकौन रत्न पाया है।**
**वह क्या जाने तेज सूर्य का उसके घर आया है।**

कुन्ती जब कर्ण के पास जाती है,तब वह भी अपने पुत्र को शोभा को देखती ही रह जाती है। कवि ने कर्ण की छटा का वर्णन करते हुए लिखा है—

**एक सूर्य था उगा गगन में ज्योतिर्मय छवि मान।**
**और दूसरा खड़ा सामने पहले का उपमान।।**

**2. शीलवान् तथा विनम्र**—कर्ण अपमानित होकर भी दूसरों के सममुख अशिष्ट तथा असंयत नहीं होता। वह अपने भाग्य को कोसता है, किन्तु किसी बड़े-छोटे व्यक्ति की निन्दा नहीं करता। भीष्म पितामह द्वारा अधम, नीच तथा यूत-पुत्र कहे जाने पर भी वह उन्हें कोई उत्तर नहीं देता। माता कुन्ती को भी वह हाथ जोड़कर प्रणाम करता है। श्रीकृष्ण से अपनी दृढ़-प्रतिभा की बात भी वह मधुरवचनों में ही कहता है।

**3. महादानी, किन्तु अहंकारी**—कर्ण अपनी दानशीलता के लिए प्रसिद्ध है। अपने प्राणों को संकट में डालकर भी वह ब्राह्मण वेश में आए कपटी इन्द्र को अपनेकवच-कुण्डल दान में देता है। कर्ण कहता भी है कि ब्राह्मण द्वारा माँगने पर वह अपने हाथों को पीछे नहीं खींच सकता है—

**ब्राह्मण माँगे दान, कर्ण लौटा दे उसे निराश।**
**फिर उसकी बातों पर जग को क्यों होगा विश्वास?**

कर्ण कपट-वेशधारी इन्द्र से पूछता है कि वह उसे हाथी, घोड़े, स्वर्ण अथवा सिंहासन आदि में से क्या दान में दें? वह कहता है कि भले ही धरती काँप उठे, आकाश फटने लगे; किन्तु कर्ण अपनी दानशीलता से पीछे नहीं हट सकता—

**चाहे पलट जाए पल भर में महाकाल की धारा।**
**वीर कर्ण का किन्तु न झूठा हो सकता प्रण प्यारा॥**

कर्ण की दानशीलता वस्तुत: अतुलनीय है, किन्तु उसकी अहंकारिता उसके इस महागुण का निग्रहण कर लेती है। कवि ने इसका वर्णन करते हुए कहा है—

**सत्य कि तुम थे कर्मवीर बल वीर धर्मधारी भी।**
**ज्ञानी और महादानी पर महा अहंकारी थी।**

**4. जन्म से तिरस्कृत, किन्तु धैर्यवान**—कर्ण का जन्म कुन्ती की कौमार्यावस्था में हुआ था। लोकलाज के कारण कुन्ती ने उसे गंगा में बहा दिया। अधिरथ सूत के यहाँ उसका लालन-पालन होने से वह सूत-पुत्र कहलाया। कुन्ती द्वारा समय पर इस रहस्य को न खोलने से कर्ण को प्रारम्भ से अन्त तक अपमान का घूँट पीना पड़ा। अपने इस तिरस्कृत जीवन की दु:खभरी कहानी कर्ण स्वयं श्रीकृष्ण के सम्मुख कहता है—

**घृणा, अनादर, तिरस्क्रिया, यही मेरी करुणा कहानी।**
**देखो, सुनो, कृष्ण! क्या कहता इन आँखों का पानी॥**

स्वयंवर में स्वयं द्रौपदी भी कर्ण का अपमान करती है—

**सूतपुत्र के साथ न मेरा गठबन्धन हो सकता।**
**क्षत्राणी का प्रेम न अपने गौरव को खो सकता॥**

युद्धभूमि में भीष्म ने भी कर्ण का सहयोग न लेने का प्रण दोहराया और कहा—

**कुरुसेना में हैं अनेक बलवीर और बलिदानी।**
**किन्तु कर्ण ही अधिरथी है, एक नीच अभिमानी।**

अनेक व्यक्तियों से विभिन्न अवसरों पर अपमानित होने पर भी कर्ण नेअपना धैर्य नहीं खोया। वह परमवीर, रणकुशल तथा आत्मविशवासी था। यही कारण है कि उसने अपने इन शत्रुओं से डटकर बदला लिया। उसके साथ छल-कपट भी किया गया। कवच-कुण्डल दानमें देकर भी किया गया। कवच-कुण्डल दान में देकर भी वह अत्यन्त धैर्यवान् बना रहा।

**5. दृढ़-प्रतिज्ञ एवं कृतज्ञ**—पाण्डवों द्वारा अपमानित किए जाने पर केवल दुर्योधन ने ही कर्ण का सत्कार किया था। कर्ण ने दुर्योधन के इस उपकारको कभी नहीं भुलाया। वह आजीवन दुर्योधन के साथ ही रहा। श्रीकृष्ण तथा कुन्ती के समझाने पर भी उसने दुर्योधन का साथ नहीं छोड़ा। सम्राट-पद का लोभ और भाइयों का प्रेम भी उसे अपने निश्चय से नहीं डिगा सका। वह कहता भी है—

**मैं कृतज्ञ हूँ दुर्योधन का, उपकारों से हारा।**

**राजपाट उसके चरणों पर, चुप धर दूँगा सारा।।**

कर्ण अपनी प्रतिज्ञा पर अटल बना रहता है। वह अर्जुन को युद्ध में मार डालने की प्रतिज्ञा करता है। शर-शय्या पर पड़े हुए भीष्म भी कर्ण को भाइयों केप्रति प्रेम करने का उपदेश देते हैं, किन्तु कर्ण अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहता है। वह यही कहता है कि युद्ध में अर्जुन की गर्दन मेरे बाणों पर अवश्य लटकेगी।

**6. परमवीर एवं साहसी**—महाभारत के समस्त बलशाली वीरों में अकेला कर्ण ही ऐसा साहसी वीर है, जिसके शौर्य की शत्रु भी प्रशंसा करते हैं। सत तो यह है कि युद्ध-क्षेत्र में ईमानदारी से उसके सम्मुख कोई भी नहीं डट सकता था। इसीलिए कवि ने उसके विषय में कहा है—

**'भीष्म, द्रोण, कृपा, अश्वत्थामा सबमें कर्ण अनन्य।**
**वीरों में वह महावीर प्रत्येक दृष्टि से धन्य।।'**

कर्ण के पराक्रम तथा शौर्य की प्रशंसा, मरणासन्न तथा शर-शय्या पर पड़े हुए भीष्म पितामह भीकरते हैं। भीष्म पितामह को कर्ण के प्रति अपमानजनक शब्द कहने का बड़ा पश्चात्ताप होता है।

निश्चय ही कर्ण धीर, वीर, साहसी, आत्मविश्वासी, तेजस्वी, कृतज्ञ, कर्तव्यपरायण, दृढ़प्रतिज्ञ, आजीवन सत्यपथगामी तथा अजेय योद्धा है। वह ममता का भूखा अवश्य है किन्तु किसी प्रलोभनवश अपने स्वाभिमान का सौदा नहीं करता। उसके जीवन में करुणा और दु:ख के अनेक अवसर उपस्थित हुए हैं। माता द्वारा उसका परित्याग और जीवन के उत्तरार्द्ध में माँ से मिलन—ऐसे अवसर हैं,जो अत्यधिक मार्मिक हैं; किन्तु कर्ण ने अत्यधिक धैर्य के साथ इन स्थलों पर अपने व्यक्तित्व की रक्षा की है। वास्तव में उसमें एक श्रेष्ठ नायक के अनेक गुण विद्यमान हैं।

**2.** खण्डकाव्य 'कर्ण' में कवि केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' ने महाभारत के पात्र कर्ण का चरित्र-चित्रण किया है। कर्ण का सम्पूर्ण जीवन सामाजिक विसंगतियों से जूझते हुए बीता। वह समाज के द्वारा हमेशा प्रताड़ित होता रहा। इसके बाद भी उसने अपने चारित्रिक गुणों से हर युग के समाज को प्रभावित किया। वह एक सफल योद्धा, दानवीर और सच्चा मित्र तो था ही, उसमें अद्‌भुत आत्मबल एवं चिन्तन-क्षमता भी थी।

कवि ने इसी आदर्श चरित्र 'कर्ण' को अपने खण्डकाव्य का प्रतिपाद्य विषय बनाया हे। इसमें कर्ण के जीवन के सभी प्रसंग नहीं हैं। कवि ने अत्यन्त कुशलता से उन्हीं प्रसंगों का आयोजन किया है, जो कर्ण की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालने में अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण रहे हैं।

कर्ण अतिमानव नहीं, एक मनुष्य है, जो क्रोध एवं प्रतिशोध जैसे मनोभावों से भी स्वाभाविक रूप में प्रभावित होता है; किन्तु इन अवगुणों के पश्चात भी वह एक सच्चा मित्र, कुशल योद्धा, दानवीर,त्यागी और कर्मठ पुरुष है। कवि ने उसके चरित्र देश के युवाओं को प्रेरित करने हेतु किया है। जहाँ कर्ण के अनुक गुण अनुकरणीय हैं, वहीं कवि ने उसके अन्त का चित्रण करते हुए अपरोक्ष रूप से यह भी स्पष्ट किया है कि ऐसी वीरता, कर्मठता अथवा साहस जो दुराचारियों के समर्थन हेतु प्रयुक्त होती है; उसका अन्त सदैव करुणाजनक एवं दु:खद ही होता

है। यही इस खण्डकाव्य का उद्देश्य है। सम्पूर्ण खण्डकाव्य का केन्द्रबिन्दु 'कर्ण' ही है। अतः खण्डकाव्य का 'कर्ण' शीर्षक सर्वथा उपयुक्त और सार्थक है।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

1. इस प्रश्न के उत्तर के लिए सभी सर्गों के सारांश को पढ़िए।
2. **प्रथम सर्ग ( रंगशाला में कर्ण )**—कौमार्यावस्था में सूर्य से वरदान माँगने पर कुन्ती को एक पुत्र प्राप्त हुआ। लोकलाज के भय से कुन्ती ने उस शिशु को नदी में बहा दिया। उस बालक को अधीरथ नामक एक सूत ने नदी से निकालकर अपनी पत्नी राधा के सहयोग से पाल-पोष कर बड़ा कर दिया। राधा के द्वारा पाले जाने पर 'कर्ण' का एक नाम 'राधेय' भी पड़ गया। बालक कर्ण जब कुछ बड़ा हो गया तो वह धनुष चलाना सीखने लगा। एक दिन वह हस्तिनापुर के राजभवन की रंगशाला में जा पहुँचा। वहाँ केवल राजकुँवर ही युद्धाभ्यास करते थे। उसका पाण्डव राजकुमारों ने सूत पुत्र कहकर अपमान किया। दुर्योधन ने उसके बल और धनुष चलाने की कला देखकर उसे अपना मित्र बना लिया और आगे से उसे सूत पुत्र कहने वाले को नीचा दिखाने की बात कही। इस प्रकार दुर्योधन और कर्ण की मित्रता हो गई। कर्ण को सूत पुत्र होने के कारण कई बार अपमानित होना पड़ा। द्रोपदी स्वयंवर में भी द्रोपदी ने कर्ण से विवाह न करने की इच्छा प्रकट कर दी थी। कवि ने कहा है—

   **सूत पुत्र के साथ न मेरा गठबन्धन हो सकता।**
   **क्षत्राणी का प्रेम न अपने गौरव को खो सकता।।**

   कर्ण के रंगशाला में आने से ही कौरव तथा पाण्डवों में विरोध तीव्र हो गया। यहीं से महाभारत युद्ध की नींव जम गई।
3. **द्वितीय सर्ग ( द्यूत सभा में द्रोपदी )**—केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' जी ने 'कर्ण' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग का प्रारम्भ द्रोपदी स्वयंवर से किया है। अर्जुन ने लक्ष्यवेध करके द्रोपदी का वरण कर लिया। कुन्ती के भ्रमवश कहने पर द्रोपदी पाँचों पाण्डवों की पत्नी बनकर हस्तिनापुर में रहने लगी। विदुर जी के समझाने से धृतराष्ट्र ने आधा राज्य पाण्डवों को दे दिया। पाण्डवों ने जब राजसूय यज्ञ किया तो एक बड़े उत्सव का आयोजन किया और कौरवों को निमन्त्रण दिया। पाण्डवों ने एक ऐसा भवन निर्मित कराया, जिसमें अन्दर जाने पर भ्रम का आभास होता था। दुर्योधन उस भ्रम का दो बार शिकार हुआ। एक बार जल में थल का आभास हुआ और दूसरी बार थल में जल का। इसी क्रम में वह भूमि पर पैर रखने के चक्कर में जल में जा पड़ा। दुर्योधन के इस प्रकार गिरने पर द्रोपदी ने व्यंग्य किया कि अन्धों की सन्तान भी अन्धी ही होती है। बस इस एक वाक्य ने दुर्योधन के मन में ईर्ष्या के बीज बो दिए और वह पाण्डवों का शत्रु बन गया। मामा शकुनि के द्वारा उसने 'द्यूत क्रीड़ा' का आयोजन किया और युधिष्ठिर को जुआ खेलने के लिए विवश कर दिया। जुए के इस खेल में शकुनि ने युधिष्ठिर को कई बार हराकर उनका राजपाट तक जीत लिया। अन्त में युधिष्ठिर से द्रोपदी को भी दाँव पर लगवाकर उसे भी जीत लिया। द्रोपदी को जीत लेने पर दुर्योधन ने उसे भरी सभा में नग्न करके अपनी जंघा पर बैठाने की पहल कर दी। कर्ण ने दु:शासन से कहा—

   **दु:शासन! मत ठहर, वस्त्र हर ले कृष्णा के सारे।**

**वह पुकार ले रो-रोकर, चाहे वह जिसे पुकारे।।**

कर्ण के जीवन का यह ऐसा प्रसंग है, जिसे वह अन्त तक नहीं भूल पाया। सम्पूर्ण महाभारत का युद्ध इन्हीं व्यंग्य बाणों के कारण अपने दु:खद अन्त की ओर बढ़ा।

4. **तृतीय सर्ग ( कर्ण द्वारा कवच-कुण्डल दान )**—जब युधिष्ठिर जुए में अपना सब कुछ हारकर अर्जुन आदि भाइयों के साथ वन-वन भटकने लगे तो दुर्योधन बड़ा प्रसन्न हुआ। कर्ण ने अर्जुन को मारने की प्रतिज्ञा कर ली। उसने कहा कि जब तक मैं अर्जुन को नहीं मार दूँगा तब तक अपने पैर नहीं धुलवाऊँगा और कोई भी जो कुछ मुझसे माँगेगा मैं उसे वही दूँगा। कर्ण की इस प्रतिज्ञा से युधिष्ठिर चिन्तित हो उठे। उन्हें ज्ञात था कि जब तक कर्ण के पास सूर्य के दिए हुए कवच-कुण्डल हैं, उसे युद्ध में कोई नहीं हरा सकता। इन्द्र की भी चिन्ता यही थी कि मैं सूर्यपुत्र कर्ण से अपने पुत्र अर्जुन की रक्षा कैसे करूँ। इन्द्र ने अर्जुन की रक्षा के लिए कर्ण से कवच-कुण्डल लेने का यह उपयुक्त समय समझा और एक दिन ब्राह्मण का वेश बनाकर कर्ण से दान माँगने पहुँच गया। यद्यपि कर्ण यह बात जानता था कि मेरे साथ छल हो रहा है फिर भी उसने याचक बनकर आए इन्द्र को अपने कवच-कुण्डल उतारकर दे दिए। इस प्रकार कर्ण ने अपने दानवीर होने का पुष्ट प्रमाण दे दिया।

5. **चतुर्थ सर्ग ( श्रीकृष्ण और कर्ण )**—दुर्योधन ने पाण्डवों को राज्य में हिस्सा देने से मना कर दिया। पाण्डवों के प्रति न्याय की दृष्टि से श्रीकृष्ण दुर्योधन की सभा में उपस्थित हुए। सभा में निराश होकर श्रीकृष्ण सभा से बाहर आए और कर्ण को अपने समीप बुलाकर समझाया कि वह पाण्डवों का बड़ा भाई है। श्रीकृष्ण की बात सुनकर कर्ण आश्चर्यचकित रह गया। श्रीकृष्ण के सम्मुख के सम्मुख कर्ण ने अपना हार्दिक दु:ख प्रकट करते हुए कहा कि न जाने कितने अवसरों पर मुझे सूत-पुत्र कहकर अनेक व्यक्तियों ने अपमानित किया, किन्तु इसके उपरान्त भी मेरी माता ने मुझे अपना पुत्र स्वीकार नहीं किया। कवि ने कर्ण की मनोदशा का वर्णन करते हुए लिखा है—

**योंं न उपेक्षित होता मैं, यों भाग्य न मेरा सोता।**
**स्नेहमयी जननी ने यदि रंचक भी चाहा होता।।**
**घृणा, अनादर, तिरस्क्रिया, यह मेरी करुणा कहानी।**
**देखो, सुनो कृष्ण! क्या कहता इन आँखों का पानी।।**

कर्ण ने श्रीकृष्ण से कहा कि मैं जानता हूँ कि जिधर तुम हो उधर जीत निश्चित होगी—

जिसके सहायक कृष्ण हों, सर्वदा उसी की जय है।

फिर भी मैं इस समय दुर्योधन के उपकार को नहीं भूल सकता। मैं उसी के पक्ष में लड़ूँगा। मैंने अपने कवच और कुण्डल भी दान में दे दिए हैं। पाण्डवों के मन में इन्हीं का भय था। इसके साथ ही द्रौपदी के प्रति कराए गए अत्याचार का स्मरण करके कर्ण बहुत दु:खी हुआ। श्रीकृष्ण ने कर्ण को दुराग्रही बताया, किन्तु कर्ण दुर्योधन का साथ छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुआ।

6. **पंचम सर्ग ( माँ-बेटा )**—महाभारत का युद्ध प्रारम्भ होने में केवल पाँच दिन शेष रह गए थे। सभी जानते थे कि इस युद्ध के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण पृथ्वी रक्तरंजित हो उठेगी। इसी चिनता में कुन्ती अत्यन्त व्याकुल हो गई। उसे सबसे बड़ा दु:ख यही था कि आज भाई-भाई ही एक-दूसरे

की मृत्यु का कारण बनने जा रहे हैं। कुन्ती अच्छी तरह विवचार करके कर्ण के पास पहुँची। कर्ण ने उसे प्रणाम किया और स्वयं को राधा-पुत्र (राधेय) कहकर अपना परिचय दिया। कुन्ती उससे बोली कि तुम राधा के पुत्र नहीं, अपितु मेरे ही पुत्रहो और युधिष्ठिर के बड़े भाई हो। इस रहस्य को जानकर कर्ण की आँखें क्रोध से लाल हो गईं। कर्ण ने कहा कि जब मैं अपमानित किया जा रहा था और मुझे सूत-पुत्र कहकर सब व्यंग्य-बाण छोड़ते थे, तब तुम्हारा पुत्र-प्रेम कहाँ चला गया था?

माँ होकर भी तुमने मेरे साथ छल किया है। आज पाण्डवों के सिर पर मृत्यु की छाया देखकर तुम मेरे सामने इस रहस्य को प्रकट करने आई हो। कर्ण ने कुन्ती से स्पष्ट रूप से कहा—

**क्यों तुमने उस दिन ने कहा सबके सम्मुख ललकार।**
**कर्ण नहीं है सूत-पुत्र, वह भी है राजकुमार।।**

कर्ण को क्रोधपूर्ण वाणी सुनकर कुन्ती के नेत्रों से अश्रु-वर्षा होने लगी। कुन्ती मौन खड़ी थी। कर्ण ने कहा कि भाग्य मेरे साथ बहुत खिलवाड़ कर रहा है। यह भी बड़ी विडम्बना होगी कि एक मौं अपने पुत्र के पास से खाली हाथ लौटे। कर्ण ने कहा कि मैंने केवल अर्जुन को ही मारने की प्रतिज्ञा की है। मैं तुम्हें देताहूँ किमैं अन्य किसी पाण्डव को नहीं मारूँगा। मेरे हाथों यदि अर्जुन मारा गया या मैं स्वयं काल का ग्रास हो जाऊँ,तब भी तुम पाँच पाण्डवों की माता रहेगी। कुन्ती कर्ण की बात सुनकर चुपचाप लौट गई औरइधर कर्ण के हृदय में विचारों का सागर लहराने लगा।

7. **षष्ठ सर्ग ( कर्ण वध )**—महाभारत के युद्ध को प्रारम्भ हुए कई दिन बीत गए। बहुत-से सैनिक तथा सेनापति नष्ट हो गए। कौरव सेना की ओर से भीष्म पितामह सेनापति बनाए गए। भीष्म ने निर्णय किया कि मुझे कर्ण का सहयोग नहीं चाहिए। मेरे रहते कर्ण युद्ध में भाग नहीं लेगा। उधर कर्ण ने भी यह प्रतिज्ञा की कि भीष्म पितामह के जीवित रहते वह युद्ध नहीं करेगा। युद्ध में भीष्म पितामह घायल होकर शर-शय्या पर लेट गए तो कर्ण उनके पास गया। भीष्म ने उससे अत्यन्त स्नेह करते हुए कहा—

**दानवीर तू, धर्मवीर तू, तू सम्बल आरत का।**
**जो न कभी बुझ सकता, वह दीप महाभारत का।।**

भीष्म कर्ण से पाण्डवों की रक्षा करने के लिए कहते हैं किन्तु कर्ण उनसे कहता है कि मैं अर्जुन को मारे बिना नहीं छोड़ूँगा। चाहे कृष्ण उसकी कितनी ही रक्षा करें। पितामह कर्ण की इस प्रतिज्ञा पर अटल रहने से अति प्रसन्न हुए और उसे विजयी होने का आशीर्वाद दिया।

युद्ध निरन्तर चलता रहा। द्रोणाचार्य कौरव सेना के सेनापति बनाए गए और वे भी अश्वत्थामा के मारे जाने के भ्रम में अर्जुन के बाणों से मृत्यु को प्राप्त हो गए। युद्ध समाप्त होने में मात्र दो दिन का समय शेष था, तब कर्ण कौरव सेना के सेनापति नियुक्त किए गए। भीम का पुत्र घटोत्कच भयंकर विनाश करता हुआ युद्धभूमि में अबाध गति से विचर रहा था। चारों ओर से 'कर्ण बचाओ, कर्ण बचाओ' की पुकार हो रही थी। कर्ण ने इस भयंकर विनाश को देखकर अपनी अमोघ शक्ति घटोत्कच पर चला दी। घटोत्कच शक्ति के लगते ही पृथ्वी पर गिरकर मृत्यु हो प्राप्त हो गया। अर्जुन के लिए यह अच्छा कार्य सिद्ध हुआ। कर्ण के पास अर्जुन को मारने की यह

अन्तिम शक्ति थी। कृष्ण ने घटोत्कच को कर्ण के सामने खड़ा कर उस शक्ति को नष्ट करवा दिया और अर्जुन के बचने का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

युद्धभूमि में एक स्थान पर कर्ण का रथ गड्ढे में धँस गया। जब कर्ण रथ से उतरकर उसे निकालने की चेष्टा कर रहा था, तभी कृष्ण के कहने पर अर्जुन ने बाणों की वर्षा करके कर्ण को मार दिया।

कर्ण की मृत्यु पर कृष्ण के नेत्रों में भी अश्रु थे। कवि ने कहा है कि कृष्ण ने केवल इतना कहा—'कर्ण! हाय वसुसेन वीर' और उनकी आँखें गीली हो गईं।

8. **सप्तम सर्ग (जलांजलि)**—कर्ण की मृत्यु के बाद युद्ध समाप्त हो गया क्योंकि अब ऐसा कोई महारथी शेष नहीं बचा था जो पाण्डवों से युद्ध कर सके। अकेले दुर्योधन ने भीम की ललकार पर गदा युद्ध किया किन्तु वह भी भीम द्वारा जंघा पर प्रहार कर देने के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गया। माता कुन्ती ने जब युधिष्ठिर से कर्ण के लिए जल तर्पण (जलांजलि) देने की बात कही तो युधिष्ठिर शंकालु होकर माता कुन्ती की ओर देखने लगे। कर्ण के लिए उनके द्वारा यह कार्य क्यों कराया जा रहा है, तब माता कुन्ती ने युधिष्ठिर से यह रहस्य खोला कि कर्ण तुम्हारा बड़ा भाई था। कवि ने इस सम्बन्ध में लिखा है—

**धर्मराज कुछ चौंके बोले, सूत पुत्र था कर्ण।**
**कुन्ती बोली वत्स! कर्ण था मेरा रक्त सवर्ण।।**

माता कुन्ती के इन वचनों को सुनकर सभी पाण्डव अत्यन्त दु:खी हो उठे। युधिष्ठिर ने कहा—

**ऐसा कीर्तिवान् भाई पा, होता कौन न धन्य।**
**किन्तु आज इस पृथ्वी पर, हतभाग्य न मुझ-सा अन्य।।**

युधिष्ठिर ने कर्ण के लिए जल तर्पण किया। कर्ण की दानवीरता, युद्ध कुशलता तथा प्रणवीरता पर समस्त पाण्डवों को गर्व का अनुभव हुआ। वे इस युद्ध को कौरवों का विनाश न मानकर स्वयं का विनाश मानने लगे।

# 4 मुक्तिदूत
**(डॉ0 राजेन्द्र मिश्र)**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (घ) **6.** (घ)।

## अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–**(क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

## कूट आधारित प्रश्न

**1. अंग्रेजी शासन के विरुद्ध प्रस्ताव पारित करने के लिए जनता एकत्र हुई–**

**उत्तर–**(घ) केवल (iv)

**2. गांधी जी ही भारतवर्ष के मुक्तिदूत बनेंगे, यह आशा प्रकट की थी–**

**उत्तर–**(ग) केवल (iii)

## सत्य/असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

**उत्तर–**(क) सत्य (ख) सत्य (ग) सत्य (घ) सत्य

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य का प्रतिपाद्य महात्मा गांधी द्वारा भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्ति दिलाने के प्रयासों पर प्रकाश डालना रहा है। कवि ने उनके द्वारा समाज की पीड़ित, शोषित, दलित जन को भी शोषण से मुक्ति दिलाने और उन्हें समाज में सम्मानित स्थान दिलाने के पुनीत कार्यों का गौरवगान भी अपने इस खण्डकाव्य में किया है। इस प्रकार कवि ने गांधीजी द्वारा अपने देश-जाति की मुक्ति के कार्यों की प्रशंसा करके उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की है, इसी कृतज्ञता के चलते उन्होंने गांधीजी को मुक्ति-दूत की संज्ञा से अभिहित किया है,
2. कवि ने गांधीजी द्वारा अपने देश-जाति की मुक्ति के कार्यों की प्रशंसा करके उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की है, इसी कृतज्ञता के चलते उन्होंने गांधीजी को मुक्ति-दूत की संज्ञा से अभिहित किया है, जो सब प्रकार से उचित ही है। इसीलिए इस खण्डकाव्य का नाम 'मुक्ति-दूत' भी औचित्यपूर्ण है। इस शीर्षक में एक सर्वोत्तम शीर्षक के औचित्यपूर्ण, संक्षिप्त, कथावस्तु का वाहक, सारगर्भित आदि सभी गुण सन्निहित हैं; अतः इस काव्य का यह नामकरण सब प्रकार से उपयुक्त और तर्कसंगत है।
3. 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य का प्रधान रस 'वीर रस' है। 'उत्साह' इसका स्थायी भाव है। 'करुण' रस का भी यत्र-तत्रप्रयोग हुआ है, किन्तु इसकी निष्पत्ति गौण है। कस्तूरबा की मृत्यु, जलियाँवाला बाग का नरसंहार, हरिजनों की दशा आदि के चित्रण में 'करुण' रस का ही समावेश हुआ है।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

1. **संकेत**—कथानक के लिए सभी सर्गों के सारांश का अवलोकन कीजिए।
2. **प्रथम सर्ग का सारांश**—कवि ने प्रथम सर्ग में गांधी जी के कार्यों का, उनकी महानता का वर्णन करते हुए उन्हें एक अवतारी पुरुष सिद्ध किया है। गांधी केवल भारत के ही नहीं वरन् विश्व के कल्याण के लिए इस पृथ्वी पर अवतरित हुए थे। उन्हें कवि ने राम, कृष्ण, गौतम, महावीर, ईसा, मुहम्मद साहब, गुरु गोविन्द सिंह के समान अवतारी पुरुष मानकर स्थापना की है। उनका कहना है कि जैसे लिंकन ने अमेरिका का, नेपोलियन ने फ्रांस का उद्धार किया, उसी प्रकार गांधी ने भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराया।

   महात्मा गांधी का जन्म गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था। उनके पिता का नाम करमचन्द गांधी था। उनके जीवन पर माता-पिता की निश्छलता, सादगी का पूर्ण प्रभाव पड़ा।

बचपन में 'सत्य हरिश्चन्द्र' तथा 'श्रवण कुमार' नाटकों को देखकर वे सत्य के अनुयायी तथा मात-पितृ भक्त हो गए। उन्हें 'हरिजन' तथा 'हिन्दुस्तानी' दोनों से अगाध स्नेह था। उनके अथक प्रयासों से ही भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई।

3. **द्वितीय सर्ग का सारांश**—खण्डकाव्य का विस्तार द्वितीय सर्ग में ही हुआ है। इसमें गांधी जी का चिन्तन-मनन उनके कार्यों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। गांधी जी स्वप्न में अपनी माता का दर्शन करते हैं और उनकी आज्ञा मानकर देश के भूखे-नंगे दलितों का जीवन सँवारने का संकल्प ले लेते हैं। उनके मन में आदर्श विचार पनपते हैं—

   सभी भारतवासी उनके सगे भाई हैं। हरिजन भी मेरे हैं। समाज से समस्त भेदभाव मिटाना मेरा धर्म है। अछूतों को भी उसी ईश्वर ने पैदा किया है जिसने ऊँची जाति के लोगों को पैदा किया है। गौतम ने निम्न जाति में उत्पन्न सत्यकाम को शिक्षा दी, राम ने शबरी को गले लगाया। मैं भी इन समस्त हरिजनों को अपना मानकर आश्रम में प्रवेश दूँगा। जिस मंदिर में हरिजन के प्रवेश से भगवान रूठ जाते हों ऐसे मन्दिरों में भगवान हो ही नहीं सकते। भगवान का वास तो सभी के हृदय में है। उन्होंने मन में निश्चय करके हरिजनों के लिए आश्रम के द्वार खोल दिए।

   आश्रम के प्रबन्धक मगनलाल ने गांधी जी के विचारों की अवहेलना करनी चाही। इस पर गांधी जी क्रोधित हो गए। उन्होंने सब कार्यकर्त्ताओं से स्पष्ट कह दिया कि यदि लोग आश्रम को चन्दा नहीं देंगे तो मैं हरिजन बस्ती में ही रहूँगा। वहीं पेड़ के नीचे अपना डेरा लगा लूँगा, किन्तु हरिजनों से भेद-भाव बर्दाश्त नहीं करूँगा। आदमी-आदमी में भेद करना कहाँ की रीति है। उन्होंने कहा—''पहले देश आजाद हो जाए, उसके बाद इस हरिजन समस्या का भी निवारण करके रहूँगा।''

   गोपालकृष्ण गोखले ने उनमें भारतवर्ष की मुक्ति की प्रबल चाह देखी और उन्हें 'मुक्तिदूत' कहा। गांधी जी ने भी गोखले को स्वप्न में देखकर प्रेरणा प्राप्त की और भारत की स्वतन्त्रता का दृढ़ निश्चय कर लिया।

4. **तृतीय सर्ग की कथा सक्षेप–**डॉ० राजेन्द्र मिश्र ने इस सर्ग में भारतवर्ष की दुर्दशा तथा अंग्रेजों के अत्याचारों का विस्तार से वर्णन किया है। गांधी जी की नीतियाँ इस सर्ग में मुखर होकर सामने आती हैं। 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' के समय द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ गया। गांधी जी ने अंग्रेजों की भारतीयों के प्रति नीति बदलने की आशा से उनका साथ दिया। किन्तु युद्ध जीतने के बाद उन्होंने भारतीयों पर और अधिक अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिए। उन्होंने बालगंगाधर तिलक, जवाहरलाल नेहरू, महामना मदनमोहन मालवीय, जिन्ना तथा सरदार वल्लभभाई पटेल आदि नेताओं के साथ अंग्रेजों की नीतियों का विरोध और भी तेजी से करना प्रारम्भ कर दिया। बैशाखी के दिन अंग्रेजों ने पंजाब के जलियाँवाला बाग में निहत्थे भारतीयों पर गोलियों की बौछार कराकर उन्हें मार दिया। कवि ने उस नरसंहार को व्यक्त करते हुए कहा है—''यह बाग खून में नहा चुका।'' इस खून की नदी के बहने का परिणाम यह हुआ कि गांधी जी का हृदय अंग्रेजों के प्रति घृणा से भर गया। उन्होंने अपने स्वतन्त्रता आन्दोलनों को और भी तीव्र कर दिया।

5. **चतुर्थ सर्ग का साराश–**प्रस्तुत सर्ग गांधी जी की कर्मठता का परिचायक है। इसमें उनका अंग्रेजों से वास्तविक संगर (युद्ध) प्रारम्भ होता है। कवि ने इस सर्ग का प्रारम्भ इन पंक्तियों से किया है—

**नवयुग का शुभ आरम्भ हुआ, गांधी संगर में कूद पड़े।**
**अब राजनीति की देहरी पर, सीधे तनकर हो गए खड़े॥**

उन्होंने सन् 1920 ई० में 'असहयोग आन्दोलन' प्रारम्भ किया। विदेशी सामान की होली जलवाई तथा अंग्रेजों द्वारा दी गई उपाधियों को लौटा दिया। इससे अंग्रेजों को बड़ी निराशा हुई। गांधी जी ने 'साइमन कमीशन' का विरोध, नौकरियों का बहिष्कार किया तो अंग्रेज दमन पर उतर आए, फलस्वरूप देश में हिंसक क्रान्ति प्रारम्भ हो गई। गांधी जी ने भारतीय जनता से हिंसा न करने को कहा और अहिंसक आन्दोलन करने की नीति पर कायम रहे। नमक कानून के विरोध में गांधी जी ने 'डाण्डी मार्च' किया। मार्ग में उन्हें अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया। देश में 'सत्याग्रह आन्दोलन' तीव्र हो गया, गांधी जी ने जब 'अंग्रेजो, भारत छोड़ो' नारा देकर आन्दोलन शुरू किया तो देश उनके पीछे हो लिया। सारे देश में अंग्रेजों के विरुद्ध उग्र आन्दोलन होने लगा। जनता ने रेल की पटरियाँ उखाड़ फेंकीं, पुलिस थानों को फूँक दिया, सड़कों तथा पुलों को क्षतिग्रस्त करके अव्यवस्था उत्पन्न कर दी। अंग्रेजों ने अपना दमन चक्र तेज कर दिया तो गांधी जी ने जेल में अनशन प्रारम्भ कर दिया। जेल के अन्दर ही उनकी पत्नी कस्तूरबा का देहान्त हो गया। पत्नी के देहान्त पर गांधी जी थोड़े विचलित हुए, पर शीघ्र स्वयं को सँभालकर अपने कार्य में जुट गए।

**6.** **पंचम सर्ग का सारांश–**प्रस्तुत सर्ग में अंग्रेजों का अवसान तथा भारत में गांधी जी का उत्थान दर्शाया गया है। सन् 1945 ई० में द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति पर विश्व राजनीति पूर्णतया परिवर्तित हो गई। इंग्लैण्ड में चुनावों के उपरान्त वहाँ मजदूर दल की सरकार बनी तथा इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री ने घोषणा की कि जून 1947 ई० से पूर्व ही अंग्रेज भारत को छोड़ देंगे। इस सूचना से सारे देश में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। अंग्रेजों ने जाते-जाते भारत का विभाजन करा दिया। मुस्लिम लीग ने हठधर्मिता करके अपना अलग देश पाकिस्तान बना लिया। भारत दो देशों में विभाजित हो गया। इस समय देश में साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे। गांधी जी इन दंगों से अत्यन्त दु:खी हुए और उन्होंने पं० जवाहरलाल नेहरू के हाथ में देश की बागडोर सौंपकर स्वयं राजनीति छोड़ दी।

गांधी जी साबरमती आश्रम में रहने लगे। वहाँ वे अपने कार्यों का विश्लेषण करने तथा भारत के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए ईश्वर-भजन में निमग्न रहने लगे। कवि ने गांधी जी की मृत्यु के प्रसंग को खण्डकाव्य की इस कथा में बहुत थोड़े शब्दों में व्यक्त करके खण्डकाव्य को यहीं समाप्त कर दिया है।

**7.** डॉ० राजेन्द्र मिश्र द्वारा रचित 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के नायक महात्मा गांधी हैं। कवि ने गांधीजी की जिन विशेषताओं का वर्णन किया है, वे संक्षेप में निम्नलिखित हैं—

**1. अलौकिक पुरुष**—कवि ने गांधीजी को असाधारण पुरुषमाना है। प्रथम सर्ग में ही गांधीजी को अवतार के रूप में स्वीकार किया गया है। ऐसे महापुरुष पृथ्वी पर अवतार के रूप में प्रकट होते हैं, जो पृथ्वी के दु:खों का हरण करने के लिए आते हैं। जिस कोटि में राम, कृष्ण, ईसा, पैगम्बर, बुद्ध, महावीर आदि आते हैं, उसी कोटि में महात्मा गांधी का नाम भी लिया जाता है। महात्मा गांधी जैसे अवतारी पुरुषों का कोई धर्म नहीं होता, कोई जाति नहीं होती। जब भी कहीं आवश्यकता होती है, वे वहीं जन्म लेते हैं।

**2. दलितोद्धारक**—गांधीजी ने जीवनभर दलितों, पिछड़ों तथा हरिजनों को गले लगाया। वे बहुत दिनों तक हरिजनों की बस्तती में भी रहे। गांधीजी के जीवन का मुख्य उद्देश्य हरिजनों का उद्धार करना ही था। कवि ने स्पष्ट शब्दों में कहा है—

**दलितों के उद्धार-हेतु ही, तुमने झण्डा किया बुलन्द।**
**तीस बरस तक रहे जूझते अंग्रेजों से अथक अमन्द॥**

मजदूरों के शोषण से त्रस्त गांधीजी ने शोषकों के प्रति अपने असन्तोष को इस प्रकार अभिव्यक्ति किया—

**सबको हरियाली ही दिखती**
**ये सब हैं सावन के अन्धे!**
**ये पीर पराई क्या जानें,**
**इनको प्रिय बस अपने धन्धे!!**

**3. मातृभक्त**—गांधीजी के जीवनपर उनकी माता के चरित्र की गहरी छाप पड़ी। खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग में उनहोंने अपनी माता को स्वप्न में देखा और उनकी सच्ची शिक्षा को ग्रहण किया। गांधीजी ने उदारता, परोपकार, सत्यता आदि गुणों को अपनी माता से ही सीखा।

**4. राष्ट्रभक्त**—गांधीजी महान् राष्ट्रभक्त थे। उन्होंने जीवनभर अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए प्रयास किया। देश की स्वतन्त्रता के लिए उन्होंने अनेक आन्दोलनों को चलाया। उनकी सदैव यही कामना रही कि उनके हिन्दुस्तान के आँगन की माटी सदैव मांगलिक कृत्यों से सुवासित होती रहे—

**रहो खुश मेरे हिन्दुस्तान,**
**तुम्हारा पथ हो मंगलमूल।**
**सदा महके बन चन्दन चारु,**
**तुम्हारी अँगनाई की धूल॥**

उन्होंने अंग्रेजों के अत्याचारों के सामने घुटने नहीं टेके। जलियाँवाला बाग का हत्याकाण्ड देखकर तो उनका हृदय तड़प उठा।

**5. अडिग तथा निर्भीक**—गांधीजी अपने निश्चय पर अटल रहनेवाले थे। वे अंग्रेजों के अत्याचारों से पीड़ित भारतीय जनता का उद्धार करने के लिए आगे आए। गांधीजी हरिजनों की समस्या से अत्यधिक दु:खी थे। देश के अन्दर इस प्रकार का भेदभाव उन्हें उचित नहीं लगता था। अपने निश्चय पर दृढ़ रहते हुए उन्होंने कहा—

**मैं घृणा द्वेष की यह आँधी, चलने दूँगा न चलाऊँगा।**
**या तो खुद ही मर जाऊँगा, या इनको मार भगाऊँगा॥**

**6. मानवीय गुणों से भरपूर**—गांधीजी का चरित्र अनेक गुणों का भण्डार था। उनमें सत्यता, परोपकार, करुणा, अहिंसा, देशभक्ति आदि के गुण कूट-कूटकर भरे हुए थे। वेसभी को समान दृष्टि से देखते थे। वे विश्वबन्धुत्व तथा भाईचारे की भावना से ओत-प्रोत थे और सभी धर्मों के प्रति आदर भाव रखते थे। गांधीजी सचमुच ही भारत में अलौकिक पुरुष के रूप में अवतरित हुए।

**7. जनप्रिय बापू**—गांधीजी ने देश-दुनिया को इतना कुछ दिया कि वे प्रत्येक में बसकर मानो उसके हृदयस्वरूप हो गए। क्या बूढ़े, क्या जवान, क्या बालक सभी उनको हृदय की अतल गहराइयों से स्नेह करते थे और जब एक दिन अचानक उनको पता चला कि उनके प्यारे बापू अब इस संसार में नहीं रहे तो उनके हृदय रो उठे, विशेषकर युवाओं के; क्योंकि उन्हें बापू से देश को बहुत कुछ मिलने की आशा थी—

**धू धू करके जब चिता जली**
**बूढ़े बापू का युवा प्रणय**
**तिल भर भी संयत रह न सका**
**रो उठा अकिंचन विदा सदय।**

इस प्रकार हम देखते हैं कि गांधीजी वास्तव में मुक्तिदूत थे; क्योंकि उन्होंने न केवल देश को अंग्रेजों से मुक्ति दिलाई, बल्कि दलित, पीड़ित, शोषित-जन को भी उन्होंने शोषण से मुक्त कराने का भरपूर प्रयास किया और वे उसमें काफी कुछ सफल भी हुए।

### केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद (केस/स्रोत) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**महात्मा गांधी का ............................. प्राप्त हुई।**

(i) महात्मा गांधी का जन्म गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था।

(ii) उनके जीवन पर माता-पिता की निश्छलता, सादगी का पूर्ण प्रभाव पड़ा।

(iii) बचपन में 'सत्य हरिश्चन्द्र' तथा 'श्रवण कुमार' नाटकों को देखकर वे सत्य के अनुयायी तथा मात-पितृ भक्त हो गए।

(iv) उन्हें 'हरिजन' तथा 'हिन्दुस्तानी' दोनों से अगाध स्नेह था।

## 5 जय सुभाष

**(विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद')**

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (क) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (घ) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (क) **9.** (घ) **10.** (ग) **11.** (क) **12.** (क) **13.** (ख) **14.** (क)।

### अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–**(ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

## रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

    **1. दुर्भाग्यवश सुभाष का जहाज जापान में ——— हो गया।**

**उत्तर–**(ख) दुर्घटनाग्रस्त

    **2. भारतवासी युगों-युगों तक सुभाष की ——— गाते रहेंगे।**

**उत्तर–**(क) गाथा

## सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

**उत्तर–**(ख) (ii) (iv) (i) (ii)

## सत्य-असत्य कथन पर आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है–**

**उत्तर–**(क) (i) और (ii)

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. **सप्तम सर्ग ( दुर्घटना ग्रस्त )**—जय–पराजय जीवन का नियम है। सुख–दु:ख आते–जाते रहते हैं। जीवन भी अबाध गति से चलता रहा है। सन् 1945 ई० में द्वितीय विश्वयुद्ध अपने चरम पर था। जर्मनी में हिटलर शाही समाप्त होती जा रही थी। इसी क्रम में आजाद हिन्द फौज भी अंग्रेजी सेना से हार गई और बर्मा अंग्रेजों के अधिकार में चला गया। अगस्त 1945 ई० में अमेरिका ने जापान के दो नगरों हिरोशिमा तथा नागासाकी पर परमाणु बम गिराए जिससे बहुत–सी जनता मारी गई। इससे आजाद हिन्द फौज का मनोबल टूट गया, अत: अपने सैनिकों की माँग पर सुभाष ने भी अपनी लड़ाई रोक दी। जब सुभाष जहाज द्वारा टोकियो जा रहे थे तो उस समय कहीं रास्ते में उनका जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया। 18 अगस्त, 1945 को यह सूचना जापान रेडियो द्वारा दी गई कि सुभाषचन्द्र बोस अब इस संसार में नहीं रहे।

   सुभाषचन्द्र बोस के इस आकस्मिक निधन पर भारतीय जनमानस में शोक की लहर व्याप्त हो गई। यद्यपि आज वे हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनकी अमरवाणी आज भी हम भारतीयों की रगों में क्रान्ति की चिंगारी उत्पन्न करने में सक्षम है।

2. श्री विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद' द्वारा रचित 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के नायक सुभाषचन्द्र बोस हैं। उनके चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है—

   **1. प्रखर बुद्धिसम्पन्न एवं प्रतिभाशाली**—सुभाषचन्द्र बोस बाल्यकाल से ही तीव्र बुद्धिवाले थे। इनकी प्रतिभा से इनके शिक्षक भी प्रकाशित थे। वे प्रत्येक परीक्षा में प्रथम आते थे। आई० सी० एस० परीक्षा में सफलता प्राप्त करके इन्होंने अपने पित को भी विस्मित कर दिया।

   **2. निर्भीक तथा स्वाभिमानी**—सुभाषचन्द्र बोस बचपन से ही निर्भीक थे। एक अंग्रेज शिक्षक द्वारा भारतीयों के प्रति अपमानजनक शब्द कहे जाने पर सुभाष ने उसके गाल पर तमाचा मार दिया था। उनके हृदय में देशप्रेम की गहन भावना थी। आई० सी० एस० परीक्षा उत्तीर्ण करके भी

उन्होंने अंग्रेजी दासता में रहना स्वीकार नहीं किया। वे स्वतन्त्र रहकर ही अपने स्वाभिमान की रक्षा करना चाहते थे।

**3. प्रभावशाली वक्ता**—सुभाषचन्द्र बोस के भाषणों को जो भी सुनता था, वह मन्त्रमुग्ध हो जाता था। उनका भाषा ही **'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा'** शब्दों से प्रारम्भ होता था। वे अत्यन्त ओजस्वी वक्ता थे। श्रोताओं को रोमांचित करने की उनमें अदभुत शक्ति थी। कवि ने उनकी प्रशंसा इस प्रकार की है—

**लगी गूँजने बंगभूमि में, उनकी प्रेरक वाणी।**
**मन्त्रमुग्ध होते थे सुनकर, उसको सारे प्राणी।।**

अपने ओजस्वी भाषणों से सुभाषचन्द्र बोस ने छात्रों तथा आजाद हिन्द फौज के सैनिकों में नवप्रेरणा भर दी थी।

**4. समाजसेवी**—सुभाषचन्द्र बोस प्रारम्भ से ही समाज की सेवा करने में रुचि रखते थे। जाजपुर में महामारी का प्रकोप होते ही वे वहाँ के रोगियों की पीड़ा को दूर करने में जुट गए। इसी प्रकार बंगाल में बाढ़ आने परवे अपने प्राणों का मोह त्यागकर बाढ़ग्रस्त व्यक्तियों की सहायता में लग गए। सुभाषचन्द्र बोस को पीड़ितों तथा दलितों का आजीवन ध्यान रहा। इस सन्दर्भ में समाज-सेवी सुभाषचन्द्र बोस के लिए कवि ने लिखा है—

**दु:खी जनों का कष्ट कभी वह देख नहीं सकते थे।**
**दलितों की सेवा करने में कभी न वह थकते थे।।**

**5. कट्टर देशभक्त व अनुपम त्यागी**—सुभाषचन्द्र बोस के जीवन का लक्ष्य देश की सेवा करना ही था। देश की स्वतन्त्रता के लिए ही उन्होंने अपने जीवन की आहुति दे डाली। विवाह को राष्ट्र-सेवा में बाधक मानकरउन्होंने अविवाहित रहने का ध्रुव व्रत अपने मन में ठान लिया—

**राष्ट्रीयता को सुभाष ने धर्म हृदय से माना।**
**आजीवन अविवाहित रहने का भी ध्रुवव्रत ठाना।**

कांग्रेस के आन्दोलनों में सम्मिलित होना, ओजस्वी भाषण देना, देश से भागकर आजाद हिन्द फोज का गठन आदि अनेक कार्य उनकी देशभक्ति के परिचायक हैं।

**6. सर्वप्रिय नेता**—सुभाषचन्द्र बोस के व्यक्तित्व में एक अदभुत आकर्षण था। उनके भाषणों को सुनने के लिए लाखों व्यक्तियों की भीड़ एकत्र होती थी। कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष पद के चुनाव में उन्होंने गांधीजी की इच्छा केप्रतिकूल विजय प्राप्त की थी। बाद में गांधीजी की इच्छा का सम्मान रखने तथा कांग्रेस को फूट से बचाने के लिए उन्होंने अध्यक्ष-पद से त्यागपत्र दे दिया और अपनी ही विचारधारा पर आधारित दल 'फारवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की। आजाद हिन्द फौज के जवान भूखे रहकर भी उनके संकेत पर युद्धस्थल में लड़ते थे। वस्तुत: वे जहाँ भी और जिस अवस्था में भी रहे, सभी व्यक्तियों ने उन्हें अपना असीम प्रेम एवं सम्मान प्रदान किया।

**7. मानवीय गुणों के आगार**—सुभाषचन्द्र बोस का व्यक्तित्व अनेक गुणों का भण्डार था। उनमें सहनशीलता, धैर्य, विपत्तियों में डटे रहना, मनुष्य मात्र के प्रति प्रेम, अदभुत संगठन-शक्ति, अध्ययनशीलता, नम्रता, शालीनता आदि अनेक गुण थे। कवि की दृष्टि में उनके जैसे विलक्षण व्यक्तित्व वाले स्वतन्त्रता सेनानी विरले ही थे—

**यों तो हुए देश में अगणित स्वतन्त्रता सेनानी।**
**पर उनमें नेता सुभाष-सी कम की दिव्य कहानी।।**

× × ×

**वह थे कोटि-कोटि हृदयों के, एक महान् विजेता।**
**मातृ-भूमि के रत्न अलौकिक, जन-जन के प्रिय नेता।।**

वास्तव में सुभाषचन्द्र बोस का व्यक्तित्व गांधी, जवाहरलाल, राजेन्द्रप्रसाद आदि महान् नेताओं के समान ही देदीप्यमान् था। ऐसे महापुरुष युगों के पशचात ही देश में जन्म लिया करते हैं।

**8. वीर नायक**—सुभाषचन्द्र बोस की वीरता, उनके उत्साह और साहस से सब लोग चकित थे। अंग्रेज उनसे भयभीत थे। उन्हें कई बार जेल में बन्द किया गया। जेल से मुक्त होने पर उन्हें घर में नजरबन्द कर दिया गया, परन्तु एक मौलवी का वेश धारणकर वे एक दिन अंग्रेजों को चकमा देकर निकल भागे। काबुल के रास्ते वे जर्मनी पहुँचे और वहाँ से जापान। वहाँ सुभाष ने आजाद हिन्द फौज को ठोस धरातल प्रदान किया। उन्होंने भारतीयों को सचेत किया और अपने भाषणों से उनमें नवीन उत्साह भर दिया। सुभाष की प्रेरणा से आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेजी सेना को परास्त करना आरम्भ कर दिया और अंग्रेजों के अनेक ठिकानों पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार सुभाषचन्द्र बोस एक वीर नायक थे। स्वदेश सेवा और राष्ट्रीय स्वाभिमान ये ही उनके जीवन के लक्ष्य थे—

**वह स्वदेश सेवा में अपना थे सब समय बिताते।**
**राष्ट्रीयता के ही पथ पर थे जिन चरण बढ़ाते।।**

**3.** प्रस्तुत खण्डकाव्य 'जय सुभाष' नेताजी का जीवन-चरित्र; स्वाभिमान, राष्ट्रीयता, देशप्रेम, स्वतन्त्रता आदि उदात्त भावों का अद्भुत उदाहरण है। कवि का उद्देश्य उनके चरित्र-चित्रण द्वारा इन्हीं उदात्त गुणों की प्रेरणा देना है; जिससे देश की युवा पीढ़ी देशप्रेम, राष्ट्रीय एकता, भावात्मक एकता, अन्तर्राष्ट्रीय चेतना, वैज्ञानिक विकासात्मक प्रवृत्ति एवं उच्च मानवीय आदर्शों केप्रति निष्ठावान हो सके। अपने इस उद्देश्य को प्रकट करते हुए कवि ने कहा है—

**वीर सुभाष अनन्तकाल तक, शुभ आदर्श रहेंगे।**
**युग-युग तक भारत के वासी, उनकी कथा कहेंगे।।**

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के व्यक्तित्व में प्रतिभा-सम्पन्नता, अनुपम त्याग, स्वाभिमान, स्वतन्त्रता-प्रेम, आत्म-बलिदान तथा उनके व्यक्तित्व सम्बन्धी ओज का जो प्रकाश था, वह युग-युग तक किसी समाज की प्रेरणा का स्रोत बनने में सक्षम है। कवि ने सुभाषचन्द्र बोस के व्यक्तित्व काचित्रण करते हुए उनके इन्हीं गुणों को प्रकाशित किया है, जिससे देश की युवा पीढ़ी प्रेरणा प्राप्त कर सके।

यद्यपि इस खण्डकाव्य में राय बहादुर जानकीनाथ, प्रभावती देवी, बेनीमाधव, गांधी, चितरंजनदास, मोतीलाल नेहरू, रासबिहारी बोस आदि महापुरुषों के जीवन की भी कुछ झाँकियाँ प्रस्तुत की गई हैं, किन्तु उनका प्रयोग नेताजी की चारित्रिक विशेषताओं को प्रकाशित करने हेतु ही किया गया है।

कवि ने नेताजी के चरित्र की विशेषताओं को भावात्मक प्रस्तुति दी है। इस प्रस्तुति का उद्देश्य समाज में राष्ट्रीय भावनाओं एवं उदात्त आदर्शों के प्रति प्रेरणात्मक वातावरण का सृजन करना

है। कवि ने भूमिका में अपना यह मन्तव्य प्रकट भी किया है कि इस खण्डकाव्य का उद्देश्य छात्र–छात्राओं एवं देश की युवा पीढ़ी में स्वाभिमान, राष्ट्रप्रेम, त्याग, बलिदान, मानवीय भावनाओं आदि के प्रति जागृति उत्पन्न करना है।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**1.** इस प्रश्न के उत्तर के लिए सभी सर्गों का सारांश लिखिए।

**2.** **पहला सर्ग ( प्रारम्भिक जीवन )**—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 ई० को कटक में हुआ था। इनके पिता का नाम जानकीदास तथा माता का नाम प्रभावती था। पिता एक सामाजिक और प्रतिष्ठित नागरिक थे तथा माता एक धार्मिक प्रवृत्ति की कुशल गृहिणी थीं। पारिवारिक सुसभ्यता का प्रभाव बालक सुभाष पर अत्यन्त गहरा था। सामाजिक जीवन और धार्मिक विचारों से बालक सुभाष का मन घर से बाहर जीवन की खोज करने लगा। माता से उन्हें प्राचीन भारतीय संस्कृति की अभूतपूर्व शिक्षा मिली। उनकी माता एक साध्वी नारी थीं, वे बालक सुभाष को देशसेवक बनाना चाहती थीं अत: वे सदैव प्राचीन संस्कृति से सम्बन्धित कथा–कहानियाँ सुनाया करती थीं। इस सबका परिणाम यह हुआ कि बालक सुभाष प्रारम्भ से ही देश–प्रेम का पाठ सीख गए।

बालक सुभाष अत्यन्त मेधावी थे। इनके प्रथम गुरु बेनीमाधव थे जिन्होंने इन्हें समाज–सेवा का पाठ पढ़ाया। इन्होंने कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में गहन अध्ययन किया। यहीं पर इनकी भेंट सुरेश बनर्जी से हुई, जिनके सान्निध्य में इन्होंने आजीवन अविवाहित रहकर देशसेवा का व्रत लिया। इसी आश्रम में इनकी भेंट स्वामी विवेकानन्द से हुई, जिनके उपदेशों से इनके जीवन की धारा ही बदल गई और सुभाष पढ़ाई छोड़कर देश–सेवा के लिए निकल पड़े। कुछ समय इधर–उधर भटकने के बाद ये पुन: कलकत्ता लौटे और पुन: पढ़ाई में जुट गए। एक दिन कॉलेज में ओटन नामक अंग्रेज अध्यापक द्वारा भारतीयों को अपशब्द कहे जाने पर इन्होंने उसे पीट दिया। इस घटना पर सुभाष को कॉलेज से निकाल दिया गया।

सुभाष अपने विद्यार्थी जीवन में बहुत मेधावी थे। ये हमेशा कक्षा में प्रथम आते थे। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से इन्होंने आई०सी०एस० की परीक्षा उत्तीर्ण की पर इन्होंने अंग्रेजों द्वारा शासित भारत में अधिकारी बनना उचित नहीं समझा और भारत की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष में स्वयं को झोंक दिया।

**3.** **द्वितीय सर्ग ( स्वराज्य दल में प्रवेश )**—जब सन् 1921 ई० में गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन का सूत्रपात किया तो देश के सभी नागरिकों ने गांधी जी का साथ दिया। सुभाषचन्द्र बोस ने गांधी जी का साथ भारतीय स्वतन्त्रता के इस आन्दोलन में अपने ढंग से दिया और अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय जनता में क्रान्ति के बीच बो दिए। गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के परिणामस्वरूप विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया जाता था। उनकी होली जलाई जाती थी। इसी समय कलकत्ता में देशबन्धु चितरंजन दास ने नेशनल कॉलेज की स्थापना करके सुभाषचन्द्र बोस को प्रिंसीपल बना दिया। नेशनल कॉलेज के माध्यम से सुभाष ने युवाओं (छात्रों) में देशप्रेम के बीज बो दिए, जिससे क्रान्ति भड़क उठी। अंग्रेजों ने भयभीत होकर चितरंजनदास के साथ सुभाषचन्द्र बोस को भी बन्दी बना लिया।

कुछ समय बाद जब ये कारागार से बाहर आए तो इनका मन अंग्रेजों के प्रति विद्वेष से भर उठा और इन्होंने भारत की स्वतन्त्रता के लिए सतत संघर्ष की कसम ली। पं० मोतीलाल नेहरू ने जब 'स्वराज्य दल' का गठन किया तो उसमें चितरंजनदास के साथ सुभाष भी शामिल किए गए और कलकत्ता महापालिका में 'स्वराज्य दल' के प्रतिनिधियों को जिताकर अंग्रेजी सरकार को करारा झटका दिया। चितरंजनदास नगर प्रमुख बने और सुभाष अधिशासी अधिकारी नियुक्त हुए। इस पद पर रहते हुए सुभाषचन्द्र बोस ने अपने निर्धारित वेतन का आधा भाग ही लेना स्वीकारा तथा आधा वेतन दीन-दु:खियों के कल्याण में लगाया। ज्यों-ज्यों सुभाषचन्द्र बोस की लोकप्रियता बढ़ती जा रही थी, त्यों-त्यों अंग्रेज सरकार इनसे नाराज होती जा रही थी। एक दिन अकारण ही इन्हें पकड़कर जेल में डाल दिया गया। उस समय कलकत्ता में जगह-जगह अंग्रेजों के विरुद्ध लोग सड़कों पर उतर आए। इन्हें अलीपुर, बरहपुर तथा माण्डले जेल में रखा गया। जनता ने सभाएँ कीं, नारे लगाए तब जाकर अंग्रेज सरकार ने सुभाष को मुक्त किया। सुभाष की लोकप्रियता दिनों-दिन बढ़ती जा रही थी। जेल में रहने से इनके स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ा, किन्तु इन्होंने अपने स्वास्थ्य की चिन्ता किए बिना अंग्रेजों के विरुद्ध अपनी लड़ाई जारी रखी।

4. **तृतीय सर्ग ( कांग्रेस अधिवेशन )**—सन् 1928 ई० में कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। पं० मोतीलाल नेहरू इसके अध्यक्ष बनाए गए और सुभाषचन्द्र बोस स्वयंसेवक दल के सेनानी। वे अधिवेशन के आयोजक भी थे। इस अधिवेशन को लेकर जनता में अति उत्साह था। चारों ओर लोग नेताजी की जय-जयकार कर रहे थे। राष्ट्रगान के साथ अधिवेशन शुरू हुआ तथा राष्ट्रध्वज फहराया गया। 'भारत माता की जय' के उद्घोषों से वातावरण गूँज उठा। पं० मोतीलाल नेहरू ने सुभाषचन्द्र बोस को अपने पुत्र के समान बताया तो सारी जनता में हर्ष की लहर दौड़ गई। इसी समय सुभाषचन्द्र बोस को कलकत्ता का मेयर चुना गया। मेयर के पद पर रहते हुए सुभाष को अंग्रेज सरकार से कई बार विरोध करना पड़ा। उनके जुलूस पर लाठियाँ बरसाई गईं और उन्हें पकड़कर अलीपुर जेल भेज दिया गया। नौ महीने बाद ये जेल से छूटे और फिर फिर युवकों को संगठित कर उनमें उत्साह का संचार करने लगे। अंग्रेज सरकार ने इन्हें फिर जेल भेज दिया। जेल में ही इन्हें अपने पिता की मृत्यु का समाचार मिला और वे 'कटक' चले आए। 'इण्डियन स्ट्रगल' नामक पुस्तक लिखने के कारण अंग्रेज सरकार ने सुभाष को सन् 1936 ई० में गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया। लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन में इन्हें अध्यक्ष बनाने की माँग उठी, किन्तु इनके अस्वस्थ होने के कारण यह पद ग्रहण न कर सके। पूर्ण स्वस्थ हो जाने पर इन्हें हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया गया। सुभाष का अब तक का राजनीतिक जीवन अत्यन्त ही संघर्षमय रहा और वे कलकत्ता से बाहर की राष्ट्रीय राजनीति का प्रमुख चेहरा बन गए।

5. **चतुर्थ सर्ग ( फारवर्ड ब्लॉक की स्थापना )**—कांग्रेस का 51वाँ अधिवेशन कई मायनों में विशिष्ट था। यह अधिवेशन ताप्ती नदी के तट पर स्थित बिट्ठल नगर में हुआ था। इसमें इक्यावन राष्ट्रध्वज के साथ इक्यावन बैलों का रथ जोड़ा गया था जिसमें सुभाषचन्द्र बोस को बैठाकर जनता के समक्ष लाया गया। यह अधिवेशन इतना सफल हुआ कि सुभाष के भाषणों से सारे देश के युवकों में क्रान्ति की ज्वाला धधक उठी। सुभाष की देश-प्रेम की प्रबल चेतना से सारा युवा-

वर्ग अभिभूत हो उठा। इस अधिवेशन की सफलता के बाद तो सुभाष कांग्रेस अधिवेशन के प्रमुख व्यक्ति बन गए। 'त्रिपुरा कांग्रेस अधिवेशन' में पट्टाभि सीतारमैय्या तथा सुभाषचन्द्र बोस दोनों को अध्यक्ष पद के लिए नामित किया गया। बहुमत सुभाषचन्द्र की ओर था और वे जीत भी गए किन्तु गांधी जी की इच्छा के कारण इन्होंने अध्यक्ष पद छोड़ दिया। इसी समय इन्होंने 'फारवर्ड ब्लॉक' की स्थापना करके अपनी अलग पार्टी बना ली। इस समय तक सुभाष देश के नागरिकों में 'नेताजी' का दर्जा प्राप्त कर चुके थे और अपने ओजस्वी भाषणों से युवाओं में क्रान्ति अंकुरित कर चुके थे। कलकत्ता की 'ब्लैक हॉल क्रान्ति' के लिए सुभाष को अंग्रेज सरकार का कोपभाजन बनना पड़ा। इसमें कई अंग्रेज जिन्दा जला दिए गए थे। नेताजी के लाख प्रयत्नों के बावजूद भी अंग्रेज सरकार ने इसके लिए इन्हें दोषी ठहराकर जेल में डाल दिया। जेल से मुक्त होने पर इन्हें घर में नजरबन्द कर दिया गया। इस प्रकार सुभाष को अपने क्रान्तिकारी विचारों के कारण अंग्रेज सरकार द्वारा अनेक बार प्रताड़ित होना पड़ा किन्तु उन्होंने स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करना नहीं छोड़ा।

6. **पंचम सर्ग ( आजाद हिन्द फौज का गठन )**—सुभाषचन्द्र बोस के क्रान्तिकारी विचारों से भयभीत होकर अंग्रेज सरकार ने उन्हें घर में नजरबन्द कर दिया जिससे सुभाष बहुत परेशान हो उठे। उन्हें भारत माता की सेवा करने का अवसर नहीं मिल पा रहा था। अत: वे वहाँ से भागने की योजना तैयार करने लगे। 15 जनवरी, सन् 1941 के दिन शीतकाल की मध्य रात्रि में एक मौलवी के वेश में ये घर से निकल आए और छिपते-छिपाते काबुल पहुँच गए। वहाँ उनकी भेंट उत्तमचन्द्र नामक एक व्यक्ति से हुई जिसने इन्हें जर्मनी पहुँचने में मदद की। जर्मनी से ये जापान चले आए और यहीं 'आजाद हिन्द फौज' का गठन किया। 'आजाद हिन्द फौज' में अनेक भारतीय नागरिक भर्ती हो गए और अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध संघर्ष करने लगे। बाद में सुभाष सिंगापुर आए और रासबिहारी बोस के सम्पर्क में आकर 'आजाद हिन्द फौज' का विस्तार किया। इन्होंने युवकों में नवीन चेतना का संचार किया और सेना को नेहरू, गांधी, आजाद तथा बोस नाम की चार ब्रिगेडों में विभाजित कर स्वयं नेतृत्व करने लगे। आजाद हिन्द फौज में सभी धर्मों तथा जातियों के लोगों ने परस्पर रहकर देशसेवा के लिए संकल्प लिया। सभी के मन में एक ही बात थी कि अंग्रेजों को शीघ्रातिशीघ्र भारत भूमि से बाहर कर दिया जाए।

7. **षष्ठ सर्ग ( सैनिक सम्बोधन )**—सिंगापुर सुभाष के लिए तथा उनकी आजाद हिन्द फौज के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। यहीं से वे आसानी से अंग्रेजों के विरुद्ध अपनी गतिविधियाँ चला सकते थे। उनका नारा था 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' इस सम्बोधन से प्रेरित होकर अनेक भारतीय नागरिक उनकी सेना में भर्ती हो गए और अपने पराक्रमों से अंग्रेजी सेना को परास्त करने लगे। 18 मार्च, सन् 1944 को इस सेना ने अंग्रेजी सेना को हराकर 'कोहिमा' पर अधिकार कर लिया। उस समय 'गांधी जी की जय' 'सुभाष की जय' और 'भारतमाता की जय' के नारों से आकाश गूँज उठा। फिर सेना ने 'मोराई टिड्डिय' पर अधिकार किया और 'अराकान' को भी अपने कब्जे में कर लिया। 'आजाद हिन्द फौज' ने अल्प समय में ही अंग्रेजों को यह सोचने को विवश कर दिया कि अब भारत उनके अधीन नहीं रह सकता। सन् 1945 ई० को इस सेना ने अपना नव वर्ष अति उत्साह के साथ मनाया और राष्ट्र के लिए सब कुछ समर्पित करने का संकल्प लिया।

## मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

**बालक सुभाष .............................. निकल पड़े।**

(i) बालक सुभाष अत्यन्त मेधावी थे। इनके प्रथम गुरु बेनीमाधव थे।

(ii) इन्होंने कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में गहन अध्ययन किया।

(iii) आश्रम में इनकी भेंट स्वामी विवेकानन्द से हुई, जिनके उपदेशों से इनके जीवन की धारा ही बदल गई और सुभाष पढ़ाई छोड़कर देश–सेवा के लिए निकल पड़े।

# 6 ज्योति जवाहर

**(श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही')**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ख) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (ग) **6.** (ग) **7.** (घ) **8.** (घ) **9.** (घ) **10.** (ख) **11.** (ख) **12.** (क) **13.** (क) **14.** (ग) **15.** (क) **16.** (ग) **17.** (ख)।

## कूट आधारित प्रश्न

**1. राणा साँगा, चन्दबरदाई, जयमल आदि वीरों की भूमि है**

**उत्तर–**(ग) केवल (ii)

**2. 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के नायक है**

**उत्तर–**(घ) केवल (iv)

## सत्य/असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए**

**उत्तर–**(क) सत्य (ख) असत्य (ग) असत्य (घ) सत्य

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' द्वारा रचित खण्डकाव्य 'ज्योति जवाहर' के अनुसार कलिंग–युद्ध सम्राट् अशोक के शासनकाल में हुआ। भारतवर्ष में कलिंग–युद्ध अत्यधिक भयानक युद्धों में गिना जाता है। इस विनाशकारी युद्ध में रक्त की नदियाँ बह गईं, जिनमें सैनिक मछलियों के समान तैरते दिखाई देते थे। इस युद्ध में अस्त्र–शस्त्रों की भयंकर टंकार सुनाई पड़ती थी। चारों ओर त्राहि–त्राहि मची थी। नरमुण्ड कट–कटकर गिर रहे थे। न जाने कितनी माताओं की गोद सूनी होगई और अगणित नारियों की माँग का सिन्दूर पुँछ गया था। असंख्य बहनें अपने भाइयों की मृत्यु देकर छाती पीट–पीटकर रो रही थी। इस प्रकार के भयानक दृश्य को देखकर सभी का हृदय चीत्कार कर उठा था। कलिंग–युद्ध वास्तव में बड़ा भीषण युद्ध था।

जब अशोक ने कलिंग में भीषण रक्तपात होते देखा तो उसका हृदय द्रवित हो उठा और वह हिंसा का परित्याग करके अहिंसक बन गया। कलिंग-युद्ध में हुए भीषण नरसंहार को अशोक के नेत्रन देख सके। उसका वज्र जैसा हृदय पिघल उठा। वह सोचने लगा कि उसके संकेत पर कितने ही निरपराध व्यक्ति क्षणभर में मौत के मुख में चले गए। अशोक विचलित हो उठा। उसे अपना विशाल साम्राज्य भी फीका लगने लगा। इस सन्दर्भ में कवि ने अशोक की मनोदशा का वर्णन इस प्रकार किया है—

**सोने चाँदी का आकर्षण, अब उसे घिनौना लगता था।**
**साम्राज्यवाद का शीशमहल, कुटिया से बौना लगता था।**

कलिंग-युद्ध के उपरान्त अशोक पूर्णतया अहिंसक बन गया। इस युद्ध ने उसके हृदय को आहत कर दिया था—

**जाने कैसे थी कचोट, दिन रहते जिसने जगा दिया।**
**हिंसा की जगह अहिंसा का, अंकुर अन्तर में उगा दिया।।**

अशोक ने तलवार फेंकते हुए कभी युद्ध न करने की प्रतिज्ञा ली। वह गौतम बुद्ध का अनुयायी होकर बौद्ध भिक्षुक बन गया। इस स्थिति का चित्रण कवि ने इस प्रकार किया है—

**जो कभी न हारा औरों से, वह आज स्वयं से हार गया।**
**भिक्षुक अशोक राजा अशोक, से पहले बाजी मार गया।।**

प्रस्तुत खण्डकाव्य में कलिंग युद्ध का उल्लेख हिंसा और युद्ध के प्रति अशोक के वैराग्य और नेहरू के विचारों पर उस वैराग्य के प्रभाव को चित्रित करनेके लिए हुआ है।

**2.** 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य में कवि 'राही' ने बताया है कि भारत की वैविध्यपूर्ण संस्कृति ने किसप्रकार पं० जवाहरलाल नेहरू के महान् व्यक्तित्व का निर्माण किया और फिर किस प्रकार से नेहरूजी ने भारत का नव-निर्माण करते हुए उसे एक ज्योति पुंज के रूप में नई दिशा और पहचान दी। नेहरूजी के चरित्र और व्यक्तित्व को अतिशयता प्रदान करते हुए कवि ने भारत और नेहरूजी को एक-दूसरे के पर्याय के रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा है—

**जब लगा देखने मानचित्र, भारत न मिला तुमको पाया।**
**जब तुमको देख नयनों में, भारत का चित्र उभर आया।।**

कवि ने भारत की राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक विरासत का गुणगान नेहरूजी के ज्योतिस्वरूप भावात्मक व्यक्तित्व के आलोक में किया है, जिसमें उसे पूर्ण सफलता भी प्राप्त हुई है; अत: उन्हीं ज्योतिस्वरूप जवाहरलाल नेहरू के नाम पर इस खण्डकाव्य का नामकरण सर्वथा सार्थक और औचित्यपूर्ण ही है।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**1.** 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के रचयिता श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' हैं। इन्होंने पं० जवाहरलाल नेहरू के जीवन को आधार बनाकर प्रस्तुत खण्डकाव्य का प्रणयन किया है। यह खण्डकाव्य राष्ट्रीयता की अनुगूँजों से ओत-प्रोत भावुकता से परिपूर्ण एक सफल खण्डकाव्य है। कवि ने खण्डकाव्य की कथा को भारतीयता के आदर्शों तथा सिद्धान्तों के अनुरूप गढ़ा है।

पं० जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व में भारत की एकता, अखण्डता, प्राचीनता का विशाल और

अपूर्व सौन्दर्य विद्यमान है। उनके अन्दर सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति के दर्शन होते हैं। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक के सभी भू-भाग पं० नेहरू के व्यक्तित्व में समाहित हैं। वे राष्ट्रनायक, कुशल प्रशासक तथा ओजस्वी वक्ता हैं। सम्पूर्ण भारतवर्ष के सांस्कृतिक एवं सामाजिक सन्दर्भों की झलक उनमें देखी जा सकती है। कवि ने पं० जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व में भारतीयता की झलक को निम्नलिखित रूपों में पिरोकर कथा का संगठन किया है। खण्डकाव्य की कथा भारत-दर्शन पर आधारित है। नेहरू भारत भ्रमण कर रहे हैं और सारा भारत उन्हें सर्वस्व भेंट कर रहा है।

गुजरात प्रदेश के महान व्यक्तियों, ऋषियों; यथा—भक्त नरसी मेहता, कवि पद्मनाथ, महर्षि दयानन्द तथा महात्मा गांधी के विचारों का समुचित समन्वय पं० नेहरू में उपस्थित था।

महाराष्ट्र के गुरु रामदास की राष्ट्रीय चेतना, सन्त ज्ञानेश्वर का कर्मवाद, सन्त तुकाराम तथा लोकनाथ के भक्ति गीत, लोकमान्य तिलक का 'करो या मरो' का नारा तथा केशव गुप्त के ओजस्वी गीत नेहरू के व्यक्तित्व में समाहित थे। राजस्थान के राणा सांगा, चन्दबरदाई, जयमल आदि का शौर्य, पन्ना धाय का बलिदान तथा योगिनी मीरा पं० नेहरू के आदर्शों में विद्यमान रहकर देश-सेवा की प्रेरणा देते थे। कवि ने मध्य प्रदेश की मिट्टी को इन शब्दों में उकेरा है—

**बूढ़ा सतपुड़ा लगा कहने, हूँ दूर मगर अलगाव नहीं।**
**कम हुआ आज तक उत्तर से दक्षिण का कभी लगाव नहीं।।**

सतपुड़ा की नर्मदा, ताप्ती, महानदी, कृष्णा तथा कावेरी नदियाँ, महावीर तथा गौतम के जीवन उपदेश, कम्बन की रामायण, सतपुड़ा सन्त अप्पा के अहिंसावादी विचार, कालिदास की भावुकता, कुमारिल की प्रतिभा, मोढ़ा की व्याकुलता, फकीर मोहन की फक्कड़ी, चाँदबीबी की वीरता, तंजौर तथा भुवनेश्वर की पाषाण प्रतिमाएँ और तानसेन की मधुर वीणा नेहरू के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक रहे।

बंगाल की धरती भी अछूती न रही उसने भी अपना सब कुछ नेहरू पर न्यौछावर कर दिया—

**बंगाल लगा हल्ला करने, कंगाल नहीं मैं रत्नों का।**
**तेरे हित अभी सँजोए हूँ, अरमान न जाने कितनों का।।**

जयदेव, चण्डीदास तथा गोविन्ददास के मधुर गीत, कृतिवास की अनूदित रामायण, चैतन्य महाप्रभु की अमृतमयी वाणी, दौलतकाजी तथा शाहजफर की गजलें, विवेकानन्द तथा दीनबन्धु की कर्मठता, बंकिमचन्द्र का राष्ट्र-प्रेम, टैगोर तथा शरत् की कला एवं साहित्य, सुभाषचन्द्र बोस की देशभक्ति सब नेहरू के प्रेरणास्त्रोत थे। बंगाल कहता है—

**अब जो कुछ है सब अर्पित है, आँसू-अंगारे औ पानी।**
**जीवन की लाज बचा लेना, गंगा-यमुना के वरदानी।।**

आसाम अपनी प्राकृतिक सुषमा को नेहरू पर अर्पण करते हुए कहता है—

**मेरी हर धड़कन प्यासी है, तेरे चरणों के चुंबन को।**
**होती तैयार खड़ी है रे, जन-मन के स्नेह समर्पण को।।**

माधव कन्दली की रामायण, मनसा के भक्तिगीत, गुरुशंकर का साहित्य, चरितपुथी की मानवता ने नेहरू के चरित्र-निर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया। बिहार के गौतमबुद्ध, महावीर स्वामी के

सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा आदि मानवीय गुण, समुद्रगुप्त की यशोगाथा, अशोक की वैराग्य भावना, पुष्यमित्र शुंग का सांस्कृतिक विकास तथा पतंजलि का चिंतन एवं बौद्धिक उत्कर्ष नेहरू को गरिमा प्रदान करता है।

और उत्तर प्रदेश तो पूरा ही नेहरू में समाहित है। अयोध्या, मथुरा, वृन्दावन, वाराणसी तथा हरिद्वार आदि तीर्थस्थल, लक्ष्मीबाई की वीरता, रामचरितमानस का भक्ति संगीत नेहरू के चिंतन को व्यापकता प्रदान करते हैं—पंजाब भी नित नेहरू के चरणों में शीश झुकाता है। जलियाँवाला बाग की कारुणिकता, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की सभ्यता तथा गुरुनानक, गुरु गोविन्द सिंह की वाणी तथा महाराजा रणजीत सिंह की वीरता भी नेहरू की स्मृतियों में आ-आकर राष्ट्र सन्देश देती हैं।

यहाँ आकर नेहरू जैसे ही ठहरते हैं। कश्मीर उन पर फूलों की वर्षा करने लगता है और नेहरू कश्मीर के सौन्दर्य में खो जाते हैं।

जब नेहरू कुरुक्षेत्र आते हैं तो कुरुक्षेत्र उनके हाथों में अर्जुन का गाण्डीव सौंपकर दुर्योधन जैसे अत्याचारियों का नाश कर देने को कहता है।

दिल्ली अपना दिल नेहरू को देना चाहती है। वह बाबर, शेरशाह आदि की कट्टरता को भुलाकर अकबर की सहिष्णुता प्रदान करती है। वह नेहरू को जहाँगीर का न्याय, शाहजहाँ की कलात्मक सौगात 'ताजमहल', बहादुरशाह जफर का बलिदान देकर अविस्मरणीय बना देना चाहती है। 'लालकिला' तो जैसे अपना सारा वैभव, सारा सिंहासन, सारी शक्तियाँ ही संगम के इस लाल को अर्पण कर देता है।

बिहार की वैशाली नेहरूजी को मानवीय गुणों के मोती अर्पित करती हुई कहती है—

**फिर भी दर्शन के कुछ मोती, इस आशा से ले आई हूँ।**
**मोती की लाज न जाएगी, 'मोती' के द्वारे आई हूँ।।**

इस प्रकार सम्पूर्ण भारत अपना कुछ न कुछ अर्पण कर नेहरू को नवभारत का निर्माणकर्त्ता घोषित करता है। भारत के सभी स्थल उन्हें कोई-न-कोई अपनी विशिष्ट निधि अर्पित करके विशिष्ट बना देते हैं। उनके व्यक्तित्व निर्माण में सम्पूर्ण भारत का योगदान रहा—इसमें सन्देह नहीं।

जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व के अनुरूप ही कवि ने उन्हें अपने शब्द अर्पित किए हैं—

**जब लगा देखने मानचित्र, भारत न मिला तुमको पाया।**
**जब तुमको देखा नयनों में, भारत का चित्र उभर आया।।**

**2.** श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' द्वारा रचित 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के नायक पं० जवाहरलाल नेहरू हैं। जवाहरलाल नेहरू को प्रस्तुत खण्डकाव्य में युगावतार तथा लोकनायक के रूप में चित्रित किया गया है। उनकी चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है—

**1. महान् व्यक्तित्व**—जवाहरलाल नेहरू के विराट् व्यक्तित्व में सूरज का तेज, चाँद की सुघड़ता, सागर की गहराई तथा धरती का धैर्य था। वे भारत के भाग्य-निर्माताओं में से थे। भारत के राष्ट्रभक्तों की श्रृंखला में उनका नाम अमर है।

**2. देशभक्त तथा स्वतन्त्रता के पुजारी**—उच्चकुल में उत्पन्न होने पर भी जवाहरलाल नेहरू ने देश की स्वतन्त्रता के लिए अनेक कष्टों को सहन किया। उनका जीवन वीर शिवाजी, राणा प्रताप आदि वीरों के चरित्र से प्रभावित हुआ था। वे सच्चे देशभक्तों के समान संघर्षमय जीवन व्यतीत करना जानते थे—

**संघर्षों में पैदा होना, संघर्षों में जीना-मरना।**
**जिनके आगे बाधाओं को, हरदम पड़ता पानी भरना।।**

**3. भारतीय संस्कृति के पोषक**—जवाहरलाल नेहरू के चरित्र पर भारतवर्ष के प्राचीन गौरव की छाप है। उन्होंने महावीर, गौतम तथा महात्मा गांधी द्वारा अपनाई गई अहिंसा की नीति का पालन किया। वे गांधीजी के स्वप्नों का भारत बनाने में ही जीवनभर तल्लीन रहे। भारतवर्ष के शंकराचार्य, रामानुजाचार्य आदि महान् दार्शनिकों की वाणी को उन्होंने ध्यानपूर्वक सुना। भारतीय साहित्यकारों कालिदास, भवभूति आदि तथा भारतवर्ष के शीर्षस्थ नेता अकबर, चाँदबीबी, सुभाषचन्द्र बोस, टीपू आदि के चरित्रों का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

**4. सर्वप्रिय लोकनायक**—जवाहरलाल नेहरू को भारतीय जनता ने असीम प्यार दिया। कवि ने जवाहरलाल को युगावतार तथा लोकनायक के रूप में स्वीकार किया है। लोकनायक वही हो सकता हे, जिसके हृदय में सम्पूर्ण जनता के सुख-दु:खों की अनुभूमि हो। भारतवर्ष का कोई ऐसा प्रान्त नहीं,जिसने जवाहरलाल नेहरू पर अपना सर्वस्व न्योछावर न किया हो। गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली आदि सभी प्रान्तों के कोने-कोने में लोकनायक का विराट् व्यक्तित्व व्याप्त है। नेहरूजी को युगावतार मानते हुए कवि ने इस प्रकार कहा है—

**मथुरा वृन्दावन अवधपुरी की, गली-गली में बात चली।**
**फिर नया रूप धर का उतरा, द्वापर त्रेता का महाबली।।**

**5. नवराष्ट्र के निर्माणकर्ता**—भारतवर्ष को स्वतन्त्रता दिलाने के पश्चात नवराष्ट्र का निर्माण करने वालों में जवाहरलाल नेहरू अग्रगण्य हैं। देश का उद्धार करने के लिए उन्होंने पंचवर्षीय योजनाओं को आरम्भ किया। गुट-निरपेक्षता, निरस्त्रीकरण तथा विश्व-शान्ति की स्थापना आदि कार्यों के फलस्वरूप उनका व्यक्तित्व चमक उठा। वे जाति-पाँति के बन्धनों को तोड़ने में विशवास रखते थे। जवाहरलाल नेहरू सभी धर्मों की एकता में विशवास रखकर देश को निरन्तर प्रगतिशील बनाना चाहते थे।

**6. विश्व-शान्ति के अग्रदूत**—जवाहरलाल आजीवन विशव-शान्ति की स्थापना के कार्य में लगे रहे। उनके द्वारा निर्धारित तटस्थता, निरस्त्रीकरण तथा विश्व-शान्ति की स्थापना आदि कार्यों के फलस्वरूप उनका व्यक्तित्व चमक उठा। वे जाति-पाँति के बन्धनों को तोड़ने में विश्वास रखते थे। जवाहरलाल नेहरू सभी धर्मों की एकता में विश्वास राकर देश को निरन्तर प्रगतिशील बनाना चाहते थे।

**7. युद्ध-विरोधी**—जवाहरलाल भी अशोक के समान युद्ध-विरोधी थे। वे अहिंसा के पुजारी थे, किन्तु उनकी अहिंसा की परिभाषा सर्वथा भिन्न थी। वे अत्याचार, शोषण और स्वाभिमान पर आघात होते हुए भी चुपचाप रहने को अहिंसा नहीं मानते थे। उनकी दृष्टि में यह अहिंसा नहीं, बल्कि कायरता थी। वे अत्याचारी के सामने झुक जाने को हिंसा और पापी का सिर काट देने को

अहिंसा मानते थे। इसका उल्लेख कवि ने इस प्रकार किया है—

**अत्याचारी के चरणों पर**
**झुक जाना भारी हिंसा है।**
**पापी का शीश कुचल देना**
**जी, हिंसा नहीं अहिंसा है।**

**8. राष्ट्रोत्थान के पक्षपाती**—जवाहरलाल नेहरू ने स्वतन्त्र-भारत का नव-निर्माण किया। उन्होंने भारतवर्ष को स्वावलम्बी राष्ट्र बनाने का भरसक प्रयास किया। पंचवर्षीय योजनाओं के आधार पर उन्होंने भारत का निरन्तर उत्थान किया। राष्ट्रीय उत्पादन में उनकी अत्यधिक रुचि थी।

इस प्रकार 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य में जवाहरलाल नेहरू का व्यक्तित्व समग्र भारतीयता और उसके प्राकृतिक सौन्दर्य को समाहित किए हुए है,जिसको कवि ने इन शब्दों में व्यक्त किया है—

**सूरज से लेकर ज्योति, चाँद से लेकर सुधराई तन की।**
**हिमगिरि से लेकर स्वाभिमान, सागर से गहराई मन की।।**

अत: हम कह सकते हैं कि उनका व्यक्तित्व एक राष्ट्रप्रेमी, मानवतावादी, युद्ध-विरोधी, सत्यएवं अहिंसा के पुजारी तथा महान् लोकनायक के रूप में उभरकर सामनेआया है। उनका व्यक्तित्व सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का परिचयक है।

**3.** 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य में श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' ने लोकनायक जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व को भावात्मक एकता का प्रतीक मानते हुए प्रस्तुत खण्डकाव्य का सृजन किया है। भारतवर्ष के गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के गौरव का वर्णन भी कवि ने भावात्मक एकता की दृष्टि से ही किया है। ये सभी राज्य भारतवर्ष की महिमा को ही व्यक्त करते हैं। इस भावना को व्यक्त करते हुए कवि ने लिखा है—

**माथे पर टीका लगा दिया, हल्दी की घाटी ने**
**जो मन्त्र दिया मर मिटने का, आजादी की परिपाटी ने।**
**बूढ़ा सतपुड़ा लगा कहने, हूँ दूर मगर अलगाव नहीं**
**कम हुआ आज तक उत्तर से, दक्षिण का कभी लगाव नहीं।।**

स्पष्ट है कि कविवर राही ने प्रस्तुत खण्डकाव्य में मुख्य रूप से नेहरू के भावात्मक व्यक्तित्व का चित्रण किया है। इस चित्रण में उन्होंने भारतवर्ष की भावात्मक एकता को मनोहारी रूप में प्रस्तुत किया है। कवि का प्रतिपाद्य विषय यही है।

इस सन्दर्भ में कविवर देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' ने प्रस्तुत खण्डकाव्य की भूमिका में स्पष्ट रूप से लिखा है—''जो लोग पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण का प्रश्न उठाकर जाति, भाषा, सम्प्रदाय और रीति-रिवाज की संकुचित मनोवृत्ति के आधार पर अलगाव और विघटन की बातें करते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकता सदियों से अपनी अखण्डता का उदघोष करती हुई, समानताओं एवं विषमताओं की चट्टानों को तोड़ती हुई निरनतर आगे बढ़ती जा रही है।''

इस खण्डकाव्य में कवि नेहरू के भावात्मक व्यक्तित्व का चित्रण करते हुए, भारत की राष्ट्रीय एकता पर आधारित चिरकालीन भावना को स्पष्ट करना चाहते हैं। इस प्रकार कवि ने नेहरू के व्यक्तित्व में राष्ट्रीय भावात्मक एकता तथा उनके केन्द्रीय स्वरूप का समायोजन किया है। कवि को इस प्रयत्न में पूर्ण सफलता भी प्राप्त हुई है।

कवि के कथनानुसार खण्डकाव्य की कथा लौकिकता की भावभूमि पर अवतरित होकर राष्ट्र की उन उपलब्धियों को आत्मसात्करती हुई आगे बढ़ती है, जो विभिन्न प्रकार की भौगोलिक जलवायु, रहन५सहन, आचार-विचार और भाशा की विभिन्नताओं केबाद भी समग्र राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे हुए है तथा राट्रीय एकता के प्रतीक लोकनायक पं० नेहरू के व्यक्तित्व में तिरोहित हो जाती है। 'ज्योति जवाहर' में राष्ट्रीय एकता की भावना पग-पग पर व्यक्त हुई है और खण्डकाव्य का कथनाक; देश की विभिन्नताओं के बीच अभिन्नता की एक शाश्वत कड़ी के रूप में उभरकर सामने आया है। इस प्रकार 'ज्योति-जवाहर' खण्डकाव्य राष्ट्रीय भावात्मक एकतामूलक खण्डकाव्य है।

**4.** श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' द्वारा रचित 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य का प्रमुख रस 'शान्त' है। यत्र-तत्र अन्य रसों का भी प्रयोग किया गया है, किन्तु उनकी प्रस्तुति गौण ही है। उदाहरणस्वरूप—कलिंग युद्ध के विवरण में बीभत्स, अशोक की मानसिक स्थिति प्रदर्शित करने में करुण तथा लोकमान्य तिलक, शिवाजी, राणा साँगा आदि से सम्बन्धित विवरणों में वीर आदि रसों की निष्पत्ति हुई है। वस्तुत: इस खण्डकाव्य में नेहरू के व्यक्तित्व पर इन विभिन्न रसों से युक्त विवरणों का प्रभाव दिखाया गया है।

**केस/स्रोत आधारित प्रश्न**

- **निम्नलिखित अनुच्छेद (केस/स्रोत) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

  **महाराष्ट्र के गुरु .............................. प्रेरणा देते थे।**

  (i) लोकमान्य तिलक ने करो या मरो का नारा दिया।

  (ii) महाराष्ट्र के गुरु रामदास की राष्ट्रीय चेतना, सन्त ज्ञानेश्वर का कर्मवाद, सन्त तुकाराम तथा लोकनाथ के भक्ति गीत, लोकमान्य तिलक का 'करो या मरो' का नारा तथा केशव गुप्त के ओजस्वी गीत नेहरू के व्यक्तित्व में समाहित थे।

  (iii) राजस्थान के राणा सांगा, चन्दबरदाई, जयमल आदि का शौर्य, पन्ना धाय का बलिदान तथा योगिनी मीरा पं० नेहरू के आदर्शों में विद्यमान रहकर देश-सेवा की प्रेरणा देते थे।

# 7 कर्मवीर भरत

**(लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक')**

## बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ग) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (क)।

## अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–**(क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

## चित्र आधारित प्रश्न

- **दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि कैकेयी के द्वारा लिए गए वचनों का भरत पर क्या प्रभाव पड़ा उन्होंने इसे किस प्रकार लिया?**

**उत्तर–** कैकेयी द्वारा लिए गए वचनों से भरत को गहरा दु:ख पहुँचा। उन्हें लगा कि वे ही श्रीराम के वनवास के लिए उत्तरदायी हैं। उन्होंने अपनी माता कैकेयी की निन्दा की।

## रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

**1. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य ____________ में सर्ग हैं**

**उत्तर–**(ग) छह

**2. 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के मर्यादा पुरुषोत्तम ____________ हैं**

**उत्तर–**(क) राम

## सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

**उत्तर–**(क) (ii) (iii) (iv) (i)

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**8.** श्री लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' कृत 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के नायक 'भरत' हैं। उनके प्रमुख चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है—

**1. आदर्श महापुरुष**—प्रस्तुत खण्डकाव्य के चरित्र-नायक भरत सरल हृदय तथा आदर्श महापुरुष हैं। छल-कपट, षडयन्त्र आदि दोषों से वे पूरी तरह मुक्त हैं। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि उनकी माता कैकेयी ने उनके लिए वरदान में राज्य माँग लिया है तो उन्हें अपार ग्लानि हुई। वे स्वयं को अपराधी समझने लगे। उनका मन उन्हें धिक्कारने लगा। उन्हें यह बात स्वीकार नहीं थी कि कोई व्यक्ति उनके चरित्र पर शंका करे। कौशल्या, कैकेयी, वशिष्ठ तथा राम के सम्मुख वे अपने हृदय की इस महानता को प्रकट करते हैं। वे रघुवंश की नीति व मर्यादा का पालन करते हुए एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं। वेकहते भी हैं—

**किन्तु ज्येष्ठ को राजतिलक की परम्परा है,**
**राजा दु:ख से नहीं, अनय से सदा डरा है।**

यद्यपि कैकेयी द्वारा भरत को अनेक प्रकार से समझाया जाता है, तथापि भरत बड़े भाई राम के जीवित रहते अयोध्या  के राज्य को स्वीकार करने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। अपनी माता कैकेयी के प्रति अपना क्रोध प्रकट करते हुए भरत कहते हैं—

**माँग अवध का राज्य किया अपना मन भाया,**
**किन्तु भरत के भाल अयश को तिलक लगाया।**

**2. भावुक हृदय**—भरत अत्यधिक भावुक हैं। अपने अतिरिक्त वे अन्य सभी के सुख-दु:ख की चिन्ता करते हैं। पिता के स्वर्गवास का समाचार सुनकर वे अत्यधिक शोकाकुल हो जाते हैं। अवध के राज्य को वे किसी प्रकार भी स्वीकार नहीं करते। राम के वनगमन, पिता के देहान्त, माताओं के वैधव्य और उर्मिला की विरह-व्यथा के जानकर उनका हृदय दु:ख के सागर में गोते लगाने लगता है।

**3. परम त्यागी तथा अनासक्त**—कैकेयी के बार-बार समझाने पर भी भरत राजगद्दी को स्वीकार नहीं करते। वे राजय का वास्तविक अधिकारी राम को ही मानते हैं। भरत के इस अनासक्त भावको सभी जानते हैं। स्वयं कौशल्या कहती हैं कि भरत को राज्य का लेशमात्र भी मोह नहीं है। सुमित्रा भी उनकी प्रशंसा करती हुई कहती हैं—

**नहीं राज्य-वैभव में है अनुरक्ति तुम्हारी,**
**तुम विदेह हो, अटल राम की भक्ति तुम्हारी।**

स्वयं मुनि वशिष्ट तथा रामभी भरत के त्याग तथा  अनासक्त-भाव की प्रशंसा करते हैं।

**4. राम के सच्चे अनुयायी**—भरत को सबसे बड़ा दु:ख राम के वनगमन का है। राम के प्रति उनके मनमें असीम आदर का भाव है। वन में जाकर वे राम से अवध लौटने की प्रार्थना भी करते हैं। राम का वनवासी रूप देखकर वे व्याकुल हो जाते हैं। वे तो राम के पूर्ण भक्त, आज्ञाकारी तथा कृपापात्र बने रहना चाहते हैं। राम द्वारा समझाए जाने पर वे अन्त में यही कहते हैं—

**लघु भ्राता ही नहीं नाथ! मैं दास तुम्हारा,**
**मोह-सिन्धु में छूब रहा था मुझे उबारा।**

राम की चरण-पादुकाओं को वे चौदह वर्षों तक राज्य-सिंहासन पर सुशोभित करते हैं। वे शील और विनम्रता की साक्षात् प्रतिमा हैं। उनकी सरलता और विनम्रता से सभी प्रभावित हैं। भरत द्वारा चरण-पादुकाएँ माँगने पर राम कहते भी हैं—

**राज्य छोड़कर तुच्छ खड़ाऊँ तुमने माँगे,**
**त्याग भाव में भरत रहे हैं सबसे आगे।**

भरत के शील, स्वभाव तथा महान् तयाग की चर्चा जगत-भर में व्याप्त हो गई है—

**फैली क्षण में भरत-शील की कथा नगर में,**
**चर्चा होने लगी त्याग-व्रत की घर-घर में।**

वस्तुत: भरत का हृदय असीम मानवीय गुणों का भण्डार है। वे आदर्श महापुरुष हैं।

**5. कर्मवीर**—भरत सच्चे कर्मवीर हैं। वे लोभ-लालच से बहुत दूर और अपने उत्तरदायित्वों के प्रति पूर्ण गम्भीर हैं। यही कारण है कि वह बिना प्रयत्न के मिले राज्य को भी ठुकारा देते हैं और

उसे उसके वास्तविक उत्तराधिकारी राम के चरणों को ही समर्पित कर देते हैं। राम जब चौदह वर्षों के लिए उन पर राज्य-भार डाल दी देते हैं तो वे उस उत्तरदायित्व को को पूर्णनिष्ठा से निभाते हैं और वह भी राजसिंहासन को हाथ लगाए बिना। ऐसा कर्मयोगी भारतीय साहित्येतिहास-पुराणादि में भरत के अतिरिक्त दूसरा कोई दिखाई नहीं देता।

**9.** कवि लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' कृत 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य का रचना-उद्देश्य रामायण के पात्र भरत के त्यागमय जीवन का चित्रण है। भरत का सम्पूर्ण जीवन एक कर्मयोगी का जीवन रहा है। कवि ने उनके जीवन-चरित्र में अपनी कल्पनपा का समावेश करके इस खण्डकाव्य को प्रेरणात्मक स्वरूप दे दिया है। 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के माध्यम से कवि ने कई प्रकार की शिक्षाओं और नैतिक मान्यताओं को व्यक्त किया है। कर्मवीर भरत की कहानी हमें इन शिक्षाओं के कारण प्रभावित करती है—

**1. आज्ञापालन**—'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य में आज्ञापालन को प्रमुख स्थान दिया गया है। राम अपने पिता की आज्ञा से वन को गए। भरत ने अपने बड़े भाई राम की आज्ञा मानकर वन से न लौटने का आग्रह त्याग दिया और गुरु वशिष्ठ की आज्ञा को सबने शिरोधार्य किया; अत: इस काव्य का उद्देश्य आज्ञापालन की शिक्षा प्रदान करना है।

**2. भ्रातृ-प्रेम**—'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य से भ्रातृ-प्रेम की शिक्षा भी मिलती है। राम-लक्ष्मण, राम-भरत, भरत-शत्रुधन का प्रेम एक आदर्श प्रेम का उदाहरण हे। इस प्रकार भ्रातृ-प्रेम को उजागर करना भी कवि का उद्देश्य है।

**3. भारतीय संस्कृति का सनदेश**—भारतीय संस्कृति बलिदान और त्याग से परिपूर्ण है। धन-वैभव का लोभ छोड़कर जन-कल्याण के लिए सर्वस्व भारतीय संस्कृति का मूल आधार है। प्रस्तुत काव्य में इसी भावको कविद्वारा कैकेयी के मुख से इस प्रकार कहलवाया गया है—

**धन-वैभव का दम्भ भले लगता सुखकर है,**
**पर जन-सेवा राज्य-भोग से भी बढ़कर है।**

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कवि ने भरत के चरित्र की उद्‌भावना की है।

**4. जन-कल्याण की भावना**—जन-कल्याण की भावनाओं को ध्यान में रखकर ही कैकेयी दुराचारियों के संहार हेतु राम को वन में भेजती है।

**5. दलितों और दीन-दु:खियों के प्रति संवेदन**—कवि कैकेयी के माध्यम से दीन-दु:खियों, दलितों और पतितों को भी अपने समान मानकर उन्हें अपनाने का सन्देश देता है।

**6. त्याग-भावना की महत्ता**—प्रस्तुत खण्डकाव्य में कवि लक्ष्मीशंकर मिश्र नेत्याग की भावना को अन्य सभी भावनाओं से श्रेष्ठ सिद्ध किया है। उन्होंने भरत के चरित्र के माध्यम से स्पष्ट किया है कि त्याग ही एकमात्र ऐसा गुण है, जो व्यक्ति को श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम बना देता है। इसीलिए उन्होंने त्याग की भावना ग्रहण करने की प्रेरणा देते हुए लिखा है—

**'बिना कर्म के ग्राह्य न होता कभी ज्ञान है।**
**बिना त्याग के व्यक्ति नहीं बनता महान है।।'**

इस प्रकार प्रस्तुत खण्डकाव्य का उद्देश्य राम-कथा में वर्णित चरित्रों को उदात्त रूप में प्रस्तुत करना, कैकेयी के कलंकित चरित्र को आदर्श भारतीय नारी  का रूप प्रदान करना तथा जन-जीवन को आदर्श मार्ग की ओर अग्रसर करना रहा है।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

1. इस प्रश्न के उत्तर के लिए सभी सर्गों के सारांश को पढ़िए।
2. **प्रथम सर्ग ( आगमन )**—अयोध्या में राम के राजतिलक होने के समय भरत तथा शत्रुघ्न दोनों भाई ननिहाल में थे। महाराज दशरथ ने उन्हें बुलाना उचित नहीं समझा और राम के राज्याभिषेक की घोषणा कर दी। कैकेयी के कुपित हो जाने पर राम को चौदह वर्ष का वनवास हुआ और भरत को राजगद्दी मिली। महाराज दशरथ राम का वियोग नहीं सह पाए और स्वर्ग सिधार गए। भरत को लेने के लिए उनकी ननिहाल दूत भेजे गए। दूतों ने ये घटनाएँ भरत को नहीं बताईं। जब भरत अयोध्या आए तो राजमहल में सूनापन देखकर बड़े चिन्तित हुए। वे सबसे पहले माता कैकेयी के महल में गए और माता से सभी लोगों की कुशलक्षेम जाननी चाही।
3. **द्वितीय सर्ग ( राजभवन )**—जब भरत माता कैकेयी के भवन में पहुँचे तो कैकेयी चिन्तामग्न बैठी थीं। उन्होंने भरत का माथा चूमकर स्वागत किया। भरत ने अपनी माता से पिता दशरथ तथा अन्य भाइयों के बारे में जानना चाहा। माता कैकेयी ने बड़े ही संयत स्वर और गम्भीर मुद्रा में भरत को सब घटनाओं की जानकारी दी। पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर भरत मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। कैकेयी ने भरत को बड़े प्रेम से सारी बातें बताते हुए राजा के कर्त्तव्यों की ओर भरत का ध्यान बँटाते हुए कहा कि राम अयोध्या में रहते हुए अपनी प्रजा की समुचित देखरेख नहीं कर सकते थे। जो आदिवासी जंगलों में रहते हैं उनके दु:ख-दर्द दूर करना भी राम का कर्त्तव्य है, अत: मैंने उन्हें वनवास दिलाने की नीति अपनाई और तुम्हें यहाँ का राज्य दिलाने की बात कही। इस तथ्य को तुम्हारे पिता नहीं समझ पाए और अपने प्राण त्याग दिए। मैंने इस कार्य के द्वारा लोक-कल्याण करना चाहा, किन्तु वे इसमें मेरी दुर्भावना मानकर पुत्र मोह में फँस गए और स्वर्ग सिधार गए।

   माता कैकेयी के इन वचनों को सुनकर भरत पुन: मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। कैकेयी ने उन्हें फिर सांत्वना दी और अनेक प्रकार से समझाना चाहा किन्तु भरत ने अपने दु:खी हृदय से माता के इस कार्य की निन्दा करते हुए कहा कि क्या कोई पत्नी अपने पति को ऐसी सजा दे सकती है, पहले भी कहीं ऐसा हुआ है! तुम कितनी ही सफाई देकर स्वयं को निर्दोष सिद्ध करो किन्तु तुम्हारा यह कार्य अत्यन्त निन्दनीय है। इस प्रकार दु:खी मन लिए भरत माता कौशल्या के भवन की ओर चल दिए।
4. **कौशल्या-सुमित्रा मिलन**—भरत के अपने भवन में आने पर माता कौशल्या अत्यन्त हर्षित हो उठीं। उन्होंने बड़े प्यार से भरत तथा शत्रुघ्न को गले से लगाया और अश्रुपूर्ण नयनों से भरत से अपने हृदय की व्यथा कहने लगीं। भरत भी माता कौशल्या से मिलकर खूब रोए। माता ने उन्हें फिर सांत्वना दी और स्वयं भी संयत होकर होनी को दोष देने लगीं। उन्होंने भरत को समझाया कि राजा का कर्त्तव्य है कि प्रजा की सब प्रकार से रक्षा करे। अब राज्य सूना है अत: तुम अपने दायित्व का पालन करो। सुख-दु:ख तो जीवन में आते-जाते रहते हैं। राम नहीं हैं तो तुम राज्य का संचालन करो।

   सुमित्रा ने भी भरत को समझाया कि इसमें किसी का दोष नहीं है। राम का वन जाना उचित ही है, क्योंकि विश्वामित्र ने उन्हें पहले ही धनुर्विद्या में इतना निपुण कर दिया है कि वे वन में जाकर राक्षसों का विनाश करें। राम और लक्ष्मण राक्षसों का विनाश करें और तुम राज्य का संचालन

करो यह उचित ही है। कर्म किए बिना कोई पवित्र नहीं हो सकता। इस प्रकार कौशल्या तथा सुमित्रा ने भरत तथा शत्रुघ्न को हृदय से लगाकर गुरु वशिष्ठ जी के पास भेज दिया।

5. **चतुर्थ सर्ग ( आदर्श वरण )**—भरत तथा शत्रुघ्न दोनों ने वशिष्ठ जी के चरणों का स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त किया। गुरु वशिष्ठ ने दोनों को गले से लगाकर कई प्रकार से सांत्वना दी और जीवन के प्रति किए गए अपने दायित्वों का बोध कराया। पिता दशरथ के शव को देखकर भरत तथा शत्रुघ्न मूर्च्छित हो गए। कुछ समय पश्चात् चेतना आने पर मुनि वशिष्ठ कहने लगे—''जीवन-मरण, सुख-दुख निरन्तर चलते रहने वाली प्रक्रिया है। यह जीवन रंगमंच है हम सभी इस पर अपना-अपना अभिनय करते रहते हैं। इसमें अधिक शोक करना उचित नहीं है। ईश्वर ही इस जगत का सूत्रधार और संचालक है।''

   वशिष्ठ जी ने भरत के द्वारा सरयू के किनारे महाराज दशरथ का दाह संस्कार कराया और राजमहल लौटने पर उनसे राजगद्दी सँभालने के लिए आग्रह किया। भरत ने विनम्रतापूर्वक सभी मन्त्रिगणों तथा गुरु वशिष्ठ जी से इस दायित्व को अस्वीकार कर दिया। भरत ने कहा कि मैं बड़े भाई राम के रहते राजा नहीं बन सकता। तब सबने भरत के आग्रह पर वन में जाकर राम से मिलने की योजना बनाई और एक दिन सब नगरवासी माता कौशल्या को साथ लेकर राम से मिलने चल दिए। भरत पहले पैदल ही चले किन्तु माता कौशल्या के कहने पर रथ में बैठ गए। पूरे दिन चलने के पश्चात् सभी ने तमसा नदी के किनारे विश्राम किया फिर गुरु वशिष्ठ की आज्ञानुसार गोमती नदी पार करके आगे वन के मार्ग पर बढ़ निकले।

6. **पंचम सर्ग ( वनगमन )**—वन में राम से मिलने भरत के साथ अयोध्या नगरी उमड़ी चली जा रही थी। रथों पर इक्ष्वाकु वंश की पताका फहरा रही थी। निषादराज गुह इस भारी भीड़ को देखकर शंकित हो उठे। उन्होंने समझा भरत राम से युद्ध करने आ रहे हैं। कुछ वृद्ध आदिवासियों द्वारा समझाने पर उसकी शंका समाप्त हो गई। वह भरत से मिलकर और उनका प्रयोजन जानकर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने राम की शक्ति और प्रभाव का बड़ी भक्ति भावना से गुणगान किया जिसे सुनकर सब लोग बड़े प्रसन्न हुए। उसने सभी को नाव में बैठाकर गंगा पार उतारा। कुछ दूर चलने पर चित्रकूट दिखाई देने लगा। राम वहीं कुटिया बनाकर रह रहे थे, तब भरत ने पैदल ही चलना उचित समझा और बड़ी आतुरता से राम से मिलने के लिए तेज-तेज चलने लगे।

7. **षष्ठ सर्ग ( राम-भरत मिलन )**—एक आदिवासी निषाद द्वारा भरत के आने की सूचना राम को दी गई। इसको सुनते ही पहले तो लक्ष्मण उत्तेजित हो उठे, किन्तु राम द्वारा शान्त रहने को कहने पर चुप हो गए। तब जैसे ही भरत ने आश्रम में प्रवेश किया राम ने दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। भरत राम के चरणों से लिपटकर बेसुध हो गए। इस स्थिति को देखकर सब नगरवासी रोने लगे। भ्रातृ-प्रेम का अद्भुत दृश्य वहाँ पर उपस्थित हो गया। सभी लोग राम से अयोध्या चलने का आग्रह करने लगे। राम ने माता कौशल्या सहित सभी के चरण छूकर आशीर्वाद प्राप्त किया। कुछ समय पश्चात् मुनि वशिष्ठ ने राम को महाराज दशरथ की मृत्यु का समाचार सुनाया जिसे सुनकर राम तथा लक्ष्मण व्यथित हो उठे। वशिष्ठ ने उन्हें सांत्वना देकर बहुत प्रकार से समझाया।

   कुछ दिन सभी लोग राम के साथ वन में रहे और राम से अयोध्या लौट चलने का आग्रह करते रहे, किन्तु राम ने अपना वनवास पूरा किए बिना अयोध्या लौटने से मना कर दिया। अन्त में भरत

ने राम से आग्रह किया कि वे अपनी चरण पादुकाएँ उसे दे दें वह उन्हें ही राजसिंहासन पर रखकर स्वयं नीचे कुशा पर बैठकर राज्य का संचालन करते रहेंगे। भरत के आग्रह को राम ने स्वीकार कर लिया और राज्य-संचालन की बहुत-सी बातें समझाते हुए अपनी चरण पादुकाएँ प्रेम सहित भरत को दे दीं।

भरत पुरवासियों सहित अयोध्या लौट आए और राम की चरण पादुकाओं को सिंहासन पर रखकर राज्य का संचालन करने लगे।

इस प्रकार भरत ने अपने आदर्श की रक्षा की तथा राम के आदर्शों के अनुसार राज्य का संचालन किया जो उनके त्याग-तपस्या को प्रदर्शित करता है। यह अन्तिम सर्ग कई मायनों में विशिष्ट है क्योंकि इसमें भरत के भ्रातृ-प्रेम, त्याग, आदर्श, दीन-वत्सलता आदि चारित्रिक गुणों का पूर्ण उल्लेख किया गया है, जिससे खण्डकाव्य की महत्ता में अभिवृद्धि होकर रसमयता उत्पन्न हो गई है।

## 8 मेवाड़ मुकुट

**(गंगारत्न पाण्डेय)**

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ख) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (घ) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (ग) **9.** (ग) **10.** (घ) **11.** (ग) **12.** (घ)।

### अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–**(ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

### कूट आधारित प्रश्न

**1. 'कर्मयोग तो एक आदर्श है, कर्मभोग ही सच्चा दर्शन है' कथन है**

**उत्तर–**(घ) केवल (iv)

**2. महाराणा प्रताप का प्रधान कर्त्तव्य है**

**उत्तर–**(ख) केवल (i)

### रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

  **1. महाराणा प्रताप के घोड़े का नाम ______________ है**

**उत्तर–**(क) चेतक

**2. महाराणा प्रताप —————— साथ युद्ध करना चाहते हैं?**

**उत्तर–**(ग) अकबर

## सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से कौन–सा ही कथन सही नहीं है**

**उत्तर–**(ग) केवल (iii)

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

**1.** कवि गंगारत्न पाण्डेय द्वारा रचित 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के नायक 'महाराणा प्रताप' हैं। उनके चरित्र की कुद प्रमुख विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है—

**1. महापराक्रमी तथा दृढ़-प्रतिज्ञ**—महाराणा प्रताप ओजस्वी व्यक्तित्व के स्वामी हैं। वे युद्धस्थल में शत्रुओं को धराशायी करने में सक्षम हैं। उनके पराक्रम का लोहा स्वयं अकबर भी मानता है। राणा प्रताप सदैव अविजित रहे। उन्होंने अपनी मेवाड़भूमि को स्वतन्त्र कराने का दृढ़-संकल्प लिया है। उनकी प्रतिज्ञा को कवि ने इन शब्दों में व्यक्त किया है—

**जब तक तन में प्राण, लड़ेगा, पल-भर चैन न लेगा।**
**सूर्य-चन्द्र टल जाए, किन्तु व्रत उसका नहीं टलेगा।।**

अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए राणा प्रताप नगर छोड़कर वन में मारे-मारे फिरते हैं। मेवाड़ को मुक्त कराने के लिए दृढ़-प्रतिज्ञ महाराणा प्रताप भूमि पर सोते हैं और चाँदी के थाल में भोजन करना अस्वीकार कर देते हैं।

**2. शरणागतवत्सल**—राणा प्रताप का हृदय अत्यन्त उदार एवंविशाल है। वेशत्रुपक्ष की कन्या दौलत को शरण देते हैं और उसे अपनी पुत्री के समान ही पालते हैं। इस सम्बन्ध में कवि के उदगार देखने योग्य हैं—

**अरि की कन्या को भी उसने, रख पुत्रीवत वन में।**
**एक नया आदर्श प्रतिष्ठित, किया वीर जीवन में।।**

**3. मातृभूमि-रक्षक**—महाराणा प्रताप निरन्तर कष्ट भोगते हैं, किन्तु वे अकबर की शरण में जाने को तैयार नहीं हैं। वे तो अपने भाई शक्तिसिंह को भी उसके दासतापूर्ण जीवन के लिए धिक्कारते हैं। भयंकर कष्ट सहने पर भी वे अकबर के सम्मुख झुकना नहीं चाहते। मेवाड़ को स्वतन्त्र कराना ही उनके जीवन का उद्देश्य है। देशप्रेम पर आधारित अपनी भावनाओं को राणा प्रताप ने इन शब्दों में प्रकट किया है—

**या तो फिर मेवाड़-देश, निज गत गौरव पाएगा।**
**या प्रताप वन-वन भटकेगा, यों ही मर जाएगा।।**

**4. आत्मविशवासी तथा स्वाभिमानी**—महाराणा प्रताप में आत्मविशवास की भावना प्रबल रूप में विद्यमान है। वह अपने पराक्रम तथा शौर्य के बल पर ही शत्रु से लोहा लेना चाहते हैं। उनकी इसी भावना को देखकर ही कवि पृथ्वीराज तथा सेठ भामाशाह उनकी सहायता करते हैं। वे अकबर की गुलामी में रहने की अपेक्षा मर जाना अधिक अच्छा समझते हैं। स्वाभिमान की रक्षा के लिए वे आजीवन वनों में रहकर संकटों का सामना करते हैं।

**5. अत्यन्त भावुक-हृदय**—पराक्रमी महाराणा प्रताप अत्यधिक भावुक भी हैं। अपनी रानी लक्ष्मी को चिन्तित देखकर वे द्रवित हो जाते हैं। वे रानी का साहस बढ़ाते हैं और अपने पराक्रम को याद करके शत्रु को पराजित करने का दृढ़-संकल्प लेते हैं। प्रताप का भाई शक्तिसिंह अकबर की दासता स्वीकार कर लेता है, फिर भी वे उस क्षमा कर देते हैं। भाई के प्रति उनके ये भाव उनकी भावुकता के ही परिचायक हैं—

**मेरा ही है मुझसे दूर कहाँ जाएगा।**

इसी प्रकार 'चेतक' की मृत्यु पर भी वे अत्यन्त शोकाकुल हो उठते हैं।

**6. वात्सल्यपूर्ण पिता**—दौलत के मुख से निकले हुए शब्द राणा प्रताप के वात्सल्य को प्रकट करते हैं। दौलत कहती है—

**सचमुच ये कितने महान्हैं, कितने गौरवशाली।**
**इनको पिता बनाकर मैंने, बहुत बड़ी निधि पा ली।।**

**7. दृढ़-संकल्पी स्वप्नदृष्टा**—महाराणा प्रताप महत्वाकांक्षी और स्वप्नद्रष्टा युवा थे और उन स्वप्नों को सकार करने क लिए वे उससे भी अधिक दृढ़-संकल्पी थी। उन्होंने मेवाड़ की स्वतन्त्रता का स्वप्न देखा और उसे साकार करने के लिए आजीवन संघर्षरत रहे। उनकी इस विशेषता पर प्रकाश डालते हुए कवि गंगारत्न पाण्डेय ने खण्डकाव्य की भूमिका में लिखा है—"**राणा प्रताप कोरे स्वप्नदर्शी नहीं हैं। ऊँची-ऊँची कामनाएँ और महत्वाकांक्षाएँ पालनएक बात है, उन महत्वाकांक्षाओं को सफल करने के लिए सुविचारितकदम उठाना बिल्कुल अलग बात है। स्वप्नदर्शी कोई भी हो सकता है। अपने सपनों को साकार रूप दे सकने वाले विरले ही होते हैं; क्योंकि इसके लिए जिस त्याग, साहस, शौर्य और धैर्य की आवश्यकता होती है, वह सर्वसुलभ नहीं है।**" जबकि महाराणा प्रताप में ये गुण पूँजीभूत हो गए थे।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि महाराणा प्रताप इतिहास के एक ऐसे महापुरुष थे, जिनसे राष्ट्र की भावी पीढ़ियाँ जातीय स्वाभिमान, देशप्रेम व स्वाधीनता के लिए सबकुछ बलिदान कर देने की प्रेरणा सदैव ग्रहण करती रहेंगी।

**2.** कवि गंगारत्न पाण्डेय द्वारा रचित खण्डकाव्य 'मेवाड़ मुकुट' में भामाशाह एक प्रमुख पात्र है। महाराणा प्रताप को भामाशाह का परिचय पृथ्वीराज ने दिया था। भामाशाह मेवाड़ भूमि के अत्यन्त धन-सम्पन्न सेठ हैं। उन्होंने मेवाड़ की रक्षा के लिए अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति राणा प्रताप को दे दी। आज के मन्त्रियों का चरित्र अनुकरणीय है। भामाशाह के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का चित्रण इस प्रकार किया जा सकता है—

**1. उत्साही एवं प्रेरक**—भारत के दानवीरों में भामाशाह का नाम प्रसिद्ध है। राष्ट्र-सेवा के लिए उन्होंने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति दान में दे दी। प्रथम मिलन में ही वे राणा प्रताप का उत्साह बढ़ाते हैं। भामाशाह की प्रेरणा से ही राणा प्रताप युद्ध करने के लिए पुन: तैयार होते हैं। भामाशाह के ये प्रेरणात्मक शब्द उनके निराश मन में आशा की ज्योति फैलानेवाले हैं—

**अविजित हैं, विजयी भी होंगे, देव, शीघ्र निःसंशय।**
**मातृभूमि होगी स्वतन्त्र फिर, हम होंगे फिर निर्भय।**

**2. सच्चे देशभक्त**—भामाशाह के हृदय में देश के प्रति अपार अनुराग है। अपनी मातृभूमि की रक्षा हेतु वह सर्वस्व अर्पित कर देना चाहते हैं। उनका विचार है कि जिस देश में व्यक्ति ने जन्म लिया है, उस देश पर तन-मन-धन न्योछावर करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। भामाशाह कहते हैं—

**आज एक अवसर आया है, देव उऋण होने का,**
**देश-जाति-कुल की सेवा का, सुकृत-बीज बोने का।**

**3. शिष्टाचारी एवं विनम्र**—भामाशाह अत्यन्त शिष्ट तथा नम्र स्वभाव के व्यक्ति है। वे स्वयं को सेवक मानते हैं तथा राणा प्रताप को 'देव' कहते हैं। सर्वस्व देकर भी वे अपनी नम्रता को ही प्रकट करते हैं। वे कहते भी हैं—

**वह अधिकार देव सबका है, यह कर्तव्य सभी का।**
**सबको आज चुकाना हे, ऋण, मेवाड़ी माटी का।।**

**4. आदर्श दानवीर**—भामाशाह मातृभूमि की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप को अपनी लाखों की सम्पत्ति उत्साहपूर्वक देते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि भामाशाह की त्याग-भावना की समता नहीं की जा सकती। कवि पृथ्वीराज भामाशाह की दानवीरता की प्रशंसा इन शब्दों में करते हैं—

**धन्य स्वदेश-प्रेम भामा का! धन्य त्याग यह अक्षर।**
**शिव, दधीचि की गरिमा पा ली, तुमने सब कुछ देकर।।**

महाराणा प्रताप भी भामाशाह की दानवीरता की अत्यन्त प्रशंसा करते हैं।

**5. कर्तव्यपरायण**—भामाशाह का चरित्र एक कर्तव्यपरायण नागरिक का चरित्र हे। अपनी कर्तव्यपरायणता से प्रेरित होकर वे महाराणा प्रताप को अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति अर्पित कर देते हैं। वे मानते हैं कि स्वदेश पर मन-मिटना उनका महान् कर्तव्य है। उनके ही शब्द देखिए—

**यदि स्वदेश के मुक्ति-यज्ञ में, यह आहुति दे पाऊँ।**
**पितरों-सहित, देव, निश्चय ही, मैं कृतार्थ हो जाऊँ।।**

आज के अर्थप्रधान युग में, जबकि हर व्यक्ति अपने सुख और भोग के लिए धन-संग्रह कर रहा हे, भामाशाह की त्यागवृत्ति पर आधारित चरित्र अत्यधिक प्रेरणास्पद है। वह निश्चय ही इस युग के सबसे महान् दानी माने जाने चाहिए।

**3.** 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य में कवि गंगारत्न पाण्डेय ने महाराणा प्रताप के चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा अकबर के विरुद्ध किए गए स्वतन्त्रता-संग्राम को चित्रित किया है। प्रत्येक समाज या राष्ट्र को अपने इतिहास-पुरुषों के चरित्र से प्रेरणा प्राप्त होती है। किसी भी समाज का वर्तमान इतिहास विगतकालीन महापुरुषों द्वारा स्थापित आदर्शों का ही परवर्ती होता है। भावी आदर्शों का मूल आधार त्याग देने पर कोई भी समाज सांस्कृतिक रूपसे छिन्न-भिन्न हो जाता है। महाराणा प्रताप का चरित्र इतिहास का एक ऐसा चरित्र है, जिसमें स्वाभिमान, स्वदेश-प्रेम और स्वदेश के लिए बलिदान हो जाने की उच्च भावना निहित है। उनका चरित्र राष्ट्र के लिए युग-युग तक प्रेरणादायक रहेगा। कवि ने इसी प्रेरणा के उद्देश्य से इस खण्डकाव्य की रचना की है और इसमें उन्हें पूरी सफलता प्राप्त हुई है। स्थान-स्थान पर स्वदेश-प्रेम, स्वाभिमान एवं स्वतन्त्रता के लिए बलिदान हो जाने की जो उत्कट भावना व्यक्त हुई है, वह हृदय को झकझोर देनेवाली है।

कवि ने इस खण्डकाव्य में महाराणा प्रताप को **'मेवाड़ मुकुट'** कहकर सम्बोधित किया है; क्योंकि मुकुट आन-बान-शान का प्रतीक होता है और महाराणा प्रताप ने अपने उस मेवाड़ राज्य की आन-बान-शान के लिए सर्वस्व समर्पित करके अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। इस प्रकार वे ही मेवाड़ राज्य के वास्तविक मुकुट है, जोकि किसी भी विषम परिस्थिति में न झुके, न गिरे, बल्कि पूरी दृढ़ता से अपना सिर उठाए गर्व से खड़े रहे। इसीलिए वही खण्डकाव्य के नायक भी हैं। इन्हीं महाराणा प्रताप द्वारा किए गए स्वतन्त्रता-संग्राम को अपना प्रतिपाद्य विषय बनाया है। उनके चरित्र की विशेषताओं को प्रकाशित करने की दृष्टि से उन्होंने वर्तमान भारतीय समाज को प्रेरणात्मक सन्देश भी दिया है। इस दृष्टि से खण्डकाव्य के शीर्षक अर्थात् **नाम की सार्थकता** भी स्वयं ही सिद्ध हो जाती है। भामाशाह का चरित्र तो आज के अर्थप्रधान समाज के लिए एक प्रमुख दृष्टान्त है। उनहोंने सर्वस्व दान करके भी राट्रीय हितों को सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित किया है। आज धनोपार्जन के लिए लोग समाज एवं राष्ट्र के हित पर कुठाराघात करते हैं। भामाशाह का चरित्र ऐसे लोगों के लिए प्रेरणीय है।

प्रस्तुत खण्डकाव्य में कवि ने यह भी स्पष्ट किया है कि राणा प्रताप का अकबर से हुआ संघर्ष हिन्दू-मुस्लिम की भावना पर आधारित साम्प्रदायिक संघर्ष नहीं था। राणा प्रताप की सेना में मुस्लिम सैनिक भी उसी उदात्त आदर्श को हृदय में लिए अकबर के विरुद्ध लड़ रहे थे, जो राणा प्रताप के हृदय में था। इस तरह राष्ट्र के नाम पर धार्मिक कट्टरता को त्यागने का सन्देश देना भी यहाँ कवि का उद्देश्य है। दौलत के प्रति राणा, उनकी पत्नी एवं मेवाड़ के समाज का यवहार भी धार्मिक समानता की भावना पर आधारित मानवतावादी आदर्शों का परिचयक है।

अत: इस खण्डकाव्य का उद्देश्य राट्रीय प्रेम, स्वाभिमान, स्वतन्त्रता की वेदी पर सजीव समर्प्ति करने की भावना, धार्मिक कट्टरता का त्याग आदि आदर्शों की प्रेरणा देना है और इसमें सन्देह नहीं कि कवि को इसमें पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

**1.** इस प्रश्न के उत्तर के लिए सभी सर्गों का सारांश पढ़िए।

**2.** **अरावली सर्ग**—अरावली पर्वत राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में स्थित है और इसके पास ही मेवाड़ की वीरभूमि है। अरावली इसी मेवाड़ की रक्षा हेतु प्रकृति का वरदान है। इसकी कन्दराओं में कभी ऋषि-मुनियों के वेद-मन्त्र गूँजा करते थे और वीरतापूर्ण गीतों का अनुनाद हुआ करता था। आज भी इस अरावली की घाटियों में वीरों की वीरता का गान मुखरित है। इसके पास ही मेवाड़ के राणा प्रताप की कुटी है। युद्ध में पराजित होने पर राणा प्रताप ने इसी स्थान पर कुटी बनाकर जीवन की अन्तिम लड़ाई लड़ी। उनका पूरा परिवार इसी कुटी में निवास करता है। उनके साथ शत्रु पक्ष की एक कन्या भी है। राणा परिवार शरणागतवत्सल है। वह शरण में आए हुए प्रत्येक प्राणी की रक्षा को तत्पर रहता है। सर्ग के अन्त में राणा प्रताप की पत्नी महारानी लक्ष्मी अपने पुत्र को गोद में लेकर भविष्य की चिन्ता में डूबी दिखाई दे रही हैं।

**3.** **लक्ष्मी सर्ग**—चारों ओर चाँदनी फैली हुई है और शान्ति का वातावरण मन को मुग्ध कर रहा है। पक्षी भी दिनभर की थकान के उपरान्त अपने घोंसलों में सो रहे हैं। ऐसे सुनसान नीरव स्थान में

महारानी लक्ष्मी अपनी कुटिया के बाहर चिन्ता में डूबी हैं। उनके चेहरे के भाव बता रहे हैं कि वे बहुत व्याकुल हैं। उनका पुत्र दूध के लिए मचल रहा है। वे अपने जीवन को लक्ष्य कर कहती हैं—''कहने को तो यह राणा का पुत्र है किन्तु आज इतना निरीह है कि एक बूँद दूध भी उपलब्ध नहीं है।'' वे कहती हैं कि कर्मयोग तो एक आदर्श है। कर्मभोग ही सच्चा दर्शन है। इस संसार में सज्जन लोग सर्वदा कष्ट उठाते हैं और दुर्जन लोग सुख भोगते हैं। शत्रु के सामने वीरतापूर्वक अपना मस्तक उठाने के कारण राणा प्रताप अपार कष्टों को भोग रहे हैं और शत्रु की चाटुकारिता करने वाले लोग सुखी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। लक्ष्मी को अपने कष्टों की कोई चिन्ता नहीं है किन्तु अपने पुत्र-पुत्री को भूख से बिलखते देखकर उनका हृदय भी चीत्कार कर उठता है। महाराणा प्रताप लक्ष्मी से उनके दु:ख का कारण पूछना चाहते हैं किन्तु लक्ष्मी 'कुछ नहीं, कुछ भी तो नहीं' कहती हुई कुटी के अन्दर चली जाती हैं। राणा प्रताप उनके इस मार्मिक कथन से सब समझ जाते हैं और अनायास उनके नेत्र भी गीले हो जाते हैं। आँसुओं की कुछ बूँदें उनकी आँखों को सिक्त कर देती हैं।

4. **प्रताप सर्ग**—महाराणा प्रताप कुटिया के बाहर कुछ देर तक खड़े रहते हैं, फिर घने वृक्षों की छाया तले जाकर अपने परिवार की दयनीय स्थिति पर विचार करने लगते हैं। उनकी धारणा है कि कष्ट सहकर ही कुछ यश की प्राप्ति होती है। कर्त्तव्यपालन ही उनका ध्येय है। मेवाड़ की मुक्ति ही उनका श्रेष्ठ कर्त्तव्य तथा धर्म है। मेवाड़ की रक्षा हेतु वे अपने प्राणों का उत्सर्ग करने को भी तैयार हैं। मानसिंह तथा शक्ति सिंह द्वारा शत्रु पक्ष का साथ देने से राणा आहत हैं। उन्हें अपना परिवार, शत्रु पक्ष की कन्या 'दौलत' की चिन्ता है। उन्हें अपने स्वामिभक्त घोड़े चेतक पर गर्व है। वे अपने मन में सिसोदिया वंश के गौरव की रक्षा का संकल्प लेते हैं किन्तु उन्हें यह चिन्ता सता रही है कि वे साधनहीन होकर शत्रुपक्ष का मुकाबला किस प्रकार करें।

### मूल्याधारित प्रश्न

**उत्तर–** (i) महाराणा प्रताप को एक अनुचर पत्र देता है।

(ii) पृथ्वीराज राणा को अकबर से युद्ध करने को संकल्पबद्ध रहने को कहता है।

(iii) सेठ भामाशाह राणा की सहायता के लिए तैयार होते हैं।

## 9 अग्रपूजा

**(श्यामनारायण पाण्डेय)**

### बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

**उत्तरमाला**

**1.** (ख) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (क) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (ग) **9.** (ग) **10.** (घ) **11.** (क) **12.** (ख) **13.** (घ) **14.** (क) **15.** (घ) **16.** (ख) **17.** (क) **19.** (क)।

## अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

**उत्तर–**(ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R'

## चित्र आधारित प्रश्न

- **दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि अपनी मृत्यु के लिए शिशुपाल स्वयं किस हद तक उत्तरादायी था और क्या श्री कृष्ण के पास उसके वध के अतिरिक्त कोई विकल्प शेष था?**

**उत्तर–**निश्चय ही शिशुपाल अपनी मृत्यु के लिए उत्तरादायी था। वह जानता था कि श्रीकृष्ण ने उसकी माता को यह वचन दिया है कि वह उसके सौ अपराधों को क्षमा कर देंगे, परंतु वह अहंकार मेंचूर रहा।

भगवान कृष्ण के पास उसके वध के अतिरिक्त कोई विकल्प शेष न था। वह सौ अपराधों की सीमा को पार कर चुका था। न्याय और श्रीकृष्ण के वचन की यही माँग थी कि शिशुपाल का वध कर दिया जाए।

## रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

**1. श्रीकृष्ण तथा अर्जुन ने अग्निदेव की तृप्ति के लिए ____________ किया**

**उत्तर–**(ख) खाण्डव-दाह

**2. शिशुपाल श्रीकृष्ण का ____________ भाई था।**

**उत्तर–**(क) फुफेरा

## सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से कौन-सा ही कथन सही नहीं है**

**उत्तर–**(ख) केवल (ii)

## उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. पं० रामबहोरी शुक्ल द्वारा रचित 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के नायक श्रीकृष्ण हैं। वे ही खण्डकाव्य के सम्पूर्ण कथानक के केन्द्रबिन्दु हैं। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

**1. सौन्दर्य के प्रतीक**—श्रीकृष्ण का मुखमण्डल अत्यन्त आकर्षक तथा तेजवान् है। वे जहाँ कहीं भी पहुँचते हैं, जनता का समूह उन्हें देखने के लिए उमड़ पड़ता है। इन्द्रप्रस्थ पहुँचने पर नगरवासी उनके सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाते हैं। इन्द्रप्रस्थ की नारियों में श्रीकृष्ण के भव्य रूप की इस प्रकार चर्चा होती है—

**देखना सुना न पढ़ा कहीं भी, ऐसा अनुपम रूप अनिन्द।**
**ऐसी मृदु मुस्कान नदेखी, सचमुच गोविन्द सम गोविन्द॥**

**2. साहसी तथा निर्भीक**—श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व में निर्भीकता कूट-कूटकर भरी हुई है। पाण्डवों के राज्य की स्थापना करने मेंउनका अदम्य साहस प्रकट होता है। इसी प्रकार जरासन्ध का वध करने तथा शिशुपाल का भरी सभा में शीश काटने में भी श्रीकृष्ण अपनी निर्भीकता का परिचय देते हैं।

**3. शिष्ट तथा शीलवान**—श्रीकृष्ण अपने से बड़ों के सम्मुख सदैव नतमस्तक रहते हैं। वे कुन्ती के चरणों को स्पर्श करने में गौरव का अनुभव करते हैं, ब्राह्मणों के पैर स्वयं धोते हैं और अकारण किसी पर क्रोध नहीं करते। वे अपने शुभचिच्न्तकों को सदपरामर्श देनेवाले हैं। वस्तुत: श्रीकृष्ण की नम्रता, उदारता तथा मानवता की भावनाएँ देखने योग्य हैं।

**4. धैर्यवान् तथा सहनशील**—श्रीकृष्ण धैर्य के भण्डार हैं। सहनशीलता उनमें कूट-कूटकर भरी हुई है। भरी सभा में शिशुपाल के कटु वचन सुनकर भी वे अपना धैर्य नहीं छोड़ते—

**बैठे रहे कृष्ण मुस्कराते, विचलित हुए न सब सुन देख।**

शिशुपाल द्वारा अपने ऊपर आक्रमण होता देखकर भी वे शान्त मन से बैठे रहते हैं। मर्यादा का अतिक्रमण होने के बाद ही वे वीरता दिखाने के लिए तत्पर होते हैं।

**5. असामान्य शक्ति-सम्पन्न**—श्रीकृष्ण अत्यधिक शक्तिमान हैं। वे शसत्र-संचालन में भी अत्यन्त निपुण हैं। शिशुपाल का वध वे इतनी शीघ्रतापूर्वक करते हैं कि कोई उनके सुदर्शन चक्र को चलता हुआ भी देख नहीं पाता। वे शिशुपाल को सचेत करके ही उस पर प्रहार करते हैं।

**6. सर्वगुण-सम्पन्न अलौकिक पुरुष**—गीता में प्रदर्शित श्रीकृष्ण के चरित्र एवं व्यक्तित्व को ही 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य में प्रस्तुत किया गया है। उनके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में स्वयं भीष्म का कथन श्रीकृष्ण के विशद् चरित्र पर प्रकाश डालता है। भीष्म कहते हैं—''श्रीकृष्ण महामानव हैं, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे रहनेवाले हैं। संसार में रहकर भी वे अनासक्त तथा कर्मयोगी हैं। उनमें रूप, शील तथा शक्ति का अनुपम भण्डार है। योग तथा भोग से पूर्ण इनका व्यक्तित्व अनूठा उदाहरण है। श्रीकृष्ण सज्जनता, विनय, प्रेम तथा उदारता के पुंज हैं।'' इसमें सन्देह नहीं कि श्रीकृष्ण का आदर्श चरित्र अत्यन्त महान है।

**2.** पं० रामबहोरी शुक्ल द्वारा रचित 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य में युधिष्ठिर पाण्डवों के सबसे बड़े भाई हैं। उनकी चारितित्रक विशेषताओं का संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है—

**1. अत्यन्त विनम्र**—युधिष्ठिर गुरुजनों का आदर करनेवाले हैं। हस्तिनापुर में स्वागतार्थ आए गुरु द्रोण को देखकर वे अपने रथ से उतर जाते हैं तथा अपने भाइयों के साथ उनके पैरों में गिरकर प्रणाम करते हैं। इसी प्रकार जब वे श्रीकृष्ण को इन्द्रप्रस्थ से पहली बार विदा करते हैं तो वे उनके रथ को कुछ दूर तक स्वयं चलाते हैं। इस प्रकार युधिष्ठिर की विनम्रता एवं सज्जनता देखने योग्य है।

**2. सत्यवादी तथा धर्मनिष्ठ**—युधिष्ठिर साधु स्वभाव के आदर्श पुरुष हैं। वे धर्मनिष्ठ, मातृभक्त एवं न्याय के समर्थक हैं। वे हस्तिनापुर में राज्य तो करते हैं, परन्तु किसी अन्य राज्य

को अपने राज्य में मिलाने की इच्छा नहीं रखते। वेसत्य बोलने में विश्वास रखते हैं। उनके चरित्र में करुणा, प्रेम और न्याय की भावना पूर्णरूप से विद्यमान है। अपने साधु चरित्र के कारण ही वे धर्मराज युधिष्ठिर कहलाए।

**3. उदार मानव**—युधिष्ठिर के चरित्र में लोभ, प्रतिशोध अथवा ईर्ष्या आदि की भावनाएँ लेशमात्र भी नहीं हैं। बार-बार दुष्टता करने वाले कौरवों के प्रति भी वे ईर्ष्या एवं प्रतिशोध का भाव प्रदर्शित नहीं करते हैं। जरासन्ध तथा शिशुपाल का वध होने के पश्चात युधिष्ठिर उनके राज्य को उनके पुत्रों को ही दे देते हैं।

**4. न्यायप्रिय तथा लोकप्रिय शासक**—धर्मराज युधिष्ठिर अत्यन्त लोकप्रिय शासक रहे। उनके आदर्श शासन की प्रशंसा केवल जनता ही नहीं करती, अपितु देवलोक केप्राणी भी करते हैं। नारद युधिष्ठिर के सम्बन्ध में इस प्रकार कहते हैं—

**बोल उठे गद्‌गद वाणी से ' धर्मराज, जीवन तब धन्य।**
**धरती में सत्कर्म-निरत जन, नहीं दीखता तुम-सा अन्य।।'**

वस्तुत: धर्मराज युधिष्ठिर का चरित्र अनेक गुणों का भण्डार है। उनका आदर्श चरित्र वर्तमान भारतीय परिस्थितियों में भी अनेक दृष्टियों से प्रेरणा देनेवाला है।

**3.** 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य में युधिष्ठिर दुर्योधन गौण पात्र है, फिर भी कवि रामबहोरी शुक्ल ने 'पूर्वाभास' नामक पूरा सर्ग उसी को समर्पित किया है। खण्डकाव्य में उसके चरित्र का परम्परागत रूप ही प्रस्तुत किया गया है, जिसका वर्णन निम्नांकित शीर्षक के अन्तर्गत किया जा सकता है—

**1. अत्याचारी**—दुर्योधन अत्याचारी राजकुमार है। पाण्डवों से उसका ईर्ष्या-द्वेष चिर-परिचित है। सम्पूर्ण राज्य पर अपना आधिपत्य जमाने के लिए उसने पाण्डवों पर अनेक प्रकार के अत्याचार किए। कभी उन्हें छलपूर्वक वनवास दिया तो कभी लाक्षागृह में मारने का षडयन्त्र रचा, किन्तु वह अपने किसी भी कृत्य में सफल न हुआ। उसके अत्याचारी होने का वर्णन कवि ने इन शब्दों में किया है—

**अपने बास भर दुर्योधन ने किए विविध बिध अत्याचार।**
**बाल न बाँका हुआ पाण्डवों का था उनसे किसी प्रकार।।**

**2. कपटी**—छल-कपट दुर्योधन के चरित्र का अभिन्न अंग है। पाण्डवों को उनके राज्याधिकार से च्युत करने के लिए उसने सभी सम्भव प्रयत्न किए। यहाँ तक कि उनको माता कुन्ती सहित मार डालने के लिए लाखागृह की रचना की। यह पाण्डवों का सौभाग्य था कि वे सकुशल बाहर आने में सफल हुए थे—

**समझा उसने लाक्षागृह का सफल था कपटाचार।**
**मान चुका था निश्चित मन में सिंहासन पर निज अधिकार।।**

उसके कपटी व्यवहार से स्वयं उसके पिता धृतराष्ट्र भी परिचित है इसीलिए वे उसे समझाते हुए कहते हैं—

**छोड़ो अपने कुटिल कर्म अब करो प्रेम से सद्व्यवहार।**
**सुख से रहो स्वयं तुम छोड़ो उनसे करना दुर्व्यवहार।।**

इस पर वह अपनी कुटिलता का परिचय देता हुआ अपने पिता से कहता है कि यदि मेरा राज्य निष्कंटक नहीं होगा तो फिर मेरे मन को शान्ति कैसे मिल सकती है। अत: आपही अपने प्रभाव का प्रयोग करके कुछ ऐसा कीजिए कि वे लोग यहाँ न आ सकें, बल्कि आपस में लड़-झगड़कर मर जाएँ—

**करें उपाय सोच कुछ ऐसा यहाँ न आएँ फिर ये लोग।**
**आपस में ही लड़ें मरें वेकरिए ऐसे कुटिल प्रयोग।।**

**3. ईर्ष्यालु**—पाण्डव में दुर्योधन के वैर का मुख्याधार उसका ईर्ष्यालु स्वभाव ही था। वह नहीं चाहता था कि पाण्डवों का मान-सम्मान यश, प्रताप उससे अधिक हो। इसी ईर्ष्या के कारण वह पाण्डवों का विनाश करना चाहता था, किन्तु वह अपने किसी भी प्रयास में सफल न हो सका। जब पाण्डव उसके बनाए लाक्षागृह से सुरक्षित बचनिकले और द्रुपद-सुता से उनका विवाह हो गया तो उसकी ईर्ष्या की ज्वाला पूर्ण वेग के साथ भड़क उठी। इसका वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है—

**देख पाण्डवों को जीवित, अति चिनितन क्षुब्ध सुयोधन भूप।**
**काँप उठा विचारफिर उनका नया द्रुपद-सम्बन्ध अनूप।।**
**ली सँभाल ईर्ष्या की ज्वाला, नहीं भड़कने दी उस काल।**
**पाण्डव-वध की नई योजना, लगा बनाने फिर तत्काल।।**

**4. महत्वाकांक्षी**—महत्वाकांक्षा ने दुर्योधन को अत्याचारी, कपटी और ईर्ष्यालु बना दिया है। उसकी एकमात्र महत्वाकांक्षा यही है कि वह हस्तिनापुर का एकच्छत्र निष्कंटक राज्य करे। अपनीइस महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए वह कितना भी नीच कर्म कर सकता है। बड़ों की आज्ञा और उपदेशों को अनसुना कर देना तो उसके लिए साधारण-सी बात है—

**दुर्योधन के गले उतरना संभव हुआ न मैत्री भाव।**
**झगड़ा करने के मत का भी पड़ा नउस पर तनिक प्रभाव।।**

भीष्म, द्रोण और विदुर आदि उसे तथा धृतराष्ट्र को समझाते हैं कि दुर्योधन का अतिमहत्वाकांक्षी और स्वार्थी होना कुरु-कुल के लिए अच्छा नहीं है। यदि उसने यह स्वार्थ नहीं छोड़ा और विवेक से कार्य न किया तो सर्वनाम निशिचत है कि इस सन्दर्भ में विदुरजी कहते हैं—

**स्वार्थ-कामना से विवेक को खो देने से हो जाता नाश।**
**इसीलिए मैं भी कहता हूँ, उचित दे रहे भीष्म प्रकाश।।**

इस प्रकार हम देखते हैं कि दुर्योधन के चरित्र में ऐसा कई सदगुण नहीं दृष्टिगत होता, जिसका उल्लेख किसी प्रकार से किया जा सके।

## जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

1. **संकेत**—इस प्रश्न के उत्तर के लिए समस्त सर्गों के सारांश का अवलोकन कीजिए।
2. **द्वितीय सर्ग ( समारम्भ )**—पाण्डवों ने खाण्डव वन में पहुँचकर श्रीकृष्ण के निर्देशानुसार यमुना नदी के किनारे एक स्थान को चुनकर उसे अपनी राजधानी बनाया और शीघ्र ही सब

सुख-सुविधाएँ उसमें जुटा लीं। कुछ समय पाण्डवों के साथ रहकर कृष्ण द्वारिका चले गए। उनके चले जाने पर पाण्डव अत्यन्त दुखी हुए। युधिष्ठिर के राज्य में प्रजा सुखी थी। सर्वत्र आदर-सम्मान था। उनकी सुकीर्ति सर्वत्र फैली हुई थी। पाण्डवों की राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी जो देवलोक के समान थी।

3. **तृतीय सर्ग ( आयोजन )**—प्राय: द्रोपदी को लेकर पाँचों भाइयों में मनमुटाव रहता था। इसे दूर करने के लिए नारद ने एक युक्ति बताई कि जब एक भाई द्रोपदी के साथ हो तब यदि दूसरा भाई उसे देख ले तो बारह वर्ष के लिए वन में चला जाए। पाँचों भाइयों ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया। एक दिन एक दुष्ट पुरुष ब्राह्मणों की गायों को हाँककर ले चला। ब्राह्मण सहायता के लिए अर्जुन के पास आए। अर्जुन के अस्त्र-शस्त्र उस भवन में थे जिसमें युधिष्ठिर तथा द्रोपदी बैठे हुए थे। अर्जुन बिना आज्ञा भवन में गए और शस्त्र लेकर गायों को छुड़ा लाए। नियम के अनुसार अर्जुन बारह वर्ष के लिए वन में चले गए। अर्जुन घूमते हुए द्वारिका पहुँचे और वहाँ श्रीकृष्ण के पास बहुत समय तक रहे। श्रीकृष्ण ने अपनी बहन सुभद्रा का विवाह अर्जुन से कर दिया और अर्जुन वनवास की अवधि पूरी होने पर इन्द्रप्रस्थ लौट आए।

अर्जुन तथा श्रीकृष्ण ने खाण्डव वन में आग लगा दी, इससे प्रसन्न होकर अग्नि देव ने अर्जुन को चार श्वेत घोड़े तथा तीव्रगामी रथ कपिध्वज प्रदान किया। वरुण ने गाण्डीव धनुष तथा दो अक्षय तूणीर दिए। श्रीकृष्ण को अग्नि ने कौमुदी गदा तथा सुदर्शन चक्र उपहार स्वरूप भेंट किए। वन की लपटों में मयदानव जलने लगा, उसने रक्षा के लिए अर्जुन को पुकारा। अर्जुन द्वारा उसे बचाने पर उसने राजधानी में अलौकिक सभाभवन तैयार कर दिया। उसने भीम को गदा तथा अर्जुन को शंख देकर अपने उपकार का बदला चुकाया। कुछ समय पश्चात् नारद जी इन्द्रप्रस्थ आए और उन्होंने युधिष्ठिर से उनके पिता पाण्डु का यह सन्देह कहा कि वो राजसूय यज्ञ करें, जिससे उनकी आत्मा को शान्ति मिले। युधिष्ठिर ने नारद जी के द्वारा श्रीकृष्ण को इन्द्रप्रस्थ बुलवाया और सारा समाचार दिया। श्रीकृष्ण ने कहा कि जरासन्ध को मारे बिना आप सम्राट नहीं बन सकते। मैं यानी कृष्ण, भीम तथा अर्जुन तीनों गिरिव्रज जाकर उसे द्वन्द्व युद्ध में ललकारते हैं। उसने दो हजार राजाओं को कैद करके रखा हुआ है। मैंने उन राजाओं को वचन दिया है कि शीघ्र ही उन्हें मुक्त कराऊँगा।

युधिष्ठिर से अनुमति प्राप्त कर कृष्ण, भीम तथा अर्जुन जरासन्ध के यहाँ जा पहुँचे। जरासन्ध ने भीम से द्वन्द्व युद्ध करने का निर्णय लिया। तेरह दिनों तक मल्ल युद्ध होता रहा। भीम ने मौका पाकर जरासन्ध को ऊपर उठाकर जमीन पर पटक दिया तथा श्रीकृष्ण के संकेत से उसकी दोनों टाँगें चीरकर फेंक दिया। जरासन्ध की मृत्यु के बाद उसके बेटे सहदेव को राजगद्दी देकर तथा कैद से राजाओं को छुड़ाकर कृष्ण, भीम तथा अर्जुन इन्द्रप्रस्थ लौट आए।

कुछ समय बाद युधिष्ठिर ने दिग्विजय के लिए चारों भाइयों भीम, अर्जुन, नकुल तथा सहदेव को भारतवर्ष में भेजा। सबने युधिष्ठिर की अधीनता स्वीकार करके उनकी छत्रछाया में रहना स्वीकार किया। युधिष्ठिर ने तब राजसूय यज्ञ किया, जिसमें सभी राजाओं ने भाग लेकर स्वयं को धन्य समझा। श्रीकृष्ण कुछ समय बाद द्वारिका चले गए।

4. **चतुर्थ सर्ग ( प्रस्थान )**—राजसूय यज्ञ का निमन्त्रण लेकर अर्जुन श्रीकृष्ण के पास द्वारिका गए। वहाँ अर्जुन ने कृष्ण से कहा कि यज्ञ में सभी राजा निमन्त्रित हैं। कुछ भी अप्रिय घटना घट सकती

है अत: आपके हाथ ही हमारी लाज है। अर्जुन के चले जाने पर श्रीकृष्ण ने बलराम एवं उद्धव के साथ सेना को इन्द्रप्रस्थ भेज दिया और स्वयं भी चल दिए। युधिष्ठिर ने सेना सहित श्रीकृष्ण का भव्य स्वागत किया, जिसको देखकर शिशुपाल तथा रुक्मि को बहुत बुरा लगा। ये दोनों स्वयं को पाण्डवों से श्रेष्ठ मानते थे। श्रीकृष्ण ने रुक्मि की बहन रुक्मिणी से विवाह करके उसे पटरानी बना लिया था। रुक्मि रुक्मिणी का विवाह शिशुपाल से करना चाहता था। इस प्रकार दोनों ही श्रीकृष्ण के विरोधी बन गए थे। उनके मन में श्रीकृष्ण के प्रति शत्रुता का भाव था।

5. **पंचम सर्ग ( राजसूय यज्ञ )**—युधिष्ठिर ने यज्ञ की व्यवस्था सुनिश्चित करके सर्वप्रथम ब्राह्मणों को आसन पर बैठाकर उनके चरण धोए, फिर क्रमवार सभी राजाओं का पूजन करने की इच्छा से सभा में उपस्थित राजा गणों से पूछा कि पहले किसका पूजन किया जाए। इस पर सहदेव ने श्रीकृष्ण के नाम का प्रस्ताव रख दिया। भीष्म ने भी समर्थन करके श्रीकृष्ण को ही प्रथम पूजन का अधिकारी बताया। श्रीकृष्ण जैसे ही सभा में उपस्थित हुए तो सभी राजा उनके सम्मान में उठ खड़े हुए, केवल शिशुपाल ही अपने आसन से न हिला। युधिष्ठिर ने भीम तथा सहदेव से कहा कि तुम पहले श्रीकृष्ण को अर्घ्य दो फिर अन्य राजाओं का पूजन करके अर्घ्य दो। इस पर शिशुपाल अत्यन्त क्रुद्ध हो गया और कृष्ण को गाली देता हुआ उन्हें मारने दौड़ा। कृष्ण अपनी शान्त मुद्रा में बैठे रहे। सारी सभा में शान्ति पसर गई, किसी अनहोनी की आशंका सभी के चेहरों पर व्याप्त हो गई। शिशुपाल बदहवाश-सा सभा में कृष्ण को मारने के लिए दौड़ने लगा। वह जिस ओर दौड़ता उस ओर ही उसे श्रीकृष्ण मुस्कराते दिखाई देते। अन्त में शिशुपाल थककर एक ओर बैठ गया। श्रीकृष्ण ने उससे कहा कि तू मेरा फुफेरा भाई है। तेरे द्वारा किए गए दुर्व्यवहार को मैं अब तक इसीलिए सहन करता रहा हूँ। अब आगे कुछ कहा तो मैं तुझे दण्ड दिए बिना नहीं छोड़ूँगा।

   शिशुपाल इस पर भी शान्त नहीं हुआ। वह श्रीकृष्ण को गाली देता रहा, तब क्रुद्ध होकर श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से उसका सिर काट दिया। धर्मराज युधिष्ठिर ने बड़े सम्मान के साथ उसका अन्तिम संस्कार कराया तथा उसके पुत्र को राज्य सौंपकर अपना कर्त्तव्य पूर्ण किया।

   खण्डकाव्य का यह सर्ग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। शिशुपाल-वध की यह घटना अत्यन्त ही प्रभावशाली रूप में वर्णित है। इसमें दुराचारी का अन्त तथा सदाचारी की विजय दिखाकर यह शिक्षा दी है कि दुराचरण किसी के भी द्वारा क्षम्य नहीं है। यह महान् अपराध है और इसकी सजा मृत्यु ही होती है। इसलिए व्यक्ति को सदैव सदाचारी बनकर जीवन निर्वाह करना चाहिए।

6. **षष्ठ सर्ग**—शिशुपाल की मृत्यु के बाद यज्ञ सुचारु रूप से सम्पन्न हो गया। युधिष्ठिर की कीर्ति चहुँ ओर फैल गई। व्यास, धौम्य आदि सोलह ऋषियों ने यज्ञ की विधिपूर्वक समाप्ति करके प्रस्थान किया। युधिष्ठिर ने सभी राजाओं को आदरपूर्वक विदा किया। श्रीकृष्ण तथा बलराम का आभार व्यक्त करके उन्हें द्वारिका के लिए विदा किया। युधिष्ठिर ने इतने बड़े राजसूय यज्ञ का आयोजन करके स्वयं को तथा अपने पूर्वजों को धन्य कर लिया। ऋषियों के आशीर्वाद से वे कृत कृत्य हो गए।

7. पं० रामबहोरी शुक्ल द्वारा रचित 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य में युधिष्ठिर पाण्डवों के सबसे बड़े भाई हैं। उनकी चारितित्रक विशेषताओं का संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है—

**1. अत्यन्त विनम्र**—युधिष्ठिर गुरुजनों का आदर करनेवाले हैं। हस्तिनापुर में स्वागतार्थ आए गुरु द्रोण को देखकर वे अपने रथ से उतर जाते हैं तथा अपने भाइयों के साथ उनके पैरों में गिरकर प्रणाम करते हैं। इसी प्रकार जब वे श्रीकृष्ण को इन्द्रप्रस्थ से पहली बार विदा करते हैं तो वे उनके रथ को कुछ दूर तक स्वयं चलाते हैं। इस प्रकार युधिष्ठिर की विनम्रता एवं सज्जनता देखने योग्य है।

**2. सत्यवादी तथा धर्मनिष्ठ**—युधिष्ठिर साधु स्वभाव के आदर्श पुरुष हैं। वे धर्मनिष्ठ, मातृभक्त एवं न्याय के समर्थक हैं। वे हस्तिानापुर में राज्य तो करते हैं, परन्तु किसी अन्य राज्य को अपने राज्य में मिलाने की इच्छा नहीं रखते। वेसत्य बोलने में विश्वास रखते हैं। उनके चरित्र में करुणा, प्रेम और न्याय की भावना पूर्णरूप से विद्यमान है। अपने साधु चरित्र के कारण ही वे धर्मराज युधिष्ठिर कहलाए।

**3. उदार मानव**—युधिष्ठिर के चरित्र में लोभ, प्रतिशोध अथवा ईर्ष्या आदि की भावनाएँ लेशमात्र भी नहीं हैं। बार-बार दुष्टता करने वाले कौरवों के प्रति भी वे ईर्ष्या एवं प्रतिशोध का भाव प्रदर्शित नहीं करते हैं। जरासन्ध तथा शिशुपाल का वध होने के पश्चात युधिष्ठिर उनके राज्य को उनके पुत्रों को ही दे देते हैं।

**4. न्यायप्रिय तथा लोकप्रिय शासक**—धर्मराज युधिष्ठिर अत्यन्त लोकप्रिय शासक रहे। उनके आदर्श शासन की प्रशंसा केवल जनता ही नहीं करती, अपितु देवलोक केप्राणी भी करते हैं। नारद युधिष्ठिर के सम्बन्ध में इस प्रकार कहते हैं—

**बोल उठे गद्‌गद वाणी से 'धर्मराज, जीवन तब धन्य।**
**धरती में सत्कर्म-निरत जन, नहीं दीखता तुम-सा अन्य॥'**

वस्तुत: धर्मराज युधिष्ठिर का चरित्र अनेक गुणों का भण्डार है। उनका आदर्श चरित्र वर्तमान भारतीय परिस्थितियों में भी अनेक दृष्टियों से प्रेरणा देनेवाला है।

**8.** पं० रामबहोरी शुक्ल द्वारा रचित 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य में शिशुपाल का चरित्र एक प्रमुख खलनायक पात्र के रूप में चित्रित किया गया है। शिशुपाल का चरित्र-चित्रण इस प्रकार किया जा सकता है—

**1. श्रीकृष्ण का शत्रु**—शिशुपाल चेदि राज्य का स्वामी है। श्रीकृष्ण से उसकी पुरानी शत्रुता है। वह रुक्मिणी से विवाह करना चाहता था, परन्तु रुक्मिणी हृदय से श्रीकृष्ण का वरण कर चुकी थीं; अत: श्रीकृष्ण रुक्मिणी को ले आए और द्वारका आकर रुक्मिणी से विधिवत् विवाह सम्पन्न किया। तभी से शिशुपाल श्रीकृष्ण से शत्रुता रखने लगा।

**2. अशिष्ट तथा अविनीत**—शिशुपाल भरी सभा में छोटे तथा बड़ों के प्रति शिष्टतापूर्वक बोलना भी नहीं जानता। अग्रपूजा के लिए सहदेव द्वारा श्रीकृष्ण का नाम प्रस्तावित होने पर शिशुपाल सहदेव से कहता है कि वह छोटे मुँह से बड़ी बात करता है औरउसमें लड़कपन शेष है। इतना ही नहीं, शिशुपाल भीष्म के लिए भी अपनानजनक शब्द कहता है—

**लगता सठिया गए भीष्म हैं, मारी गई बुद्धि भरपूर।**
**तभी अनर्गल बातें करते हैं, करो यहाँ से इनको दूर॥**

**3. अत्यधिक ईर्ष्यालु**—शिशुपाल स्वभावसे अत्यधिक ईर्ष्यालु है। इन्द्रप्रस्थ में श्रीकृष्ण के सम्मान को देखकर वह ईर्ष्या की अग्नि में जलने लगता है। शिशुपाल को सभी राजाओं द्वारा श्रीकृष्ण का अधिक सम्मान करना काँटे की तरह चुभता है। वह अकारण ही श्रीकृष्ण के प्रति जहर उगलने लगता है और उनको नाचने-कूदनेवाला, मायावी, अनीतिज्ञ तथा कृतघ्न बताता है। श्रीकृष्ण का अपमान करते हुए वह इन शब्दों के साथ अपने मन को हल्का करता है—

**आज यहाँ हैं ज्ञानी योगी, पण्डित, ऋषि, नृप, अनुपम वीर।**
**फिर भी अग्र अर्चना होगी, उसकी जो गोपाल अहीर॥**

**4. क्रोधी तथा अभिमानी**—ईर्ष्यालु, अशिष्ट तथा निन्दक होने के अतिरिक्त शिशुपाल अत्यन्त क्रोधी तथा अभिमानी भी है। भीष्म के उपदेश तथा सहदेव की कूटनीति का उस पर कोई प्रभाव नहीं होता। वह तो राजाओं की सभा में श्रीकृष्ण की ओर घूँसा तानकर बढ़ता है और अभिमान में आकर उन्हें बुरा-भला कहता है—

**वह बोला—'मायावी, छलिया, इन्द्रजाल अब करके बन्द।**
**आ सम्मुख, तू बच न सकेगा, करके ये सारे छल-छन्द॥'**

वस्तुत: शिशुपाल के चरित्र में दोष-ही-दोष हैं। वह खलनायक की भूमिका को भली प्रकार निभाता है।

## केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद (केस/स्रोत) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

**पाण्डवों ने .............................. समान थी।**

(i) पाण्डवों ने खाण्डव वन में पहुँचकर श्रीकृष्ण के निर्देशानुसार यमुना नदी के किनारे एक स्थान को चुनकर उसे अपनी राजधानी बनाया

(ii) कुछ समय पाण्डवों के साथ रहकर कृष्ण द्वारिका चले गए। उनके चले जाने पर पाण्डव अत्यन्त दुखी हुए।

(iii) युधिष्ठिर के राज्य में प्रजा सुखी थी। सर्वत्र आदर-सम्मान था। उनकी सुकीर्ति सर्वत्र फैली हुई थी। पाण्डवों की राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी जो देवलोक के समान थी।

# Note

Note